राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

भाग ५

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

राधास्वामी गाय कर जनम सुफल कर ले
यही नाम निज नाम है मन अपने धर ले

प्रेम पत्र राधास्वामी

पाँचवाँ भाग

जिसको

परम सन्त सतगुरु हुज़ूर महाराज ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

सातवीं बार) सन् 2018 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

All rights reserved

कोई साहब बिना इजाज़त इस पोथी को नहीं छाप सकते

पहली बार	सन् 1903	1000 प्रतियाँ
दूसरी बार	सन् 1954	1000 प्रतियाँ
तीसरी बार	सन् 1975	1000 प्रतियाँ
चौथी बार	सन् 1984	1000 प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन् 1993	1000 प्रतियाँ
छटी बार	सन् 2007	3000 प्रतियाँ
सातवीं बार)	सन् 2018	(1000 प्रतियाँ

(द्वि-शताब्दी संस्करण)

50 रुपये

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

राधास्वामी मौज से प्रेमपत्र जारी।
दृढ़ विश्वास होय चरन में और प्रीत गाढ़ी।।
सुमिरन ध्यान और भजन में नित नया आनंद पाय।
सतसंगी सब उमँग २ राधास्वामी महिमा गाय।।

प्रेम पत्र पाँचवाँ भाग जो कि पहली मई सन् १८९७ ईसवी से ३० अप्रैल सन् १८९८ तक समाप्त हुआ उसके बचनों का

सूचीपत्र

बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन		पृष्ठ
१	जिसके दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है	-- --	१
२	दुनिया में जो कोई दुखिया होता है, वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके थोड़ी बहुत समझौती या शान्ति या मदद हासिल करता है	-- --	७
३	जो कोई तीनों गुन यानी सत, रज, तम के चक्कर और घेर में रहकर परमार्थ की कार्रवाई करे, तो वह किसी न किसी स्थान पर माया के घेर में रहेगा	-- --	१२
४	आदि में शब्द प्रकट हुआ। शब्द से ही कुल्ल रचना हुई		१६
५	सुरत का जगत में उतार और फँसाव और जुगत उस के उद्धार यानी चढ़ाव की घर की तरफ़	-- --	२०
६	दुनिया की मान बड़ाई और भोग बिलास देखकर हर कोई उनकी चाह उठाता है	-- --	२७
७	जगत उपदेश	-- --	३३
८	और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के कर्म धर्म यानी बाहरमुख कार्रवाई पर ज़्यादा ज़ोर दिया है	-- --	५१
९	परमार्थ की कार्रवाई इस देह और देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सकती है	-- --	५६
१०	चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूर है	-- --	६२

बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
११	वर्णन भेद और सबब देरी का मन और सुरत के चढ़ने और स्थानों के खुलने में -- --	६८
१२	जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है, उसको चाहिये कि नीचे की लिखी हुई बातों का निर्णय करके प्रतीत करे और उसी मुवाफ़िक़ चरनों में प्रीत लाकर करनी करे -- --	७१
१३	परमार्थी जीवों को भक्ति अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये और उसके साथ थोड़ा बैराग भी रखना चाहिये और दुनिया के कामों में साधारन तौर पर बर्तना चाहिये, बहुत मोह और आसक्ति दुखदाई है।। -- --	९२
१४	बग़ैर गुरु भक्ति और बिना गुरु चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निज धाम की तरफ़, सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है -- --	९८
१५	और मतों में उद्धार के वास्ते मेहनत और तकलीफ़ ज़्यादा और फ़ायदा बहुत कम -- --	११०
१६	जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये	११४
१७	कलजुग करम धरम नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई।। -- --	१२१
१८	लेना, देना, पकड़ना और छोड़ना -- --	१२६
१९	सतगुरु बचन सुनो और मानो, गुरु चरन प्रीत पालो और चालो।। -- --	१३३
२०	जागो, भागो और तोड़ो, जोड़ो।। -- --	१३८
२१	पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा	१४३
२२	जाँचो, सम्हलो और होशियार हो। -- --	१४६
२३	मन भूले को समझाओ, शैतानी अंग हटाओ -- --	१५१
२४	उगलो, निगलो, देओ और लेओ -- --	१५४
२५	वर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में --	१५८

बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन		पृष्ठ
२६	रचो, भजो, हटो, तजो, मरो, जीवो, और बसो।	-- --	१६५
२७	निरखो और छोड़ो, परखो और पकड़ो	-- --	१६९
२८	समेटो और चढ़ाओ। मत बिखेरो और मत उतारो।	-- --	१७३
२९	बचो, सजो, चलो और मिलो	-- --	१७७
३०	दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना	-- --	१८१
३१	चलो चलो घर घंट पुकारे। रलो मिलो संग दयाल पियारे।।	-- --	१८७
३२	निरबंधी बंधन बँधा, बँध निरबंधी होय	-- --	१९१
३३	सच्चे परमार्थी की भक्ति की कार्रवाई का वर्णन	-- --	१९७
३४	सहज उपदेश	-- --	२१०
३५	मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है	-- --	२९३
३६	सुरत को आँखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना	-- --	३०३
३७	दाता से दाता ही को माँगे और दात का आशिक़ न होवे	-- --	३०८
३८	वर्णन सबब डिगमिग हो जाने जीव का	-- --	३१२
३९	मालिक कहता है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आ सक्ती और नहीं ठहर सक्ती, उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ	-- --	३१९
४०	सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है		३२७
४१	मालिक-कुल्ल की तरफ़ से बा-वजूदे कि वह घट में मौज़ूद है और कभी २ बोलता भी है, जीव बे-परवाह और भूले हुए हैं	-- --	३३४

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

पाँचवाँ भाग

बचन पहला

जिसके दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है, उसी को सतगुरु और उनका दर्शन और बचन और प्रेमी जन प्यारे लगेंगे। और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का शौक़ पैदा होगा। फिर उसी शख़्स की परमार्थी हालत रोज़ बरोज़ बदलेगी और वही एक दिन धुर धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा।

१ - जिस किसी को दुनिया का हाल और देहियों की नाशमानता और दुख सुख का भोग और मौत का सिर पर खड़ा होना देख कर, सच्चा ख़ौफ़ और फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है, उसी को संत

सतगुरु और उनका सतसंग प्यारा लगेगा क्योंकि वहाँ उसको भेद सच्चे मालिक और उसके धाम का, जहाँ से जीव आदि में आया है, और जुगत वहाँ चल कर पहुँचने की मालूम होवेगी और उनसे रास्ता तै करने में मदद मिलेगी।।

२ - संत सतगुरु के सतसंग और बचन से यह फ़ायदे हासिल होंगे, (१) संशय और ग़लती और भरम दूर होवेंगे, (२) फ़िज़ूल तरंगें और दुनिया के सामान में पकड़ हलकी होवेगी, (३) सतसंग करने वाले की समझ और बूझ बढ़ेगी, (४) प्रीत और प्रतीत कुल्ल-मालिक और सतगुरु के चरनों में पैदा होकर बढ़ती जावेगी, (५) भेद रास्ते का और जुगत उसके तै करने और कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँचने की दरियाफ़्त होवेगी, (६) दुनिया की असलियत और उसकी नाशमानता और धोखे की जगह होने की ख़बर पड़ेगी, (७) अंतर अभ्यास और रास्ता तै करने में मदद मिलेगी, (८) जब बचन सुन कर और अन्तर अभ्यास करके मन और बुद्धि निर्मल होवेंगे, तब सतसंगी जीव की रहनी भी दुरुस्त होती जावेगी और परमार्थी रंग चढ़ता जावेगा, (९) सुरत शब्द मार्ग का निश्चय आवेगा और अभ्यास दुरुस्ती से बन पड़ेगा और अन्तर में कुछ रस भी मिलता जावेगा, (१०) राधास्वामी दयाल के दर्शन की उमंग और शौक़ पैदा होकर बढ़ेंगे, (११) मन के विकारी अंग घटते जावेंगे, और (१२) निर्मलता और सकारी यानी शुभ अंग पैदा होते जावेंगे।।

३ - ख़ुलासा यह है कि जो कोई सच्चा दर्द और सच्ची तलाश लेकर संत सतगुरु के सतसंग में शामिल

होवेगा, उसकी हालत चंद रोज़ में बदलनी शुरू होगी, यानी(१)अंग (२)ढंग (३)संग और (४)रंग बदल जावेंगे, यानी (१) अंग दीन और प्रेमी जैसा सच्चे परमार्थी का चाहिये हो जावेगा और दुजन्मा तिजन्मा चौजन्मा और पचजन्मा यानी पशु से मनुष्य और फिर देवता और ईश्वर कोटि और फिर हंस और परम हंस यानी संत गति को प्राप्त हो जावेगा, (२) ढंग और स्वभाव बजाय संसारी के भक्तों का सा हो जावेगा, (३) संग संसारी और कपटी और अहंकारियों का छूट कर प्रेमी और सज्जनों का प्राप्त होगा और (४) संसारी मलीन रंग उतरता और निर्मल प्रेम का रंग चढ़ता जावेगा।।

४ - जिस किसी के मन में सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा शौक़ पैदा हुआ है, वह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग पाकर और उनके बचन बिलास सुन कर और रात दिन की रहनी और बर्तावा निरख परख कर, ज़रूर अपनी संसारी समझ बूझ और रहनी और हालत पर अफ़सोस करके उनको बदलना शुरू करेगा और अंतर अभ्यास की मदद से वह नई हालत और रहनी उसकी मज़बूत और क़ायम होती जावेगी।।

५ - जो कोई कि सतसंग में शामिल होते हैं, पर चित्त देकर बचन नहीं सुनते और न उनके मानने का इरादा रखते हैं, उनका स्वभाव और रहनी और समझ बूझ जैसा कि चाहिये, नहीं बदलेगी और संसारी आदतें और स्वभाव ज़बर रहे आवेंगे और बर्तावा उनका सतसंग में, विशेष करके, संसारियों का सा रहेगा और भक्ति अंग और कार्रवाइयों में ऊपरी बर्तेंगे।।

६ - इस क़िस्म के आदमी जब सतसंग में कोई ज़बर काम या रीत प्रेम और भक्ति की बर्तते देखते हैं, उसकी उनको बरदाश्त नहीं होती क्योंकि उनके हृदय में उस दरजे का प्रेम नहीं है लेकिन सतसंग में कुछ बोल नहीं सकते, पर बाहर निकल कर दुनियादारों के सामने, जिन के साथ उनका ज़बर मेल रहा आता है, उस चाल ढाल की बुराई और निंदा करते हैं और प्रेमियों को नादान और बेहोश समझते हैं, बल्कि सतगुरु को भी दोष लगाते हैं कि वे प्रेमियों को ऐसी कार्रवाई से क्यों नहीं रोकते और उनके साथ बाज़ी २ कार्रवाई में आप भी क्यों शामिल हो जाते हैं।।

७ - इसी सबब से बुद्धिवान और विद्यावान जो कि अहंकारी और असल में निपट संसारी होते हैं, और मालिक के चरनों के प्रेम से ख़ाली, सन्तों और उनके प्रेमी जनों के सतसंग में शामिल होने के क़ाबिल नहीं समझे जाते हैं, क्योंकि वह अपनी ओछी और संसारी मलीनता की सनी हुई बुद्धि से, सतसंग की कार्रवाई और भक्ति अंग के बर्ताव को देख कर ताने मारते हैं और प्रेमियों को नादान या अज़-ख़ुद-रफ़्ता समझते हैं और सिर्फ़ गुफ़्तगू ज़बानी या पोथी के पाठ को या अभ्यास करने को परमार्थी कार्रवाई समझते हैं, और इस बात से बे-ख़बर हैं कि जब तक मन और इन्द्रियाँ निर्मल और निश्चल न होवेंगी तब तक जो कुछ ऊपर की लिखी हुई परमार्थी कार्रवाई उन से बनेगी, वह ऊपरी होगी और जब तक प्रेम मन में न आवेगा, तब तक असर उस कार्रवाई का क़ायम नहीं रहेगा और न सुरत यानी रूह तक पहुँचेगा और यह प्रेम और निर्मलता सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा और भजन और

भक्ति अंगों में बर्ताव करने से हासिल होवेंगे और तब भजन और अभ्यास भी दुरुस्ती से बन पड़ेगा और मन के बिकारी अंग भी दूर होवेंगे।।

८ - विद्यावान और बुद्धिवान और ज़ात पाँत और बड़े घराने और धन के अभिमानी लोग जो कभी इत्तिफ़ाक़ से सन्तों के सतसंग में शामिल भी हो जावें तो वह चाहे जिस क़दर सतसंग और अभ्यास करें, उनकी हालत सिवाय ज़ाहिर में बातें बनाने के अन्तर में बहुत कम या बिलकुल नहीं बदलेगी क्योंकि कुल्ल कार्रवाई उनकी मान और अहंकार लिये हुए होवेगी और उनके मन में सच्ची दीनता और सच्चा भाव और प्यार सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में और भी प्रेमी जनों में कभी नहीं आवेगा। इसी वजह से वे लोग हमेशा ख़ाली रहेंगे, बल्कि मान और अहंकार ज़्यादा हो जावेगा। लेकिन इस क़िस्म के लोगों का सतसंग में ठहरना मुश्किल है, उन से प्रेमियों की हालत नहीं देखी जा सकती है, और न प्रेमियों के भक्ति अंग की कार्रवाई की बरदाश्त हो सकती है।।

९ - सच्चे प्रेमी का विद्यावान और बुद्धिवान और मानी और अहंकारी लोगों से मेल और मुहब्बत बहुत कम यानी सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ क़ायम रहेगी और उसकी नज़र में दुनिया और उसके सामान और उसके बड़े आदमियों की इज़्ज़त और क़दर दिन-दिन घटती जावेगी और उनका संग करने में अपना नुक़सान और अकाज मालूम पड़ेगा।।

१० - सच्चे और प्रेमी परमार्थी के मन में हमेशा यही चाह बनी रहेगी कि मन मत छोड़ कर जिस क़दर

जल्दी बन सके, गुरुमुख अंग में बर्ताव करूँ और कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और सतगुरु की मौज के साथ मुवाफ़क़त करूँ और रज़ा में बरतूँ और इस आशा के पूरन करने के वास्ते उसकी कोशिश बराबर जारी रहेगी।।

११ - सच्चे प्रेमी के मन और सुरत की चाल अन्तर में भी सहज बढ़ती जावेगी और प्रीत और प्रतीत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु के चरनों में दिन-दिन गहरी होती जावेगी और उनकी मेहर से एक दिन उसका काम बन जावेगा यानी धुर धाम में पहुँच कर अमर और परम आनन्द को प्राप्त होगा।।

१२ - कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जहाँ तक मुमकिन हो, सच्चे प्रेमी यानी गुरुमुख का संग करें और उसी के पैंतरों पर चलें यानी सन्त सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर, जिस क़दर बन सके सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर कमाई करें और उनके चरनों में थोड़ा बहुत प्रेम लावें, तो उनके जीव का भी गुज़ारा सहज में हो जावेगा।।

१३ - जो जीव कि संसारी परमार्थ कर रहे हैं यानी सिवाय राधास्वामी मत के, और मतों की चालों में चल रहे हैं और थोड़ा बहुत अभ्यास भी (जिसको वे अन्तर-मुख समझते हैं) करते हैं, उनको ख़बरदार किया जाता है कि उस कार्रवाई से सच्चा और पूरा उद्धार हासिल नहीं होगा और न घर की तरफ़ का रास्ता तै होगा, क्योंकि बिना सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास के यह रास्ता तै होना ना-मुमकिन है। और प्राणों का खींच कर चढ़ाना और रोकना ख़ास कर इस

वक़्त में किसी जीव से दुरुस्ती के साथ बनना ना-मुमकिन है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़दर तहक़ीक़ात उनको मंज़ूर है, राधास्वामी संगत में करके सुरत शब्द का अभ्यास जिस क़दर बने, जारी करें और अपना जनम सुफल करें। यानी सच्चे उद्धार के रास्ते पर आ जावें, नहीं तो जनम मरन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा।।

१४ - संसारी जीवों से भी दया करके कहा जाता है कि दुनिया के हाल पर नज़र करके और कुल्ल रचना की हालत डावाँडोल अन्स्थिर यानी नाशमान समझ कर, थोड़ी बहुत करनी राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़, वास्ते अपने आइंदे के फ़ायदे यानी जीव के कल्यान के लिये ज़रूर शुरू करें और इसी ज़िन्दगी में अपनी हालत बदलती हुई देखें, ताकि आइन्दा की बेहतरी का यक़ीन आ जावे और फिर थोड़ा बहुत शौक़ और उमंग के साथ कार्रवाई जारी करके, एक दिन परम धाम और परम आनंद को प्राप्त हो जावें।।

बचन दूसरा

दुनिया में जो कोई दुखिया होता है, वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके थोड़ी बहुत समझौती या शान्ति या मदद हासिल करता है। लेकिन जो वह संत सतगुरु के सन्मुख जावे और उनके बचन सुन कर थोड़ी बहुत उनकी

पहिचान करे तो उसको परम शान्ति प्राप्त हो सकती है और कोई अरसे के सतसंग और अभ्यास से दुख सुख के चक्कर और घेरे से निकल सकता है।।

१ - दुनिया में हर एक शख़्स अपने दुख और दर्द का हाल किसी अपने प्यारे के सामने कह कर अपने मन और चित्त को हलका करता है और जो मुमकिन होता है तो उस प्यारे से कुछ मदद वास्ते कम करने या दूर करने उस दुख के लेता है। लेकिन हमेशा हर हालत और हर सूरत में मदद या किसी क़िस्म की शान्ति नहीं मिलती और बाज़े ऐसे सख़्त दुख हैं कि वह किसी जुगत से दूर नहीं हो सकते।।

२ - लेकिन जो कोई सन्त सतगुरु या साध गुरू के सतसंग में जाकर अपना हाल अर्ज़ करे, तो वे अपने अमृत रूपी बचनों से थोड़ी बहुत शान्ति फ़ौरन बख़्शते हैं और जो सतसंग जारी रक्खे तो यक़ीन है कि किसी क़िस्म का दुख और क्लेश उसके हिरदे में न रहे और हर वक़्त थोड़ा बहुत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लौलीन रहे और संसार की तरफ़ से उदासीनता उसके मन में छाई रहे।।

३ - सन्त सतगुरु की ऐसी महिमा है कि जो उनके सतसंग में कोई सच्चा दुखिया या स्वार्थी आजावे और कोई काल हाज़िर रह कर चित्त देकर उनके बचन सुने, तो उनकी मेहर और दया से उसका दुख और कलेश भी दूर हो जावे और उसका मतलब भी या तो पूरा हो जावे या उसके मन से वह ख़्वाहिश बिल्कुल

दूर हो जावे और परमार्थ की दात मुफ़्त में अलावा इसके बख़्शिश मिले।।

४ - सन्तों का परमार्थ बहुत भारी है और हर किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। जिन पर धुर की मेहर है, वही सन्तों के सन्मुख आते हैं और प्रीत के साथ उनके सतसंग में ठहर सकते हैं। हर एक जीव की ताक़त नहीं है कि सतसंग में ठहर सके।।

५ - सन्तों के सतसंग में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और उनके निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल वर्णन किया जाता है और जुगत चलने की सुरत शब्द मार्ग के वसीले से बराबर प्रकट करके सुनाई जाती है और दुनिया और दुनियादारों के परमार्थ का हाल भी खोल कर समझाया जाता है कि जिससे जीवों की आँख खुलती जाती है और सच्चे मालिक से मिलने का सच्चा रास्ता मालूम होता है।।

६ - जो जीव कि सच्चा दर्द अपने निज घर में यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने का रखते हैं और संसार और उसके सामान से किसी क़दर सेरी और उदासीनता मन में पैदा हुई है, वे ही सन्तों के बचन को आदर भाव के साथ सुनेंगे और जहाँ तक मुमकिन होगा, उनकी दया का बल लेकर, उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करेंगे।।

७ - जिन जीवों के हृदय में परमार्थ का ख़ास शौक़ नहीं है, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से सन्तों के सतसंग में आ जावें, तो कोई दिन क़ी हाज़िरी के बाद उनके दिल में सच्चे परमार्थ का सच्चा शौक़ पैदा हो जावेगा और फिर वे मुवाफ़िक़ और प्रेमी जन के भक्ति के अंगों में बर्ताव

करेंगे और उपदेश लेकर अन्तर अभ्यास में भी लग जावेंगे। इस तरह उनके जीव का कारज भी सहज में बन जावेगा।।

८ - ख़ुलासा यह है कि सन्त सतगुरु के दर्शन और सतसंग की बड़ाई और महिमा कोई वर्णन नहीं कर सकता है, यानी जो जीव साधारण तौर पर उनके सन्मुख आ जावेंगे, उनके भी उद्धार का सिलसिला जारी हो जावेगा और चौरासी का चक्कर बन्द होकर उनको बराबर नर देही मिलेगी, जब तक कि वे सत्तलोक में न पहुँचें। जब कि आम जीवों पर सन्त सतगुरु ऐसी दया फ़रमाते हैं, तो फिर सच्चे परमार्थियों की हालत और बख़्शिश का, जिस क़दर कि उनको मिलेगी, क्या बयान हो सकता है ? यानी वे जीव जल्द माया के घेर से निकाल कर दयाल देश में पहुँचाये जावेंगे और उनके कर्म बहुत जल्द काट कर निर्मल कर लिये जावेंगे। यह फ़ायदा नित्त के सतसंग और अन्तर्मुखी सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से हासिल होवेगा।।

९ - सुरत शब्द मार्ग से मतलब यह है कि रूह यानी जीव आत्मा को बाहर से उसका रुख़ फेर कर शब्द की धुन में जो हरदम घट-घट में हो रही है, लगावें और उसको सुनते हुए ऊपर को चढ़ाना यानी जिस मुक़ाम से आवाज़ आ रही है, वहाँ पहुँचाना।।

१० - शब्द की धुन से मतलब चैतन्य की धार से है जो कि आदि में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली और नीचे उतर कर कई ठेके यानी मंज़िलों पर ठहरती हुई और मंडल बाँध कर रचना

करती हुई, इस लोक में और पिंड में आई है। आदि में शब्द प्रकट हुआ यानी जो चैतन्य धार कुल्ल-मालिक के चरनों से निकली, उसके साथ आवाज़ हुई और वही धार और आवाज़ कुल्ल-रचना की करतार है। इस वास्ते जो कोई आवाज़ को पकड़ कर अन्तर में चलेगा वही धुर धाम में पहुँचेगा।।

११ - शब्द के बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अन्धेरे में प्रकाश करने वाला नहीं है और शब्द ही ज़हूरा और निशान कुल्ल-मालिक यानी चैतन्य का है। इसी वजह से शब्द सबको प्यारा लगता है और शब्द ही से कुल्ल रचना की कार्रवाई और जीवों के कारोबार जारी हैं।।

१२ - कुल्ल-मालिक का स्वरूप शब्द है और जितने पद यानी स्थान रचे गये हैं, जैसे सत्त नाम और ब्रह्म व पार-ब्रह्म और आत्मा और परमात्मा वग़ैरा सब शब्द स्वरूप हैं और कुल्ल जीव भी शब्द स्वरूप हैं। इस सबब से बग़ैर शब्द की उपासना और ध्यान के, कोई रास्ता तै करके निज घर में नहीं पहुँच सकता है।

१३ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना पूरा और सच्चा उद्धार चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि बाहर सन्त सतगुरु का सतसंग और उनके चरनों में सेवा और प्रीत करें और अंतर में शब्द गुरू के चरनों में जो सन्त सतगुरु का निज रूप है, प्रीत लाकर अभ्यास शब्द के सुनने का करें, तब काम दुरुस्त बनेगा।।

* * * * * *

बचन तीसरा

जो कोई तीनों गुन यानी सत, रज, तम के चक्कर और घेर में रहकर परमार्थ की कार्रवाई करे, तो वह किसी न किसी स्थान पर माया के घेर में रहेगा। लेकिन जो प्रेम और भक्ति के साथ संत सतगुरु से उपदेश लेकर करनी करेगा, तो उसको संतों का सिद्धान्त पद यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का धाम एक दिन प्राप्त हो सकता है।

१ - जिन मतों का सिद्धान्त माया के घेर में है, उन मतों के पैरोकार यानी मानने वाले हमेशा माया के घेर में रहेंगे।।

२ - जो कोई उन में से अभ्यास अन्तरमुख वास्ते प्राप्ति अपने मत के सिद्धान्त पद के करेंगे, वे कुछ काल सुख स्थान में बासा पावेंगे, लेकिन जनम मरन का चक्कर चाहे बहुत देर के बाद होवे, नहीं छूटेगा। और बाक़ी जीव जो सिर्फ़ टेकी होंगे और कुछ अभ्यास अन्तरमुख वास्ते समेटने और चढ़ाने मन और सुरत या प्राण वग़ैरा के नहीं करेंगे, वे अपने कर्म अनुसार नीचे ऊँचे लोक और जोन में बासा पावेंगे और इनका जनम मरन, ब-निस्बत अभ्यासी जीवों के जल्द होता रहेगा।।

३ - मालूम होवे कि जहाँ तक तीन गुन और पाँच तत्त्व की दौड़ है, वहाँ तक माया का घेर है, चाहे अति सूक्ष्म होवे और चाहे महा स्थूल। इस वास्ते ऐसा जतन

करना मुनासिब है कि जिससे सुरत इस घेर के पार पहुँचे और वह जतन सुरत शब्द का अभ्यास है।।

४ - इस अभ्यास का उपदेश सिर्फ़ राधास्वामी मत में (जो कि सन्त मत है) जारी है। जो कोई उसकी कमाई करेगा, वह एक दिन माया के घेर से निकल जावेगा।।

५ - राधास्वामी मत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने आप सन्त सतगुरु रूप धारन करके जारी फ़रमाया है और उसमें मुफ़स्सिल भेद रास्ते और मंज़िलों का मय शब्द हर एक मुक़ाम के, खोल कर सिलसिलेवार वर्णन किया है और जुगत अभ्यास की दया करके ऐसी आसान करदी है कि जिसको लड़का जवान बूढ़ा और स्त्री और पुरुष बे-तकलीफ़ सहज में कमा सकते हैं और वास्ते दुरुस्ती से करने इस अभ्यास के कोई ज़रूरत घर बार और रोज़गार छोड़ने की नहीं है यानी गृहस्थ में बैठ कर यह अभ्यास दुरुस्ती से बन सकता है, बशर्ते कि थोड़ा शौक़ दर्शन मालिक कुल्ल और जीव के कल्यान का दिल में मौजूद होवे।।

६ - राधास्वामी मत में जो अभ्यास मुक़र्रर है, वह अपने घट में करने का है। बाहरमुख कार्रवाई सिवाय सतगुरु और प्रेमीजन के सतसंग और बानी के पाठ के किसी क़िस्म की जारी नहीं है।

७ - अन्तरमुख कार्रवाई दो क़िस्म की है, एक मन और सुरत का समेटना और जमाना सुरत के असली मुक़ाम पर पिंड में और दूसरे चढ़ाना मन और सुरत का शब्द को सुनकर। पहिली कार्रवाई को सुमिरन और

ध्यान कहते हैं और दूसरी को भजन। इन दोनों की तरकीब उपदेश के वक़्त समझाई जाती है।।

८ - राधास्वामी मत में प्रेम की मुख्यता है यानी जब तक कि परमार्थी के हृदय में थोड़ा बहुत प्रेम कुल्ल-मालिक के चरनों का और सन्त सतगुरु में न होगा, तब तक सतसंग बाहर का और शब्द का अभ्यास अन्तर में दुरुस्ती से नहीं बनेगा।

९ - राधास्वामी दयाल की बानी और बचन में बराबर प्रेम की महिमा और प्रेम की हालत का अपने-अपने दरजे के मुवाफ़िक़ ज़िक्र है। उसके पढ़ने और सुनने से थोड़ा बहुत प्रेम हृदय में जागता है और ज़्यादातर सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा से, और भी सच्चे प्रेमियों की हालत और भक्ति की कार्रवाई देख कर, प्रेम बढ़ता है और दिन-दिन नवीन शौक़ पैदा होता है।।

१० - जिस मत में कि मालिक के चरनों का प्रेम नहीं है, वह मत ख़ाली है और जिस घट में कि प्रेम नहीं, वह भी ख़ाली है।

११ - बग़ैर प्रेम या शौक़ के कोई शख़्स कुछ काम संसारी या परमार्थी नहीं कर सकता और न बग़ैर प्रेम के किसी के हृदय में पूरी सफ़ाई हो सकती है।

१२ - मालिक के चरनों का प्रेम बड़ी भारी दौलत है। जिस किसी को यह दौलत थोड़ी सी भी मिली, वही मालिक का मंज़ूर नज़र हो गया और उसी का परमार्थी भाग जागा और उद्धार का रास्ता जारी हुआ।।

१३ - जहाँ प्रेम है, वहाँ हमेशा ख़ुशी और आनन्द है और जहाँ प्रेम की हानि है, वहाँ सदा दुख और क्लेश और विरोध का बासा है।।

१४ - जहाँ सच्चा प्रेम है, वहीं सच्ची दीनता और सेवा है और वहीं हर तरह की ताक़त और शक्ति हर वक़्त मौजूद है।।

१५ - माया और माया के पदार्थ सुरत और मन की धार को अपनी तरफ़ खैंच कर सोख जाते हैं और जो उनमें प्रीत आती है, उसका नाम मोह है। यह परमार्थ की तरफ़ से हटाने वाला और माया के जाल में फँसाने वाला है।।

१६ - मान और अहंकार और ईर्षा परमार्थी प्रेम के सुखाने वाले हैं और क्रोध और विरोध को पैदा करते हैं। सच्चे परमार्थी को इन विकारों से बचते रहना चाहिये।।

१७ - यह प्रेम कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दात है। जिस किसी को वे दया करके इसका किनका बख़्शें, वही जीव बड़ भागी है और उसी से सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास आसानी से बन पड़ेगा।।

१८ - इस वास्ते सब जीवों को लाज़िम है कि पहिले संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों का खोज लगावें। जब वे मिल जावेंगे तो सब काम परमार्थ का आहिस्ते आहिस्ते बन जावेगा।।

* * * * * *

बचन चौथा

आदि में शब्द प्रकट हुआ। शब्द से ही कुल्ल रचना हुई और शब्द ही सब की रक्षा और सम्हाल कर रहा है। शब्द से ही सब कारज सिद्ध होते हैं।।

१ - आदि में शब्द प्रकट हुआ और शब्द से ही कुल्ल रचना हुई यानी जैसे कि शब्द की धार उतर कर रास्ते में जगह जगह ठहरती और मंडल बाँध कर रचना करती आई, वैसे ही रचना का विस्तार होता गया।।

२ - पहिले दरजे में हंस और परम हंस और दूसरे दरजे में ब्रह्म-सृष्टि यानी ईश्वर कोटि और तीसरे दरजे में देवता और मनुष्य और चार खान की रचना हुई।।

३ - शब्द से मतलब उस आवाज़ से है जो चैतन्य की धार के साथ हो रही है। वही आवाज़ हुक्म और नाम और आकाशबानी और आवाज़े-आसमानी और कलामे-इलाही यानी मालिक की आवाज़ कहलाती है।।

४ - इस आवाज़ का बहुत भारी असर है यानी वही चैतन्य की शक्ति और उसका ज़हूरा और निशान है। जहाँ शब्द है, वहीं चैतन्य प्रकट है और जहाँ शब्द गुप्त है, वहाँ चैतन्य भी गुप्त है।।

५ - हर एक मुक़ाम का शब्द उस लोक या मंडल की रचना में व्यापक है और उसी के असर से कुल्ल कार्रवाई उस लोक या मंडल की रचना की जारी है।।

६ - बच्चा जब पैदा होता है, तब वह अपने हम-जिन्स यानी माता पिता भाई बहिन और कुल कुटुम्बी और रिश्तेदार और दोस्त आशना और बिरादरी वग़ैरा का शब्द सुन कर, उन्हीं के मुवाफ़िक़ कार्रवाई सीखता और करता है। इसी तरह जानवरों के बच्चे भी अपने माँ बाप और हम-जिन्स की बोली सुन कर सीखते हैं और उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करते हैं।।

७ - अब समझना चाहिए कि माँ बाप का शब्द सुन कर और मान कर, बच्चे क़ाबिल इसके होते हैं कि उस्ताद के पास जाकर उसका शब्द सुनें और मानें ताकि विद्या अच्छी तरह आ जावे और बुद्धि जाग उठे।।

८ - इसी तरह जिस किसी ने उस्ताद के शब्द को चित्त से सुना और माना, वह पढ़ लिख कर होशियार और क़ाबिल इस बात के हो गया कि राजा और हाकिम का संग करके बन्दोबस्त देशों और बहुत से जीवों का कर सके और मुल्क का और घरों का इन्तज़ाम इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ दुनिया में जारी है।।

९ - इसी तरह इन लोगों में से जो कोई सच्चे गुरु के सतसंग में गया और उनका बचन सुना और माना, वह प्रेम की दौलत पाने का मुस्तहक़ हुआ यानी दिन दिन प्रीत और प्रतीत उसकी मालिक के चरनों में बढ़ती जावेगी और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके, जिस क़दर फ़ासला कि मा-बैन इस जीव और कुल्ल-मालिक के धाम के वाक़ै है, तै होता जावेगा यानी एक दिन वह ऊँचे से ऊँचे देश में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होगा और काल और माया के जाल

से निकल कर, कष्ट और क्लेश और जनम मरन और दुख सुख से क़तई छुटकारा उसका हो जावेगा।।

१० - सुरत शब्द के अभ्यास से मतलब यह है कि अंतर में ऊँचे देश के चैतन्य का शब्द सुनता हुआ अभ्यासी निज धाम में जहाँ से कि आदि में शब्द प्रकट हुआ, पहुँच जावे यानी शब्द की डोरी को पकड़ कर एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम पर चढ़ता चला जावे।।

११ - हर जगह रचना में कार्रवाई शब्द यानी चैतन्य की है। शब्द से ही प्रेम और ज्ञान यानी समझ बूझ और प्रीत प्रतीत हासिल होती है और शब्द से ही ईर्षा विरोध और विकारी अंग पैदा होते हैं, क्योंकि कुल्ल रचना दयाल और काल की शब्द ही के वसीले से पैदा हुई है और जारी है।।

१२ - जिस किसी का मन दुनिया का हाल नाशमानता का देख कर ठंडा हुआ है और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बच कर परम आनंद के धाम में विश्राम चाहता है, उस को मुनासिब है कि संत सतगुरु की सरन लेकर उनके सतसंग में शामिल होवे और काल और दयाल का भेद समझ कर काल अंग और काल देश को त्यागता हुआ दयाल देश की ओर चले और दयाल शब्द की डोरी पकड़ कर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के निज धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे यानी इस लोक के शब्द को जो माया के पदार्थों में लुभाने वाला और फँसाने और अटकाने वाला है, छोड़ कर दयाल देश यानी अपने निज घर की सुध लेकर माया के घेर से निकलने का

जतन शुरू कर देवे तो संत सतगुरु की मेहर से एक दिन निज धाम में बासा पा जावेगा।।

१३ - मालूम होवे कि हर मुक़ाम और हर एक हालत और सूरत में कुल्ल कार्रवाई शब्द की है, चाहे दयाल का होवे या काल का। इस वास्ते सच्चे परमार्थी लोगों को चाहिये कि शब्द २ का भेद समझ कर और मन और माया की कार्रवाई से बच कर दयाल देश में पहुँचने का इरादा करें।।

१४ - दयाल देश में पहुँचाने वाली धार जुदी है और काल देश में भरमाने और भटकाने वाली धार जुदी है। इनका भेद संत सतगुरु के सतसंग में मिलेगा और उन्हीं की मेहर और दया से जीव काल और माया के जाल से निकल कर पार जावेगा। और कोई जतन और जुगत बचने की नहीं है।।

१५ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि पहले खोज सन्त सतगुरु या उनकी संगत का करके उसमें शामिल होवें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, तब उनका काम आहिस्ते २ संत सतगुरु की मेहर से बन जावेगा, नहीं तो माया के घेर में पड़े रहेंगे और चौरासी में भरमते रहेंगे।।

* * * * * *

बचन पाँचवाँ

सुरत का जगत में उतार और फँसाव और जुगत उस के उद्धार यानी चढ़ाव की घर की तरफ़।।

१ - आदि में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से शब्द की धार प्रकट हुई। उसी धार का नाम आदि सुरत है। यह धार जगह २ मंडल बाँध कर रचना करती हुई नीचे उतरी और तीसरे दरजे यानी मलीन माया के देश में पिंड के नाके पर जिसको छठा चक्र और तीसरा तिल कहते हैं, ठहरी और फिर वहाँ से एक धार नीचे के चक्रों में उतर कर गुदा चक्र के स्थान पर ठहरी और दो धारें दोनों आँखों में आईं और वहाँ बैठ कर देह और दुनिया का काम देने लगीं और इन्द्रियों द्वारा भोगों और अनेक पदार्थों में रसी और फँसी।।

२ - जो कि क़ानून क़ुदरत का सब जगह यकसाँ जारी है, इस वास्ते बाहर और पिंड के अंदर रचना एक ही तौर पर हुई और सुरतें इस लोक में देहियों में बस कर, कुटुम्ब परिवार और अनेक भोगों और पदार्थों में फँस गईं और जहाँ २ उन के मन का बंधन हो गया, वहाँ से दुख सुख का भोग करने लगीं।।

३ - जहाँ मन की प्रीत या तवज्जह होती है, वहीं इसकी धार आती जाती है और जब २ उसके प्यारे जीव या वस्तु में कुछ ख़लल या बदल पैदा होता है उस वक़्त जो वह मन के मुआफ़िक़ है तो सुख और ना-मुआफ़िक़ है तो दुख मालूम होता है। और जहाँ मन की तवज्जह और लाग नहीं है या पहिले थी और फिर

हट आई, वहाँ चाहे जैसी हालत बदले उसका असर कुछ नहीं मालूम होता।।

४ - इससे ज़ाहिर है कि जिस क़दर मन के बंधन या मोह या पकड़ें हैं, उसी क़दर उसकी लाग या मानन के मुवाफ़िक़ हालत बदलने पर, एक दूसरे को दुख या सुख का असर पहुँचता है यानी विशेष करके इस दुनिया में दुख सुख मानन का है।।

५ - कुल्ल जीव अपने रोज़मर्रा के बर्ताव से इस बात की जाँच कर सकते हैं कि संसार में दुख सुख का भोग विशेष करके मन के मानन का है यानी जहाँ २ और जिस २ में मन की लाग या बंधन है, सो जब २ वहाँ और उस में किसी क़िस्म की नई हालत पैदा होवे कि जिस के सबब से दुख या सुख व्यापे, तो प्रीत करने वाले को भी उसी क़िस्म का दुख सुख व्यापेगा और हाल यह है कि लगन वाले की देह या सामान में किसी क़िस्म का हर्ज मर्ज़ वाक़ै नहीं हुआ, वह हालत उसी शख़्स या चीज़ पर गुज़री कि जिस में उसकी लाग थी।।

६ - देह का दुख सुख असली माना जाता है मगर जो ग़ौर करके देखा जावे तो यह भी जिस क़दर मन की धार उस अंग में आती जाती है, उसी क़दर उस अंग में लाग है और उसी क़दर वक़्त तकलीफ़ या आराम के उसका दुख सुख मन और सुरत को व्यापता है यानी यहाँ भी बहुत से मुआमलों में दुख सुख मानन ही का है। जैसे एक शख़्स बुख़ार या कोई और बीमारी से बीमार है और चारपाई में पड़ा हुआ है, लेकिन इसी वक़्त उसके किसी ख़ास प्यारे की तबीअत सख़्त

बीमार हो गई, तो उस वक़्त वह शख़्स अपनी बीमारी को भूल कर फ़ौरन उठ बैठता है और अपने प्यारे के मुआलजे में तवज्जह और मदद करता है। सख़्त बीमारी या निहायत दरजे की ज़ोफ़ की हालत में शायद यह बात किसी किसी से जिसका बंधन देह में विशेष है, न बन पड़े।।

७ - सिवाय इस के ऐसी सूरत में कि जब किसी का कोई मतलब ख़ास या काम बनता होवे या कोई सख़्त तकलीफ़ और बला दूर होनी मुमकिन होवे, तो जो कोई तकलीफ़ कम दरजे की आन कर पड़े तो लोग उसकी सहज में बरदाश्त करते हैं और कोई शिकायत किसी क़िस्म की नहीं करते या कोई शख़्स कुछ बीमार है और उस पर सख़्त और भारी मुसीबत या सदमा नाज़िल होवे, तो अपनी बीमारी को फ़ौरन भूल कर, उस सदमे के रंज में शामिल और गिरिफ़्तार हो जाता है। इन सब सूरतों में साफ़ नज़र आता है कि दुख सुख मन का मानन है और मन की धार के लाग और बंधन का नतीजा है और जब जहाँ से लाग घट गई या दूर हो गई यानी मन का बंधन नहीं रहा और धार की आमद-रफ़्त मौकूफ़ होगई या कि तवज्जह दूसरी तरफ़ हो गई, फिर वहाँ कैसा ही दुख या सुख पैदा होवे, उसका असर प्रीत और लाग छोड़ देनेवाले शख़्स को बिल्कुल नहीं पहुँचता।

८ - और भी देखने में आता है कि जब किसी के मन की धार को जो एक तरफ़ जा रही है, बदल दिया जावे, तो फ़ौरन उसकी हालत भी बदल जाती है। जैसे कोई बालक खेलते हुए गिर पड़ा और ख़फ़ीफ़ चोट भी आई और रोने लगा, माँ बाप ने फ़ौरन कोई खिलौना

या बाजा उसको दिखला कर उसकी तवज्जह या धार को खींच लिया, तब फ़ौरन रोना बन्द हो गया और उस खिलौने या बाजे को देख कर बालक मगन हो गया।।

९ - इसी तरह जब कोई शख़्स फ़िक्र या रंज या चिन्ता में बैठा हुआ है और उसी वक़्त कोई ख़ास ख़ुशी की ख़बर आई तो वह फ़ौरन उस दुख या चिन्ता को भूल जाता है और ख़ुशी मनाता है यानी मन की धार फ़ौरन बदल जाती है और उसी मुवाफ़िक़ लाग का भी फल बदल जाता है।।

१० - अब ग़ौर करना चाहिये कि इस दुनिया में सब जीवों की लाग कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और अनेक तरह के दुनिया के सामान में हो रही है और यह सब नाशमान हैं यानी हमेशा बदलते रहते हैं। फिर जो कोई इन में प्रीत करेगा, जब २ उनकी हालत बदलेगी या अभाव हो जावेगा, तब तब उस शख़्स को अपनी लगन यानी मन की धार के मुवाफ़िक़ सुख या दुख व्यापेगा।।

११ - अक़लमंद और विचारवान को चाहिये कि ऐसे पद या वस्तु में चित्त लगावे कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहे और जिससे मेल करने से दम दम रस और आनन्द और शौक़ बढ़ता जावे और एक दिन उससे मिलने या उसके निकट पहुँचने पर महा चैतन्य, महा प्रेम, महा आनन्द और महा सुख का भंडार खुल जावे और जिसकी तरफ़ तवज्जह करने से दुनिया और देह के दुख सुख आहिस्ते २ बिसरते जावें।।

१२ - ऐसा पद कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनका धाम है जो सब रचना के परे और निर्मल

चैतन्य देश है और जो कि सब जीव आदि में उसी पद से आये हैं, इस वास्ते जब तक कि अपने निज घर में उलट कर न जावेंगे, तब तक सच्चा और हमेशा का सुख प्राप्त नहीं होगा।।

१३ - जो कि कुल्ल रचना की कार्रवाई धारों के साथ है और देहियों की कार्रवाई भी मन और इन्द्रियों की धार के साथ होती है, इस वास्ते जिस कार्रवाई के फल या नतीजे को बदलना मंज़ूर है, तो उस धार का जिसके वसीले से वह कार्रवाई होती है, रुख़ बदलना चाहिये।

१४ - इस दुनिया में कुल्ल कार्रवाई जीवों की मन और इन्द्रियों की धार के वसीले से होती है और जोकि यह सब रचना बाहर है, इस वास्ते सब धारों का रुख़ बाहर की तरफ़ है और इनकी कार्रवाई से दुख सुख का फल मिलता है और जो इससे बचना मंज़ूर है तो इन धारों का रुख़ बदलना चाहिये यानी अन्तर में अपने घर की तरफ़ मोड़ना चाहिये क्योंकि वह घर सुख का भण्डार है और जो सुरत की धार वहाँ से आई है, वह भी सुख और आनन्द स्वरूप है। जो धार का रुख़ अन्तर में ऊपर की तरफ़ मोड़ा जावे तो जिस क़दर चाल चलेगी, ज़्यादा से ज़्यादा सुख मिलता जावेगा और एक रोज़ महा सुख के भण्डार में पहुँच कर हमेशा को विश्राम मिलेगा।।

१५ - इस बात का इम्तिहान अपनी हालत की जाँच से हो सकता है यानी एक उस हालत को देखो कि जब धारें मन और इन्द्रियों की बाहर के कामों में बिखर रही हैं और दोनों क़िस्म की कार्रवाई एक मन के

मुवाफ़िक़ और दूसरी ना-मुवाफ़िक़ जारी है और दूसरी हालत को परखो कि जो इन धारों का रुख़ फेरने और मन और सुरत की धार के साथ शामिल करके अन्तर में ऊपर की तरफ़ चढ़ाने से पैदा होती है। पहिली हालत में दुख सुख का भोग होता है और दूसरी हालत आनन्द और सरूर की है जो स्वरूप या रोशनी का दर्शन करके और शब्द को सुन कर हासिल होती है।।

१६ - जो कोई इस तरह पर धार को बदलने की तरकीब जानता है और उसका अभ्यास करता है, वह संसार और उसके दुख सुख से जब चाहे अपना थोड़ा बहुत बचाव कर सकता है और अन्तरी आनंद ले सकता है। इसी का नाम सच्चा परमार्थ है यानी देह और दुनिया के बन्धन और दुख सुख से आहिस्ते आहिस्ते छुटकारा होना और घट में आनन्द का प्राप्त होना।।

१७ - यह परमार्थ सब जीवों को कमाना चाहिये, बग़ैर इसके किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा। इसके सिवाय जितनी कार्रवाई परमार्थ के नाम से संसार में जारी है और जिसका ताल्लुक़ अन्तर सुरत और शब्द की धार से नहीं है, चाहे वह किसी क़िस्म की मुद्रा या प्राणायाम का ही साधन होवे, शुभ कर्म का फल यानी कोई अरसे तक सुख देवेगी, लेकिन घर की तरफ़ चाल नहीं चलेगी और न उद्धार की सूरत नज़र आवेगी।।

१८ - यह निर्मल और सच्चा परमार्थ सिर्फ़ सन्त सतगुरु या उनके सच्चे और प्रेमी सेवक से मिल सकता है और आज कल उसकी कार्रवाई राधास्वामी

मत की संगत में, जहाँ तहाँ, बहुत आसान तौर के साथ जारी है। और किसी मत में उसका भेद और तरीक़ा अभ्यास का ज़िक्र भी नहीं है, बल्कि कुल्ल मत वाले बाहरमुखी परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं, जो कि शुभ कर्म में दाख़िल है।।

१९ - राधास्वामी मत में सच्चे और कुल्ल-मालिक का भेद और उसके धाम की महिमा और वहाँ से सुरत की धार का उतार माया देश में मय शरह स्थानों के जहाँ-जहाँ वह रास्ते में ठहरती और मंडल बाँध कर रचना करती आई है, मुफ़स्सिल बयान किया है और इसी तरह से सुरत के उलटाने का तरीक़ा बहुत आसान जुगत यानी शब्द मार्ग के वसीले से (जिसको लड़का, जवान, बूढ़ा, औरत और मर्द, गृहस्थ और विरक्त बिला किसी क़िस्म की तकलीफ़ या ख़तरे के कमा सकते हैं) उपदेश किया है।।

२० - जो कोई सच्चा परमार्थी प्रेम और दर्द लेकर राधास्वामी मत में शामिल होवे और भजन और ध्यान का अभ्यास करे तो उसको बहुत जल्द अपने अन्तर में, थोड़ा बहुत रस और परचा मिल सकता है कि जिससे उसको इस बात का निश्चय हो जावेगा कि इसी अभ्यास से उस का काम दुरुस्त बनेगा और एक दिन निज घर में पहुँच कर वहाँ विश्राम पावेगा और हमेशा के वास्ते सुखी हो जावेगा। इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के कल्याण के वास्ते, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की सरन लेकर राधास्वामी मत के अभ्यास में शामिल हों और सुरत शब्द मार्ग की कमाई जिस क़दर बन

सके, दिलो-जान से करें तो उनको चन्द रोज़ में ही बहुत कुछ तजरुबा इसी ज़िंदगी में हासिल होगा कि जिससे उनको पूरा यक़ीन हो जावेगा कि उनके उद्धार में क़तई शक नहीं है, चाहे दर्शन कुल्ल-मालिक का ज़िन्दगी में हासिल होवे या नहीं, पर उसका जलवा और प्रकाश और शब्द जो कि निज रूप का निशान है, ज़रूर नज़र आवेगा और सुनाई देगा और अख़ीर वक़्त पर मौज से सन्त सतगुरु आप दर्शन देकर अपने जीवों की सुरतों को गोद में बैठा कर सुख स्थान में बासा देंगे।।

बचन छठवाँ

दुनिया की मान बड़ाई और भोग बिलास देखकर हर कोई उनकी चाह उठाता है और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जतन करता है और उसमें थोड़ी बहुत कामयाबी होती है, लेकिन दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और अनेक तरह के दुक्ख और मौत सबके सिर पर खड़ी देख कर बहुत कम जीव ख़ौफ़ लाते हैं और इनमें से भी निहायत ही कम जीव कोई जतन अपने बचाव का करते हैं।।

१ - दुनिया में दौलत और लियाक़त और हुनर और गुन और हुकूमत और भोग बिलास वग़ैरा देखकर

उनकी चाह हर कोई उठाता है और उनके हासिल करने के वास्ते जतन करता है, जिसमें अक्सर थोड़ी बहुत कामयाबी भी होती है।।

२ - लेकिन बहुत कम ऐसे जीव हैं कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और अनेक तरह के दुक्खों की तकलीफ़ और सब के सिर पर मौत को खड़ा हुआ देखकर, ख़ौफ़ मन में लाते हैं और इनमें से भी निहायत कम ऐसे जीव हैं कि जो कुछ जतन जैसा कि अपने-अपने मत में जारी है, करने को तैयार होते हैं या दरियाफ़्त करके करते हैं।।

३ - पहिले तो कुल्ल जीवों की लाग और चाह मन और इन्द्रियों के भोगों में ज़बर धरी हुई है और उसके निमित्त जो जतन कर रहे हैं, उससे उनको फ़ुरसत ही नहीं होती कि दूसरे काम की तरफ़ मुतवज्जह होवें।।

४ - जब जब किसी को सख़्त दुखी देखा या सुना या कहीं कोई सख़्त सदमा या बला नाज़िल हुई या यकायक और बे-वक़्त या ग़ैर-मामूली मौत वाक़े हुई, तब कुछ मन में ख़ौफ़ आता है और इरादा भी करते हैं कि कोई जतन उनके दूर होने के वास्ते या उनका असर कम व्यापने के लिये करें। मगर जहाँ दो चार रोज़ गुज़रे और वह ख़ौफ़ हलका पड़ा, फिर कोई शख़्स ख़बर भी नहीं लेता कि वह जतन सच्चा क्या है और किससे दरियाफ़्त हो सकता है और कैसे उसकी कार्रवाई की जा सकती है।।

५ - बाज़े जीव जो भोले और थोड़े प्रेमी हैं, उनके दिल में दुनिया का नाक़िस और उलटा हाल देख कर सच्चा ख़ौफ़ पैदा होता है और वे वास्ते रफ़ा करने

उसके, अपने मज़हब के मामूली पेशवाओं से सलाह लेकर, मामूली कार्रवाई मुताबिक़ पुरानी चाल और दस्तूर के, जैसे नाम का सुमिरन ज़बान से और मानसी ध्यान बे-ठिकाने और दान, पुण्य और व्रत और तीर्थ और पोथियों का पाठ वग़ैरा करते हैं, पर ऐसी कार्रवाई करके ज़रा भी ग़ौर नहीं करते कि ज़िन्दगी में कुछ इसका फ़ायदा नज़र आया या नहीं और जो ज़िन्दगी में नहीं मालूम हुआ तो बाद मरने के उसके प्राप्ति की कैसे उम्मीद हो सकती है।।

६ - सबब इस भूल और ग़फ़लत का यह है कि जीवों की तबीअत का सर्व अंग करके झुकाव दुनिया की तरफ़ हो रहा है और उसके कारोबार के करने और सोचने और बिचारने से उनको बहुत कम फ़ुरसत मिलती है कि वे दूसरी बात का ख़्याल करें।।

७ - इस में कुछ शक नहीं कि दुख और मौत वग़ैरा का चक्कर हर रोज़ प्रत्यक्ष चल रहा है और हर एक जीव को अपनी मौत की याद दिलाता है, लेकिन यह याद भी रोज़मर्रा के हिसाब से साधारण हो जाती है और सिवाय दस पाँच मिनट के ज़्यादा देर तक उसका असर नहीं रहता।।

८ - जब कोई भारी वारदात या मुसीबत या मरी या सख़्त अकाल वाक़ै होता है, उस वक़्त जीवों के मन में भारी ख़ौफ़ और चिन्ता और फ़िक्र अपने २ बचाव की पैदा होती है और कोई दिन उसका ठहराव भी होता है और इस अरसे में हर कोई जिस क़दर बन सकता है, ख़ैरात और दान वग़ैरा देता है और थोड़ी बहुत मालिक की याद भी करता है और बाज़े लोग खोज और तलाश

निसबत मालिक और तरकीब और रास्ता उसके मिलने के करते हैं और कोई २ दुनिया की नाशमानता और सख़्त वाक़ै देख कर ज़्यादा डर जाते हैं और जीते जी मालिक से मिलने या मौत से निचिंत हो जाने का जतन जैसा कुछ कि दरियाफ़्त होवे, करते हैं।।

९ - पिछली क़िस्म के लोगों में से जिस किसी को भाग से संत सतगुरु या साध गुरु मिल जावें तो उनसे पूरा भेद कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का और भी रास्ते की मंज़िलों का और जुगत चलने की अपने घट में दरियाफ़्त करके सीधे रास्ते पर उसकी चाल चल सकती है और फिर वही जीव एक दिन निज धाम में पहुँच कर मौत से निचिन्त और जन्म मरन के चक्कर से रहित हो कर परम आनंद को प्राप्त हो सकते हैं।।

१० - बाक़ी जीवों को जो-जो जिस क़दर कार्रवाई दान, पुण्य और नाम का सुमिरन और ध्यान और पोथियों का पाठ और तीर्थ व्रत वग़ैरा करेंगे, वह शुभ कर्म में दाख़िल हो कर उसके फल के एवज़ में सुख पावेंगे, पर जन्म मरन नहीं छूटेगा और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होवेगा।।

११ - सच्चे उद्धार से मतलब यह है कि सुरत यानी रूह माया देश को छोड़ कर अपने निज देश यानी कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँच कर अमर आनन्द को प्राप्त होवे और माया देश की हद्द तीन लोक तक है जिस में पिंड और ब्रह्मांड दोनों शामिल हैं और कुल्ल-मालिक का धाम पिंड ब्रह्मांड के परे है, जिस को निर्मल चैतन्य देश अथवा सन्त और दयाल देश भी

कहते हैं। वहाँ काल और कर्म और मन और माया नहीं हैं और इस सबब से कष्ट और क्लेश और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी नहीं है।।

१२ - इस ऊँचे से ऊँचे धाम और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का पता और भेद सिर्फ़ सन्तों के पास है, पर उनका मिलना दुर्लभ है। बड़भागी जीवों को अपनी दया से दर्शन देते हैं और भेद समझा कर और जुगत चलने की बता कर उनसे रास्ता तै कराते हैं और परम धाम में बासा देते हैं।।

१३ - इस ज़माने में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को निहायत दुखी और बल हीन देख कर अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन फ़रमाया और भेद अपने निज धाम और उस के रास्ते और मंज़िलों का खोल कर समझाया और जुगत चलने की इस क़दर आसान कर दी कि हर कोई लड़का जवान बूढ़ा औरत मर्द चाहे विरक्त होवे या गृहस्थ, उस को बे-ख़तरे और बे-तकलीफ़ सहज में कमा सकें और थोड़े दिन के अभ्यास में अपना सच्चा उद्धार होता हुआ इस ज़िंदगी में देख लें और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर परख लेवें ताकि पूरा इतमीनान और तसल्ली अपने सच्चे उद्धार की निस्बत इसी ज़िंदगी में हो जावे।।

१४ - जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उस को यह भेद और तरीक़ा अभ्यास का आज कल राधास्वामी संगत से आसानी से मिल सकता है और यही सच्चा रास्ता सच्चे और पूरे उद्धार का है। और तरीक़े रास्ते में थक कर रह गये, धुर धाम का भेद सिवाय

राधास्वामी मत के और किसी मत में पाया नहीं जाता।।

१५ - ग़ौर करने की बात है कि जब सुरत रूह की बैठक जाग्रत अवस्था में आँख के मुक़ाम पर है और वहीं से धार ऊँचे देश की तरफ़ अंतर में वक़्त सोने या मौत के खिंच जाती है और देह और इन्द्रियाँ और मन फ़ौरन वक़्त खिंचने धार के बेकार हो जाते हैं, तो फिर रास्ता मुक्ति और उद्धार का इसी मुक़ाम से अंतर में जारी हो सकता है। बाहर जिस क़दर कार्रवाई की जावे, जो उसका सिलसिला रूह की धार से अंतर में नहीं लगा हुआ है यानी सुरत और मन की चढ़ाई में कुछ मदद उस कार्रवाई से नहीं मिलती है, तो वह करतूत शुभ कर्म का फल देगी और उस मुक़ाम पर जहाँ माया और मन और काल और कर्म नहीं हैं, नहीं पहुँचावेंगी और इस सबब से पूरा उद्धार नहीं होवेगा।।

१६ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह के दुख सुख और मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करदें तो जिस क़दर दया और रक्षा कि इस अभ्यास के साथ है, उनको इसी ज़िंदगी में चंद रोज़ के अभ्यास के बाद मालूम पड़ेगी और अपने सच्चे उद्धार का पूरा निश्चय हो जावेगा और एक दिन सच्चे मालिक के निज धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवेंगे।।

* * * * * *

बचन सातवाँ

जगत उपदेश यानी वर्णन उस समझौती और कार्रवाई का कि जो सब जीवों को वास्ते अपने निज कल्यान के ज़रूर धारन करना चाहिये।।

इस बचन के सात भाग हैं

१ - पहिला भाग, कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत और ख़ौफ़ और दीनता और सेवा का वर्णन।।

२ - दूसरा भाग, जीवों के साथ बर्ताव का वर्णन।।

३ - तीसरा भाग, अपने निज आपे यानी निज रूप के साथ बर्ताव।।

४ - चौथा भाग, अपने मन और देह रूप आपे के साथ बर्ताव।।

५ - पाँचवाँ भाग, कुल्ल-मालिक का खोज और पता लगाना और उसके धाम में पहुँचने और दर्शन करने की जुगत दरियाफ़्त करनी।।

६ - छठा भाग, अभ्यास करना सुरत शब्द मार्ग का, कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द, वास्ते अपने जीव के कल्यान के, फ़र्ज़ और लाज़िम है।।

७ - सातवाँ भाग, ज़रूरी उपदेश।।

पहिला भाग, कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत और ख़ौफ़ और दीनता और सेवा का वर्णन

१ - कुल्ल जीवों को चाहे पढ़े लिखे होवें या नहीं आसमानी और ज़मीनी रचना देख कर फ़ौरन यक़ीन इस बात का दिल में पैदा होता है कि कोई उसका करता ज़रूर है और वह सर्व समर्थ और सर्व ज्ञानी और कुल्ल रचना की आदि और आप अनादि है। और जब वह अपनी धारों यानी किरनियों से सब जगह मौजूद है तो जीवों के घट घट में भी ज़रूर मौजूद है और जो कि मनुष्य सब रचना में श्रेष्ठ है और सब जानदार उससे नीचे और उसकी ताबेदारी करते हैं, तो ज़रूर उसके घट में कुल्ल-मालिक का जलवा और प्रकाश ज़्यादा से ज़्यादा प्रकट है।।

२ - (१) ऐसे कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रतीत सहित प्यार और प्रीत करना हर एक जीव पर फ़र्ज़ है। (२) और जब हम देखते हैं कि हम कोई काम अपनी ताक़त से अपनी मर्ज़ी के मुआफ़िक़ वास्ते अपने सुख के नहीं कर सकते और जब दुख आता है तो उसको भी फ़ौरन नहीं हटा सकते तो उस मालिक का दिल में ख़ौफ़ रखना भी ज़रूर चाहिये, ताकि हम ख़िलाफ़ उसकी मौज और मरज़ी के किसी काम में कोशिश न करें और उदूल-हुकमी की सज़ा के भागी न होवें और कोई काम ऐसा न करें कि उसके ना-पसन्द होवे। (३) और जो कि वह सब से बड़ा और सब का मालिक और सब का हितकारी और कारसाज़ है, इस वास्ते

उसके चरनों में हमेशा दीनता रखना और जिस क़दर बने उसकी सेवा और ख़िदमत करना भी ज़रूर चाहिये।।

३ - दुनिया में जो राजा महाराजा अमीर और धनवान और हकूमतवान और विद्यावान और गुनवान और स्वरूपवान वग़ैरा होते हैं, उनकी तरफ़ कुल्ल जीवों के मन में तवज्जह और दर्शनों का इरादा और दीनता और शौक़ सेवा का आपही पैदा होता है फिर कुल्ल-मालिक के चरनों में जो सब का रचनेवाला और पालन करने वाला है, किस क़दर दीनता और सेवा करना मुनासिब और ज़रूरी है?

४ - निशान प्रीत और प्रतीत का यह है कि कुल्ल-मालिक की महिमा और उसकी क़ुदरत और लीला के बिलास और बानी को निहायत तवज्जह और प्यार और शौक़ के साथ पढ़े और सुने और जो कोई उसकी महिमा और लीला सुनावे, वह प्यारा लगे और दिन २ शौक़ उस के दर्शन का बढ़ता जावे।।

५ - निशान दीनता और सेवा का यह है कि कुल्ल-मालिक को सर्व समर्थ जान कर, सच्ची दीनता उसके चरनों में लावे और जब तब वास्ते प्राप्ति दर्शनों के अंतर में प्रार्थना करता रहे और सेवा की उमंग उठती रहे और जो कि मालिक आप किसी चीज़ का मोहताज नहीं है, तो जो कोई उसके बच्चों में से भूखा नंगा या बीमार होवे, उसकी मदद अपनी ताक़त और फ़ुरसत के मुवाफ़िक़ करे और जो उसके आशिक़ और प्रेमी हैं, उनकी ख़िदमत उमंग के साथ करे।।

६ - कुल्ल-मालिक के दर्शनों के शौक़ के साथ ही तलाश उसके पते और भेद और जुगत प्राप्ति की मन

में पैदा होवे और यह पता और भेद संतों से मिल सकता है और आज कल राधास्वामी संगत में शामिल होने से सहज में हाथ आ सकता है।।

७ - प्रीत और प्रतीत और शौक़ का दूसरा निशान यह भी है कि अंतर अभ्यास तवज्जह और शौक़ और मेहनत के साथ किया जावे और उसमें थोड़ा बहुत रस भी मिलता जावे।।

८ - संत सतगुरु की महिमा बहुत भारी है। वे कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के निज पुत्र और मुसाहब हैं, बल्कि उसी का रूप हैं। जिसको भाग से उनका दर्शन और संग मिल जावे तो जिस क़दर प्रीत और सेवा उनकी बन पड़ेगी, वह कुल्ल-मालिक की सेवा और प्रीत समझी जावेगी और उसका फल प्रेम और भक्ति दिन २ बढ़ती जावेगी, यहाँ तक कि सबसे ज़्यादा और अव्वल नम्बर प्रीत सच्चे मालिक की प्रेमी सेवक के हृदय में बस जावेगी।।

दूसरा भाग जीवों के साथ बर्ताव का वर्णन

९ - जो कि कुल्ल मनुष्य एक ही मालिक के पैदा किये हुए हैं और सब के तन, मन और इन्द्रियों का मसाला एकही है और सब की रूहें भी उसी एक मालिक की अंस हैं और सब के स्वभाव और आदत मामूली भी यकसाँ हैं, इस वास्ते समझना चाहिये कि जिस बात में एक या बहुत से जीवों को सुख या दुख पहुँचता है, तो कुल्ल जीवों को उस कार्रवाई का असर वैसा ही पहुँचेगा। इस वास्ते सब को मुनासिब है कि जिस काम को उनका दिल पसन्द न करे और बरदाश्त

न करे, तो वह काम दूसरों को भी पसन्द न होगा और न वह उसको ख़ुशी से बरदाश्त कर सकेंगे।।

१० - इस बयान से मतलब यह है कि कड़वा या सख़्त बचन बे-ज़रूरत और बे-मौक़े बोल कर किसी के मन और चित्त को नहीं दुखाना चाहिये और न कर्म करके किसी के तन को ईज़ा या चोट देना चाहिये और न किसी का हक़ मारना या उसके ज़मीन धन और माल का बे-वजह और बे-ज़रूरत अपने मतलब के लिये नुक़सान करना चाहिये क्योंकि मन घट २ में यकसाँ ख़वास रखता है, जो अपने तईं ऐसी कार्रवाई ना पसंद होती है या उससे रंज पैदा होता है, तो दूसरों पर भी ऐसी कार्रवाई के वक़्त ऐसी ही हालत गुज़रेगी।।

११ - जो कोई मालिक को और उसके जीवों को राज़ी रखना चाहे तो वह काम कि जिससे जीवों को तकलीफ़ पहुँचे, न करना चाहिये बल्कि ऐसी कार्रवाई करना मुनासिब है कि जिससे सब सुख पावें और जो ऐसा न कर सके तो अपने मतलब के लिये दुख देना भी मुनासिब नहीं है।।

१२ - जो कुछ ऊपर लिखा गया है, यह हर एक शख़्स की ख़ास कार्रवाई से ताल्लुक़ रखता है और जहाँ कि जमाअत और गिरोह या कोई ख़ास क़ौम या मुल्क के बाशिन्दों से ताल्लुक़ रखता है, वहाँ कुल्ल कार्रवाई वास्ते आम बन्दोबस्त और आम नफ़ा और नुक़सान और आम मसलहत के मुवाफ़िक़ की जावेगी। वहाँ एक २ आदमी के नफ़े और नुक़सान का जुदा २ ख़्याल रखना मुमकिन नहीं है।।

१३ - परमार्थी शख़्स को ख़ास कर मुनासिब है कि जो कार्रवाई दूसरों के साथ करे उस में दया और मित्र भाव पेश नज़र रक्खे, और अपने मन की हालत और ख्वाहिश जो बर-ख़िलाफ़ उसके होवे, जहाँ तक मुमकिन होवे ग़ालिब न होने देवे।।

तीसरा भाग अपने निज आपे यानी निज रूप के साथ बर्ताव

१४ - मालूम होवे कि निज आपा जीव का सुरत यानी रूह है और उसकी बैठक पिंड के नाके पर तीनों शरीर स्थूल सूक्ष्म और कारन और तीनों अवस्थाओं के परे है। यह आपा कुल्ल-मालिक की अंस सत् चित् आनन्द स्वरूप है और असल में सदा निरलेप और निरबंध रहता है, पर मन और इन्द्री और देहियों और पदार्थों का संग करके, इसका रूख़ बाहर और नीचे की तरफ़ मुड़ गया है और इस सबब से दुख सुख भोगता है।।

१५ - जो कोई कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का भेद लेकर, अपने निज आपे यानी सुरत को जो उनकी अंस है, संतों की जुगत लेकर निज घर की तरफ़ चढ़ावेगा, वही देहियों के बंधन से छूटता जावेगा और उसी का रुख़ जो औंधा हो रहा है सीधा होकर ऊँचे देश की तरफ़ को बदल जावेगा और रफ़्ता-रफ़्ता एक दिन निज धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और देहियों के बंधन और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा हो जावेगा और जो इस तरह की कार्रवाई नहीं की जावेगी यानी मन और सुरत का झुकाव और फँसाव संसार और उसके

पदार्थों ही में रहा आवेगा, तो सुरत हमेशा ऊँच नीच देही के बंधन में गिरिफ़्तार रह कर, दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में पड़ी रहेगी। यह निहायत दरजे का ज़ुल्म अपने आपे पर है कि जो उसको देहियों के बंधन और दुख सुख के भोग से बचाया और छुड़ाया न जावे और ऐसे ही शख़्स आत्मघाती कहलाते हैं, क्योंकि जो उमर भर संसारी करतूत वास्ते प्राप्ति धन और भोग बिलास के करते रहे और उसी की ज़बर बासना चित्त में रही और अपने सच्चे मालिक और निज घर का भेद न जाना, तो संसारी बासना और स्वाभाविक संसारी करतूत के मुवाफ़िक़ बारम्बार देह धर कर अपनी करनी का फल दुख सुख भोगना पड़ेगा और यह बड़ा भारी अपराध अपनी सुरत के निसबत किया जावेगा कि वह बजाय अपने ऊँचे देश की तरफ़ चलने के, नीचे के माया देश में गिरिफ़्तार रही आवेगी और देहियों के साथ जनम मरन का दुख सुख भोगती रहेगी।।

चौथा भाग, अपने मन और देह रूप आपे के साथ बर्ताव

१६ - देह रूप आपा मतलब मन से है जो कि कुटुम्ब परिवार और अनेक तरह के भोगों और पदार्थों और माल और असबाब में अपना बंधन ठान कर, उनके हानि लाभ में दुख सुख सहता है।।

१७ - इस दुख सुख की दो क़िस्में हैं, एक असली यानी जो अपने देह और माल से ताल्लुक़ रखता है, और दूसरा मानन का कि जो दूसरे से ताल्लुक़ रखता है और ब-सबब मुहब्बत के अपने को भी उसका असर पहुँचता है।।

१८ - असल में दोनों क़िस्म के दुख सुख ब-सबब तवज्जह अपने मन की पैदा होते हैं यानी जो अपने मन की धार किसी शख़्स या किसी चीज़ में शौक़ और मुहब्बत के साथ आवे जावे, तो उस से बंधन पैदा होता है और उस शख़्स या चीज़ की हालत बदलने में, उसका असर इस शख़्स के मन पर भी पहुँचता है।।

१९ - और जब वही धार कोई वजह से उस शख़्स या चीज़ से दुखी या नाराज़ या नफ़रत खाकर हट आवे, तो उस शख़्स की हालत बदलने में यानी उस पर दुख सुख का चक्कर आने के वक़्त, इस शख़्स के मन पर कोई असर नहीं पहुँचता। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि यह दुख सुख का असर सिर्फ़ मन की धार के ताल्लुक़ यानी आमद रफ़्त के सबब से है। इसी को बंधन कहते हैं और यह असर जो पैदा होता है, सिर्फ़ मानन है यानी जो उस शख़्स या चीज़ में प्यार है, तो उसकी हालत बदलने पर असर होगा और जो प्यार या ताल्लुक़ नहीं है यानी आमद रफ़्त धार की बंद है, तो कोई असर नहीं होगा।।

२० - अब ग़ौर करो कि जिस क़दर जीवों और चीज़ों में जिस किसी के मन का बंधन है, उसी क़दर उसका मन उनके सबब से दुख या सुख का असर सहता रहेगा और जितना जिसका मन सिमट कर अपने अंतर में ऊँचे देश की तरफ़ लगता है और दुनिया में दूसरे जीवों और चीज़ों में तवज्जह उसकी बहुत कम है या बिलकुल नहीं है, तो उसको उसी क़दर रस अंतर में आवेगा और दुनिया का दुख सुख उसको बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं व्यापेगा।।

२१ - असल में दुनिया के दुख सुख की जड़ बहुत कमज़ोर है यानी उसका असर सिर्फ़ आँख के स्थान पर बैठते वक़्त होता है और यहाँ से ज़रा सरकने पर उसका ज़रा भी असर नहीं रहता बल्कि उस शख़्स और चीज़ की, जिसके सबब से दुख सुख का चक्कर आया सुध भी नहीं रहती कि कौन है, और अपना है या बेगाना और ऐसे ही जिस किसी से अपना मन हट जावे, उसके दुख सुख का भी असर बिलकुल नहीं होता। इस वजह से सन्तों ने संसार के दुख सुख को भरम कहा है यानी इस शख़्स की नाक़िस समझ से पैदा होता है और जब हक़ीक़त मालूम हो गई, तब वह आप ही आप जाता रहता है।।

२२ - परमार्थी शख़्स को मुनासिब है कि जहाँ तक मुमकिन होवे, अपने मन को किसी शख़्स या चीज़ में ज़्यादा न बाँधे और प्रीत लगाते वक़्त भी अपने मन में समझ ले कि इस बन्धन से दुख सुख का थोड़ा बहुत असर सहना पड़ेगा। सो जब ऐसा चक्कर आवे, उस वक़्त उस शख़्स की जिस क़दर मदद या सहायता हो सके, कर देवे और फिर अपने मन को चरनों में लगा कर न्यारा कर लेवे, ताकि उसमें दुख सुख का ज़्यादा असर ठहरने या धसने न पावे और मालिक की मौज का ख़्याल करके, उसी का आसरा और भरोसा रक्खे कि जो कुछ होगा, वही मुनासिब और मसलहत से ख़ाली नहीं होगा।।

२३ - कुल्ल जीवों को अपने मन के निरबन्ध रखने की, जहाँ तक मुमकिन होवे, कोशिश रखना चाहिये, क्योंकि बन्धन से दुख सुख पैदा होता है और यह दुख

सुख परमार्थी कार्रवाई में बहुत विघ्न डालता है और संसारी ऐश और मज़े को भी कड़वा और फीका कर देता है और परमार्थ में भी चित्त को बिकल और गदला रखता है।।

२४ - जो कोई ऐसा नहीं करता यानी अपने मन की सम्हाल नहीं रखता, और जल्दी हर एक शख़्स या चीज़ में बँध जाता है, तो वह ऊपरी दुख सुख के झटके बहुत सहता है और फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा अपने मन को खटाई में डालता है।।

पाँचवाँ भाग, कुल्ल-मालिक का खोज और पता लगाना और उसके धाम में पहुँचने और दर्शन करने की जुगत दरियाफ़्त करना

२५ - जब कि मनुष्य को आसमानी और ज़मीनी रचना और क़ुदरत देख कर यह यक़ीन हो गया कि कोई सच्चा और कुल्ल-मालिक और कर्त्ता इस रचना का ज़रूर है और वह सबसे बड़ा और सर्व समर्थ और महा आनन्द और महा चैतन्य स्वरूप है, तो फिर उससे मिलने की चाह सबको उठाना चाहिये।।

२६ - दुनिया में राजा और महाराजा और अमीर और साहूकार और ज़रा-ज़रा से हाकिमों से मिलने और उनके देखने के वास्ते, निहायत शौक़ के साथ लोग जतन करते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं और जब मुलाक़ात हो जाती है तब निहायत ख़ुश होते हैं, फिर कुल्ल-मालिक से मिलने के वास्ते किस क़दर तदबीर और कोशिश करना हर एक जीव को लाज़िम है।।

२७ - उस कुल्ल-मालिक का पता और भेद सिर्फ़ संतों से या उनके प्रेमी सेवक से मालूम हो सकता है, इस वास्ते संतों को या उनकी संगत को तलाश करके उनसे भेद रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करना ज़रूर चाहिये, ताकि जीव जतन में लग जावें और आहिस्ता-आहिस्ता रास्ता तै करते जावें।

२८ - जतन और जुगत संतों की यह है कि सुरत को शब्द में जिसकी धुन घट २ में हो रही है, लगा कर अपने घट में ऊँचे देश की तरफ़ चलाना और स्वरूप का ध्यान करके मन और सुरत को समेट कर एक स्थान से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर चढ़ाना।।

२९ - शब्द की बराबर कोई गुरु नहीं है यानी अंतर में रास्ता दिखाने वाला और प्रकाश करने वाला इससे बढ़कर कोई नहीं है।।

३० - जो कोई शख़्स अपना बासा मृत्यु लोक में न चाहे और देहियों के साथ बंधन और जो उनके साथ दुख सुख लाज़मी है, बार बार भोगने से बेज़ार हो गया है और कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँच कर उसके दर्शन का बिलास और परम आनंद की प्राप्ति चाहता है, उसको चाहिये कि जिस क़दर जल्द हो सके, संत सतगुरु या उनकी संगत से मिल कर और उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन धुर धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा।।

३१ - और जो ऐसी कार्रवाई नहीं की जावेगी, तो जनम मरन और चौरासी के चक्कर से उसका छुटकारा हरगिज़ नहीं होगा।।

छठा भाग, अभ्यास करना सुरत शब्द मार्ग का कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने जीव के कल्यान के फ़र्ज़ और लाज़िम है

३२ - मालूम होवे कि सब जीवों की सुरत यानी रूह की बैठक जाग्रत के समय आँख में है और इसी स्थान पर बैठ कर देह और दुनिया की कार्रवाई की जाती है और दुख सुख और चिन्ता और फ़िक्र व्यापता है।।

३३ - जब आँख के स्थान से सुरत की धार अंतर में खिंच जाती है, उस वक़्त देह और दुनिया की ख़बर नहीं रहती, जैसे सोते वक़्त या जबकि किसी फोड़े या ज़ख्म के काटने को डाक्टर लोग शीशी सुँघाते हैं या जब कि ग़श आ जाता है या किसी सख़्त बीमारी के सबब से आँखें या पुतली चढ़ जाती हैं और मरने के वक़्त भी इसी तरह पुतली खिंच जाती है।।

३४ - इससे साफ़ ज़ाहिर है कि सुरत की धार का खिंचाव, अन्दर में पहिले आँख के मुक़ाम से होता है और फिर सब देह में से सिमटाव शुरू होता है और मरने के वक़्त भी सुरत आँख के मुक़ाम से हट कर और कुछ दूर तक अन्तर में खिंचाव और चढ़ाई के बाद, देह छोड़ जाती है जिसका नाम मौत है।।

३५ - जब कि पैदायश के वक़्त से सुरत का उतार मस्तक से पिंड में, ख़ास कर आँख के मुक़ाम पर, और मरने के वक़्त सिमटाव और खिंचाव कुल्ल देह ख़ासकर आँख के मुक़ाम से, साफ़ नज़राई देता है, तो हर

शख़्स पर चाहे स्त्री होवे या पुरुष, फ़र्ज़ और लाज़िम है कि जीते जी इस रास्ते को जिस क़दर बन सके खोले और तै करे, ताकि अख़ीर वक़्त पर हाथ पैर पीटना और सिर धुन्ना न पड़े यानी जमदूतों के हाथ से चोट खानी न पड़े।।

३६ - इन आँखों से साफ़ दिखलाई देता है कि जब कोई शख़्स स्त्री या पुरुष चोला छोड़ता है तो वह कैसा ही ख़ूबसूरत होवे चंद मिनट मरने के बाद उसकी सूरत ऐसी बिगड़ जाती है और भयानक हो जाती है कि उसकी तरफ़ देखा नहीं जाता। यह सबूत इस बात का है कि वक़्त चोला छोड़ने के उस शख़्स को सख़्त तकलीफ़ हुई और सख़्त चोटें खानी पड़ीं कि जिनके सबब से चेहरे का रंग रूप बिगड़ गया और डरावना हो गया।।

३७ - बर-ख़िलाफ़ इसके जिस शख़्स ने राधास्वामी मत का उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास शौक़ के साथ इस ज़िंदगी में किया है उसका चेहरा और रंग रूप वक़्त मौत के बदल कर ऐसा सुहावना और खिला हुआ और चमकता मालूम होता है कि जाने वह शख़्स ज़िंदा और निहायत ख़ुशी में भरा हुआ है।।

३८ - सबब इसका यह है कि उसने मुवाफ़िक़ हुकुम सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और सन्तों के आँख के मुक़ाम से सुरत को अन्तर में ऊँचे यानी निज घर की तरफ़ चढ़ाने का अभ्यास किया और जिस क़दर उसकी चाल अन्तर में चली, उसी क़दर आवाज़ आसमानी उसको सुनाई दी और नूर और प्रकाश नज़र आया कि जिसको सुन कर और देख कर वह मगन

होता था और ज़्यादा कोशिश वास्ते बढ़ाने अपनी चाल के करता था और जबकि अख़ीर वक़्त पर कुल्ल सिमटाव और खिंचाव, मन और सुरत का, ऊपर की तरफ़ को हुआ, तब शब्द भी ज़ोर शोर से गाजने लगा और नूर का भी भंडार नज़र आया कि जिसको देख कर और सुन कर महा आनंद प्राप्त हुआ और उस गहरी ख़ुशी का निशान चेहरे और रंग रूप पर बाक़ी रहा।।

३९ - अब मालूम होवे कि राधास्वामी अथवा संत मत का मतलब यही है कि सुरत को जो सच्चे मालिक के धाम से शब्द यानी चैतन्य की धार के साथ उतर कर, पिंड में आँख के मुक़ाम पर ठहरी है और यहाँ से ब-वसीले और चक्रों और रगों के अंग २ में फैली है, आसमानी आवाज़ सुना कर और ऊँचे मुक़ाम की रोशनी दिखा कर, घर की तरफ़ को उलट कर चलाना और चढ़ाना ताकि मरने से पहले उस रास्ते को थोड़ा बहुत साफ़ और तै करले और आवाज़ आसमानी और क़ुदरती स्वरूप नूरानी में उसका प्यार आजावे और अख़ीर वक़्त पर इन दोनों की पहिचान करके शौक़ के साथ इनकी तरफ़ को चले और परम आनन्द को प्राप्त होवे।।

४० - जो जीव कि संतों का बचन नहीं मानते और दुनिया के कामों और भोग बिलास में अपनी उमर ख़र्च करते हैं, वह अख़ीर वक़्त पर दुनिया की मुहब्बत के सबब से बारम्बार इस तरफ़ को यानी पिंड में नीचे की तरफ़ झोका खाते हैं और काल उनकी सुरत को ऊपर को खींचता है, सो इस खैंचातानी और कशाकशी में बहुत झटके और कलेश सहते हैं और अपने करमों और

ख़्वाहिशों के मुआफ़िक़ जम दूतों के हाथ से बहुत तकलीफ़ उठाते हैं, इसी सबब से उनका चेहरा और उसका रूप रंग मौत के वक़्त बिगड़ जाता है और निहायत भयानक हो जाता है।।

४१ - अब ग़ौर करो कि कुल्ल जीवों को यह बात लाज़िम है कि नहीं, कि मरने से पहिले उस रास्ते पर जहाँ कि काल ले जावेगा चलना शुरू करें और जीते जी थोड़ा बहुत क़ुदरत का खेल अपनी आँखों सें देखें और अपने और कुल्ल-मालिक के निज रूप का, जोकि नूरानी और चैतन्य शब्द स्वरूप है, थोड़ा बहुत जलवा और प्रकाश देख कर मगन होवें, ताकि अख़ीर वक़्त पर जब वह स्वरूप अपना प्रकाश ज़्यादातर दिखलावे और सुरत को खींच कर अपने चरनों में लगावे, तब यह शख़्स भी निहायत मगन हो कर और निहायत शौक़ के साथ अपने मालिक के चरनों में लिपट कर ऊँचे धाम की तरफ़ चले और पिंड को ख़ुशी के साथ छोड़ देवे।।

४२ - सुरत के चढ़ाने का अभ्यास जो राधास्वामी मत में जारी है, उसको सुरत शब्द योग कहते हैं यानी सुरत को आवाज़ के वसीले से ऊँचे देश में चढ़ाना और धुर मुक़ाम में जो कुल्ल-मालिक का धाम है और जहाँ से आदि शब्द प्रकट हुआ, पहुँचा कर, परम आनन्द को प्राप्त कराना। सिवाय इसके और कोई तरीक़ा कुल्ल-मालिक के चरनों में पहुँचने का ऐसा आसान और रसीला नहीं रचा गया है।।

४३ - जो जीव यह अभ्यास करेंगे, यहाँ भी और वक़्त मौत और उसके पीछे, सुख पावेंगे और जो यह

अभ्यास नहीं करेंगे, वह यहाँ भी दुखी रहेंगे और अख़ीर वक़्त पर और बाद मरने के महा दुख और क्लेश पावेंगे और उनके जनम मरन का चक्कर कभी नहीं छूटेगा।।

सातवाँ भाग, ज़रूरी उपदेश

४४ - अब सब को आम तौर पर समझाया जाता है कि अपने जीव के फ़ायदे के वास्ते, थोड़ा बहुत अन्तर अभ्यास सुरत और मन के चढ़ाने का शब्द के वसीले से हर एक शख़्स को, चाहे मर्द होवे या औरत, ज़रूर करना चाहिये। जो किसी को ज़्यादा फ़ुरसत न मिले तो दिन रात में दो दफ़े एक-एक घंटा करके, ज़रूर राधास्वामी मत के मुआफ़िक़ अभ्यास यानी ध्यान और भजन करना चाहिये।।

४५ - यह अभ्यास कुछ मुशकिल नहीं, बल्कि इस क़दर आसान है कि दस बारह वर्ष का लड़का और जवान और अस्सी वर्ष का बूढ़ा, बिला तकलीफ़ बैठे-बैठे और लेटे-लेटे कर सकता है।।

४६ - संजम इस अभ्यास में सिर्फ़ इस क़दर हैं कि (१) माँस अहार और नशे की चीज़ खाना या पीना नहीं चाहिये, (२) अपने मतलब के वास्ते किसी को दुख देना या उसका हक़ मारना नहीं चाहिये,(३) रोज़मर्रा खाना खाने में इस क़दर एहतियात रखना चाहिये कि भूख से दो चार लुक़मे[1] कम खावे (४) संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्चा भाव और प्यार और उनके दर्शनों की प्राप्ति के वास्ते सच्चा शौक़ और दर्द और तड़प चाहे वह शुरू में

१ - ग्रास।

थोड़ा ही होवे, फिर दया से बढ़ता जावेगा, (५) फ़िज़ूल ख़्वाहिश तरक़्क़ी दुनिया की यानी ज़्यादती धन और माल कुटुम्ब परिवार और मर्तबे और हुकूमत और दुनिया की नामवरी की न उठावे, (६) दुनियादारों और अमीरों और धनवालों का संग ज़रूरत के मुआफ़िक़ करे, ज़्यादा वक़्त अपना इनकी सोहबत में जहाँ तक मुमकिन होवे ख़र्च न करे, (७) परमार्थ की कार्रवाई में दुनियादारों की, जो कि असली परमार्थ से निपट बेख़बर और नादान हैं, निंदा स्तुति का ख़्याल न करे और (८) सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते, तन मन धन के लगाने में (जिस क़दर अपनी ताक़त होवे और बन सके) दरेग़ न करे यानी कुछ सोच विचार मन में न लावे, लेकिन पहिले कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास करके जाँच कर ले कि यह परमार्थ सच्चा है और सच्चे मालिक और संत सतगुरु की दया उसके साथ है।।

४७ - यह उपदेश संत सतगुरु निहायत दया और जीवों का हित करके फ़रमाते हैं और कोई मतलब अपनी मान बड़ाई या पूजा प्रतिष्ठा या धन और सेवा लेने का नहीं। तन और धन की सेवा जो किसी क़दर जारी है, वह भी वास्ते बढ़ाने प्रेम और भक्ति जीवों के, कराई जाती है और उसमें भी इस क़दर एहतियात रहती है कि हर एक अपनी उमंग और ताक़त के मुवाफ़िक़ अपनी ख़ुशी से जिस क़दर चाहे सेवा करे, किसी क़िस्म का ज़ोर या दबाव नहीं डाला जाता और न हुक्म दिया जाता है।।

४८ - जीवों को यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि उनकी देह कुल्ल रचना का नमूना है, यानी

जो कुछ कि बाहर रचना में है, वह सब छोटे पैमाने के हिसाब से उनके अन्तर में मौजूद है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त भी घट में है और उसका रास्ता भी घट में जारी है, बल्कि ब्रह्म और परमेश्वर और परमात्मा और ख़ुदा और गॉड का मुक़ाम भी घट में मौजूद है। संत सतगुरु सिर्फ़ तरकीब घट में झाँकने और चलने की बताते हैं और बाक़ी कारख़ाना माया और क़ुदरत का जिस क़दर सुरत रास्ता तै करती जावेगी, आपही नज़र आवेगा और सब मुक़ामों और दरजों को आहिस्ते २ तै करती हुई, अख़ीर में सुरत अपने सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के सनमुख पहुँच कर, परम आनन्द को प्राप्त होगी।।

४९ - अब जीवों को इख़्तियार है कि चाहे इस उपदेश को मानें या न मानें, लेकिन इस क़दर याद रखना चाहिये कि जो इसी ज़िन्दगी में अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से सरकाने और अन्तर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाने का जतन नहीं करेंगे तो वे काल पुरुष और जमदूतों के हाथ से, बहुत कष्ट और क्लेश मरने के वक़्त सहेंगे और बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे और माया देश में ऊँच नीच देश और ऊँच नीच जोनों में, अपनी बासना और करमों के मुवाफ़िक़, भरमते रहेंगे।।

५० - जो जीव संत बचन को मान कर सुरत शब्द मार्ग का थोड़ा बहुत अभ्यास इसी ज़िन्दगी में जारी कर देंगे, तो उनका परमार्थी भाग दया से बढ़ता जावेगा और इस दुनिया में और भी मौत के वक़्त, और बाद मरने के उनकी सहायता होवेगी और जब तक धुर धाम

में न पहुँचेंगे तब तक सुख स्थान में बासा पावेंगे और दो या तीन उत्तम जनम धारन करके, वही कमाई पूरी करेंगे।।

५१ - जो राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास नहीं करेंगे, वे अपना परमार्थी भाग घटावेंगे और माया के देश में नीच ऊँच जोन में भरमते रहेंगे। उनका बचाव दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कभी नहीं होवेगा। इस कष्ट और क्लेश और अभागता के भागी, वे आप अपनी ग़फ़लत और बे-परवाही के सबब से होवेंगे। संत सतगुरु, जहाँ तक मुमकिन है, पुकार कर ख़बर देते हैं, पर जो जीव न मानें तो वे क्या करें।।

बचन आठवाँ

और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के कर्म धर्म यानी बाहरमुख कार्रवाई पर ज़्यादा ज़ोर दिया है, लेकिन संतों ने सिर्फ़ प्रेम और शब्द अभ्यास की मुख्यता रक्खी है। इससे सब कारज पूरा और दुरस्त बन सकता है।

१ - जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में बहुत करके बाहरमुख कार्रवाई पर वास्ते प्राप्ति मुक्ति या उद्धार के ज़ोर दिया है और उस कार्रवाई का कुछ भी ताल्लुक़ सुरत की धार से, जिस की बैठक जाग्रत अवस्था में आँख के मुक़ाम पर है, नहीं है।।

२ - ऐसी कार्रवाई चाहे जिस क़िस्म की होवे, उस का फ़ायदा सिर्फ़ शुभ कर्म का मिल सकता है और

मुक्ति की प्राप्ति यानी बंधनों का ढीला होना या छूटना उस कार्रवाई से मुमकिन नहीं है।

३ - और मतों में मुक्ति का भेद कि किस मुक़ाम पर पहुँचने से और कौन से रास्ते और किस जुगत से चल कर हासिल होगी, बहुत कम बयान किया है, बल्कि बाहरमुख कार्रवाई का ही फल मुक्ति कहा है।।

४ - राधास्वामी दयाल ने दया करके सब भेद बहुत खोल करके सुनाया है और मुक्ति का स्थान और जुगत उसके प्राप्ति की घट में चढ़ कर और चल कर वर्णन की है और सिवाय इसके कुल्ल-मालिक के धाम का भेद मुक्ति पद के परे सुनाया है, क्योंकि जब तक कि जीव अपने निज घर में जहाँ से कि वह आदि में आया है, न पहुँचेगा, तब तक सच्चा सुखी नहीं होवेगा। इस धुर मुक़ाम का ज़िक्र या भेद किसी मत में नहीं है। यह कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने, जीवों पर अति दया करके इसी ज़माने में प्रकट किया है और जो रास्ता तै करने की जुगत राधास्वामी दयाल ने अब बताई है, उसका भी ज़िक्र या भेद और मतों में नहीं है। इस सबब से सब मतों में बाहर की कार्रवाई जारी है और अन्तर का भेद बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं है।।

५ - सब मतों का सिद्धान्त माया देश यानी सन्तों के तीसरे और दूसरे दरजे में ख़तम हो जाता है। इस सबब से उनमें जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सकता।।

६ - सन्तों का सिद्धान्त पद माया देश के पार यानी अव्वल दरजे में है। जोकि वहाँ माया और काल नहीं है,

इस सबब से वहाँ कष्ट और क्लेश और किसी क़िस्म का दुक्ख और जनम मरन भी नहीं है। वहाँ पहुँचने पर सुरत को सच्चा और पूरा आनन्द हमेशा का प्राप्त होता है।।

७ - उस स्थान के पहुँचने का रास्ता घट में है और आँख के मुक़ाम से जारी होता है। जिस धार पर कि सुरत उतरी है, उसी धार को पकड़ कर उलटेगी।।

८ - वह धार चैतन्य यानी जान और शब्द की धार है। चैतन्य यानी जान का ज़हूरा और निशान शब्द यानी आवाज़ है और शब्द की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अँधेरे में रोशनी करने वाला नहीं है। इस वास्ते जो कोई शब्द की धुन को सुनता हुआ चलेगा, वही शब्द यानी चैतन्य की धार पर सवार होकर और इधर से उलट कर निज घर में जा सकता है। और कोई तरकीब से यह रास्ता तै नहीं हो सकता।।

९ - कुल्ल मतों में शब्द की महिमा वर्णन करी है और यह कि वही कुल्ल रचना की आदि और सब का करतार है। पर भेद मुक़ामों और हर एक मुक़ाम के शब्द का और जुगत उसके अभ्यास की किसी मत में साफ़ तौर पर नहीं बयान की है। इस सबब से शब्द का अभ्यास किसी मत में जारी नहीं है।।

१० - जो किसी मत में थोड़ा बहुत अन्तर अभ्यास जारी भी है, तो वह उन धारों का है जिनका निकास और भी ख़तम होना माया देश में है, जैसे प्राण की धार रोशनी की धार वग़ैरा, और भी शब्द की धार जो कि काल के घर में जारी है।।

११ - इन धारों के अभ्यास से कोई जीव माया के देश के पार नहीं जा सकता और इस वास्ते उसका पूरा उद्धार भी नहीं हो सकता। सिवाय इसके इन धारों का अभ्यास ऐसा कठिन और ख़तरनाक़ है कि हर एक से बनना मुशकिल है और गृहस्थी तो उसको बिल्कुल नहीं कर सकते, क्योंकि संजम उसके बड़े सख़्त हैं।।

१२ - शब्द का अभ्यास बग़ैर रोकने प्राणों के बहुत आसानी के साथ बन सकता है और चाहे गृहस्थ होवे या विरक्त, मर्द होवे या औरत, जवान होवे या बूढ़ा, निहायत आराम और आसानी के साथ उसको कर सकते हैं। लेकिन शर्त यह है कि थोड़ा प्रेम यानी शौक़ कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का उनके मन में पैदा होवे।।

१३ - कोई काम दुनिया का बग़ैर शौक़ या प्रेम के नहीं बन सकता है। ऐसे ही परमार्थ की कार्रवाई भी बिला[१] सच्चे इरादे और प्रेम के दुरुस्त नहीं बन सकती यानी जब तक कि कोई मुहब्बत में भर कर कुछ मेहनत नहीं करेगा, तब तक रास्ता नहीं खुलेगा।।

१४ - मुहब्बत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में चाहिये और शौक़ उनके दर्शनों का मन में पैदा होना चाहिये।।

१५ - जब तक कि किसी के मन में किसी से मिलने का इरादा नहीं होता है, तब तक वह उसकी तरफ़ नहीं खिंचता और मिलना नहीं होता।।

१६ - जो कि कुल्ल-मालिक का धाम ऊँचे से ऊँचा है और सुरत और मन नीचे पिंड में ठहरे हुए हैं, इस

१ - बिना।

वास्ते जब तक कि इनके अंतर में चाह, उस ऊँचे देश में चढ़ कर पहुँचने की ज़बर पैदा न होगी, तब तक पिंड के स्थान से सरकना मुमकिन नहीं है और सच्ची जुगत चलने की भी मालूम होना चाहिये, और वह जुगत वही सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास है।।

१७ - जिस क़दर कि मन और सुरत प्रेम अंग लेकर अभ्यास में लगेंगे, उसी क़दर रास्ता तै होता जावेगा और थोड़ा बहुत रस मिलेगा, फिर शौक़ बढ़ेगा, इसी तरह आहिस्ता २ प्रेम और अभ्यास बढ़ते जावेंगे और निर्मल भी होते जावेंगे।।

१८ - ऐसा अभ्यासी और प्रेमी शख़्स सतगुरु की दया से एक दिन धुर घर में पहुँच कर विश्राम पावेगा और हमेशा को सुखी हो जावेगा।।

१९ - इस क़िस्म के अभ्यास से जो संतों ने जारी फ़रमाया परमार्थी जीव को अपने प्रेम और अभ्यास की तरक़्क़ी का हाल जब तब मालूम होता जावेगा और राधास्वामी दयाल की मेहर से रास्ता तै होकर एक दिन धुर धाम में बासा मिलेगा।।

२० - सिवाय नेत्र के मुक़ाम के घट में सुरत शब्द मार्ग के वसीले से चलने के और कोई जतन या रास्ता घर की तरफ़ जाने का नहीं है। इस वास्ते जो कोई और २ काम परमार्थी बाहरमुख कर रहे हैं, जिनका ताल्लुक़ सुरत की धार के आँख के मुक़ाम से सरकने और चलने का नहीं है, वे सिर्फ़ शुभ कर्म का फल दे सकते हैं, पर मुक्ति और सच्चे उद्धार की कार्रवाई जुदी है और उसमें वे बाहरमुखी काम कुछ मदद नहीं दे सकते।

२१ - इस बात की तसदीक़ यानी जाँच मरने के वक़्त की हालत सुरत के खिंचाव और पुतली के उलटाव के देखने से साफ़ हो सकती है यानी उस वक़्त सुरत की धार अंदर और ऊँचे की तरफ़ को खिंचती है और जो उस तरफ़ चलने का ज़िंदगी में कुछ अभ्यास नहीं बना है, तो अपने स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ बारम्बार संसार और देह की तरफ़ सुरत झोके खाती है और काल ज़बरदस्ती उसको ऊपर की तरफ़ खींचता है और इस खैंचातानी में बहुत दुख और क्लेश मरनेवाले को होता है, जैसा कि उसके चेहरे की हालत से, जो मरने पर बदल जाती है, ज़ाहिर है।।

२२ - यह बात सब को अच्छी तरह से मालूम होनी चाहिये कि जब तक इस ज़िंदगी में घर की तरफ़ चलने का अभ्यास, राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने घट में कोई नहीं करेगा, तब तक उसका बचाव दुख और क्लेश से वक़्त मौत के और भी बाद मरने के हरगिज़ नहीं होगा और यह अभ्यास आजकल सिर्फ़ राधास्वामी संगत में जारी है और वहीं से सच्चे परमार्थी को मिल सकता है।।

बचन नौवाँ

परमार्थ की कार्रवाई इस देह और देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सकती है और यह चार तरह क़ाबू में आता है, (१) ख़ौफ़, (२) लालच, (३) प्यार और (४) रीस और

शरम से और या सतगुरु के संग से जो सच्चा हो कर करे और या सरन से जो सच्चे मन से पूरे गुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की लेवे और जो कोई दुनिया के हाल को देख कर आप ही चेते, वह उत्तम अधिकारी है।।

१ - यह देह और देश यानी दुनिया दोनों नाशमान हैं और बहुत कम काम यहाँ ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ बनते हैं और सुख दुख भी यहाँ का तुच्छ और छिन भंगी है। चाहे जैसा सामान कोई जमा करे, पर जीव के संग कुछ नहीं जाता, सब यहाँ ही पड़ा रहता है।।

२ - समझदार आदमी ऐसी हालत दुनिया की देख कर ज़रूर दरियाफ़्त और खोज करेगा कि इस रचना का करता कौन है और कहाँ है और कोई परम सुख स्थान भी है जो सदा एक रस क़ायम रहे और वह कहाँ है और कैसे मिले।।

३ - ऐसे खोजी को सिवाय संतों की बानी और बचन के और कहीं शान्ति नहीं आवेगी और उन्हीं की संगत में उसको भेद कुल्ल-मालिक और निज घर का और उसका रास्ता अपने घट में और तरीक़ा उसके तै करने का मालूम पड़ेगा।।

४ - जब ऐसा खोजी संतों की संगत यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के सतसंग में आवेगा, उसको स्वार्थ और परमार्थ यानी दुनिया और दीन दोनों का हाल मुफ़स्सिल और उनकी क़दर और क़ीमत मालूम पड़ेगी और यह भी ख़बर पड़ेगी कि सिवाय

सुरत शब्द मार्ग के, और कोई जुगत या तरीक़ा रास्ते को तै करके निज घर यानी कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँचने का मुतलक़ नहीं है और यह कि इस अभ्यास के साथ कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया हर वक़्त शामिल है और अभ्यासी की हर तरह से सम्हाल और रक्षा धुर से होती है।।

५ - बड़भागी वह जीव हैं जो सच्चे मन से अपने परमार्थ के बनाने के वास्ते, राधास्वामी संगत में दाख़िल होकर अभ्यास में लग गये हैं और थोड़ा बहुत अंतर में रस लेते हैं और दिन-दिन चरनों में राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु के प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जाते हैं।।

६ - ऐसे परमार्थी जीवों को उत्तम अधिकारी कहते हैं। उनके मन में संसार की सख़्ती और सुस्ती और नाशमानता और ख़ौफ़नाक और सख़्त मुसीबत की कार्रवाई क़ुदरत की देख कर, आपही आप विचार और दुनिया से बैराग और कुल्ल-मालिक के चरनों में अनुराग पैदा होता है और सन्त सतगुरु का संग भी उनको जल्द प्राप्त होता है और उनके बचनों के मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी, वे ही अधिकारी जीव बहुत ख़ुशी और उमंग के साथ करते हैं और उसमें उनको थोड़ी बहुत कामयाबी भी जल्द होती जाती है।।

७ - दूसरी क़िस्म के जीव वे हैं कि जो थोड़ी चाह परमार्थ की लेकर, मौज से सन्तों के सतसंग में शामिल होकर और बचन बानी को समझ कर, सन्तों और उनके प्रेमी भक्तों की दया और मदद लेकर, अपने मन और इन्द्रियों की सफ़ाई और गढ़त जिस-जिस तरकीब से सन्त बतलावें, करते हैं और उनकी जुगती

यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके, दिन-दिन उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं और परमार्थ की महिमा और क़दर जान कर, उसकी प्राप्ति के लिये कोशिश करते हैं और संसार और उसके सामान की तरफ़ से आहिस्ते-आहिस्ते हटते जाते हैं। इन जीवों पर भी सन्त सतगुरु दया फ़रमा कर, उनका परमार्थ आहिस्ते-आहिस्ते बनाते हैं।।

८ - इन जीवों का मन सन्त सतगुरु और प्रेमी जन का संग करके और उनकी रहनी, बर्ताावा, देख कर थोड़ा बहुत क़ाबू में आता है और उन्हीं के मुवाफ़िक़ आप भी कार्रवाई शुरू कर देता है। इस तरह स्वभाव और रहनी के बदलने में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़ नहीं होती, बल्कि ख़ुशी और उमंग के साथ सन्तों की रहनी के मुवाफ़िक़, हर कोई अपनी रहनी दुरुस्त करने को तैयार होता है। जो भाग से संग कोई दिन मिलता रहा, तो हालत जीव की बहुत बदलना मुमकिन है।।

९ - तीसरी क़िस्म के जीव वे हैं जो किसी मतलब या दबाव से संतों के सतसंग में आ गये और ब-वजह ख़ौफ़ या लालच या प्यार या मुहब्बत या दूसरों की रीस करके भक्ति के अंगों में बर्ताव करने लगे।।

१० - हरचंद ख़ौफ़ और लालच और प्यार इन लोगों का संसारी मतलब और संसारी अंग लेकर पैदा हुआ था, पर कुछ अर्से सतसंग में रहने और प्रेमी जन के साथ मेल और सेवा करने से उन पर दया हो गई और वह अंग उनका परमार्थी हो गया यानी परमार्थी ख़ौफ़ और परमार्थ के प्राप्ति की चाह और परमार्थी मुहब्बत दिल में पैदा हो गई और उसके मुवाफ़िक़

सच्ची कार्रवाई सच्चे परमार्थ की जारी हो गई यानी उनके मन में परमार्थी भाव पैदा हो गया।।

११ - इस क़िस्म के जीवों को अपने परमार्थ के बनाने में दिक़्क़त और तकलीफ़ बहुत होती है, क्योंकि शुरू में बहुत दिन तक उनकी कार्रवाई स्वार्थी होती है और जब बचन सुन कर और प्रेमी जन की मदद और संत सतगुरु की दया से उनका असली मतलब समझ कर उनका संसारी अंग साथ परमार्थी ख़्वाहिश के बदलता है, तब से उनकी कार्रवाई निर्मल परमार्थी समझी जाती है और उसका फल भी यानी निर्मल प्रेम कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में दया से मिलता जाता है और जिस क़दर सच्चे परमार्थ और संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की पहिचान होती जाती है, उसी क़दर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है और सरन दृढ़ होती जाती है कि जिसके वसीले से सहज में उद्धार जीव का हो जाता है।।

१२ - ऊपर जो लिखा गया कि ख़ौफ़ और लालच और प्यार और रीस या शरम से जीव परमार्थ में शामिल होते हैं, सो इसका हाल यह है कि क्या स्वार्थ और क्या परमार्थ, दोनों सूरत में यह अंग जीव से कार्रवाई शौक़ और मेहनत के साथ कराते हैं और जब तक यह अंग न होवें यानी ख़ौफ़ और लालच वग़ैरा न दिखलाये जावें और थोड़ी बहुत मुहब्बत और एक दूसरे के साथ रीस पैदा न की जावे, तब तक जीव परमार्थ के सीधे रास्ते और सहज जुगत को क़बूल नहीं करते यानी उनका मन सचौटी के संग बर्ताव नहीं करता।।

१३ - कोई दिन सतसंग और अन्तर अभ्यास करके इन जीवों के मन में सच्चा ख़ौफ़ चौरासी और नरकों के दुक्खों का और जनम मरन के कष्ट और क्लेश का पैदा होता है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम और शब्द की महिमा सुन कर, सच्ची चाह उनके दर्शन और अभ्यास के आनन्द के प्राप्ति की उपजती है और संत सतगुरु और प्रेमी जन से प्रीत दिन-दिन बढ़ती जाती है और प्रेमी सतसंगियों की अंतर और बाहर हालत देख कर, मन में सच्ची चाह या रीस उन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने की पैदा होती है। इस तरह दिन दिन मन की परमार्थी गढ़त होकर वह जीव संत सतगुरु की दया और मेहर का अधिकारी बनता जाता है।।

१४ - कुल्ल जीव चाहे किसी क़िस्म के हों, सरन के अधिकारी हैं यानी बिना कुल्ल-मालिक और सर्व समर्थ राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन के किसी जीव का कारज नहीं बन सकता।।

१५ - उत्तम अधिकारी के मन में शुरू से ही प्रीत और प्रतीत सतगुरु और सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की पैदा होगी और उस के साथ ही सरन भी दृढ़ होती जावेगी।।

१६ - दूसरे दरजे के अधिकारी जीवों को कोई दिन सतसंग करके, थोड़ी बहुत पहिचान संत सतगुरु की आवेगी और महिमा कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की चित्त में बसेगी, तब वह आहिस्ते आहिस्ते सरन में आवेंगे और प्रीत और प्रतीत चरनों में लावेंगे।।

१७ - बाक़ी जीवों को ख़ास कर ज़रूरत सरन की है, क्योंकि उन से जैसा चाहिये मन की गढ़त और सफ़ाई जल्द नहीं हो सकेगी। इस वास्ते इधर अपनी कम लियाक़ती और निबलता और उधर मन और माया का ज़ोर और शोर देख कर, वास्ते अपने बचाव के समर्थ पुरुष का दामन पकड़ना और उसकी ओट में आ जाना बहुत ज़रूरी है, पर ऐसी सरन लेने के वास्ते भी कोई दिन सतसंग और अन्तर अभ्यास दरकार है और कुछ सहायता और रक्षा के परचे भी, कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु दयाल की तरफ़ से मिलने चाहिये, तब प्रतीत आवेगी और सच्चे मन से सरन ली जावेगी।।

१८ - कुल्ल जीवों का सरन में गुज़ारा है, मगर इस का यह मतलब नहीं हैं कि भरोसा दया का रख कर किसी क़िस्म की कार्रवाई परमार्थ की न करें, बल्कि हर एक जीव को चाहिये कि जिस क़दर बन सके सतसंग और अन्तर अभ्यास करे और अपने मन और इन्द्रियों को जहाँ तक मुमकिन होवे, रोकता और सम्हालता रहे और संसारी पदार्थों और भोगों में ज़रूरी और मुनासिब तौर पर बर्ताव करे, तब दया आवेगी और उसका कारज सब तरह से दुरुस्त बनावेगी और काल और कर्म और मन और माया के जाल से छुड़ा लेगी।।

बचन दसवाँ

चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूर है यानी चित्त को समझ बूझ और जाँच

कर लगावे, तो बंधन और तकलीफ़ नहीं होगी। मुख्यता मालिक के चरनों में रक्खे, जो हमेशा का संगी है और गौन अंग से जीवों और पदार्थों में बर्ते, जिनका संग कारज मात्र या देह के साथ है और हमेशा ठहर नहीं सकता।।

१ - मनुष्य का चित्त उसकी सुरत का सीस है। जिधर यह जाता है, उधर ही उसका आपा मुतवज्जह होजाता है।

२ - जहाँ मनुष्य की प्रीत है, वहीं उसके चित्त का बंधन है और वहीं से जब जब प्यारे की हालत बदले, दुख सुख का असर पहुँचता है।।

३ - बंधनों की दो क़िस्में हैं - एक कारज मात्र यानी ज़रुरत के मुवाफ़िक़ थोड़े दिन का, दूसरा देह का संगी।।

४ - जो बंधन कारज मात्र हैं, उनसे वक़्त ज़रूरत के काम लिया जाता है और फिर कुछ मतलब नहीं और जो बंधन देह के संगी हैं, उनके साथ रोज़मर्रा बर्ताव या जिंदगी भर रहता है।।

५ - पहिला यानी थोड़ी देर का बंधन हलका है और उससे जल्दी छुटकारा हो सकता है, लेकिन दूसरा बंधन भारी और मज़बूत है और इस से छुटकारा किसी क़दर कठिन है।।

६ - दुनिया के कुल्ल बंधन अपने अपने मुवाफ़िक़ दुख सुख का असर पहुँचाते हैं। जो कोई इन बंधनों के

असर से बचना चाहे, उस को चाहिये कि अपने चित्त को कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में जो हमेशा एक रस क़ायम हैं, लगावे और रास्ते का भेद और चलने की जुगत संत सतगुरु अथवा राधास्वामी संगत से दरियाफ़्त करके, उनके धाम की तरफ़ चलना शुरू करे, ताकि निर्बन्ध और निचिन्त होकर एक दिन परम आनन्द और महा सुख को प्राप्त होवे।।

७ - दुनिया और उसके भोगों और पदार्थों में चित्त उसी क़दर लगाना चाहिये कि जिस क़दर उनसे कारज लेना या फ़ायदा उठाना मंजूर है, ज़्यादा बंधन में ज़्यादा दुख मिलने और हमेशा की गिरफ़्तारी का ख़ौफ़ है।।

८ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में जिस क़दर जिस किसी का बंधन होगा यानी जिस क़दर जो कोई भाव और प्रीत करेगा, उसी क़दर और बंधन उस के ढीले होते चले जावेंगे और उनका असर भी कम व्यापेगा और जिस क़दर अभ्यास घट में वास्ते प्राप्ति दर्शन और पहुँचने निज धाम के बढ़ता जावेगा, उसी क़दर अन्तर में रस और आनन्द मिलता जावेगा और शौक़ बढ़ता जावेगा।।

९ - जिस क़दर यह शौक़ बढ़ेगा, उसी क़दर चरनों में प्रीत और प्रतीत ज़्यादा होती जावेगी और दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त हटता जावेगा यानी बंधन ढीले होते जावेंगे।।

१० - आहिस्ता आहिस्ता एक दिन गहरा आनन्द चरनों का प्राप्त होगा और उन्हीं के साथ सुरत का पूरा

बंधन यानी प्रेम हो जावेगा और बाक़ी के सब बंधन जो संसारी होंगे, ख़ारिज या ढीले हो जावेंगे।।

११ - अब मालूम करो कि चित्त का अटकाव दुनिया और उसके सामान और ख़ुद दुनियादारों में दुख और क्लेश का पैदा करने वाला है और जब वही चित्त मालिक के चरनों में प्रेम के साथ लग जावे, तब कुल्ल दुखदाई बन्धनों को आहिस्ता आहिस्ता काट कर परम आनन्द को प्राप्त कराता है।।

१२ - अब जो कोई अपने चित्त की सम्हाल रक्खे यानी उसको मुनासिब जगह में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ लगावे और बाक़ी तवज्जह अपनी कुल्ल-मालिक के चरनों में रक्खे, तो उसको संसार का बन्धन बहुत कम होगा और दुख सुख कम व्यापेगा और चरनों का आनन्द दिन दिन बढ़ता हुआ, एक दिन सब बंधनों से छुड़ा कर चरनों में यानी धुर धाम में बासा देगा।।

१३ - कुल्ल जीव दुनिया में इस क़दर होशियारी से बर्त रहे हैं कि ख़ास जगह ज़्यादा मुहब्बत और बाक़ी जगह थोड़ी मुहब्बत या बिल्कुल ज़ाहिरी और ऊपरी प्यार से कार्रवाई कर रहे हैं, फिर परमार्थी जीव भी जो चाहें और फ़ायदा उनकी समझ में आ जावे, तो संसार में थोड़ी या ज़ाहिरी प्रीत के साथ और मालिक के चरनों में अंतरी और गहरी प्रीत के साथ, बर्ताव कर सकते हैं। इसी का नाम गुरुमुखता है।।

१४ - जिस किसी को भाग से ऐसी दौलत यानी गुरुमुखता प्राप्त होवे, वही जीव महा बड़भागी और सब से ऊँचा और कुल्ल-मालिक का महा प्यारा है। उसके वसीले से बहुत से जीव तर सकते हैं।।

१५ - दुनिया में देखने में आता है कि लोग राजा और महाराजा और अमीरों के साथ बे-मतलब और बे-सबब प्यार और सेवा करने को तैयार रहते हैं और जब जब मौक़ा मिलता है, तब अपनी मुहब्बत को ज़ाहिर करते हैं और सेवा करके बहुत ख़ुश होते हैं।।

१६ - अब ख़्याल करो कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में, जो उनके निज प्यारे पुत्र और मुसाहब हैं, किस क़दर मुहब्बत और सेवा करना फ़र्ज़ और लाज़िम है?

१७ - इस मुहब्बत के वसीले से जीव का सच्चा कल्यान यानी पूरा उद्धार होना मुमकिन है और जब से कि चरनों में लगे, तब से घट में रस और आनंद मिलना शुरू हो जाता है।।

१८ - और दुनिया के राजों और अमीरों से मुहब्बत करने से, चाहे दुनिया का कोई ख़ास काम बन जावे, लेकिन परमार्थी फ़ायदा किनका भर भी हासिल नहीं हो सकता, बल्कि जो फ़ायदा हासिल होता हो, उस में नुक़सान आने का ख़ौफ़ है।।

१९ - हर एक जीव अपने दुनियावी और परमार्थी फ़ायदे की जाँच कर सकता है और यह भी ख़ूब समझता है कि कहाँ और किस क़दर मुहब्बत सचौटी के साथ करनी चाहिये।।

२० - इस वास्ते परमार्थी जीवों को कहा जाता है कि अपने जीव का सच्चा फ़ायदा यानी उद्धार ख़्याल में रख कर, जिस क़दर बन सके गहरी प्रीत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में करें। गहरी प्रीत से मतलब यह है कि ब-निस्बत और सब संसारी प्रीतों के यह परमार्थी प्रीत

कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु के चरनों में किसी क़दर ज़्यादा होवे, ताकि गुरुमुखता का दरजा हासिल हो जावे।।

२१ - राधास्वामी मत में छोड़ना घर बार या रोज़गार का ज़रूर नहीं है। जैसे गृहस्थी अपने स्त्री, पुत्र, धन माल से गहरी प्रीत और बंधन रखता है और नज़दीक और दूर के रिश्तेदार और बिरादरी और बहुत से लोगों से भी प्रीत करता है और व्यवहार का बर्ताव रखता है, पर इनमें से कोई भी उस के गृहस्थ आश्रम की कार्रवाई में हर्ज या विघ्न नहीं डालते, इसी तरह परमार्थी जीव सतसंग करके पूरी समझ बूझ लेकर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में विशेष, और बाक़ी सब के साथ दरजे ब-दरजे कम यानी समान प्रीत, बग़ैर डालने किसी क़िस्म के हर्ज या विघ्न के अपने परमार्थ में कर सकता है और थोड़ी होशियारी के साथ दोनों काम यानी गृहस्थ और भक्ति अच्छी तरह से अंजाम दे सकता है।।

२२ - जो जीव कि नादान और बे-ख़बर हैं यानी सतसंग और कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की महिमा नहीं जानते और दुनिया को धोखे का स्थान नहीं समझते, वे संसार और कुटुम्ब परिवार और संसार के भोगों और पदार्थों में, सर्व अंग करके अपना चित्त लगाते हैं और उन्हीं को अपने सुख का सबब और वसीला मानते हैं। इस सबब से वे हमेशा दुख सुख के चक्कर और जनम मरन के कष्ट और क्लेश में पड़े रहेंगे और सख़्त तकलीफ़ के वक़्त कोई उनका मददगार नहीं होवेगा।।

* * * * * *

बचन ग्यारहवाँ

वर्णन भेद और सबब देरी का मन और सुरत के चढ़ने और स्थानों के खुलने में।।

१ - बहुत से सतसंगी वास्ते चढ़ाई सुरत और मन के जल्दी करते हैं और चाहते हैं कि उनको मुक़ामात जल्द खुलते जावें।।

२ - यह चाह तो अच्छी है, लेकिन इस क़दर ग़ौर करना चाहिये कि जब तक मन में चाह संसार और उसके भोगों की धरी हुई है, तब तक वह मन मलीन समझा जाता है और क़ाबिल चढ़ाई ऊँचे देश के नहीं है।।

३ - जो बग़ैर सफ़ाई यानी दूर हो जाने दुनिया की ख़्वाहिशों के किसी मन को थोड़ा चढ़ा दिया जावे तो वह ज़्यादा ताक़त हासिल करके भोगों में ज़्यादा ज़ोर के साथ लिपटेगा और इस तरह सिर्फ़ परमार्थ में ही नहीं, स्वार्थ में भी ख़राबी और बरबादी पैदा करेगा। इस वास्ते हमेशा यही मुनासिब समझा गया है कि जिस क़दर सतसंग और अभ्यास करके अन्तर और बाहर सफ़ाई हासिल होती जावे, उसी क़दर मन और सुरत ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाये जावें और फिर भी अभ्यासी की आँख न खोली जावे, ताकि माया के रचे हुए भोग और पदार्थों को रास्ते में देख कर लुभावे और अटके नहीं।।

४ - जब कोई सख़्ती या तकलीफ़ या मुसीबत आवे तो उस में घबरावे नहीं, और जब कोई शख़्स तान मारे या बुरा भला कहे या दुख और नुक़सान पहुँचावे, तो

उससे नाराज़ न होवे और न उससे एवज़ लेने या उसको एवज़ में दुख पहुँचाने का इरादा करे।।

५ - संसारी मान बड़ाई और दौलत और हशमत और हुकूमत की चाह मन में न रहे और न यह चीजें चित्त से प्यारी लगें, बल्कि अपनी देह में भी बंधन ज़रूरत के मुवाफ़िक़ रहे, यह नहीं कि दुख में दुख का रूप हो जावे।।

६ - राधास्वामी दयाल की दया का आसरा चित्त में दृढ़ रक्खे और जो कुछ कि उनकी मौज से होवे, उसी को मुनासिब और मसलहत वक़्त समझे और मुवाफ़क़त करे।।

७ - बिना मौज और आज्ञा राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के कोई नया काम या नई बात के कहीं जारी करने का इरादा न करे।।

८ - किसी क़िस्म या किसी देश के जीवों पर वास्ते मानने किसी बात के किसी क़िस्म का दबाव न डाले और जीवों की दया हमेशा पेश-नज़र रहे।।

९ - जो थोड़ी बातें सफ़ाई की ऊपर लिखी गई हैं सिर्फ़ उनके ही मुवाफ़िक़ करनी और रहनी नहीं, बल्कि कुल्ल बर्तावे में अन्तर और बाहर ऐसी ही सफ़ाई और रहनी दरकार है, तब क़ाबिल चढ़ाई ऊँचे देश के और खुलने अन्तर दृष्टि के समझा जावे।।

१० - यह हालत आहिस्ता आहिस्ता सतसंग और अन्तर अभ्यास से आवेगी और जिस क़दर कि उसके साथ नशा पैदा होगा, वह भी हज़म होता जावेगा।।

११ - संत सतगुरु अपनी दया से हर एक सच्चे परमार्थी की सुरत को, गौन अंग से नित्त चढ़ाते जाते हैं। मुख्य अंग से इस वास्ते नहीं चढ़ाते कि फिर अभ्यासी से दूसरा काम यानी संसारी कार नहीं बनेगा और न दुनिया के लोगों से मिलाप या मुवाफ़क़त बन सकेगी, बल्कि अपनी देह की भी ख़बरगीरी, जैसी चाहिये, नहीं कर सकेगा।।

१२ - निशान गौन अंग से चढ़ाई मन और सुरत का यह है कि अभ्यासी की चाह और पकड़ संसारी पदार्थों में और संसारी व्यवहारों में हलकी और ढीली होती जावेगी और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में और भी सतसंग और अंतर अभ्यास में प्रीत और प्रतीत आहिस्ता आहिस्ता बढ़ती जावेगी।।

१३ - फिर जो किसी को मुख्य अंग से पेश्तर सफ़ाई से चढ़ाया भी जावे, तो उसको कुछ फ़ायदा नहीं होगा, क्योंकि वह शख़्स फिर देह में कम उतरेगा और इसकी कार्रवाई बहुत कम और बे-तरतीब करेगा।।

१४ - इस वास्ते लाज़िम यह है कि संत सतगुरु जो कुल्ल रचना के हाल से ब-ख़ूबी वाक़िफ़ हैं, जैसे चढ़ाना जीव का मुनासिब समझें, उसी मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना चाहिये और उसी को दुरुस्त समझना चाहिये। और जब अभ्यास करके पूरी सफ़ाई मन और इन्द्रियों की हो जावेगी और दृष्टि में ताक़त दर्शनों की और हृदय में ताक़त हाज़मे और बरदाश्त गहरे नशे और आनन्द की हासिल हो जावेगी, तब वे दया करके आप उस जीव की सुरत को मुख्य अंग के साथ चढ़ावेंगे और आँख भी खोल देंगे। उस वक़्त ऊँचे देश की

कैफ़ियत और दर्शनों का आनन्द और बिलास देख कर चित्त बहुत मगन होगा और अपने भागों को सराहेगा और सच्चा शुकराना बजा लावेगा।।

१५ - इस बख़्शिश का नाम पूरन दया है। जिस जीव पर ऐसी दया होवे वही बड़भागी है, पर कुल्ल सतसंगियों को जो सच्चे मन से परमार्थ में लगे हैं, उम्मेदवार रहना चाहिये कि इस हालत और इस दरजे की बख़्शिश उन पर भी एक दिन ज़रूर होगी। इस वास्ते धीरज धर कर और दया का भरोसा पूरा रख कर, अपना अभ्यास नेम और प्रेम के साथ रोज़मर्रा करे जावें और दिन दिन दया और मेहर की परख करते जावें।।

१६ - जो कोई जल्दी और शिताब-ज़दगी यानी ऊचला-चाल मचावेंगे, तो उनको नाहक़ तकलीफ़ और निरासता पैदा होगी और दूसरों की हालत को देख कर, बिला समझने उनके अधिकार के ईर्षा और जलन पैदा होगी और कुल्ल-मालिक और सन्त सतगुरु के चरनों में किसी क़दर अभाव आ जावेगा कि जिसके सबब से अभ्यास रोज़ बरोज़ ढीला और तरक़्क़ी बन्द हो जावेगी और फिर दया और मेहर भी उसी क़दर कम होती जावेगी और अचरज नहीं कि पूरे उद्धार के होने में कई जनम का फेर पड़ जावे।।

बचन बारहवाँ

जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है, उसको चाहिये कि नीचे की लिखी हुई बातों

का निर्णय करके प्रतीत करे और उसी मुवाफ़िक़ चरनों में प्रीत लाकर करनी करे।।

१ - इन सात बातों का हर एक परमार्थी को निर्णय करके प्रतीत करना ज़रूर और मुनासिब है।।

(१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल-मालिक और सर्व समर्थ हैं।।

(२) दूसरे यह कि जीव कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है।।

(३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रकट हुई और नीचे उतर कर ठेके ठेके पर मंडल बाँध कर रचना करती आई।।

(४) चौथे यह देश माया और काल पुरुष का है, जहाँ हमेशा अदल बदल होता रहता है और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशा क़ायम नहीं रहती। इस वास्ते इस जगह रहने की आसा बाँधना और इसको अपना वतन समझना नहीं चाहिये।।

(५) पाँचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के सच्चे परमार्थी को, जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचना चाहे और इनको संत सतगुरु कहते हैं।।

(६) छठे संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों के संग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद अन्तरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में।।

(७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं हैं क्योंकि सुरत, शब्द की धार के संग उतरी है और उसी धार के संग उलट सकती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं।।

२ - और सच्चे परमार्थी को इन चार बातों की भी पूरी समझ लेकर कार्रवाई करना मुनासिब है।।

(१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की, सतसंग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तब तक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेश रौ यानी आगे चलने वाला मान कर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने।।

(२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इन्द्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी रहता है, सो मुनासिब है कि उसका फ़िज़ूल ख़र्च न होने दे यानी बे-ज़रूरत और बे-फ़ायदा सुरत की धार को इन्द्रियों द्वारे बाहर की तरफ़ फैलने से रोकता रहे।।

(३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये कि मन में फ़िज़ूल ख़्वाहिशें संसारी तरक़्क़ी और इन्द्रियों के भोग बिलास की न उठें और जो ऐसी तरंगें पैदा होवें तो उनको रोकता रहे।।

(४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बे-परवाह हैं, वे किसी से कुछ नहीं चाहते, पर जो जीव उनका दर्शन उनके निज धाम में पहुँच कर करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है कि उनके चरनों में

सच्ची दीनता यानी ग़रज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा और चाल आहिस्ता आहिस्ता बढ़ती जावेगी।।

३ - वास्ते दुरुस्ती से समझने उन सात बातों के जिनका निर्णय करके जीवों को प्रतीत करना चाहिये, थोड़ा बयान हर एक बात का जुदा २ लिखा जाता है।।

४ -- (१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल-मालिक और सर्व समर्थ हैं।

सब जीव इस बात के क़ायल हैं कि कोई कुल्ल-मालिक इस रचना का ज़रूर है और वह सर्व समर्थ है, लेकिन वास्ते दूर करने शक और संदेह किसी क़िस्म के यहाँ बयान किया जाता है कि जैसे इस लोक की रचना सूरज की धार के आसरे है, ऐसे ही यह सूरज दूसरे सूरज का आधीन है और वह सूरज तीसरे का और वह सूरज सत्तनाम सत्तपुरुष का और सत्तनामरूपी सूरज कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है। राधास्वामी पद अनंत और अपार है यानी उसके परे और कोई पद नहीं है।।

५ -- (२) दूसरे यह कि यह जीव कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है।

इसका सबूत भी ज़ाहिर है। ज़रा ग़ौर करने से मालूम होगा कि कुल्ल रचना इस लोक की और इसी तरह से कुल्ल लोकों की सुरतों यानी रूहों की की हुई है और उन्हीं के आसरे ठहरी हुई है और जब वे पिंड को छोड़ देती हैं, उस वक़्त पिंड यानी देह का अभाव

हो जाता है। जैसे बीज से दरख़्त पैदा होता है, ऐसे ही मनुष्य के वीर्य से मनुष्य और यही हाल सब जानदारों का है। हर एक जिस्म में एक एक रूह बैठ कर कार्रवाई उसकी करती है और कुल्ल शक्तियाँ क़ुदरत और माया की, सुरत यानी जीव के हुक्म के मुवाफ़िक़ आपस में रल मिल कर कार्रवाई पालन पोषण वग़ैरा उस देह की करती हैं और जब कोई सुरत देह को छोड़ देती है, उस वक़्त वही शक्तियाँ आपस में लड़ भिड़ कर उस देह को बिगाड़ देती हैं यानी उसका अभाव हो जाता है। इससे साबित है कि सुरत चैतन्य की शक्ति से सब रचना हो रही है और उसी की ताक़त से ठहरी हुई है और उसी के वियोग से उसका अभाव हो जाता है और यह सुरत चैतन्य कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी किरन या बूँद है।।

६ -- (३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रकट हुई और नीचे उतर कर ठेके २ पर मंडल बाँध कर रचना करती आई।।

कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का स्थान आदि धाम कहलाता है। वहीं से आदि धार सुरत और शब्द की निकली और उसी धार ने कुल्ल रचना दरजे ब-दरजे करी। जैसे दरख़्त के बीज में से जो कुल्ला यानी आदि धार प्रकट होती है, वही कुल्ल दरख़्त की करतार है और उसी धार की मार्फ़त दरख़्त की रूह यानी अर्क़ सब जगह नसों में होकर पहुँचता है। इसी तरह मनुष्य और कुल्ल जानदारों की रचना का हाल और उस के ठहराव और सम्हाल और सुरत के वियोग

में अभाव की कैफ़ियत समझ लेना चाहिये यानी वही आदि धार जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली, वही सब मंडलों और स्थानों की करतार है और वही शब्द और नूर और अमृत और जान और चैतन्य की धार है।।

७ -- (४) चौथे यह देश माया और काल पुरुष का है, जहाँ हमेशा अदल बदल होता रहता है और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशा क़ायम नहीं रहती। इस वास्ते इस जगह रहने की आसा बाँधना और इस को अपना वतन समझना नहीं चाहिये।

यह हाल तग़ैयुर और तबद्दुल और नाशमानता इस लोक और उसकी रचना का साफ़ इन आँखों से दिखलाई देता है। फिर समझवार आदमी को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने वतन यानी निज घर का जो राधास्वामी धाम है, पता और भेद लेकर उस तरफ़ को चलना शुरू करे और इस दुनिया को अपना वतन या हमेशा ठहरने का स्थान न समझे, नहीं तो धोखा खावेगा क्योंकि मौत सब के सिर पर गाज रही है और एक दिन यह देह और देश और इसका सब सामान और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा ज़रूर छोड़ना पड़ेगा।।

८ -- (५) पाँचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के सच्चे परमार्थी को जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचना चाहे - और इन को संत सतगुरु कहते हैं।

ज़ाहिर है कि कोई काम या इल्म दुनिया का बग़ैर सिखाये उस्ताद के नहीं आता है, फिर सच्चा परमार्थ जो अन्तर के अन्तर गुप्त है और जिस की चाल शुरू

से घट में चलती है, बग़ैर समझाये और बुझाये संत सतगुरु और उन की दया और मेहर के कैसे हासिल हो सकता है? यह सच्चा मत जिस को राधास्वामी पंथ कहते हैं, कोई बाहरमुखी करतूत या बानी पढ़ने और पढ़ाने का काम नहीं है। पहिली चाल इस की मन और सुरत का घट में समेटना है और दूसरी चाल मन और सुरत का निज धाम की तरफ चढ़ाना है। फिर सिर्फ़ विद्यावान लोग इस मत की कार्रवाई और महिमा और बड़ाई को क्या समझ सकते हैं? यह लोग तो पोथी पढ़ना और पढ़ाना और उसके मतलब को ब-तौर लेक्चर के लोगों को सुनाना परमार्थ समझ रहे हैं और इतनी बात विद्यावान गुरू से हासिल हो सकती है। फिर संत सतगुरु की महिमा को जो कि रूह की धार पर सवार होकर कुल्ल-मालिक के धाम में आते जाते हैं, क्या समझ सकते हैं? सच्च तो यह है कि सिवाय संत या साध या सच्चे प्रेमी के, जो कि सच्चा खोज और दर्द परमार्थ का दिल में रखता है, और किसी की ताक़त नहीं कि संत सतगुरु की कुछ भी पहिचान कर सके या उन की बड़ाई समझ सके; इस सबब से तमाम दुनिया के जीव निगुरे हैं और जो कोई रस्म और टेक के ब-मूजिब बंसावली या विद्यावान या भेखी या पंडित को गुरु मान रहे हैं, ऐसे गुरु आप निगुरे हैं और सच्चे गुरु की महिमा से बे-ख़बर। इसी सबब से इन जीवों को कुछ फ़ायदा सच्चे परमार्थ का हासिल नहीं होता और न उन के हृदय पर सच्चे मालिक और सन्त सतगुरु के प्रेम का रंग चढ़ता है। सच्च तो यह है कि बिना संत सतगुरु के किसी जीव का, चाहे किसी मत में होवे, सच्चा उद्धार होना मुमकिन नहीं है।।

९ -- (६) छठे संत सतगुरु और उन के प्रेमी सेवकों के सतसंग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद अंतरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में।।

जैसे संत सतगुरु की ज़रूरत, वास्ते हासिल करने उपदेश और दया के है, ऐसी ही ज़रूरत संत सतगुरु और उन के प्रेमी जन के सतसंग की है। बग़ैर सतसंग के मत की समझ बूझ नहीं आती है और न दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त मालूम पड़ती है और न परमार्थ और उसके फ़ायदे की क़दर और महिमा समझ में आती है और न संसारी स्वभाव बदलते हैं और न भक्ति की रीति की ख़बर पड़ती है और न उसके मुवाफ़िक़ बर्तावा बर्त सकता है और न अभ्यास दुरुस्ती और आसानी के साथ बन सकता है और न प्रीत और प्रतीत की जल्द तरक़्क़ी हो सकती है। ख़ुलासा यह कि बग़ैर संत सतगुरु और प्रेमी जन के संग के, प्रेम का रंग जैसा चाहिये नहीं चढ़ सकता और न संत सतगुरु की पहिचान जिस तरह आनी चाहिये हो सकती है और न उनकी सेवा जैसी चाहिये बन सकती है और फिर उनकी मेहर भी जिस क़दर दरकार है, कैसे हासिल हो सकती है?

१० -- (७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है क्योंकि सुरत, शब्द की धार के संग उतरी है और उसी धार के संग उलट सकती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं।।

शब्द की धार से मतलब चैतन्य की धार से है। कुल्ल कार्रवाई रचना वग़ैरा की इसी धार से हुई और हो रही है। इस वास्ते जब तक कि यह धार उलट कर, अपने भण्डार यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में न पहुँचेगी, तब तक घट की पिंडी और ब्रह्मांडी रचना का कारख़ाना ब-दस्तूर जारी रहेगा, घट बदलते रहेंगे, पर सुरत की धार जब तक भेद पाकर और जुगत समझ कर अभ्यास करके यानी शब्द को सुनती हुई उलटेगी नहीं, तब तक उसका बंधन ब्रह्मांडी और पिंडी देशों में रहा आवेगा। इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह धारन करने और उसके संग दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और क्लेश से बचना चाहते हैं, सुरत शब्द का अभ्यास करना ज़रूर और लाज़िम है क्योंकि सिवाय इसके दूसरा रास्ता और तरीक़ा सुरत रूह के चढ़ाने का माया देश के पार, और पहुँचाना उसका राधास्वामी धाम में, रचा नहीं गया। जो कोई इस अभ्यास को नहीं करेंगे, वह माया के घेर में नीच ऊँच जोनों में भरमते और दुख सुख और जनम मरन का क्लेश सहते रहेंगे।।

११ - अब उन चार बातों का ज़िकर किया जाता है, जो सच्चे परमार्थी को अच्छी तरह से समझ कर भक्ति भाव में बर्तना चाहिए।

१२ -- (१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की सतसंग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तब तक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेश रौ यानी आगे चलने वाला मान कर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने।।

१३ - गुरु भक्ति के बयान में सब मतों में और ख़ास कर संत मत में हुकुम है कि सच्चा और पूरा गुरु खोज कर धारन करें और उनको परमेश्वर और सत्तपुरुष के समान मानें। मतलब इससे यह कि जब इस क़दर बड़ाई उनकी सेवक के चित्त में समावेगी, तब उनका बचन माना जावेगा और भाव और प्यार विशेष उनके चरनों में आवेगा और सेवा तन मन धन की बन आवेगी, जैसा कि इन दोनों कड़ियों में लिखा है।

सेवा कर तन मन धन अरपे, सत्तपुरुष सम सतगुरु थरपे

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

चूँकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।।१।।
मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया।
सिज्दागाहे जुमला हस्त आँ जा ख़ुदा।।२।।

"इज़ा तमउल फ़क़र फ़हो अल्लाहो"

"ब्रह्मवित बह्मैव भवति"

और ईसाई लोग भी पोप साहिब को कमोबेश ऐसा ही बड़ा मानते हैं।।

१४ - ज़बान से कहना और लिखे हुए को पढ़ना और उसके मुवाफ़िक़ तक़रीर करना और बात है और सच्चे मन से यक़ीन करना इस बात का कि सतगुरु

परमेश्वर और सत्तपुरुष हैं और फिर इस समझ के मुवाफ़िक़ उनके चरनों में भक्ति और सेवा करना और बात है यानी हर वक़्त और हर हालत और हर सूरत में ऐसे यक़ीन का क़ायम रहना बहुत मुशकिल है। अलबत्ता जब अन्तर और बाहर बारंबार परचे मिलेंगे, तब यह यक़ीन पकता जावेगा और जिस क़दर ज़्यादा सतसंग मिलता जावेगा, उसी क़दर ऐसे यक़ीन की धारना बढ़ती और मज़बूत होती जावेगी।।

१५ - इस वास्ते शुरू में आम परमार्थियों को मुनासिब है कि सतगुरु को अपने और सब से बड़ा और परमार्थ के भेद और जुगत का पूरा जानकार और रास्ते में अगुआ समझ कर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करें और समझ और विचार कर बचन मानें और जो कोई जल्दी करके गुरु को मालिक के समान मानेंगे और समझ बूझ ऐसे यक़ीन के मुवाफ़िक़ अभी दृढ़ नहीं हुई है और न अन्तर और बाहर कुछ परचे मिले हैं तो उनकी ऐसी प्रतीत दुख सुख के वक़्त झकोले खावेगी और जब तब यानी वक़्त तकलीफ़ और आराम के डिगमिग होती रहेगी और फिर शौक़ और अभ्यास भी ढीला हो जावेगा।।

१६ - और मालूम होवे कि सच्चे और दर्दी खोजी और सच्चे प्रेमी का हाल जुदा है और आम परमार्थियों का जुदा है। दर्दी और प्रेमी जीवों के हृदय में एक क़िस्म की तड़प और बेकली और तपन ऐसी हर वक़्त लगी रहती है कि जब वे सतगुरु के सनमुख भाग से आये और दया के भरे हुए भेद के बचन सुने, उसी वक़्त उनके अंतर में शान्ति और सीतलता प्राप्त होती है कि जिस से वे फ़ौरन पहिचान सतगुरु की कर लेते

हैं कि इनकी दया और मदद से हमारा कारज बनेगा। यह पहिचान पहिले ही दिन आ जाती है और इसके मुवाफ़िक़ वे भक्ति में लग जाते हैं और दिन दिन प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जाते हैं।।

१७ - सिवाय इसके जिस पर सतगुरु दयाल होवें थोड़ी पहिचान अपनी मेहर और दया से फ़ौरन जैसे कि जीव दर्शनों को आया, बख़्श देते हैं और अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत उसके हृदय में बसा देते हैं कि वह आइन्दा सतसंग और अभ्यास करके दिन दिन बढ़ती जाती है।।

१८ -- (२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इन्द्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी रहता है, सो मुनासिब है कि उसका फ़िज़ूल ख़र्च न होने दे यानी बे-ज़रूरत और बे-फ़ायदा सुरत की धार को, इन्द्रियों द्वारे बाहर की तरफ़ फैलने से रोकता रहे।।

१९ - जो कि मन और सुरत का समेटना और चढ़ाना ऊँचे की तरफ़ असली और सच्चा परमार्थ है, इस वास्ते जो कार्रवाई कि इसके बर-ख़िलाफ़ है यानी सुरत और मन की धार को बाहर और नीचे की तरफ़ बहाती है, वह ज़रूर विघ्नकारक समझनी चाहिये। लेकिन जो कि जीवों का अहार इसी देश के मसाले का बना हुआ है, इस वास्ते उसके ख़ुलासे का भी जो मन इन्द्रिय और देह को ताक़त पहुँचाता है, असली झुकाव बाहर की तरफ़ है। इस सबब से सुरत और मन की धार को बाहर और नीचे की तरफ़ से बिल्कुल रोकना मुनासिब नहीं है यानी जिस क़दर कि वास्ते कार्रवाई रोज़गार और गृहस्थ के कारोबार के, सुरत और मन

की धार का बाहर की तरफ़ मुतवज्जह होना ज़रूर है वह ब-दस्तूर जारी रखना चाहिये, ताकि जिस क़दर मसाला बाहरमुखी अंतर में अहार करने से जमा हुआ है, वह धारों के वसीले से निकल जावे और जो ख़ुलासे का ख़ुलासा क़ाबिल चढ़ने कुछ दूर तक ऊँचे देश की तरफ़ के है, ठहरा रहे। इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी जीवों को लाज़िम है कि फ़िज़ूल बहाव अपने मन और सुरत का बाहर की तरफ़ रोकते रहें और जिस क़दर कि अभ्यास ज़्यादा और व्यवहार और रोज़गार का काम कम होता जावे, उसी क़दर अहार भी कम करते जावें और उसी मुवाफ़िक़ बाहरमुखी संसारी कार्रवाई भी हलकी होती जावेगी यानी सुरत और मन की धार का बहाव बाहर की तरफ़ कम होता जावेगा।।

२० - अभ्यास के वक़्त ख़ास कर इस बात का ख़्याल रखना चाहिये कि जो गुनावन संसारी या परमार्थी बाहरमुख कार्रवाई की उठेगी और इस क़िस्म के ख़्याल और तरंग पैदा होंगी, तो वह मन और सुरत की चढ़ाई में ख़लल डालेंगी यानी धार का रूप बँधने न देंगी[1] और न उसको ऊपर की तरफ़ सिमटने और चढ़ने देंगी, फिर अभ्यास का रस कैसे आवेगा और आइन्दा को शौक़ कैसे बढ़ेगा? इस वास्ते मन और सुरत की धार को बाहर की तरफ़ झुकाव और बहाव से रोकना निहायत ज़रूर और लाज़िम है।।

२१ -- (३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये कि मन में फ़िज़ूल ख़्वाहिशें संसारी

१ - धार रूप स्थिर न रहने देगी।

तरक़्क़ी और इंद्रियों के भोग बिलास की न उठें और जो ऐसी तरंगे पैदा होवें, तो उनको रोकता रहे।

२२ - मालूम होवे कि अलावा मन के ख़मीर के संसारी होने के, वह जन्मान जन्म और हाल के जन्म में सालहा साल से संसारियों का संग करके संसारी भोग बिलास और मान बड़ाई और तरक़्क़ी धन और माल और हुकूमत और कुटुम्ब परिवार की चाह उठाता चला आया है और उसी निमित्त कर्म करता रहा है, यहाँ तक कि कुल्ल वक़्त अपना इसी क़िस्म की कार्रवाई और ऐसे ही लोगों के संग सोहबत में ख़र्च करता रहा है, फिर यकायक इसका रुख़ और स्वभाव बदलना बग़ैर दया संत सतगुरु और उनके और प्रेमी जन के संग के मुमकिन नहीं है। कोई दिन बाहर का सतसंग और अंतर में अभ्यास करके इस क़दर ताक़त आ जावेगी कि अपने मन की निगरानी और सम्हाल कर सकेगा यानी मन में फ़िज़ूल और ना-मुनासिब तरंगों की हिलोर उठते ही उसको परख कर रोक सकेगा।।

२३ - यह मन बड़ा ज़बरदस्त है और किसी के क़ाबू में नहीं आ सकता है, सिर्फ़ संत सतगुरु ने इसको जीता है, उनकी दया से उनके प्रेमी सेवक भी इसको किसी क़दर क़ाबू में ला सकते हैं यानी इससे परमार्थी कार्रवाई दुरुस्ती से ले सकते हैं। और बाक़ी रचना के सिर पर मन और माया सवार हैं और जैसा चाहते हैं, उस मुवाफ़िक़ उस रचना में कार्रवाई कराते हैं।।

२४ - हर एक सच्चे परमार्थी को अपने मन की चौकीदारी या निगरानी करना ज़रूर है और जब तक

कि दसवें द्वार तक न पहुँचे, तब तक उसकी तरफ़ से बिल्कुल निःचिन्त और निर्भय होना नहीं चाहिये और कुल्ल कार्रवाई उसके रोकने और क़ाबू में लाने की संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया का आसरा और बल लेकर, मज़बूती के साथ करनी चाहिये यानी ढीले होना या घबराना नहीं चाहिये।।

२५ -- (४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बे-परवाह हैं। वे किसी से कुछ नहीं चाहते, पर जो जीव उनका दर्शन (उनके निज धाम में पहुँच कर) करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है कि उनके चरनों में सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा और चाल आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी।।

२६ - जो कोई सच्चा परमार्थी है उसके हृदय में ज़रूर सच्ची दीनता और सच्चा प्रेम, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में पैदा होगा, पर दीनता और प्रेम में दरजे हैं, सो सतसंग और अभ्यास करके दिन दिन तै होते जावेंगे।।

२७ - सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी का स्वरूप यह है। -- (१) जैसे बीमार को साथ हकीम या डाक्टर के और (२) निरधन को साथ धनवान के और (३) नौकरी या ख़िदमत के चाहनेवाले को साथ राजा और हाकिम के और सच्ची और ज़बर लगन का स्वरुप यह है - (१) जैसे माता को पुत्र प्यारा है और (२) कामी को कामिन प्यारी है और (३) मछली को पानी और (४) पपिहा को स्वाँति की बूँदें।।

२८ - अब थोड़ा सा बयान उन दृष्टान्तों का जो सच्ची दीनता की बाबत ऊपर दिये हैं लिखा जाता है।।

२९ - पहिला, बीमार आदमी डाक्टर और हकीम का मुहताज है और उसको सच्ची ग़र्ज़मंदी हकीम और डाक्टर के साथ होती है। इसी तरह कुल्ल जीवों का मन बीमार है यानी संसार के भोगों में फँसा और ग्रसा हुआ है। जो उसके विकार दूर न किये जावेंगे, तो उसकी देह बिगड़ती चली जावेगी यानी नीचे की जोनों में उतरता चला जावेगा। अब परमार्थ में संत सतगुरु हकीम और डाक्टर हैं और वे मन बीमार का इलाज ख़ूब कर सकते हैं कि जिससे यह मन भोगों और संसार की तरफ़ से हट कर अपने निज घर में जो त्रिकुटी का स्थान है, पहुँच कर तीन लोक का राज पावे और सुखी हो जावे। दवा उसकी बीमारी के दूर करने की बाहर से सतसंग, सतगुरु और प्रेमीजन का और अंतर में अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का और परहेज़ यह है कि इन्द्रिय भोगों और मान बड़ाई की तरंगों से जहाँ तक मुनासिब और मुमकिन होवे, बचाव रखना।

३० - दूसरे, सब जीव निरधन हो रहे हैं यानी भक्ति और प्रेम का धन गँवा बैठे हैं और इस क़दर माया के झूँठे धन के मुहताज हो गये हैं कि अपनी चैतन्यता भी दिन २ खोते जाते हैं और अनेक तरह के कर्म करते हैं और कष्ट और क्लेश सहते हैं और कोई सूरत निकासी की नज़र नहीं आती।।

३१ - फिर संत सतगुरु पूरे धनवान हैं यानी भक्ति और प्रेम का भंडार उनके इख़्तियार में है और माया भी उनकी ताबेदार है। जो कोई उनके चरनों में प्रीत और

प्रतीत के साथ सतसंग करे और उनका बचन माने और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करे, तो वे प्रसन्न होकर उसको प्रेम का धन दान देवेंगे और माया के सामान की बे-क़दरी उसके चित्त में जता कर उसकी तरफ़ से बे-परवाह कर देंगे।।

३२ - प्रेम की दौलत अपार है। जिस क़दर चाहे, ख़र्च करें। उसका भंडार कभी घटता नहीं है और यह धन बिरले बड़ भागियों को दया से मिलता है।।

३३ - तीसरे, जो कोई नौकरी या ख़िदमत का चाहनेवाला है, वह राज दरबार में या हाकिमों के संग निहायत दीनता के साथ बर्ताव करता है और बहुत शौक़ के साथ ख़िदमत करने को तैयार रहता है।।

३४ - अब समझो और बूझो कि संत सतगुरु महाराजाओं के महाराजा और शाहन्शाहों के शाहन्शाह हैं,उनकी ख़िदमत और सेवा और सतसंग किसी बड़ भागी को मिलता है और फिर उसी को सब से बड़ा और भारी दरजा, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुँचने और विश्राम करने का, बख़्शिश होता है। यह दरजा ब्रह्मा विष्णु महादेव और ईश्वर परमेश्वर तक को मयस्सर नहीं हो सकता।।

गुरु पूरे का सेवक बरतर। क्या जो हुकम करे राजों पर।।

कौन करे आरत सतगुरु की।। टेक।।
ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं।
मिली नहीं यह पदवी।।१।।
कोट तेतीसों राग बैरागी।
इन्द्र मुनिन्दर भटकी।।२।।

सतगुरु बिना खोज नहिं पाया।
करम भरम बिच अटकी।।३।।
बड़े भाग जानो अब उनके।
जिनको सरन परापत गुरु की।।४।।
गुरू समान समरथ नहीं कोई।
जिन धुर घर की आन ख़बर दी।।५।।

३५ - अब उन दृष्टान्तों का बयान किया जाता है जो प्रेम प्रीत के बारे में दिये हैं।

३६ - अव्वल, माता और पुत्र की प्रीत। यह प्रीत बहुत निर्मल और बे-ग़र्ज़ है और इस कदर ज़बर है कि माता पुत्र की बीमारी और तकलीफ़ में अपना खाना पीना सोना और ज़रूरी हाजात वग़ैरा को भी किसी क़दर बिसर जाती है और बच्चे के आराम और ख़िदमत को सब कामों पर मुक़द्दम रखती है। ऐसे ही परमार्थी और प्रेमी जीव संत सतगुरु की सेवा में सर-गरम रहते हैं और अपने तन के आराम और इन्द्रियों के भोग वग़ैरा को बिसराये रहते हैं यानी जब जो मुयस्सर आया, वही बहुत ख़ुशी के साथ ग्रहन करते हैं और जब वक़्त मिला और थोड़ी फ़ुर्सत पाई, उस वक़्त अपनी हाजात रफ़ा करते हैं और आराम करते हैं। ख़ुलासा यह कि संत सतगुरु की प्रीत ऐसी ज़बर उनके हिरदे में बसी हुई है कि उनकी सेवा और सतसंग के मुक़ाबले में, किसी चीज़ और किसी काम की बल्कि अपनी भूख प्यास और आराम तक की सुध नहीं आती और हरदम कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की याद और ख़्याल हृदय में बसा रहता है।।

३७ - दूसरे, कामी की कामिन के साथ। यह प्रीत भी बहुत ज़बर है और इसके मुक़ाबले में कोई और

मुहब्बत नहीं ठहरती यानी दुनिया भर की प्रीतें इस प्रीत के तले रहती हैं और तन मन धन भी कामी पुरुष कामिन पर नौछावर करता है और चाहे जैसी दुनिया में बदनामी होवे, उसको सहज में सहता है और निन्दकों और ताने मारने वालों के बचन का बिल्कुल ख़्याल नहीं करता है और न अपने नफ़े और नुक़सान पर नज़र करता है।।

३८ - परमार्थ में भी ऐसी ही प्रीत अव्वल नम्बर समझी जाती है कि अपने प्रीतम के मुक़ाबले में कोई प्रीत किसी क़िस्म की और कोई चीज़ की क़दर या बड़ाई नहीं रहती है। संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक से प्रीत का ऐसा पक्का रंग प्रेमी जन के हृदय में चढ़ जाता है कि फिर कोई दूसरा रंग उसके सामने नहीं ठहरता। प्रेमी को प्रीतम के दर्शन और बचन और सेवा ऐसी प्यारी लगती है कि दूसरे काम की उसको सुध भी नहीं रहती।।

३९ - ऊपर के दोनों बयान से यह मतलब नहीं है कि प्रेमी दुनिया के कारोबार सब छोड़ देवे और सर्व अंग करके रात दिन परमार्थी कार्रवाई में ख़र्च करे। उस बयान का मतलब यह है कि प्रेमी के मुख्यता प्रीतम की याद और सतसंग और सेवा की हिरदे में रहेगी और दूसरे दरजे पर दुनिया के कारोबार भी करता रहेगा, मगर उनमें पकड़ और बंधन बहुत कम होगा, और ज़रूरत के वक़्त प्रेमी सब से न्यारा होने को तैयार रहेगा।।

४० - तीसरे, मछली की प्रीत जल के साथ। इस प्रीत की महिमा साफ़ ज़ाहिर है कि जल मछली का

आधार है, बग़ैर उसके उसकी ज़िन्दगी क़ायम नहीं रह सकती।।

४१ - इसी तरह प्रेमी जन को संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की प्रीत का आधार रहता है यानी जब तक कि गुरु स्वरूप का ध्यान करके और सुरत को शब्द में लगा कर मामूली रस न लिया जावे, तब तक प्रेमी को निहायत दरजे की बेचैनी और बेकली रहती है और कोई काम या चीज़ या कोई दूसरा ख़्याल उसको नहीं सुहाता और न उसके मन को चैन और आराम मिलता है।।

४२ - चौथे, पपीहे की प्रीत स्वाँति बूँद के साथ। यह जानवर साल भर में सिर्फ़ एक दो बार स्वाँति बूँद को पीकर तृप्त रहता है और जब तक वह न मिले, उसकी रटना लगाये रहता है। मगर चाहे जैसी गरमी पड़े, वह दूसरे जल को नहीं छूता या पीता है। इसी तरह प्रेमी जन अपने सच्चे और कुल्ल-मालिक के दर्शनों की आसा में उसके नाम को रटते रहते हैं और जब भाग से दर्शन मिल जाय, तब मगन हो जाते हैं। लेकिन और कोई पदार्थ उनकी लाग और लगन को हलका या ढीला नहीं कर सकता यानी तमाम रचना के भोग और बिलास पेश किये जावें या सिवाय धुर धाम के और कोई पद या स्थान रास्ते का उनको फ़तह हो जावे, तो भी पूरी शान्ति किसी तरह हासिल नहीं हो सकती और न प्यास और तड़प दर्शन जमाल कुल्ल की दूर हो सकती है।।

उपदेश

४३ - कुल्ल परमार्थी जीवों को मालूम होवे कि कोई काम संसारी या परमार्थी बग़ैर इन सब अंगों में या बाज़ों में (जहाँ जैसी ज़रूरत है) बर्ताव करने के दुरुस्ती के साथ नहीं बन सकता और सच्ची दीनता और सच्ची लगन यानी शौक़ या मुहब्बत तो हर काम में दरकार है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि परमार्थ के मुआमले में बे-परवाही और सुस्ती छोड़ कर, इन सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्ताव करे, तब कुछ फ़ायदा नज़र आवेगा, नहीं तो बग़ैर सुरत और मन के संग के जो करतूत बन आवेगी, वह शुभ करनी का फल देगी। पर सच्चे परमार्थ का फ़ायदा जो कि सुरत का निज धाम में पहुँच कर विश्राम पाना और हमेशा को परम आनंद का प्राप्त होना और जनम मरन के चक्कर से छूटना है, कभी नहीं हासिल होगा।।

४४ - जिस क़दर बाहरमुख करनी है वह शुभ कर्म में दाख़िल हो सकती है। सिर्फ़ अंतरमुख अभ्यास सुरत और मन की चढ़ाई का जीव के उद्धार में मदद दे सकता है और वह सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास है।।

४५ - अब जो कोई इस बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करेगा वह अपनी हालत चढ़ाई की वक़्तन फ़वक़्तन यानी जब तब जाँच सकता है और इसी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ति होती हुई परख सकता है और अख़ीर वक़्त की तकलीफ़ को बचा सकता है।।

४६ - जो कोई रस्मी परमार्थ में अटका रहेगा और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का खोज और पता

लगा कर, उनके धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का जतन सुरत शब्द योग के मुवाफ़िक़ नहीं करेगा, वह हमेशा माया देश में ऊँच नीच देश और ऊँची नीची जोनों में भरमता रहेगा।।

बचन तेरहवाँ

परमार्थी जीवों को भक्ति अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये और उसके साथ थोड़ा बैराग भी रखना चाहिये और दुनिया के कामों में साधारन तौर पर बर्तना चाहिये, बहुत मोह और आसक्ति दुखदाई है।।

१ - परमार्थी जीवों को भक्ति अंग हमेशा क़ायम रखना चाहिये और उसके साथ थोड़ी बहुत बैराग की भी धारना चाहिये और अंतर अभ्यास थोड़ा बहुत बिला नागा जारी रखना चाहिये।।

२ - भक्ति में तीन बातें दरकार हैं, पहिले अपने भगवंत यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल को हर वक़्त हाज़िर और नाज़िर समझना और दूसरे मालिक को सर्व समर्थ मानना और तीसरे इस बात का यक़ीन करना कि जो कुछ होता है, मालिक की मौज से होता है, बिना उसकी मौज के कुछ नहीं हो सकता और जिस क़दर बने, मौज के साथ मुवाफ़क़त करना।।

३ - इसी तरह बैराग की सम्हाल के वास्ते भी तीन बातों का ख़्याल रखना चाहिये। पहिले यह कि सिवाय मामूली और मुक़र्रर बर्ताव के मन और इन्द्रियों को रस

देने के वास्ते भोगों की चाह और तरंग न उठावे। दूसरे जो भोग अनिच्छित या परिच्छित प्राप्त होवें तो उनमें अहतियात के साथ बर्ताव करे, पर शर्त यह है कि वह भोग ना-जायज़ और ममनूअ[1] न होवें। तीसरे जो भोग कि अनिच्छित या परिच्छित या मामूली तौर पर प्राप्त होवें, उनकी तृष्णा यानी ज़्यादा तलबी न करे, क्योंकि इसमें बंधन और फिर बंधन के सबब से दुख प्राप्त होगा और वह भक्ति में ख़लल डालेगा।।

४ - भक्ति में यह क़ायदा मुक़र्रर है कि भक्त जो काम करे, वह अपने भगवंत की मौज के आसरे करे और जैसा कुछ कि उसका नतीजा यानी फल होवे, उसको मंज़ूर और क़बूल करे और शिकायत न करे, क्योंकि जो शिकायत करी और नाराज़ हो गया तो भक्ति के बर्ताव में ख़लल पड़ेगा यानी प्रीत और प्रतीत जब तब रूखी और फीकी हो जावेगी। ख़ुलासा यह कि जो मौज के साथ राज़ी रहा तो उत्तम दरजा है और साधारण तौर पर रहा यानी न राज़ी और न नाराज़, वह मध्यम दरजा और जो नाराज़ हुआ और कुछ देर तक रूखा फीका रहा और फिर आपही सोच समझ कर सम्हल गया तो तीसरे दरजे की भक्ति रही।।

५ - अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो भक्ति अंग क़ायम रखने के वास्ते ज़रूर हैं लिखा जाता है।।

६ - पहिले, अपने स्वामी को हाज़िर और नाज़िर समझना। कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल घट २ में शब्द स्वरूप और प्रकाश स्वरूप से हर वक़्त मौजूद हैं और जो कुछ कि करनी जीव से बनती है,

१ - जिसके वास्ते हुक्म नहीं है।

वह देख रहे हैं। इसी तरह संत सतगुरु भी अपने सूक्ष्म स्वरूप से, अपने निज सेवकों के घट में मौजूद रहते हैं और उनकी कार्रवाई पर नज़र रखते हैं। जो बात ना-पसंद होती है (तो जो मौज हो) सेवक को जता देते हैं या अंतर में प्रेरणा करके या बाहर से कोई मौज करके उसकी कार्रवाई बंद कर देते हैं, नहीं तो अपनी गम्भीरता के स्वभाव से चुप हो रहते हैं।।

७ - दूसरे, अपने मालिक को सर्व समर्थ मानना। मालूम होवे कि चेतन यानी रूह की धार सब जगह देह में फैली हुई है और हर जगह कार्रवाई उसी की शक्ति से जारी है। जब कोई तरंग उठती है, तो पहिले हिलोर मन के स्थान पर होती है और फिर वहाँ से धार रवाँ होकर उस इन्द्रिय के मुक़ाम पर आती है, जिसके वसीले से उस तरंग की कार्रवाई होनी चाहिये और फिर वह इन्द्रिय काम करती है। इस तरह जिस क़दर कि कार्रवाई अंग २ की देह में होती है, वह सब चैतन्य यानी सुरत की धारों की शक्ति से, जो कँवलों और चक्रों से जारी हैं, होती है।।

८ - इसी तरह बाहर ब्रह्मांड में भी कार्रवाई चैतन्य की धारों से हो रही है, जो बजाय कँवलों और चक्रों के सूरज और चाँद और तारागण से जारी हैं।।

९ - तीसरे, जो कुछ होता है मालिक की मौज से होता है, जब कि यह बात साफ़ ज़ाहिर और साबित है कि जिस क़दर कार्रवाई रचना में हो रही है, वह चैतन्य शक्ति की धार से होती है।।

१० - कोई २ कार्रवाई में जीवों के पिछले अगले कर्म भी अपना असर पैदा करते हैं यानी जहाँ कर्म की

मुख्यता है या जो कर्म अपना आपा ठान कर अहंकार के साथ किये जावें, वहाँ प्रेरना और तरंग का रूप कर्म अनुसार बनता है।।

११ - जहाँ अपने स्वामी की मौज और दया का आसरा लेकर निर-अहंकार कर्म किया जाता है, वहाँ प्रेरक मालिक की मौज है। फिर जो फल या नतीजा ऐसी कार्रवाई से पैदा होवे, वह मालिक का हुकुम समझा जाता है और उसके साथ सेवक बहुत ख़ुशी के साथ मुवाफ़क़त करता है।।

१२ - जब कभी मौज से कोई कर्म उलटा बन आता है या किसी कर्म का फल उलटा हो जाता है, तो भी सेवक को उसे मालिक की मौज और मसलहत समझ कर, उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करना चाहिये।।

१३ - जैसे यह एक मनुष्य की कार्रवाई का हाल लिखा गया, इसी तरह देशों और लोकों की कार्रवाई की कैफ़ियत समझना चाहिये यानी वहाँ क़ौम और क़ौमों या कुल्ल प्रजा के कर्म प्रेरक होते हैं और प्रेमी जन के वास्ते कुल्ल कार्रवाई मालिक के हुक्म और मौज से प्रकट होती है।।

१४ - अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो बैराग से ताल्लुक़ रखती हैं, किया जाता है।।

१५ - पहिले, ग़ैर-मामूली और ग़ैर-ज़रूरी भोगों की चाह न उठाना। भक्तिवान और प्रेमीजन को मुनासिब है कि फ़िज़ूल और ग़ैर-मामूली भोगों की चाह या गुनावन न उठावे, क्योंकि इसमें मन पुष्ट होता है और बारम्बार

चाह उठाने की आदत उसको पड़ती है कि जो परमार्थी अभ्यास और सतगुरु के सतसंग में ख़लल डालेगी।।

१६ - ऐसा कहा है कि किसी एक भोग की बारम्बार चाह उठाने और गुनावन करने से, उसका एक बार भोग लेना बेहतर है, बशर्ते कि ना-जायज़ और ना-मुनासिब न होवे, क्योंकि हर बार गुनावन करने से उस भोग की आसा और तृष्णा मन में मज़बूत होकर बस जावेगी, यहाँ तक कि फिर उसका निकालना कठिन हो जावेगा। इसी तरह जब कितने ही भोगों का ख़्याल मन में बसे या गुनावन रूप होकर मन को उसी ख़्याल में लगाए रक्खें तो फिर रफ़ता रफ़ता बहुत सा वक़्त इसी काम में सर्फ़ होगा और भजन और सतसंग के वास्ते फ़ुर्सत कम मिलेगी और फिर परमार्थी कार्रवाई बहुत कम होजावेगी और संसारी स्वभाव भी नहीं बदलेगा।।

१७ - दूसरे, अनिच्छित और परिच्छित भोगों में अहतियात के साथ बर्तना। अनिच्छित भोग वह हैं, जो बग़ैर इरादे के मौज से प्राप्त हों और परिच्छित, जो बग़ैर अपनी ख़्वाहिश के, दूसरा शख़्स मुहब्बत या मेहमानदारी के तौर से सनमुख लावे। इन भोगों में बशर्ते कि ना-जायज़ और ना-मुनासिब न होवें, अहतियात के साथ बर्ताव करना चाहिये यानी थोड़ा इस्तेमाल उनका करे और लिप्त न होवे और दुबारा उनके भोगने की चाह न उठावे। जिस किसी की जिह्वा इन्द्रिय थोड़ी बहुत क़ाबू में है, उससे ऐसी अहतियात बन पड़ेगी और जो कोई होशियारी के साथ अपनी इन्द्रियों को भोगों की तरफ़ से रोकता और सम्हालता रहता है, उसका बर्तावा भी दुरुस्ती और अहतियात के साथ जारी रहेगा,

लेकिन इन दोनों हालत में संत सतगुरु की दया संग होनी चाहिये। बग़ैर दया के मन और इन्द्रियाँ अपना जो़र दिखला कर, जीव के इरादे को पूरा नहीं होने देंगी और किसी क़िस्म का विघ्न डाल कर उसकी अहतियात को तोड़ देंगी।।

१८ - सच्चे परमार्थ की कमाई और उसके संजमों की सम्हाल बग़ैर मदद सतसंग और दया संत सतगुरु के मुशकिल है। इस वास्ते पहिले संत सतगुरु का खोज और फिर उनका सतसंग चेत कर और उनकी जुक्ति यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करना ज़रूर है। नहीं तो जो कार्रवाई की जावेगी, वह हठ के साथ त्याग में दाख़िल होगी और उसका फल बजाय भक्ति और प्रेम के सिर्फ़ शुभ कर्म का मिलेगा।।

१९ - तीसरे, भोगों की तृष्णा न करना। मन का ऐसा अंग और स्वभाव है कि जो भोग या काम इसको रसीला मालूम होता है, तो बार बार उस भोग के प्राप्ति या उस काम के करने की इच्छा और गुनावन उठाता है और जो प्राप्ति नहीं होती है तो दुखी होता है। यह आदत और स्वभाव सच्चे परमार्थ की कमाई में बहुत ख़लल डालता है, क्योंकि परमार्थी के मन को अनेक भोगों और कामों में बाँध कर, गुनावन और तरंगों के चक्कर में डालता है और उसके अभ्यास को गदला और मलीन करता है और दुरुस्ती के साथ बनने नहीं देता, इस वास्ते ऐसे स्वभाव का काटना बहुत ज़रूर है और इसी स्वभाव को भोगों में बंधन और आशक्ति कहते हैं, जिससे सच्चे परमार्थी को परहेज़ करना लाज़िम और मुनासिब है।।

२० - सच्चे परमार्थी को सब कामों में और ख़ास कर संसारी और व्यवहारी कामों में, साधारण तौर पर बर्तना चाहिये। ज़बर पकड़ या बंधन या अहंकार किसी ख़ास काम में ना-मुनासिब है, क्योंकि मन को जहाँ तक मुमकिन होवे, झगड़ों बखेड़ों से न्यारा रखने में परमार्थी का बड़ा फ़ायदा है और लिप्त होने में नुक़सान है।

२१ - अब मालूम होवे कि जिस किसी का भक्ति अंग में बर्ताव दुरुस्त है यानी अपने स्वामी को हर दम हाज़िर नाज़िर जानता है और उसकी मौज में राज़ी रहता है या उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करने में कोशिश करता है, उसको बाक़ी के सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्तने में कुछ दिक़्क़त नहीं होगी यानी उसका बैराग भी सही और प्रीत प्रतीत कुल्ल-मालिक और सन्त सतगुरु के चरनों में भी दुरुस्त और मज़बूत होगी और फिर वह भक्ति के सर्व अंग में दया और मेहर से, साथ दुरुस्ती और अहतियात के, बर्ताव करेगा।।

बचन चौदहवाँ

बग़ैर गुरु भक्ति और बिना गुरु चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निज धाम की तरफ़, सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है और जिन मतों में यह भेद और भक्ति और अभ्यास नहीं जारी है या इसकी ख़बर भी नहीं है, उनमें जीव का सच्चा कल्यान किसी सूरत में नहीं हो सकता।।

१ - मालूम होवे कि पिछले वक़्त में हिन्दुओं में उपाशना वालों और मुसलमानों में तरीक़तवालों के मत में गुरु की महिमा ज़्यादा थी। लेकिन जब से कि अन्तरमुख अभ्यास चढ़ाई मन और सुरत का गुप्त और मौक़ूफ़ हो गया और बजाय उसके पूजा मूरतों और क़बरों और किताबों और दूसरे निशानों वग़ैरा की ब-कसरत जारी हुई, तब से गुरु भक्ति की महिमा भी गुप्त हो गई।।

२ - हिंदुओं और मुसलमानों में गुरु की महिमा इस तौर पर वर्णन करी है।।

हिंदुओं का क़ौल

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरूरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थ - गुरु स्वरूप को ब्रह्मा विष्णु और महेश और ख़ुद पार-ब्रह्म समान मानना चाहिये और ऐसे गुरु को बारम्बार नमस्कार है।।

क़ौल दूसरा

ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवति

अर्थ - ब्रह्म का साक्षात जानने वाला आप ही ब्रह्म है।।

मुसलमानों का क़ौल

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया।
सिज्दागाहे जुमला हस्त आँ जा ख़ुदा।।

अर्थ - औलियाओं का हृदय मसजिद है और वहाँ सब को चाहिये की सिज्दा करें।।

क़ौल दूसरा

चूँकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।।

अर्थ - जिसको तुम ने सतगुरु माना, उसके अन्तर में ख़ुदा और पैग़म्बर दोनों आ गये।।

क़ौल तीसरा

गुफ़्त पैग़म्बर कि हक़ फ़रमूदा अस्त।
मन न गुंजम हेच दर बाला व पस्त।।
दर ज़मीनो आसमानो अर्श नीज़।
मन न गुंजम ईं यक़ीं दाँ ऐ अज़ीज़।।
दर दिले मोमिन बिगुंजम ईं अजब।
गर मरा ख़्वाही अज़ाँ दिलहा तलब।।

अर्थ - पैग़म्बर साहब ने कहा है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मैं ऊँचे नीचे देश में नहीं समाता और न ज़मीन और आसमान और अर्श वग़ैरा में समाता हूँ। लेकिन यह अचरज है कि प्रेमी जन के हृदय में समाता हूँ और जो कोई मुझ को चाहे तो उनसे माँगे।।

क़ौल चौथा

चूँ तु ख़्वाही हम-नशीनी बा-ख़ुदा।
रौ तो बिनशीं दर हुज़ूरे औलिया।।

अर्थ - जो कोई कि चाहे कि मालिक के सन्मुख बैठे उसको चाहिये कि औलिया यानी महात्मा के रू-ब-रू बैठे।

क़ौल पाँचवाँ

"इज़ा तमउल फ़क़र फ़हो अल्लाहो"

अर्थ - जिसका फ़क़ीरी का दरजा पूरा हुआ है, फिर वही अल्लाह है।।

३ - संतों ने भी गुरु की महिमा ऐसी ही बल्कि इससे ज़्यादा कही है और गुरु भक्ति पर वास्ते उद्धार जीव के ज़्यादा ज़ोर दिया है।।

४ - अब इस वक़्त में कि विद्या और बुद्धि का विस्तार ज़्यादा से ज़्यादा हो रहा है और बहुत से नये मत आलिमों और आक़िलों ने जारी किये हैं और जिन में अंतरमुख अभ्यास का कुछ ज़िक्र भी नहीं है, गुरु की ख़ास ज़रूरत बिल्कुल नहीं समझी जाती है, बल्कि जहाँ कोई ख़ास और शाज़ जगह गुरु भक्ति थोड़ी बहुत जारी है, यह लोग और इनके बचन को मानने वाले, उस सच्ची भक्ति और प्रेम को देख कर अचरज करते हैं और ब-सबब बे-ख़बरी उसके भेद के गुरु भक्तों को नादान और ओछा समझते हैं और उनकी चाल ढाल और गुरु के साथ दीनता और प्रीत के साथ बर्ताव पर तान मारते हैं और हँसी उड़ाते हैं।।

५ - जो लोग कि कर्मकान्डी और शरीअत के पाबंद हैं, उनके मत में भी गुरु की कुछ ज़रूरत नहीं है। पंडित और मौलवी जो कि थोड़ी बहुत विद्या पढ़े होते हैं, किताब के मुवाफ़िक़ कर्म कराने के वास्ते काफ़ी समझे जाते हैं।।

६ - इसी तरह जो विद्यावान इस ज़माने में ज्ञानी और सूफ़ी बन गये हैं और अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मानते हैं, गुरु को कुछ नहीं समझते। यह लोग सच्चे ज्ञानी और सच्चे सूफ़ियों की नक़ल करते हैं यानी उनके बचनों को पढ़ कर और विद्या बुद्धि से उनका मतलब समझ कर, अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मान बैठे हैं और असल में एक क़दम भी उस रास्ते पर, जहाँ होकर सच्चे ज्ञानी और सूफ़ी अभ्यास करके ब्रह्म और ख़ुदा के मुक़ाम तक पहुँचे, नहीं चले। सिर्फ उनकी बातें सीख कर आप भी वैसी ही बातें बनाने लगे और असल में मन और इन्द्रियों के क़ाबू में पड़े हैं।।

७ - जो कि बाहरमुख निशानों के पूजने वाले लोग कसरत से हैं और विद्यावानों में ज्ञानी और सूफ़ी कसरत से बन बैठे हैं और कोई २ नास्तिक हैं यानी मालिक की मौजूदगी के क़ायल नहीं हैं, इस सबब से बहुत थोड़े आदमी हैं कि जो मालिक से मिलने और उसके दर्शनों की चाह रखते हैं। और ऐसे शख़्सों को बग़ैर पूरे गुरु के चैन नहीं आवेगा यानी रास्ता और तरीक़ा मिलने का और भेद कुल्ल-मालिक और उसके धाम का, सिर्फ पूरे गुरु से ही मिल सकता है, दूसरा उस भेद और रास्ते और चलने की जुगत से वाक़िफ़ नहीं है।।

८ - अब आम तौर पर कुल्ल जीवों से पुकार कर कहा जाता है कि जो अपने सच्चे उद्धार का रास्ता जारी करना चाहो तो जो बचन कि आगे लिखा जाता है उस के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई करो, नहीं तो जनम मरन और दुख सुख का चक्कर कभी नहीं मिटेगा और कुल्ल-मालिक का दर्शन और परम आनंद की प्राप्ति यानी उसके आदि धाम में बासा, कभी नहीं मिलेगा।।

९ - पहिले, गुरु शब्द का अर्थ यानी मतलब बयान किया जाता है और वह यह है कि गुरु उसको कहते हैं कि जो अँधेरे में चाँदना करे और धुर पद यानी कुल्ल-मालिक के धाम का रास्ता और चलने की जुगत बता कर वहाँ पहुँचावे।।

१० - अब मालूम करो कि जब तक कि रचना शुरू नहीं हुई थी, कहीं अंधकार और कहीं धुन्धकार था और सब अपने हाल से बे-ख़बर थे यानी ख़्वाब-ग़फ़लत और

अजान की नींद में सोये हुए थे, सिर्फ़ कुल्ल-मालिक अनामी पुरुष राधास्वामी, जो कि महा प्रकाश और महा प्रेम और महा ज्ञान और महा चैतन्यता और महा आनन्द का भण्डार है, जागता था और अपने में आप मुतवज्जह और मगन था।।

११ - उस अनामी पुरुष से आदि धार प्रकट हुई, जिसने चाँदना किया और शोर ज़हूर का मचाया। इसी धार ने किसी फ़ासले पर ठहर कर और मंडल बांध कर रचना करी। फिर वहाँ से दूसरी धार प्रकट होकर नीचे उतरी और उसने ब-दस्तूर रचना करी। ऐसे ही हर एक ठेके और मुक़ाम से धार उतरती और रचना करती चली आई और इस देह में आँख के मुक़ाम पर ठहर कर और यहाँ की रचना करके देह और दुनिया का कारोबार करने लगी और मन और इन्द्रिय का संग करके और भोगों और पदार्थों में आशक्त होकर, दुख सुख भोगने लगी और जो कि देह माया के मसाले की बनी हुई है और हमेशा बदलती रहती है, इस सबब से एक देह को छोड़ना और दूसरी पैदा करके उस में प्रवेश करना यानी जनम मरन का चक्कर जारी हो गया।।

१२ - जो धार कि आदि में प्रकट हुई, वही शब्द और चैतन्य की धार है और उसी का नाम 'राधा' और अनामी पुरुष का नाम जिसमें से वह धार निकली, 'स्वामी' है। जिस क़दर कि इस धार का विस्तार होता गया, उसी क़दर शब्द और चैतन्यता रचना करती हुई फैलती गई।।

१३ - अब समझना चाहिये कि यही धार जो आदि में प्रकट हुई और नीचे उतरती चली आई, अनामी

पुरुष राधास्वामी के चरन की धार है और ख़ुद अनामी पुरुष राधास्वामी गुरु हैं यानी उन्हीं से आदि में चाँदना हुआ और जो चैतन्य और शब्द की धार उन से प्रकट हुई और चाँदना करती चली आई, गुरु का चरन है। यही धार उलट कर स्वामी के चरन में पहुँच कर समा सकती है।।

१४ - इस तरह तमाम रचना गुरु के चरन की चैतन्य शक्ति से प्रकट हुई और उसी की ताक़त से क़ायम है और चरन की धार के खिंच जाने से उस का अभाव हो जाता है।।

१५ - यही चरन की धार कुल्ल शक्तियों और रसों और स्वादों और इल्मों और हुनरों और रूपों और सूरतों और रोशनी वग़ैरा २ और कुल्ल रचना की भंडार और करतार है।।

१६ - जो सुरत उलट कर इस धार से लगी, वही एक दिन निज भंडार में पहुँचेगी यानी स्वामी से मिलेगी और जो कोई सुरत, और धारों से जो माया की मिलौनी के बाद जारी हुई हैं, मिलेगी, वह हमेशा माया देश में भरमती रहेगी।।

१७ - अब ग़ौर करके विचारो कि जब तक भेद निज घर और रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, इस धार यानी गुरु चरन को पकड़ के न चलेगा, तब तक धुर धाम में पहुँचना और परम आनंद को प्राप्त होना किसी सूरत में मुमकिन नहीं है और भेद और जुगत चलने की संत सतगुरु से मालूम होवेगी।।

१८ - संत सतगुरु उनका नाम है कि जो धुर धाम यानी अनामी पुरुष के स्थान से उतर कर, वास्ते

उपकार और उद्धार जीवों के पिंड में आये और भेद रास्ते का और तरकीब चलने की जीवों को समझा कर और उसका अभ्यास करा कर अनामी पुरुष राधास्वामी के धाम में पहुँचाते हैं।।

१९ - संत सतगुरु कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के प्यारे पुत्र और मुसाहब ख़ास हैं और कभी कभी वह मालिक आप भी संत सतगुरु रूप धारन करके इस लोक में प्रकट होता है।।

२० - जिस जीव या सुरत को कुल्ल-मालिक या सन्त सतगुरु निज धाम में पहुँचाने की नज़र से उपदेश देकर अभ्यास करावें और जब क़रीब निस्फ़ रास्ते के तै हो जावे, उसको 'साध गुरु' कहते हैं और जो धुर पहुँच जावे, उसको 'सन्त' कहते हैं।।

२१ - अब समझना चाहिये कि पहिले सन्त सतगुरु से मिलना और उनका सतसंग करना ज़रूर है और फिर उनसे उपदेश लेकर अन्तर में अभ्यास करना चाहिये यानी शब्द की धुन और धार को पकड़ के, निज देश की तरफ़ चलना और चढ़ना चाहिये और जो शब्द की धार है, वही चरन की धार है।।

२२ - ऊपर के लिखे से ज़ाहिर है कि जो कोई सच्चा और पूरा उद्धार चाहे, उसको गुरु भक्ति करना निहायत ज़रूर है। बाहर सन्त सतगुरु का सतसंग और उनकी भक्ति और सेवा और अन्तर में कुल्ल-मालिक की भक्ति जो आदि गुरु है और जो सन्त सतगुरु का निज रूप है और उसके चरन यानी शब्द की धार का संग और सेवा।।

२३ - सन्त सतगुरु की भक्ति बाहर के बंधन काटेगी और ढीला करेगी और अन्तर में चलने और चढ़ने में मदद देगी और अन्तर में शब्द भक्ति झीने बंधन काटेगी और ढीला करेगी और कुल्ल-मालिक और सन्त सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावेगी और रास्ता तै करने में जल्दी और आसानी होवेगी।।

२४ - यह दो क़िस्म की भक्ति यानी अन्तर और बाहर हर एक जीव को, चाहे औरत होवे या मर्द, शौक़ के साथ करनी चाहिये, तब जीव का सच्चा और पूरा कल्यान होना मुमकिन है। नहीं तो सब के सब माया के घेर में पड़े रहेंगे और उससे छुटकारा होना मुशकिल है।।

२५ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं कि जिस मत में गुरु और शब्द भक्ति का उपदेश नहीं है और सुरत और मन की चढ़ाई का अन्तरमुख अभ्यास नहीं है, वह मत ख़ाली और थोथा है और उस मत में किसी जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा।।

२६ - जो कोई सिवाय सच्चे गुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के और किसी की भक्ति करेगा, वह भक्ति शुभ कर्म में दाख़िल होगी और उसका फल चंद रोज़ का सुख इस लोक में या स्वर्ग लोक वग़ैरा में मिल जावेगा। पर सच्चे मालिक का दर्शन और उसके धाम की प्राप्ति हरगिज़ नहीं होगी और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होगा और न कुल्ल-मालिक के चरनों का सच्चा प्रेम मन में आवेगा।।

२७ - अब मालूम होवे कि सिर्फ़ राधास्वामी मत और संगत में यह दो क़िस्म की भक्ति जारी है। जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी होवे, उसको वहाँ से कुछ दिन सतसंग करके, भेद और उपदेश इस भक्ति का मिल सकता है और उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, कोई दिन में अपने जीव का थोड़ा बहुत कारज बनता हुआ इसी ज़िन्दगी में देख सकता है यानी कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरू के चरनों की प्रीत उसके हृदय में बसती और बढ़ती जावेगी और संसार और उसके सामान का प्यार और भाव आहिस्ता २ घटता जावेगा और अभ्यास में भी जब तब कुछ रस और आनंद मिलता जावेगा और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर नज़र आवेंगे।।

२८ - सिवाय उन फ़ायदों के जो ऊपर की दफ़ा में लिखे गये, राधास्वामी मत के अभ्यासी को बहुत बड़ा फ़ायदा यह होगा कि ज़िन्दगी में जिस क़दर उसका अभ्यास बढ़ा हुआ होगा, देह और दुनिया के दुख सुख ब-निस्बत दुनियादारों के कम व्यापेंगे और अख़ीर यानी मरने के वक़्त बजाय महा कष्ट और क्लेश पाने के, उसको अंतर में निहायत दरजे का आनंद, शब्द के प्रकट होने और प्राप्ति दर्शन का, हासिल होगा कि जिसका थोड़ा बहुत निशान मरने के बाद भी उसके चेहरे से ज़ाहिर होगा यानी उसका चेहरा बजाय मुर्दनी छाये हुए और भयानक हो जाने के, किसी क़दर नूरानी और खिला हुआ और सुहावन दिखलाई देगा। यह फ़ायदा किसी जीव को बग़ैर थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास,

सिमटाव और चढ़ाई मन और सुरत के (जैसा कि राधास्वामी मत में जारी है) हासिल नहीं हो सकता।।

२९ - समझवार और विचारवान जीवों को ग़ौर करना चाहिये कि यह किस क़दर बढ़की बात है कि जिससे जीते जी अपने उद्धार और एक दिन मालिक के धाम में पहुँचने और दर्शन की प्राप्ति का थोड़ा बहुत सबूत इसी देह में मिल जाता है। किसी मत में ऐसा भारी फ़ायदा इस क़दर आसानी के साथ हासिल होना मुमकिन नहीं है।।

३० - जिस किसी को इस बचन का यक़ीन न आवे यानी गुरु और शब्द भक्ति की महिमा और फ़ायदा उसके चित्त में न समावे, तो उसको समझाया जाता है कि आँख के मुक़ाम में तुम्हारी जाग्रत के वक़्त बैठक है और इस स्थान से हर रोज़ नींद के बस सूक्ष्म और कारन शरीर में स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था का बर्ताव कर रहे हो और तीनों हालत यानी जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था की कैफ़ियत और उनकी आपस में फ़र्क़ की जाँच कर रहे हो यानी देह और दुनिया की चिन्ता और दुख सुख और मुहब्बत और दुश्मनी सिर्फ़ जाग्रत अवस्था में व्यापती है और आँख के मुक़ाम से रूह की धार के सरकने पर ज़रा भी उसका असर नहीं रहता और स्वप्न अवस्था में सुरत अपनी ताक़त से सामान पैदा करती है और उनका रस लेती है, उस वक़्त बाहर कोई पदार्थ मौजूद नहीं होता और स्थूल मन और इन्द्रियाँ बेकार होते हैं और जब कभी सख़्त बुख़ार आता है या हालत ग़श की या कोई और सख़्त बीमारी होती है, उस वक़्त आँखों यानी पुतलियों का

खिंचाव ऊपर और अन्दर की तरफ़ होता है और उसके साथ ही बेहोशी ग़ालिब हो जाती है और इसी तरह अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय, जब नीचे से खिंचाव होता हुआ आँखों की पुतलियाँ सिमटती और खिंचती हैं, तब मौत होती है।।

३१ - अब इन सब हालतों से साफ़ ज़ाहिर है कि मरने के वक़्त रूह के जाने का रास्ता, आँख के स्थान से भीतर और ऊँचे की तरफ़ है और जब किसी बीमारी में थोड़ा खिंचाव रूह का होता है यानी कुछ आँखें चढ़ जाती हैं, तो फ़ौरन बेहोशी और ग़फ़लत पैदा हो जाती है और ज़्यादा खिंचाव में देह और दुनिया की सुध बुध भी नहीं रहती, बल्कि शीशी सुँघा कर डाक्टर लोग देह को काट देते हैं और उसकी जीव को ख़बर भी नहीं होती। इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जिस रास्ते पर मरने के वक़्त काल ज़बरदस्ती घसीट कर दुख देता हुआ ले जावेगा, उस रास्ते पर इसी ज़िन्दगी में चलने का जतन शुरू करना चाहिये, ताकि अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ न होवे, बल्कि आनन्द और सरूर प्राप्त होवे और तरकीब इस रास्ते पर चलने की सिर्फ़ राधास्वामी मत में मौजूद है और उसका उपदेश आम तौर पर जारी है और सच्चे खोजी और दर्दी को सहज में मिल सकता है और उसका फ़ायदा चंद रोज़ के अभ्यास में देख सकता है।।

३२ - जो कोई इस बचन को मानेंगे यानी बाहर से सन्त सतगुरु का सतसंग और भक्ति और अन्तर में शब्द का अभ्यास प्रेम के साथ करेंगे, वे इसी ज़िन्दगी में थोड़ा बहुत उसका फ़ायदा देखेंगे, और मरने के

वक़्त, और भी बाद छोड़ने देह के, सुख पावेंगे और जो बे-परवाही और नादानी से इस बचन को नहीं मानेंगे यानी अंतर और बाहर सच्चे मालिक और संत सतगुरु की भक्ति नहीं करेंगे, तो उनको इसी ज़िंदगी में कोई सहारा और सहाई नहीं मिलेगा और न मरने के वक़्त पर उनका महा कष्ट और क्लेश से बचाव होगा और न बाद मरने के सच्चा सुख स्थान मिलेगा यानी इन सब वक़्तों पर सख़्त तकलीफ़ और दुख भोगते रहेंगे और जनम मरन का चक्कर बंद नहीं होगा।।

बचन पन्द्रहवाँ

और मतों में उद्धार के वास्ते मेहनत और तकलीफ़ ज़्यादा और फ़ायदा बहुत कम और राधास्वामी मत में थोड़ी मेहनत और तवज्जह से फ़ायदा बहुत हासिल हो सकता है और सच्चे उद्धार का रास्ता जारी हो जाता है।।

१ - जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में कोई न कोई साधन वास्ते प्राप्ति मुक्ति के वर्णन किया है, पर सच्ची मुक्ति की कैफ़ियत और उसके हासिल होने की जुगत से सब बे-ख़बर हैं और हर चन्द बाज़े बाज़े साधन, किसी किसी मत में बहुत कठिन और सख़्त मेहनत-तलब हैं, पर उनसे फ़ायदा बहुत कम होता है और मुक्ति पद का रास्ता बिल्कुल नहीं चलता।।

२ - पहिले तो बहुत कम जीव उन कठिन साधनों को शुरू करते हैं और उनमें से बहुत कम जीवों से वे साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं और फ़ायदा उनका सिवाय थोड़ी सफ़ाई तन और मन के और कुछ मालूम नहीं होता।।

३ - दूसरे यह कि जिन जीवों से वह साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं, वे निहायत अहंकारी और अभिमानी हो जाते हैं और आइन्दा उनको खोज सतगुरु और शौक़ तरक़्क़ी अपनी कार्रवाई का नहीं रहता।।

४ - तीसरे यह कि बाज़े मतों में जहाँ विद्या और बुद्धि का प्रचार ज़्यादा है, गुरु की कोई ख़ास ज़रूरत या क़दर नहीं समझी जाती और बाज़े साधारन तौर पर बर्ताव जारी रखते हैं। लेकिन जो महिमा और सिफ़्त गुरु की संतों ने वर्णन की है, वह किसी के चित्त में नहीं ठहरती और इस सबब से पूरे गुरु में भाव उन लोगों को नहीं आता और सच्चे मालिक और सच्चे उद्धार के तरीक़े से बे-ख़बर रहते हैं।।

५ - बर-खिलाफ़ इसके संत अथवा राधास्वामी मत में कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु की महिमा ज़्यादा से ज़्यादा वर्णन की है और फिर भी उसका भेद और सिफ़्त जैसा कि चाहिये, बयान करने में नहीं आ सकती और इसी तरह सुरत शब्द योग की महिमा भी बहुत भारी की है, पर लोग उसके भेद से वाक़िफ़ नहीं हैं।।

६ - संत सतगुरु उनका नाम है कि जो धुर स्थान से वास्ते उद्धार जीवों के आये या अभ्यास करके धुर स्थान पर पहुँचे हैं और कुल्ल-मालिक से मिले हैं।।

७ - सुरत शब्द योग मतलब उस अभ्यास से है कि जिसमें अंतर में तवज्जह करके शब्द सुना जाता है और उसकी धार को पकड़ करके सुरत ऊपर को चढ़ाई जाती है और यह शब्द की धार धुर स्थान से निकल कर और जहाँ तहाँ रास्ते में ठेके लेती हुई पिंड में उतर कर नेत्र के स्थान पर ठहरी है और संत सतगुरु से भेद और जुगत लेकर और उनकी मेहर और दया से अभ्यास करके धुर पद को, शब्द को सुनती हुई, उलट जाती है।।

८ - जो कि सुरत का उतार चैतन्य की धार के संग जो कि शब्द की धार है, हुआ है, इस वास्ते उसी धार को पकड़ के यानी शब्द को सुनते हुये चल कर चढ़ाई मुमकिन है।।

९ - जो कि आदि में कुल्ल-मालिक के चरनों से शब्द की धार प्रकट हुई और वह धार उतरती हुई पिंड में आई, इस वास्ते उस शब्द या चैतन्य की धार को पकड़ के घर को उलट सकती है। और कोई रास्ता धुर घर में जाने का नहीं है।।

१० - सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास बिना उपदेश और दया संत सतगुरु के, जो कि निज भेदी उस मुक़ाम और रास्ते के हैं, बन पड़ना बहुत मुशकिल बल्कि नामुमकिन है। इस वास्ते सब जीवों को जो सच्चा उद्धार चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले संत सतगुरु के सतसंग में जावें और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास शुरु करें और बाहरमुख पूजा मूर्ति और निशानों वग़ैरा की न करें।

११ - जो और मतों में बाहरमुख साधन अनेक तरह के वर्णन किये हैं, उनका ताल्लुक़ या संबंध अंतर में सुरत की धार के साथ नहीं है, इस सबब से वह करनी सिर्फ़ शुभ कर्म का फल दे सकती है।।

१२ - इसी तरह जो साधन हठ योग के वर्णन किये हैं और उनके करने में जीवों को निहायत दरजे का कष्ट और क्लेश होता है, उनका भी कोई संबंध घट में शब्द की धार के साथ नहीं मालूम होता। इस वास्ते यह सब साधन सिर्फ़ मन और इंद्रियों की सफ़ाई का फ़ायदा किसी क़दर देते हैं, पर सुरत और मन की चढ़ाई का फ़ायदा उनमें क़तई नहीं है।

१३ - राधास्वामी या संत मत में साफ़ हिदायत है कि बग़ैर गुरु और शब्द भक्ति के किसी सूरत में सच्चा और पूरा उद्धार जीव का मुमकिन नहीं है यानी बाहर संत सतगुरु का सतसंग और सेवा और अंतर में भजन यानी शब्द का एकाग्र चित्त होकर सुनना।।

१४ - इस उपदेश के मुवाफ़िक़ कुल्ल जीवों को, जो अपने जीव का सच्चा कल्यान चाहें, कार्रवाई करना मुनासिब और लाज़िम है।।

१५ - सुरत शब्द का अभ्यास इस क़दर आसान है कि लड़के जवान बूढ़े औरत और मर्द जो थोड़ा भी शौक़ रखते हों सहज में कर सकते हैं और संजम भी उसके आसान हैं कि जिनकी सम्हाल हर शख़्स बिला तकलीफ़ कर सकता है।।

१६ - जो कि सुरत की बैठक जाग्रत अवस्था में आँखों के स्थान पर है और वहीं बैठ कर देह और

दुनिया के काम किये जाते हैं और दुख सुख और चिन्ता और फ़िक्र के व्यापने का यही स्थान है, इस वास्ते जब तक कि सुरत इस स्थान को नहीं छोड़ेगी और शब्द के वसीले से चढ़ कर अपने निज घर में जो कुल्ल-मालिक का धाम है, न जावेगी, तब तक परम आनंद को प्राप्त न होवेगी और जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा और यह चढ़ाई बग़ैर संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास के मुमकिन नहीं है।।

१७ - जो काम कि मन और सुरत की चढ़ाई में मदद न देवे, वह जीव के उद्धार का साधन नहीं हो सकता। इस वास्ते जिस क़दर बाहरमुख कारवाई हर एक मत में जारी है, वह सिर्फ़ शुभ कर्म का फल दे सकती है।।

१८ - जो जीव राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सतगुरु का सतसंग और घट में अभ्यास करेंगे, वे एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुँच कर हमेशा को सुखी हो जावेंगे और जो अनेक तरह की बाहरमुख कारवाईयों में अटके रहेंगे, उनका सच्चा उद्धार नहीं होगा यानी सच्चे मालिक के धाम में नहीं पहुँचेंगे।।

बचन सोलहवाँ

जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये कि जो अख़ीर यानी मौत के वक़्त काम देवे और संग चले।।

१ - जीव इस दुनिया में मेहनत करके अनेक तरह के पदार्थ और सामान, अलावा धन और माल के, इकट्ठा कर रहे हैं, इस नज़र से कि वक़्त ज़रूरत के काम आवे और आराम देवे।।

२ - उस सामान के जमा करने से मतलब यह है कि अपनी और अपने कुटुम्बियों और रिश्तेदारों की देह और इन्द्रियों और मन को सुख पहुँचे और तकलीफ़ न व्यापे।।

३ - यह कार्रवाई बड़े शौक़ और मेहनत के साथ हर कोई कर रहा है, लेकिन अपनी रूह यानी जीव आत्मा की कि उसको किस तरक़ीब से आराम पहुँच सकता है, किसी को ख़बर भी नहीं है और न कोई उसके लिये कुछ तहक़ीक़ात या जतन करता है।।

४ - मुक्ति की प्राप्ति के वास्ते जीव अनेक तरह के साधन करते नज़र आते हैं, पर जो ग़ौर करके देखा जावे, तो वह साधन सिर्फ़ शुभ कर्म के फल देने वाले हैं और सच्ची मुक्ति और सच्चे उद्धार का फ़ायदा उनमें ज़रा भी नज़र नहीं आता।।

५ - आम तौर से जीव सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और उसके धाम से बे-ख़बर हैं। पूरे उद्धार का मुक़ाम यही राधास्वामी धाम है और सच्चा मुक्ति पद संतों का दसवाँ द्वार है और वही पार-ब्रह्म का स्थान है। यह सब मुक़ाम अंतर में हैं और रास्ता भी वहाँ पहुँचने का घट में जारी है, पर लोगों को इस भेद की ख़बर नहीं है।।

६ - संतों ने दया करके भेद लखाया है और जो जीव कि चलना चाहें, उनको अपनी दया की मदद भी देते हैं और धुर पद में पहुँचाते हैं।।

७ - जो कोई अपना उद्धार चाहे, उसको लाज़िम है कि संत सतगुरु का सतसंग करे और सेवा करके उनको अपने ऊपर मेहरबान करले और उपदेश लेकर नित्त अभ्यास यानी रोज़मर्रा रास्ता तै करना शुरू करे, तो एक दिन उनकी दया से कुल्ल-मालिक के हुज़ूर में रसाई हो जावेगी और देहियों के कष्ट और क्लेश और जनम मरन के चक्कर से बचाव हो जावेगा।।

८ - दुनिया का जिस क़दर सामान जिस किसी ने इकट्ठा किया है, वह उसको इसी दुनिया में मदद दे सकता है यानी उसके मन इन्द्रिय और देह को उनसे आराम पहुँच सकता है और तकलीफ़ किसी क़दर दूर हो सकती है। लेकिन यह सामान जीव के कल्यान और सच्चे उद्धार के लिये सिवाय इसके कि संत सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा में काम आवे या ग़रीबों और मुहताजों को दिया जावे, और कोई मदद ख़ास नहीं कर सकता है।।

९ - वह सामान कि जो वक़्त तकलीफ़ और मौत के सच्ची सहायता करे और धुर पद का रास्ता आसानी से तै करने में मदद देवे और बाद देह छोड़ने के सुरत के संग चले, कुल्ल-मालिक के चरनों में सच्चा प्रेम और सच्ची दीनता है।

१० - जिस क़दर कि प्रेम जिस किसी के मन में है, उसी क़दर उसको अपने मन में ताक़त मालूम होती है और अभ्यास में आसानी और रस मालूम होता है

और उसी क़दर नज़दीकी मालिक के चरनों में होती जाती है।।

११ - इस अविनाशी वस्तु यानी प्रेम की दौलत का हासिल करना, जिस क़दर बन सके हर एक जीव को ज़रूर और फ़र्ज़ है। बग़ैर इसके मनुष्य पशु से बदतर हो जाता है।।

साखी १

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की स्वाँस लेत बिन प्रान।।

साखी २

प्रेम बनिज नहिं कर सके चढ़े न नाम की गैल।
मानुष केरी खोलरी ओढ़ फिरे ज्यों बैल।।

साखी ३

प्रेम कारन जिसने कीन्हा ख़र्च माल।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम हाल।।

साखी ४

प्रेम अग्नी अपने हिरदे बालिये।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये।।

साखी ५

वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीन्हा जला।।

साखी ६

पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार।।

साखी ७

जोगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुँचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश।।

शब्द

प्रेमबानी तीसरा भाग

अरी हे सहेली प्यारी, प्रेम की दौलत भारी,
छिन २ भक्ति कमाओ।।टेक।।
भक्ति बिना सब बिरथा करनी, थोथा ज्ञान ध्यान चित धरनी,
यह नहिं मुक्ति उपाओ।।१।।
प्रेम बिना कोई जाय न पारा, पहुँचे नहिं सतगुरु दरबारा,
क्यों बिरथा बैस गँवाओ।।२।।
ऐसा प्रेम गुरू से पावे, जो कोई उनकी कार कमावे,
उन चरनन पर सीस नवाओ।।३।।
दीन ग़रीबी धारो मन में, प्रीत बसाओ तुम निज मन में,
घट में शब्द जगाओ।।४।।
दया मेहर से सुरत चढ़ावें, धुर पद में वे ले पहुँचावें,
राधास्वामी चरन समाओ।।५।।

१२ - यह अनमोल पदार्थ यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम संत सतगुरु के सतसंग से प्राप्त हो सकता है। और कहीं चाहे कोई जिस क़दर तलाश और मेहनत करे, सच्चे प्रेम का किनका भी नहीं मिल सकता है और न हृदय में ठहर सकता है और न बढ़ सकता है।।

१३ - जो कि बिना प्रेम कुल्ल-मालिक के दरबार में पहुँचना मुमकिन नहीं है और बिना वहाँ पहुँचे पूरा उद्धार यानी छुटकारा, काल और कर्म और मन और माया के जाल और घेरे से हो नहीं सकता, इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना निरवार चाहें, संत सतगुरु

का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होना चाहिये और उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करना चाहिये।।

१४ - संत सतगुरु का सतसंग इस दुनिया में निहायत दुर्लभ यानी मुशकिल है, पर सच्चे खोजी और दर्दी को दया करके सहज में मिल जाता है।।

१५ - संत सतगुरु के दर्शन और बचन से उन्हीं जीवों को शान्ति और सीतलता प्राप्त होगी जिनके हृदय में सच्चा खोज और दर्द सच्चे मालिक के मिलने का है और जो जीव संसार के भोग और बिलास चाहते हैं और उन्हीं में उनको रस और आनंद आता है, वे संत सतगुरु के सतसंग में नहीं ठहर सकेंगे और न उनको उसकी कुछ क़दर मालूम पड़ेगी।।

१६ - जो कोई संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होगा, वे उसको महिमा धुर धाम और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की (जो उनका निज रूप है) सुना कर चरनों का प्रेम हृदय में बसावेंगे और उसी प्रेम के वसीले से अपनी दया का बल देकर घट में रास्ता तै करावेंगे।।

१७ - यह प्रेम जिसके घट में पैदा हुआ, वह सदा मगन और किसी कदर निःचिन्त रहता है और अभ्यास भी उससे सहज बनता है और अख़ीर वक़्त पर मन और सुरत के सिमटाव और खिंचाव में मदद देता है और शब्द और स्वरूप को सहज में प्रकट कराता है।।

१८ - जिसके घट में मालिक के चरनों का प्रेम बसा है, उसको कुछ तकलीफ़ मौत के वक़्त देह छोड़ने की नहीं व्यापेगी, बल्कि आनंद और सरूर विशेष उस

वक़्त प्राप्त होगा और जिस क़दर सुरत का खिंचाव होता जावेगा, वह आनंद बढ़ता जावेगा और जब तक कि धुर पद में पहुँचने का नम्बर आवे, ऊँचे देश के सुख स्थान में बासा पावेगा और फिर नर देही में लाकर और बाक़ी अभ्यास पूरा करा कर, धुर पद में पहुँचावेगा।।

१९ - यह सच्च है कि दुनियादारों के साथ भी दुनिया का सामान और धन और माल नहीं जाता, लेकिन वे भोगों की वासना और कुटुम्ब परिवार और धन माल का मोह संग ले जाते हैं और वह अख़ीर वक़्त पर देह के छूटने में बहुत तकलीफ़ देता है और थोड़ी दूर आगे चल कर यानी छठे चक्र के परे सुन्न में पहुँच कर, फुरना उसी वासना और देह और कुटुम्ब के संग की उठा कर सुरत को नीचे खींचता है और कर्म अनुसार नई देह में बासा देता है।।

२० - यह हालत दुनियादारों की ब-सबब न मिलने संत सतगुरु के (जो कि जीवों के इस लोक और परलोक में सच्चे सहाई हैं) और न पैदा होने मालिक के चरनों के प्रेम के घट में, हुई यानी मौत का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख भोगना पड़ा और जब तक संत सतगुरु से मेला न होगा और प्रेम घट में प्रकट न होगा, तब तक यह भरमना जीवों की चौरासी के चक्कर में दूर न होगी।।

२१ - इस वास्ते बारम्बार कहा जाता है कि अपने जीव के कल्यान के लिये सब को लाज़िम और फ़र्ज़ है कि संत सतगुरु या राधास्वामी संगत से मिल कर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बने अभ्यास करें और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के

चरनों का थोड़ा बहुत प्रेम अपने हृदय में जगावें, ताकि इस ज़िन्दगी में और आइन्दा को उनकी सहायता होवे और जनम मरन के कष्ट और क्लेश से बच कर, एक दिन परम धाम में बासा पाकर, हमेशा को सुखी हो जावें।।

सत्रहवाँ बचन

कलजुग करम धरम नहिं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई।।

१ - नाम की यह महिमा है कि जो सोते पुरुष को नाम लेकर पुकारो तो वह जाग उठता है। फिर जो जागता पुरुष है, उसका नाम लेकर पुकारोगे तो क्यों नहीं बोलेगा? इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के लिये कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का पता और भेद लेकर उनके निज नाम को जुगत के साथ उच्चारण करें और अन्तर में उसकी धुन सुनें।।

२ - नाम की दो क़िस्में है, एक ध्वन्यात्मक दूसरी वर्णात्मक। ध्वन्यात्मक नाम वह है कि जिसकी धुन हर दम घट में आपही आप बग़ैर ज़बान और बाजे के हो रही है। वर्णात्मक नाम उसको कहते हैं कि जो लिखने और पढ़ने में आवे।।

३ - वर्णात्मक नाम का सुमिरन आम तौर पर जारी है, मगर लोग उसको बिना भेद और जुगत के करते हैं, इस सबब से फ़ायदा उसका मालूम नहीं पड़ता। जो

नामी का भेद लेकर ठिकाने पर सुमिरन करें, तो उसका फ़ायदा जल्द मालूम पड़े।।

४ - ध्वन्यात्मक नाम का अभ्यास यह है कि अपने घट में मुक़र्रर स्थान पर, मन और सुरत और दृष्टि को जमा कर, नाम की धुन को तवज्जह के साथ सुनें और धुन के आसरे मन और सुरत को ऊँचे देश की तरफ़ चलावें और चढ़ावें।।

५ - जो कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक आँखों में है और यही कर्म का स्थान है यानी यहाँ ही बैठ कर देह और दुनिया की कार्रवाई होती है और दुख सुख व्यापता है, इस वास्ते जब तक कि सुरत का स्थान नहीं बदलेगा यानी आँख के मुक़ाम से ऊपर और अंदर की तरफ़ नहीं चढ़ाई जावेगी, तब तक देह और दुनिया के साथ बंधन और दुख सुख का भोग नहीं छूटेगा और यह चढ़ाई बे-ख़तरे और सहज में और पकाई और मज़बूती के साथ, ध्वन्यात्मक नाम के अभ्यास से हो सकती है और यह अभ्यास ब-निस्बत प्राणायाम और दूसरे अभ्यासों के बहुत सहज है और लड़के और जवान और बूढ़े स्त्री और पुरुष से, चाहे गृहस्थ में होवें या विरक्त, बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, बिला दिक़्क़त और आसानी के साथ बन सकता है।।

६ - इस अभ्यास को सुरत शब्द मार्ग कहते हैं और उसका भेद और तरीक़ा सिर्फ़ शब्द भेदी और शब्द अभ्यासी और शब्द स्वरूपी गुरू से जिनको संत सतगुरु कहते हैं, मिल सकता है। और किसी को यह भेद मालूम नहीं है और न ऐसी किसी की गति हो सकती

है कि अभ्यासी को अन्तर में मदद दे सके और अपनी दया का बल देकर रास्ता तै करावे और एक दिन धुर पद में पहुँचावे।।

७ - ऐसे संत सतगुरु दुर्लभ हैं यानी हर किसी को नहीं मिल सकते, लेकिन सच्चे खोजी और दर्दी को अपनी दया से सहज में मिल जाते हैं। उनके सतसंग की महिमा बहुत भारी है, सच्ची गढ़त मन की वहीं होती है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम हृदय में बसाया जाता है और संसार की तरफ़ से चित्त थोड़ा बहुत उपराम हो जाता है और अभ्यास में थोड़ा बहुत रस मिलता है।।

८ - संत सतगुरु का प्रकट होना इस दुनिया में जीवों के उपकार के वास्ते होता है। उनके दर्शन और सेवा करने और बचन सुनने और उनकी जुगत का अभ्यास करने से, सब को प्रेम की बख़्शिश होती है और वह प्रेम दिन दिन हृदय की सफ़ाई करता है और संसारी भोगों की बासना घटाता है और मन और सुरत को ऊँचे देश यानी निज घर की तरफ़ चलाता है।।

९ - सतगुरु की गति भारी है, वे चाहे जिसको छिन भर में निहाल कर सकते हैं और सहज में भौसागर के पार निज देश में पहुँचा सकते हैं।।

१० - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ति का बीजा, सिवाय संत सतगुरु के जीवों के हृदय में और कोई नहीं डाल सकता है और न ऐसी भक्ति को जो किसी के हृदय में पैदा हुई है, कोई शख़्स बढ़ा सकता है।।

११ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अविनाशी उद्धार चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले संत सतगुरू को खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और वहाँ भक्ति अंग में बर्ताव करें और प्रेमी जन की हालत और रहनी देख कर, जिस क़दर बन सके उनके मुवाफ़िक़ करनी करें और रहनी रहें, तब कुछ फ़ायदा हासिल होना शुरू होगा।।

१२ - ध्वन्यात्मक नाम यानी शब्द की महिमा अपार है। कुल्ल रचना शब्द से हुई और शब्द ही के आसरे ठहरी हुई है और शब्द ही के वसीले से कुल्ल कारोबार दुनिया के जारी हैं।।

१३ - शब्द की धार चैतन्य की धार का नाम है। यही जान और नूर की धार है और शब्द ही चैतन्य का निशान और ज़हूरा है यानी जब तक मनुष्य या कोई और जानदार बोलता है, ज़िन्दा है और जहाँ बोल बन्द हुआ मुर्दा है।।

१४ - असल में शब्द की धार धुर पद यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से प्रकट हुई और वहाँ से उतर कर और रास्ते में ठेके मुक़र्रर करती हुई और मंडल बाँध कर रचना करती हुई, पिंड में आँखों के मुक़ाम पर ठहरी है और यहाँ बैठ कर देह और दुनिया का कारज कर रही है।।

१५ - राधास्वामी देश में माया नहीं है और जहाँ से कि उसका ज़हूर हुआ, वहाँ से यह सुरत की धार पर ख़ोल पै ख़ोल चढ़ाती चली आई है और इन्हीं ख़ोलों का नाम देही है।।

१६ - अब जब तक कि यह सब ख़ोल उतर कर सुरत रूहानी यानी निर्मल चैतन्य देश में न पहुँचे, तब तक उसका सच्चा और पूरा निरवार नहीं हो सकता, क्योंकि किसी न किसी देहों में बंधन और उनके साथ पदार्थों में आसक्ति रही आवेगी और जो कि माया के मसाले की बनी हुई देह हमेशा एक रस क़ायम नहीं रह सकती, इस सबब से जनम मरन का भी चक्कर नहीं छूट सकता।।

१७ - सत्त पुरुष राधास्वामी यानी निर्मल चैतन्य देश माया के घेर के पार है और वहाँ चढ़ कर पहुँचना सुरत का मृत्यु लोक से, बग़ैर शब्द की धार के, किसी सूरत में मुमकिन नहीं है यानी शब्द को सुनती हुई सुरत उसी चैतन्य धार पर जिसके संग उतरी है, सवार होकर उलट सकती है, और कोई रास्ता धुर पद में पहुँचने का रचा नहीं गया।।

१८ - शब्द की धार को ध्वन्यात्मक नाम कहते हैं। जो इस नाम के भेद और अभ्यास से बे-ख़बर हैं, उनका सच्चा उद्धार हरगिज़ नहीं हो सकता।।

१९ - जो कि बग़ैर शब्द के अभ्यास के उद्धार मुमकिन नहीं है, इस सबब से शब्द यानी नाम की महिमा हर एक मत में बहुत की है, मगर ब-सबब न मालूम होने भेद और तरीक़ा अभ्यास या जुगत चलने के, कोई जीव उस महिमा को सुन कर फ़ायदा नहीं उठा सकता।।

२० - अब कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके, भेद शब्द का मय जुगत चलने के निहायत सहज तरकीब के साथ खोल कर

जीवों को समझाया और बानी में वर्णन किया है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को चाहिये कि अपने जीव के असली कल्यान के वास्ते राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर, जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें और अपनी नर देह जो कि मुशकिल से हाथ आई है, सुफल करें। नहीं तो चौरासी में भरमना और ऊँच नीच जोन में पैदा होकर हमेशा दुख सुख और जनम मरन का क्लेश सहना पड़ेगा।।

बचन अट्ठारहवाँ

लेना, देना, पकड़ना और छोड़ना यानी जिस क़दर बाहर से लेना उसी क़दर देना और जिस क़दर अंतर में लेना, वह उलट कर और बढ़ा कर कुल्ल-मालिक के सन्मुख पेश करना और सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना

पहिले बाहर के लेन देन का वर्णन

१ - दुनिया में लेन देन यानी भाजी व्यवहार आम तौर पर जारी है यानी हर एक जीव कितने ही जीवों से कुछ लेता है और देता भी है। यह बर्ताव कुल्ल रचना में चाहे आसमानी है या ज़मीनी जारी है।।

२ - अब ग़ौर से देखो कि कुल्ल जीव इस लोक में अपना अपना अहार बाहर से लेते हैं। स्थूल अंग उसका पेशाब और पाख़ाने के रास्ते निकल जाता है और सूक्ष्म

अंग पसीने के रास्ते और भी इन्द्रियों की कार्रवाई में, जैसे चलना, फिरना, बैठना, उठना, देखना, सुनना और दूसरे कामों के करने यानी मेहनत मज़दूरी में ख़र्च होता है, जो थोड़ा सा हिस्सा बाक़ी रहा, वह देह के बढ़ाव और परवरिश में काम आता है।।

३ - जो कि माया के मसाले का झुकाव बाहर की जानिब और नीचे की तरफ़ है, इस वास्ते जिस क़दर उसका ख़ुलासा देह में बढ़ेगा, उसी क़दर झुकाव और पकड़ संसार और संसार के पदार्थों में होगी और वह ऊँचे देश में सुरत के चढ़ाने के अभ्यास में विघ्न-कारक होगा। यही सबब है कि रागी और भोगी जीव सच्चे परमार्थ का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं कर सकते और न सतसंग में संत सतगुरु के, ठहर सकते हैं।।

४ - जो सच्चे परमार्थ का अभ्यास करते हैं, वे इस लोक का अहार ज़रूरत के मुवाफ़िक़ ग्रहण करते हैं और जहाँ तक मुमकिन होता है, उसको यहाँ का यहीं ख़ारिज और ख़र्च कर देते हैं यानी देह में जमा होने नहीं देते, सिर्फ़ ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ रखते हैं क्योंकि इस मसाले का स्वभाव है कि सुरत को बाहरमुखी कार्रवाई में मशग़ूल रखता है और अंतर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ने में विघ्न डालता है।।

५ - इसी तरह सब इन्द्रियाँ बाहर से अपने भोग के वक़्त सामान लेती हैं और जमा भी रखती हैं, लेकिन परमार्थी जीव वक़्त मुनासिब पर और आहिस्ता आहिस्ता अभ्यास की मदद से, इन इन्द्रियों के इकट्ठे किये हुए सामान को ख़ारिज करता रहता है या जलाता और मिटाता रहता है।।

६ - सिवाय अहार लेने वाली इन्द्रिय के और इन्द्रियों का सामान जमा करना यह है कि जैसे आँख का सूरतों को और कान का पढ़ी और सुनी हुई बातों को वग़ैरा वग़ैरा। यह इन्द्रियाँ सामान जमा भी करती हैं और उसके मुवाफ़िक़ या उससे बढ़ के और सामान की चाह और तरंग पैदा करती हैं कि जिस के सबब से मन हमेशा चंचल रहता है और जीव किसी न किसी क़िस्म की करतूत करने में अटका रहता है यानी इस क़दर फ़ुर्सत नहीं पाता कि कभी अपने असली फ़ायदे और नुक़सान का सोच और फ़िक्र करे।।

७ - नई नई चाहों और तरंगों के उठाने से जीव का बंधन संसार में दिन दिन बढ़ता रहता है और कर्म में मशग़ूली और आसक्ति भी बढ़ती रहती है कि जिसके सबब से छुटकारा निहायत मुशकिल हो गया है।।

दूसरे अंतर के लेन देन का बयान

८ - अंतर में जो सुरत की धार चैतन्यता लिये हुए उतर कर आई है, वही सामान जीव को धुर घर से मिला है, और वही इस पिंड में सर्व शक्ति और चैतन्यता और प्रेम और आनंद का छोटा भंडार है।।

९ - जो कोई इस चैतन्यता और प्रेम को निपट संसारी कामों में और हासिल करने मन और इंद्रियों के भोग और बिलासों में ख़र्च करते हैं, वह अपनी पूँजी गँवाते हैं और फल उसका यह होता है कि ब-सबब ज़बर रहने संसार और भोगों की चाह और बासना के, यह जीव बारम्बार देह धरते हैं और अपने निज घर की कभी सुध भी नहीं लेते और कर्म अनुसार नीची जोनों

में भी भरमते हैं और अपनी चैतन्य शक्ति बरबाद करते हैं।।

१० - मुनासिब तो यह है कि कुल्ल जीव अपने निज घर की सुध लेकर और संत सतगुरु से जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, थोड़ी बहुत कार्रवाई उसकी करें और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों की चाह अपने घट में ज़बर पैदा करें कि जिसके सबब से दिन २ इनका दरजा सुरत की चढ़ाई के साथ बढ़ता जावे और एक दिन कुल्ल-मालिक के सन्मुख पहुँच कर उसका दर्शन करें और निज धाम में जो कि अमर और परम आनंद का भंडार है, बासा पावें।।

११ - इस कार्रवाई यानी सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से, सुरत दिन २ ऊपर को चढ़ती और चैतन्यता और नूरानियत उसकी बढ़ती जाती है।।

१२ - सुरत को चढ़ा कर राधास्वामी देश में पहुँचाना यही काम ज़रूरी और कठिन है। इसी को जो चैतन्यता और प्रेम और आनंद की शक्ति कुल्ल-मालिक के चरनों से वक़्त उतार सुरत के हासिल हुई थी, फेर देना यानी वापिस ले जा कर जिसको उलटाना कहते हैं, कुल्ल-मालिक के चरनों में पेश करना, समझना चाहिये।।

१३ - जो कोई यह काम सुरत की चढ़ाई का सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके नहीं करेंगे, उनकी सुरत मुवाफ़िक़ ज़बर संसारी बासना के जनम मरन में पड़ी रहेगी और नीच ऊँच जोनों में कर्म अनुसार भरमती रहेगी। इसका नाम अपने मालिक को भूलना और उसकी अमानत वापिस न देना, बल्कि उसको बेजा

और ना-मुनासिब बर्ताव और व्यवहार के साथ ख़राब करना और दिन २ घटाना है और इसी को जीव का अकाज और अकल्याण कहते हैं। ऐसे जीव हमेशा दुख सुख का भोग करते हैं और जनम मरन का क्लेश सहते रहेंगे।।

१४ - जिन जीवों को इस बात का ख़्याल है कि जो पूँजी सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक ने बख़्शी है, उसको बढ़ा कर मालिक के सन्मुख पेश करना और किसी क़िस्म के दुनियावी झगड़े रगड़े में न पड़ना हर एक पर फ़र्ज़ और लाज़िम है, वेही जीव सच्चे परमार्थी और भक्त कहलाते हैं और उन्हीं को संत सतगुरु अपना दर्शन देकर और भेद रास्ते और मंज़िलों का समझा कर और चलने की जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देकर अपनी दया और मेहर से धुर पद में पहुँचावेंगे।।

तीसरे सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना

१५ - मालूम होवे कि कुल्ल रचना में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल सत्त स्वरूप हैं या उनकी अंस सुरत सत्त रूप है और बाक़ी जो कुछ कि है या नज़र आता है, वह मायक और असत्त है यानी हमेशा एक रस ठहर नहीं सकता।।

१६ - रचना में जो नाम और रूप हैं, वह जानदारों में सुरत के नाम और रूप हैं।।

१७ - यह नाम और रूप सुरत के ठहराव से नज़र आते हैं और जब सुरत का किसी देह से वियोग हो

जाता है, तब उस नाम और रूप का भी अभाव हो जाता है क्योंकि सत्त वस्तु सुरत थी, उसके अलेहदा होने पर देह यानी असत्त वस्तु का अभाव हो गया।।

१८ - अब विचार करो कि जो कोई सुरत की (जो कि सत्त वस्तु है) पहिचान करके, एक दूसरे से प्रीत करेगा उसको वक़्त सुरत के वियोग के इस क़दर झटका नहीं लगेगा, जैसा कि उन लोगों को कष्ट और क्लेश होता है, जो कि देह रूप से प्रीत करते हैं और चैतन्य सुरत की पहिचान नहीं करते और उसके हाल से बे-ख़बर हैं।।

१९ - ख़ुलासा यह है कि नाशमान पदार्थ में बंधन मन का करने से हमेशा तकलीफ़ पैदा होगी और बिजोग का क्लेश सहना पड़ेगा, इस वास्ते मुनासिब है कि ज़ाहिरी स्वरूप में मन और इन्द्रियों का सख़्त बंधन न चाहिये, नहीं तो नतीजा उसका दुख और क्लेश होगा।।

२० - जहाँ कि सत्त और असत्त का आपस में संग या मेल है, उस देश में कोई पदार्थ या नाम और रूप हमेशा एक रस क़ायम नहीं रह सकता, फिर जो कोई ऐसी रचना में दिलबन्दी करेगा यानी अपने मन को बाँधेगा, वह हमेशा जनम और मरन और दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहेगा।

२१ - इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जहाँ तक माया का घेर है, वहीं तक असत्त का घेरा है। जब तक उस घेरे के पार सुरत न जावेगी, तब तक असत्त के देश में लाचार उसको किसी न किसी क़िस्म की देह धारन करके रहना पड़ेगा और जब देह नाशमान और असत्त

हुई, तब जनम मरन का चक्कर भी ज़रूर जारी रहेगा और दुख सुख और कष्ट और क्लेश भोगना पड़ेगा।।

२२ - माया के घेर के पार सत्त यानी निर्मल चैतन्य का देश है और वहीं सत्त पुरुष राधास्वामी कुल्ल-मालिक का धाम है। यह धाम अजर और अमर है और महा चैतन्य और महा ज्ञान और महा आनंद और महा प्रेम और महा सत्त का भंडार है। यहीं से सुरत का आदि में निकास और उतार हुआ और जब इसी धाम में उलट कर सुरत आवेगी, तब सच्चा और पूरा छुटकारा काल और माया के जाल से होवेगा और जनम मरन का चक्कर हट जावेगा और सुरत परम आनंद को प्राप्त होगी।।

२३ - इस वास्ते सब जीवों को जो अपना सच्चा निरवार और परम आनन्द की प्राप्ति चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि माया के देश और मायक रचना से आहिस्ता आहिस्ता चित्त हटा कर, सत्त देश में पहुँचने का जतन करते रहें यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नित्त जारी रक्खें और अभिलाषा राधास्वामी दयाल और उनके धाम के दर्शन की नित्त बढ़ाते और पकाते रहें तो सन्त सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया से एक दिन कारज पूरा बन जावेगा।।

२४ - जिस क़दर भूल और भरम है, वह माया के देश में है यानी जहाँ माया के ग़िलाफ़ सुरत पर जो सत्त और चैतन्य है, चढ़े हुए हैं। जब तक यह गिलाफ़ नहीं उतरेंगे, तब तक अज्ञान और ग़फ़लत पूरी तौर से दूर न होगी और यह बग़ैर चढ़ाई सुरत के, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से, और तरह मुमकिन नहीं है।।

२५ - सुरत शब्द मार्ग के भेद और अभ्यास से कुल्ल जीव बे-ख़बर हैं, सिर्फ़ राधास्वामी मत में इसका उपदेश आज कल जारी है। जो कोई सच्चा परमार्थी (जिसके मन में सच्चा खोज और दर्द है) चाहे, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके और अपने जीव का प्रत्यक्ष कल्यान होता हुआ देख कर अपना कारज बना सकता है।।

बचन उन्नीसवाँ

सतगुरु बचन सुनो और मानो।
गुरु चरन प्रीत पालो और चालो।।
राधास्वामी चरन पकड़ के धाओ।
निज घर जाय अमर सुख पाओ।।

१ - जिस किसी को कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और जीव का दुनिया में ठहराव थोड़े दिनों का देख कर चेत हुआ है और वह सच्चे मालिक और उसके धाम का, जो अमर और परम आनंद का भंडार है, खोज और पता लगाना चाहता है और जिसको जुगत चलने और पहुँचने उस मुक़ाम की दरियाफ़्त करना मंज़ूर है, उसके वास्ते यह बचन कहा जाता है।

२ - पहिले संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज लगा कर, उनके सतसंग में शामिल होवे और दीनता और अदब और सच्ची ग़रज़मंदी के साथ उनके सन्मुख

जावे और शौक़ और प्रीत के साथ उनके बचन सुने और समझे और जो बचन अपने वास्ते मुफ़ीद और लायक़ देखे, उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई शुरू करे यानी जो ख़ियालात नाक़िस और ना-मुनासिब उसके मन में पहिले से जमा हुए और धरे हैं, उनको आहिस्ता आहिस्ता निकाले और छोड़े और जो बातें और चाल ढाल उसको वास्ते हासिल करने सच्चे परमार्थ के ज़रूर दरकार हैं, उनको पकड़े और उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी दुरुस्त करे।।

३ - सिवाय इसके जो प्रेमी और भक्त जन संत सतगुरु के सतसंग में शामिल हैं या होते रहते हैं, उनकी करनी और रहनी देख कर उसके मुवाफ़िक़ अपनी कार्रवाई भी दुरुस्त करे और उमंग के साथ संत सतगुरु और प्रेमी जन की तन मन धन से सेवा करे।।

४ - जो कि संत सतगुरु के सतसंग में हर रोज़ महिमा कुल्ल-मालिक और उससे मिलने के मार्ग यानी सुरत शब्द के अभ्यास की वर्णन की जाती है, उसको सुन कर और समझ कर शौक़ के साथ उपदेश लेकर अंतर अभ्यास शुरू करे और भेद रास्ते और स्थानों का अच्छी तरह समझ लेवे।।

५ - संत सतगुरु के सतसंग में और भी संत मत में प्रेम की महिमा ज़ोर देकर वर्णन की जाती है क्योंकि बग़ैर प्रेम के न कोई दुनिया का काम दुरुस्त बन सकता है और न परमार्थ का रास्ता चल सकता है और न मन और इन्द्रियों के विकार और माया के विघ्न दूर हो सकते हैं।।

६ - संत सतगुरु की प्रीत कुल्ल दुनियावी ज़ाहिरी और स्थूल प्रीतों से छुड़ाने वाली है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को पहिले मुनासिब है कि उनके चरनों में गहरी प्रीत करे। यह प्रीत सिर्फ़ दुनिया के बंधनों को ढीला करने वाली और हटाने वाली नहीं है, बल्कि अन्तर अभ्यास में बहुत मदद मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई में देती है।।

७ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रतीत और प्रीत का आना सन्त सतगुरु की प्रीत और प्रतीत पर मुनहसिर है, क्योंकि कुल्ल-मालिक का स्वरूप और सन्त सतगुरु का निज रूप एक ही है। जो सन्त सतगुरु के ज़ाहिरी स्वरूप में गहरा प्यार आया तो निज रूप में भी उसी क़दर मुहब्बत पैदा होवेगी और यह मुहब्बत शब्द के अभ्यास में गहरी मदद देगी यानी एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगी।।

८ - जिस क़दर सन्त सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत बढ़ती और पकती जावेगी, उसी क़दर अंतर में रास्ता तै होता जावेगा और रास्ता वही सुरत की धार है कि जो शब्द की धार है यानी शब्द सुनते हुए सुरत की धार को समेटना और उलटाना मुमकिन है, और कोई जुगत चढ़ाई की नहीं है और नहीं रची गई है।।

९ - यही सुरत और शब्द की धार कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु के चरन हैं। इस धार यानी चरनों में प्रीत लानी चाहिये और इसी धार यानी चरनों को पकड़ के घट में चलना चाहिये।।

१० - यही सुरत और शब्द की धार सन्त सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों की धार है और वही नूर और अमृत और चैतन्य और जान की धार है। जिसने इस धार को पकड़ा उसने गोया कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु का दामन पकड़ लिया या यह कि चरनों में लिपट गया।।

११ - जिसको वक़्त अभ्यास के शब्द साफ़ सुनाई देता है और कुछ आनंद आता है या यह कि वक़्त ध्यान के उसके मन और सुरत सिमट कर चरनों में लग जाते हैं और रस लेते हैं, तो जानना चाहिये कि उसके अभ्यास की हालत अच्छी है और दिन दिन तरक़्क़ी होती जावेगी।।

१२ - जिस क़दर अभ्यासी को अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, उसी क़दर उसका प्रेम चरनों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ता जावेगा और उसी क़दर प्रेमी जन में प्यार आता जावेगा और उसी क़दर संसार और उसके भोग विलास और सामान से चित्त हटता जावेगा।।

१३ - जैसे कि मन और सुरत सिमट कर चढ़ते जावेंगे वैसे ही रफ़्ता २ अभ्यास का रस और चरनों में प्रेम ज़्यादा बढ़ेगा और प्रेमी अभ्यासी को महा सुख और आनंद प्राप्त होता जावेगा।।

१४ - यही अभ्यास जो बिला नाग़ा जारी रहेगा, एक दिन संत सतगुरु की दया से धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा और वही परम आनंद और महा सुख का भंडार है।।

१५ - यह काम जल्दी का नहीं है। सुरत का उतार पिंड में छठे चक्र के मुक़ाम से अठारह बीस वर्ष में होता है और उसमें आसानी बहुत है और मदद पूरी मिलती हैं यानी दिन और रात कुटुम्बी लोग बराबर उतार में मदद देते हैं। बर-ख़िलाफ़ इसके चढ़ाई मुश्किल है और उसका अभ्यास बहुत थोड़ी देर किया जाता है और बाक़ी वक़्त संसारी कारोबार में सर्फ़ होता है, इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी को चाहिये कि प्रतीत और प्रीत सहित अपना अभ्यास नेम से हर रोज़ दो बार तीन बार बल्कि चार बार करता रहे और धीरज के साथ अपनी तरक़्क़ी की जाँच करता हुआ कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में शुकराना करे और प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे, तब एक दो तीन या चार जनम में कारज बन जावेगा।।

१६ - मालूम होवे कि हर जनम में तरक़्क़ी ज़्यादा से ज़्यादा होती जावेगी और संत सतगुरु और उनका सतसंग भी मिलेगा और जहाँ से कि अभ्यास पिछले जनम में छोड़ा, वहीं से आगे बढ़ेगा और ब-निसबत पहिले जनम के दूसरा जनम हर तरह से बेहतर होगा।।

१७ - जिस किसी के मन में शौक़ तेज़ है और प्रेम ज़बर है और सफ़ाई जल्द करी है यानी अपने मन से दुनिया की ख़्वाहिशों को निकाल दिया और घटा दिया है, वह एक ही जनम में दो जनम की कार्रवाई कर सकता है और इस तरह से उसका काम किसी क़दर जल्द बनना मुमकिन है, लेकिन जो यह सिफ़ात उसमें नहीं हैं और ख़्वाह-मख़्वाह जल्दी और घबराहट ज़ाहिर

करता है, तो समझना चाहिये कि वह शख़्स नादान है और अचरज नहीं कि जल्दी के सबब से किसी क़दर निरास होकर अभ्यास छोड़ देवे और राधास्वामी मत को हक़ीर समझ कर उससे जुदा हो जावे। ऐसे जीवों को नादान और अभागी समझना चाहिये।।

१८ - अक़्लमंद और दाना वही है कि जो अपनी हालत और ताक़त और लियाक़त को जाँचता और परखता हुआ चलता है और धीरज के साथ अपना अभ्यास करके उसका रस थोड़ा बहुत लेकर मगन रहता है और तरक़्क़ी का उम्मीदवार होकर संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जाता है। ऐसे शख़्स का कभी अकाज नहीं होगा और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल उसको तरक़्क़ी देते हुए एक दिन निज धाम में बासा देवेंगे।।

बचन बीसवाँ

जागो, भागो और तोड़ो, जोड़ो।।

ख़्वाबे-ग़फ़लत और मोह नींद से जागो, निज घर यानी राधास्वामी धाम की तरफ़ भागो और जगत से प्रीत तोड़ो यानी दुनिया का मोह छोड़ो और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ो।।

१ - कुल्ल जीव दुनिया और कुटुम्ब परिवार के मोह और कारोबार में इस क़दर मशग़ूल हैं कि उनको कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम की कभी सुध भी

नहीं आती और बा-वजूदे कि तमाम जगत का अभाव होता हुआ देखते हैं और फिर अपनी मौत की याद नहीं लाते और कहते हैं कि कोई मालिक इस रचना का है और फिर उसका खोज या भजन या उसके चरनों में प्रीत नहीं करते, और जानते हैं कि रूह या जीव आत्मा अमर है और फिर तहक़ीक़ नहीं करते कि बाद छोड़ने इस देह और देश के कहाँ जायेंगे और सुख पावेंगे या दुख। दुनिया में जो थोड़े दिन का ठहराव है, उस अर्से में वास्ते प्राप्ति सुख और दूर होने दुख के ज़िंदगी में रात दिन मेहनत करते हैं और आइन्दा बाद मौत के वास्ते मिलने सुख और दूर होने कष्ट और क्लेश के कोई जतन नहीं करते। इस क़िस्म की रहनी का नाम ख़्वाबे ग़फ़लत और मोह नींद और भूल और भर्म है।।

२ - इस ग़फ़लत और भूल से जिस क़दर जल्द हो सके, कुल्ल जीवों को जागना यानी होशियार होना चाहिये और होशियारी का निशान यह है कि कुल्ल-मालिक का खोज लगाना कि वह (१) कौन और (२) कैसा और (३) कहाँ है और उससे (४) किस तरकीब से मेला हो और (५) देह धर कर दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कैसे बचाव होवे।।

३ - इन सवालों का पूरा पूरा जवाब सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सकता है और जो मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें इस भेद का वर्णन जैसा चाहिये, वैसा नहीं है और न तरकीब चढ़ कर पहुँचने सुरत की कुल्ल-मालिक के निज धाम में बयान की है।।

४ - जवाब उन सवालों के यह है कि (१) कुल्ल-मालिक, सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल हैं

और (२) उनका शब्द स्वरूप है और (३) उनका निज धाम ऊँचे से ऊँचे देश में है और (४) रास्ता उसका नैन नगर से (जहाँ जीव की बैठक वक़्त जाग्रत के है) शुरू होता है और शब्द को सुनती हुई यानी धुन को पकड़ के सुरत धुर धाम में पहुँच सकती है और वहाँ दर्शन कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का करके परम आनन्द को प्राप्त होती है और (५) उस देश में पहुँचने पर विदेह हो जाती है यानी रूहानी स्वरूप हो जाता है और जनम मरन का चक्कर छूट जाता है, क्योंकि दुख का भोग देह के सबब से होता है और जनम मरन भी देह का होता है और देह माया के मसाले से तैयार होती है और वह मसाला हमेशा एक रस क़ायम नहीं रहता है।।

५ - जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और भेद रास्ते और मुक़ामात का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर सकता है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु के चरनों में, प्रीत और प्रतीत बढ़ाने से चाल उस की सहज और तेज़ चल सकती है।।

६ - जिस क़दर दुरुस्ती से अभ्यास ध्यान और भजन का, जिस किसी से विरह और प्रेम अंग लेकर बन पड़ेगा, उसी क़दर उसको अंतर में रस और आनंद प्राप्त होगा और उसी क़दर दुनिया और उसके भोगों से चित्त हटता जावेगा और ख़्वाहिश भी घटती जावेगी।।

७ - इसी तरह अभ्यास करते करते कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और मेहर से एक दिन निज घर में बासा मिल जावेगा और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का बिलास और आनंद प्राप्त होगा।।

८ - यह कार्रवाई दुरुस्ती और आसानी से उस वक़्त बन पड़ेगी, जब कि अभ्यासी के मन में संसार और उस के पदार्थों की तरफ़ से किसी क़दर वैराग आवेगा यानी सतसंग में बैठ कर और बचन सुन कर, पुराने स्वभाव और आदतें और संसार और उसके भोगों की चाह मन से निकसती और घटती जावेंगी और बजाय उनके परमार्थ की क़दर और कुल्ल-मालिक के चरनों का प्रेम और उसके धाम में पहुँच कर दर्शन हासिल करने का शौक़ पैदा होगा।।

९ - सच्चे प्रेमी को ऊपर का लिखा हुआ फ़ायदा सन्त सतगुरु के सतसंग से जल्द हासिल होगा और उसके प्रेम की हालत उनकी दया और मेहर से बढ़ती जावेगी और उसके साथ अभ्यास की भी तरक़्क़ी होती जावेगी।।

१० - इसी तरह दुनिया और उसके सामान से प्रेमी अभ्यासी का आहिस्ता आहिस्ता पीछा छूटता चला जावेगा और कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी।।

११ - ख़ुलासा यह कि अंतर में सुरत इधर से सरकती और ऊँचे देश में चढ़ती चली जावेगी और जिस क़दर यह कार्रवाई बनती जावेगी, उसी क़दर देह और दुनिया में बंधन घटता और हलका होता जावेगा

क्योंकि बग़ैर इधर से हटने के, मन और सुरत उधर की तरफ़ चल और चढ़ नहीं सकते।।

१२ - जो लोग कि इस दुनिया को अपना घर और यहाँ के भोग विलास और मान बड़ाई और हुकूमत को अपना सुख और आनंद समझ रहे हैं, वे अपनी वासना और करनी अनुसार बारम्बार संसार में आवेंगे और दुख सुख और जनम मरन का क्लेश सहते रहेंगे।।

१३ - जो कोई थोड़ा शौक़ लेकर के भी राधास्वामी मत में शामिल होगा और उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का शुरू कर देगा, वह भी सतगुरु की मेहर और दया से एक दिन पार हो जावेगा और जनम मरन के क्लेश से बच जावेगा।।

१४ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे तैसे भाव से राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास उसका शुरू कर दें तो उनका भी बचाव हो जावेगा यानी एक दिन धुर पद में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होंगे।।

१५ - राधास्वामी मत में बड़ा भारी फ़ायदा यह है कि घर बार और रोज़गार छोड़ना नहीं पड़ता। गृहस्थ में रह कर राधास्वामी मत का अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ बन सकता है, बशर्ते कि संत सतगुरु के बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई की जावे और सहज में जीव का कल्यान हो सकता है। दूसरे मतों में यह फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता क्योंकि जो कोई प्राणों के आसरे घट में चढ़ाई करना चाहे, उसको सख़्त संजम और अभ्यास प्राणों के रोकने और चढ़ाने का

करना पड़ता है और वह गृहस्थ आश्रम में रह कर बन नहीं सकता। ज़रा सी बे-अहतियाती में ख़तरा जान का या ख़ौफ़ सख़्त बीमारी का रहता है।।

बचन इक्कीसवाँ

पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा गया। अब जो संत सतगुरु की मेहर से अपने घट में उलटने का जतन करे और बसे, रसे, धसे, फँसे और ग्रसे, तो उसके जीव का कारज सहज में बन जावे।।

१ - आदि में सुरत राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर और ब्रह्माण्ड से गुज़र कर पिंड में तीसरे तिल अथवा छठे चक्र के मुक़ाम पर ठहरी और वहाँ से दो धार होकर दोनों आँखों में आई और तिल में बसी और एक धार ज़बान पर आई और वहाँ सुरत जिह्वा-रस में रसी।।

२ - फिर वही सुरत आँख और कान इन्द्रियों के वसीले से संसार में धसी और फैली और कुटुम्ब परिवार और धन और माल के मोह में फँसी और इन्द्रिय रस और भोगों में ग्रसी यानी गिरफ़्तार हुई।।

३ - इस उतार और फैलाव और फँसाव की हालत में सुरत इस देह और दुनिया में अपनी आसा मन्सा और तृष्णा और मन के बंधन और प्यार के सबब से दुख सुख भोगती है और अक्सर चिन्ता और फ़िक्र इसको सताते रहते हैं।।

४ - कोई दुख सुख असली हैं और कोई आरज़ी। असली वह हैं कि जो मन और सुरत को अपने कर्मों के सबब से भोगने पड़ते हैं और आरज़ी वह हैं कि जो ब-सबब प्रीत और बंधन दूसरे शख़्सों के दुख सुख का असर पैदा करते हैं और असल में वह दुख सुख उन शख़्सों को अपने कर्मों का फल मिला है।

५ - सिवाय मामूली दुख सुख के एक निहायत भारी दुख और तकलीफ़ मौत की हर एक जीव को सहनी पड़ती है और उससे किसी सूरत में किसी का बचाव नहीं हो सकता और न कोई उस दुख में किसी तरह की मदद और सहायता कर सकता है।।

६ - अलावा इसके जो उमर भर संसार के कारोबार और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास में ख़र्च की गई और यही चाह और यही बासना मन में बसी रही, तो वह बाद मरने के खींच कर फिर देह में लावेगी और इस तरह जनम मरन का चक्कर और ऊँच नीच देह और देश में बासा बराबर जारी रहेगा।।

७ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि जिस किसी को इन तकलीफ़ों और मुसीबतों से बचना मंज़ूर है और अमर देश में परम आनंद की प्राप्ति चाहता है, उसको चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग यानी राधास्वामी संगत में शामिल होकर पता और भेद कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का और जुगत इसके तै करने की सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके मुफ़स्सिल तौर पर दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर दे और कुल्ल-मालिक

राधास्वामी दयाल और उनके सतसंग की सरन दृढ़ करे, तब उसका कारज बनना शुरू होगा यानी सुरत और मन उसके सिमटते और घर की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे।।

८ - जैसे कि सुरत पिंड में उतार के वक़्त देह और संसार और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा में बँध गई, ऐसे ही जब अंतर में शब्द और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत के साथ लगेगी, तब छुटकारा जनम मरन से और प्राप्ति परम धाम की मुमकिन है।।

९ - इस वास्ते चाहिये कि पहिले सुरत तीसरे तिल में <u>बसे</u> और शब्द के रस में <u>रसे</u> और अधर में धुन सुनती हुई <u>धसे</u> और गुरु चरन में प्रेम प्रीत के साथ <u>फँसे</u> और दर्शन और स्वरूप में <u>ग्रसे</u>, तब संसार की तरफ़ से हटाव और सच्चे परमार्थ यानी कुल्ल-मालिक के चरनों में झुकाव और रास्ते का तै होते जाना मालूम पड़े और रफ़्ता २ एक दिन काम पूरा बन जावे।।

१० - यह सब काम संत सतगुरु या उनके प्रेमी सेवक के सतसंग में बन सकता है, और किसी की संगत में यह बात हासिल नहीं हो सकती। चाहे कोई अमीर होवे या ग़रीब, जब तक सतगुरु के चरनों और उनके सतसंग में सच्चा दीन नहीं होगा, कुछ फ़ैज़ और फ़ायदा नहीं हासिल कर सकता।।

११ - इस क़िस्म का सतसंग आजकल राधास्वामी मत में जारी है और पता और भेद कुल्ल-मालिक और उसके धाम का वहीं मालूम हो सकता है और हाल रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से, वहाँ वक़्त उपदेश के समझाया

जाता है। और किसी मत में जो आज कल जारी हैं, यह भेद और उपदेश बिल्कुल नहीं है।।

१२ - जो जीव कि मौत के कष्ट और क्लेश और जनम मरन के चक्कर से बचना चाहें, उनको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन दृढ़ करें, तो उन के जीव का कारज सहज में बन जावेगा और अनेक तरह के कष्ट और क्लेश और दुक्खों से बचाव हो जावेगा और अमर धाम में बासा और कुल्ल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होंगे।।

१३ - जो जीव भूल और भरम करके राधास्वामी संगत में शामिल नहीं होंगे और ऊपर की लिखी हुई कार्रवाई यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नहीं करेंगे, तो वक़्त मौत के अत्यन्त दुख पावेंगे और चौरासी जोनों में माया के घेर में भरमते रहेंगे यानी बारम्बार ऊँची नीची देह धर कर दुख सुख और जनम मरन का क्लेश सहते रहेंगे।।

बचन बाईसवाँ

जाँचो, सम्हलो और होशियार हो। खोजो, रलो और मिलो। और गाओ, ध्याओ और बजाओ।।

दुनिया का हाल नाशमानता का <u>जाँच</u> कर <u>सम्हलो</u> यानी उसमें धोखा न खाओ और

होशियार हो यानी उससे न्यारे होने की पेश्तर मौत के वक़्त से तदबीर करो। और वह तदबीर यह है कि सतगुरु खोजो और उनके सतसंग में रलो और उन से प्रेम प्रीत के साथ मिलो। फिर सतगुरु से उपदेश लेकर उन की महिमा और गुन गाओ और उनके स्वरूप को निज घट में ध्याओ और अन्तर शब्द को बजाओ यानी चित्त से सुनो।।

१ - इस दुनिया का हाल जो कोई ग़ौर से देखे, तो मालूम होगा कि बिलकुल धोखे की जगह है यानी इसमें कोई चीज़ ठहराऊ नहीं है और न अपना ठहराव मुमकिन है, फिर भी लोग यहीं के सामान के वास्ते बारम्बार चाह उठाते हैं और अनेक तरह के जतन और मेहनत उसके पूरा करने के वास्ते करते हैं और वक़्त पूरन होने चाह के निहायत मगन होते हैं और मन में फूलते हैं और फिर वक़्त वियोग के रोते और दुखी होते नज़र आते हैं।।

२ - अब ख़्याल करो कि ऐसे स्थान में जहाँ कि जीवों का ठहराव थोड़े दिनों का है, उनको वह वक़्त सिर्फ़ दुनिया के सामान पैदा करने में और इन्द्रिय भोगों का रस लेने मे ख़र्च करना चाहिये या कि यह काम औसत दरजे पर करें और निज घर का (जहाँ से कि आदि में सुरत आई है) खोज करके और पता और भेद रास्ते और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके, कुछ कार्रवाई इस रास्ते पर चलने की भी करें क्योंकि जो ऐसा न किया जावेगा, तो काल मौत के वक़्त ज़बरदस्ती

और झटके देकर सुरत को देह में से निकाल कर ले जावेगा और महा कष्ट और क्लेश देगा। फिर ग़ौर का मुक़ाम है कि उस रास्ते को जीते जी साफ़ करना और काल के ज़ुल्म से बचने का जतन मुनासिब है या नहीं।।

३ - अक़्लमंद और खोजी आदमी ज़रूर पेश्तर मौत से तहक़ीक़ करेगा कि सुरत को बाद छोड़ने देह के कहाँ विश्राम करना चाहिये और वह स्थान कहाँ है और कौन जतन से उसकी प्राप्ति होवे और उस जतन की कार्रवाई में लग जावेगा और घट में रस और आनंद पाकर उस जतन की कार्रवाई को बढ़ावेगा और दुनिया और उसके सामान से आहिस्ता आहिस्ता उस की तवज्जह घटती और हटती जावेगी।।

४ - यह बात बग़ैर मेहर और दया सतगुरु के हासिल नहीं हो सकती, इस वास्ते मुनासिब होगा कि जब दुनिया का हाल देख कर होशियारी आवे, तब संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवे और प्रेमी जन से जो उस सतसंग में शामिल हैं हेल मेल पैदा करे, यहाँ तक कि उनमें अच्छी तरह से रल मिल जावे और बचन सुन कर अपने मन और बुद्धि की सफ़ाई करता जावे और संत सतगुरु की सेवा करके और उनके चरनों में प्रीत प्रतीत लाकर मुहब्बत पैदा करे, ताकि पूरा मेल हो जावे और वे इसको अपना लेवें।।

५ - जब शौक़ के साथ कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होकर उनसे मिलेगा, तब वे दया करके उपदेश सुरत शब्द मार्ग का देवेंगे और पता और भेद

कुल्ल-मालिक के धाम का, और भी रास्ते की मंज़िलों का, समझा कर जुगत चलने की बतावेंगे, जिसकी कमाई से कुछ भेद अंतर का खुलेगा।।

६ - जब संत सतगुरु की दया से मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई घट में थोड़ी बहुत मालूम पड़े और कुछ रस आवे, तब बारम्बार उनकी और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा गाना चाहिये और जो जो दया और मेहर उन्होंने समय समय पर की है, उसका मन ही मन में शुकराना करना चाहिये।।

७ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा अगम और अपार है और किसी की ताक़त नहीं कि जो ज़र्रा भी उनके गुन गा सके, लेकिन हर एक प्रेमी को चाहिये कि अपनी समझ और ताक़त के मुवाफ़िक़ गुन गावे और महिमा वर्णन करे, तो उसके मन में हुलास और उमंग पैदा होगी और प्रेम जागेगा और अभ्यास सुखाला और रसीला बन पड़ेगा।।

८ - प्रथम अभ्यास नाम का सुमिरन और गुरु स्वरूप के ध्यान का करना चाहिये। इससे मन निश्चल होगा और रस पावेगा और स्थान स्थान पर ध्यान करने से तरक़्क़ी होती जावेगी और चरनों में प्यार और विश्वास बढ़ता जावेगा और अंतर में सफ़ाई होती जावेगी।।

९ - जब गुरु स्वरूप का ध्यान किसी क़दर दुरुस्ती से बन पड़ेगा, तब मौज और दया से शब्द भी साफ़ सुनाई देगा और उस में तवज्जह लगाने से संत सतगुरु की दया से मन और सुरत चढ़ेंगे और रफ़्ता

रफ़्ता ऊँचे देश का विलास और आनंद देख कर मगन होते जावेंगे।।

१० - इस तरह अभ्यास करने से जीव का कारज सहज में बनना शुरू होगा और एक दिन माया के पार धुर पद में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा और जनम मरन और देहियों के बंधन और दुख सुख के भोग से क़तई छुटकारा हो जावेगा।।

११ - ऐसी महिमा संत सतगुरु की है कि उनके चरनों में लग कर जगत के जीव सहज में तर सकते हैं यानी माया के घेर के पार पहुँच कर सत्त पुरुष राधास्वामी देश में जहाँ काल और कर्म व मन और माया नहीं है, बासा पा सकते हैं।।

१२ - राधास्वामी संगत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की संगत है। जो उसमें शामिल होगा और उपदेश लेकर गुरु स्वरूप का ध्यान और राधास्वामी नाम का सुमिरन और शब्द का श्रवन मन और सुरत से अपने घट में शुरू करेगा और भेद लेकर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत प्रतीत करेगा, उस पर बराबर दया होती जावेगी और हर तरह से उसकी रक्षा और सम्हाल फ़रमा कर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु उस जीव को एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेंगे, जहाँ से फिर देह और दुनिया में आना नहीं होगा और जहाँ सदा आनंद और महा सुख प्राप्त होगा।।

* * * * * *

बचन तेईसवाँ

मन भूले को समझाओ, शैतानी अंग हटाओ, राधास्वामी चरनन चित्त लगाओ, गुरु सन्मुख दीनता लाओ, तब घट में चढ़ फल पाओ।।

१ - इस दुनिया में सब जीव सच्चे और कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम को जो उनका निज घर है, भूल कर अनेक पदार्थों और जीवों में बँध रहे और भरम रहे हैं और हरचंद एक दूसरे को मरते देखते हैं और और चीज़ों का भी अभाव होता हुआ नज़र आता है पर अपनी मौत का ख़्याल दिल में बहुत कम गुज़रता है और कभी ऐसा सोच पैदा नहीं होता कि बाद मरने के कहाँ जाना होगा और वहाँ सुख मिलेगा या दुख।।

२ - इस दुनिया में थोड़े दिनों का ठहराव है जिस के वास्ते सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये अनेक जतन करते हैं और जानते हैं कि सुरत यानी जीव आत्मा अमर है, पर ज़रा भी खोज इस बात का नहीं करते कि आइन्दा बाद मरने के सुख मिलेगा या दुख और कहाँ बासा पावेंगे और दिन दिन संसार और उसके पदार्थों में और भी कुटुम्ब परिवार में लिपटते जाते हैं और उनके निमित्त अनेक तरह के जतन यानी कर्म करते हैं।।

३ - यह भूल और भरम बग़ैर सतसंग सतगुरु के दूर नहीं हो सकता, क्योंकि सिर्फ़ उनके सतसंग में भेद कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम और रास्ते की मंज़िलों का वर्णन होता है और दुनिया और तीन लोक

की रचना का (जो माया के घेर में है) निर्णय खोल करके किया जाता है यानी यह बात ज़ोर के साथ समझाई जाती है कि जो कोई माया के देश में रहेगा, वह जनम मरन और देहियों के दुख सुख से नहीं बचेगा, जब तक कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन और उनके निज धाम में पहुँचने की आसा मज़बूत बाँध कर, उस तरफ़ चलने का अभ्यास नहीं करेगा।।

४ - लेकिन भेष और पंडित और जिनके घरों में बंसावली गुरवाई जारी है और इन सब के बहकाने से जगत जीव संत सतगुरु और उनके सतसंग की निन्दा करते हैं और अपने रोज़गार और मान बड़ाई और फ़ायदे के वास्ते नहीं चाहते हैं कि कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होवे और सच्चे मत यानी सच्चे कुल्ल-मालिक का भेद और उसके धाम में चढ़ कर पहुँचने की जुगती से वाक़िफ़ होकर चलने का अभ्यास करे।।

५ - यह लोग काल पुरुष के दूत हैं और इस दुनिया की रचना की सम्हाल और रक्षा के लिये पैदा किये गये हैं। जो कोई इनका संग करेगा और बचन मानेगा, वह काल और माया के घेर में रहेगा और बारम्बार संसार ही में भरमेगा।।

६ - जो कोई दयाल मत में शामिल होकर, दयाल पुरुष के धाम में बासा चाहे, उसको लाज़िम है कि उन जीवों के संग से, जो काल मत का उपदेश करते हैं (जैसे मूरत और निशान की पूजा, तीरथ, बरत, हठ जोग, बुद्धि जोग, प्राण जोग, बाचक ज्ञान वग़ैरा) बचा

रहे और संत सतगुरु के सतसंग का पता लगा कर उसमें शामिल होवे, तब सच्चा भेद और सच्चा मारग सच्चे मालिक से मिलने का हासिल होगा।।

७ - मालूम होवे कि सिवाय काल के दूतों के, अपना मन और इन्द्रियाँ भी काल के प्यादे हैं और इनका पूरा पूरा झुकाव संसार और उसके भोग बिलास की तरफ़ है। संत सतगुरु और उनके सतसंग की मदद लेकर, इनका मुख मोड़ना चाहिये यानी मन में शौक़ सच्चे मालिक से मिलने का पैदा करके, उसको और भी इन्द्रियों को सच्चे मालिक से मिलने के जतन में मुख्य करके लगाना चाहिये और दूसरे दरजे पर संसार के कारोबार भी (जो औसत दरजे पर ज़रूरी हैं) जैसे रोज़गार और अपनी देह और घरबार का काम और व्यवहार वग़ैरा करना चाहिये।

८ - सिवाय संत सतगुरु के सतसंग और उनकी दया और मेहर के यह मन और इन्द्रियाँ कभी सीधे नहीं चलेंगे। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु और उनके सतसंग का ज़रूर है और फिर भाव और दीनता से उस में शामिल होना और बचन सुन कर विचारना और जिस क़दर बन सके उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना, तब काल अंग किसी क़दर आहिस्ता आहिस्ता जीता जावेगा और चित्त थोड़ा बहुत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लगेगा।।

९ - जिस क़दर भेद और महिमा राधास्वामी दयाल की सतसंग में सुनी जावेगी, उसी क़दर ज़रूरत सच्चे परमार्थ के कमाने की मन में समझी जावेगी और दया लेकर करनी थोड़ी बहुत बनती जावेगी और अंतर में

उसका फ़ायदा भी कुछ कुछ मिलता जावेगा। इस तरह दिन दिन शौक़ और प्यार और प्रतीत, चरनों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ते जावेंगे और दीनता यानी ग़रज़मंदी ज़्यादा होती जावेगी।।

१० - प्रेम और दीनता के साथ सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में, संत सतगुरु की मेहर और दया से तरक़्क़ी होती जावेगी और घट में परचे मिलते जावेंगे और मन और सुरत चढ़ कर ऊँचे देश का रस और आनंद लेवेंगे, तब इस जीव को संत सतगुरु और उनके सतसंग और उपदेश और दया की महिमा थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी और चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन दिन बढ़ती जावेगी। इसी तरह एक दिन धुर धाम में पहुँच कर कारज पूरा बन जावेगा यानी सुरत अमर और परम आनंद को प्राप्त होगी और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर चरनों में बासा पावेगी और जनम मरन और बारम्बार देह धारन करने के कष्ट और क्लेश से क़तई छुटकारा हो जावेगा।।

बचन चौबीसवाँ

उगलो, निगलो, देओ और लेओ। जगत को उगलो, शब्द की धुन को जो अमी की धार है निगलो, तन मन धन देओ और प्रेम दान लेओ।।

१ - जीव बहुत काल से रचना में आया है और अनेक जनम इसके माया देश में गुज़र गये हैं। इस सबब से बंधन मन इन्द्रिय और देह के संग और भी साथ कुटुम्ब परिवार और धन माल और भोगों के, बहुत गाढ़े और मज़बूत हो गये हैं और इसी क़िस्म के ख़ियालात और तरंगें और ख़्वाहिशें मन में समा रही हैं।।

२ - जब से कि यह जीव हाल के जनम में पैदा हुआ और उस वक़्त तक कि संत सतगुरु के सन्मुख या उनके सतसंग में हाज़िर हुआ, इस अर्से में कुल्ल वक़्त अपना दुनिया के कारोबार और रोज़गार और देह के व्यवहार में और कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना वग़ैरा के संग में ख़र्च करता रहा और यही ख़्याल और तरंगें और गुनावन हर वक़्त, चाहे एकान्त में और चाहे भीड़ भाड़ के संग, उठती रहीं। अब जब तक कि यह मसाला निकाला न जाय, तब तक परमार्थ के बचन हृदय में कैसे समा सकते हैं और क्योंकर याद रह सकते हैं।।

३ - इस वास्ते सन्त सतगुरु फ़रमाते हैं कि पहिले जगत यानी दुनिया को उगलो यानी अपने मन से संसारी ख़्यालों को हटाओ और कम करो और बजाय उसके सतसंग में हाज़िर होकर, सतगुरु के बचनों को चेत कर सुनो और समझो और अंतर हृदय में बसाओ।।

४ - जिस क़दर सतसंग के बचन होशियारी के साथ सुनने और समझने में आवेंगे, उसी क़दर दुनिया के ख़्याल ओछे और तुच्छ दिखलाई देवेंगे और मन से आहिस्ता २ निकसते जावेंगे और इसी तरह तरंगें और

ख़्वाहिशें भी घटती जावेंगी, तब हृदय किसी क़दर साफ़ और निर्मल होता जावेगा और आहिस्ते २ परमार्थ का रंग चढ़ता जावेगा यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में भाव और प्यार मन में पैदा होता जावेगा।।

५ - जब इस क़दर असर सतसंग का ज़ाहिर होवेगा, तब सतगुरु मेहरबान होकर उपदेश ध्यान और भजन का देवेंगे यानी मन और सुरत को स्वरूप के आसरे समेटने और जमाने और शब्द के आसरे चढ़ाने और ठहराने का जतन समझावेंगे और उसका नित्त अभ्यास करावेंगे। इस जुगत से मन को अंतर में रस मिलेगा और सुरत को आनंद प्राप्त होगा।।

६ - जिस क़दर मन और सुरत अंतर में विरह और प्रेम अंग लेकर शब्द और रूप में लगेंगे, उसी क़दर रस और आनंद बढ़ता जावेगा और शान्ति और ताक़त आती जावेगी यानी अमी अहार प्राप्त होना शुरू होगा।।

७ - लेकिन यह हालत उस वक़्त हासिल होगी, जब कि मन से चाहें और तरंगें संसार के भोग विलास और मान बड़ाई की दूर हो जावेंगी और गुरु स्वरूप और शब्द में गहरा प्यार आ जावेगा। पर यह कैफ़ियत कुछ अर्से के सतसंग और अंतर अभ्यास से पैदा होगी।।

८ - मन और इन्द्रियाँ संसार के भोगों में निहायत लिप्त हो रहे हैं और ज़ाती झुकाव इनका दुनिया की तरफ़ है। इस वास्ते जो कोई इनका मुख अंतर में मोड़ा चाहे, उसको बहुत खेंचातानी करनी पड़ती है यानी कोई दिन मन के साथ लड़ाई और झगड़ा करना पड़ता

है, तब यह सतगुरु की मेहर से कोई अर्से में थोड़ा बहुत सीधा चलता है।।

९ - इस काम के करने के लिये परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है कि अपने मन की चौकीदारी करे यानी हर वक़्त इसकी चाल ढाल को निरखता रहे और ना-मुनासिब और फ़िज़ूल और बेजा तरंगों और ख़्वाहिशों को रोकता और काटता जावे, तब कोई दिन के अभ्यास से यह मन अपनी पुरानी आदत को आहिस्ता आहिस्ता छोड़ता जावेगा और उसी क़दर परमार्थी ख़्याल और ख़्वाहिश इस में पैदा होते और बढ़ते जावेंगे।।

१० - जब प्रेमी परमार्थी के मन और इन्द्रिय किसी क़दर सीधे चलने लगेंगे, तब उसको तन, मन और धन पूरे तौर से सतगुरु के चरनों में अरपन करने में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़ नहीं होगी यानी सर्व अंग करके वह शख़्स सतगुरु का सच्चा सेवक और प्यारा बालक हो जावेगा और प्रीत और प्रतीत चरनों की उसके हृदय में गहरी बस जावेगी।।

११ - उस वक़्त सतगुरु अपनी मेहर और दया से उस प्यारे सेवक को प्रेम की दात बख़्शिश करेंगे कि जिससे उसका तन मन हरा हो जावेगा और सुरत प्रेम रंग में सरशार और सरबोर हो जावेगी और धुनों की झनकार और अमी की वर्षा घट में हर दम जारी रहेगी।।

* * * * * *

बचन पच्चीसवाँ

वर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में और जुगत उसके उलटाने की निज धाम की तरफ़ सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से जिसका रास्ता घट में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल ने जीव के रोज़मर्रा की हालतों में दिखला दिया है और ज़ोर दे कर ज़ाहिर करना इस बात का कि सिवाय शब्द के अभ्यास के और कोई रास्ता सुरत की चढ़ाई और उसके निज घर में पहुँचाने का रचा नहीं गया है।।

१ - सुरत यानी रूह कुल्ल-मालिक की अंस है और हमेशा से उसके साथ अभेद थी।।

२ - जब मौज हुई और शब्द प्रकट हुआ, तब धुन रूप धारा जारी हुई यानी सुरत निज धाम से नीचे उतरी और रास्ते में किसी क़दर फ़ासले पर ठेके या मंज़िलें या स्थान मुक़र्रर करती हुई, और हर मुक़ाम पर मंडल बाँध कर रचना करती हुई, पहिले और दूसरे दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश और ब्रह्मांड से गुज़र कर, पिंड में दोनों नेत्रों के मध्य में पीछे की तरफ़ यानी अंतर में ठहरी और वहाँ से दो धार होकर दोनों आँखों में बैठ कर देह और दुनिया का कारज करने लगी और मन और इन्द्रियों के वसीले से अनेक भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार और धन और माल में बँध कर दुख सुख का भोग करती है।।

३ - सच्चे और कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की दया और तवज्जह इस सुरत पर बहुत है यानी जब से यह चरनों से जुदा हुई और धुन रूप होकर नीचे उतरी और मनुष्य देह में आँखों के मुक़ाम पर ठहरी, तब से कुल्ल-मालिक भी इस के संग हर पिंड में मौजूद है और इस पर दया की नज़र रखता है।।

४ - यही सुरत या धुन की धारा हर एक स्थान पर रूप धरती और रचना करती हुई पिंड में उतरी है, सो वे सब रूप गोया कुल्ल-मालिक ने इसकी ख़ातिर आप धरे और वह हर एक रूप नीचे के स्वरूप का गोया पिता और मालिक और करतार और गुरु है।।

५ - अव्वल दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश की हद में, जो रूप कि आदि सुरत यानी शब्द की धारा ने धारन किये, वे अरूप या निर्मल चैतन्य स्वरूप हैं और सब रचना उन्हीं के मंडल यानी घेर में है।।

६ - और जब से कि वह धारा निर्मल माया के देश यानी ब्रह्मांड में उतरी, वहाँ जो स्वरूप कि उसने धारन किये, उन में शुद्ध माया की मिलौनी हुई यानी शुद्ध माया के मसाले का ग़िलाफ़ या ख़ोल उन पर चढ़ता गया।।

७ - और जब कि वही धारा मलीन माया के देश यानी पिंड में उतरी, तब से अलावा शुद्ध माया के ख़ोलों के, मलीन माया के ख़ोल उस पर और भी उन रूपों पर, जो कि इस दरजे में धारन किये, चढ़ते गये।।

८ - इस तरह सुरत सर्व अंग करके उन धाराओं के आधीन हो गई, जो कि हर एक स्थान से चैतन्य और माया की मिलौनी से प्रकट हुई और यह धारें तीसरे दरजे यानी पिंड में ख़ास कर ज़्यादा मलीन और बहुत ताक़त वाली हैं कि सुरत की धार या तवज्जह को जिधर चाहें उधर खैंच कर ले जाती हैं।।

९ - इसी तरह माया के रचे हुए जड़ पदार्थों में भी खैंच शक्ति बहुत रक्खी गई है कि वे मन और इन्द्रियों की धारों को और उनके साथ सुरत की तवज्जह को अपनी तरफ़ खैंचते हैं।।

१० - मन और इन्द्रियाँ मतलब उन औज़ारों से है जो पिंड में इस ग़रज़ से रचे गये कि उनके वसीले से सुरत इस मृत्यु लोक की रचना के साथ मेल और बर्ताव करे और उससे काम लेवे।।

११ - जो रचना कि पहिले दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश में आदि सुरत ने सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की मौज से करी और दूसरे दरजे यानी ब्रह्मांड में सब रचना निरंजन और आद्या ने अथवा ब्रह्मांडी मन यानी ब्रह्म और माया ने सत्तपुरुष से आज्ञा लेकर करी और तीसरे दरजे यानी पिंड देश में जो रचना हुई, वह तीनों गुन (ब्रह्मा,विष्णु,और महेश) ने निरंजन जोत के हुक्म से और उनकी मदद से करी और पिंडी मन और इन्द्रियाँ पिंड में कारकुन मुक़र्रर हुए।।

१२ - मालूम होवे कि माया ने विचित्र रचना इस लोक में वास्ते लुभाने और बाँधने सुरत के जड़ पदार्थों में करी है और मन और इन्द्रियाँ जिस क़दर ताक़त वाली हैं उनका ज़ोर और शोर बाहर की तरफ़ जारी है

और अंदर में ऊपर की तरफ़ जो रास्ता गया है, उसकी ख़बर तक भी नहीं है और न उधर कभी फेरा होता है। इस सबब से जीव हमेशा दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहता है क्योंकि जिन पदार्थों में और भी कुटुम्ब परिवार वग़ैरा में जो इसकी आसक्ति है, वह कोई ठहराऊ नहीं है।।

१३ - आम तौर पर सब जीवों का झुकाव दुनिया और उसके सामान और भोगों की तरफ़ हो रहा है और बा-वजूदे कि सब देखते हैं कि एक दिन मरना ज़रूर पड़ेगा और उस वक़्त कुल्ल असबाब धन और माल कुटुम्ब और परिवार एक छिन में छोड़ दिये जायँगे और सिवाय हसरत और अफ़सोस के कुछ हाथ नहीं लगेगा, फिर भी किसी को चेत नहीं होता कि मौत की तकलीफ़ के दूर करने का जतन करें।।

१४ - जब मौत के वक़्त काल सुरत को ऊपर की तरफ़ खींचेगा और वह अपने स्वभाव और दुनिया में बंधन और आसक्ति के मुवाफ़िक़, नीचे और बाहर की तरफ़ को झोका खावेगी तो इस खैंचातानी में मरने वाले को भारी तकलीफ़ होगी और आगे चल कर बहुत दुख जो अपने कर्मों का फल है, सहना पड़ेगा, जिसका थोड़ा सा हाल मुरदे की सूरत से जो निहायत भयानक और पिटी कुटी हो जाती है, ज़ाहिर होता है।।

१५ - इस दुख में कोई दुनिया का सामान या कुटुम्ब और बिरादरी किसी तरह की सहायता नहीं कर सकते और न धन और माल कुछ मदद दे सकता है, अलबत्ता संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेने से और भी उन का उपदेश मानने

यानी सुरत शब्द मार्ग की कमाई करने से मौत का दुख बिल्कुल नहीं व्याप सकता है बल्कि गहरा आनंद और ख़ुशी कुल्ल-मालिक के दर्शनों के प्राप्ति की हासिल हो सकती है।।

१६ - इस वास्ते जिस किसी को अपना सच्चा छुटकारा जनम मरन और देहियों के दुख सुख से मंज़ूर है, उसको चाहिये कि सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की संगत में शामिल होकर और चित्त से चेत कर बचन सुने और समझे और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करे, तो बेशक बचाव हो जावेगा।।

१७ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की इस क़दर दया जीवों पर है कि जब से उनको मनुष्य देह में पैदा किया है, तब से आप भी उन के अंग संग हैं और उन को रास्ता सच्चे उद्धार और मुक्ति का और भी अपने निज घर में जाने का साफ़ उनके रोज़मर्रा की कार्रवाई में दिखला दिया है। फिर भी जीव खोज न करें और अनेक तरह के कर्म और धर्म और भरम में फँसे रहें और रोज़गारियों के कहने को मान कर धोखा खाते रहें, तो मुक़ाम अफ़सोस और लाचारी का है।।

१८ - वह रास्ता यह है कि जीव की बैठक जाग्रत अवस्था में आँख के मुक़ाम पर है और सोते वक़्त वहाँ से सुरत की धार अन्तर में ऊपर की तरफ़ खिंच जाती है, पहिले सूक्ष्म शरीर में जहाँ सुपना देखता है और फिर कारन शरीर में जहाँ गहरी नींद में सोता है और सकते यानी सन्निपात की बीमारी में उसके भी परे, जब कि स्वाँस और नब्ज़ छूट जाती है। इस वक़्त में जिस जिस शरीर से धार खिंचती जाती है, वही बेकार होता

जाता है और उसी के बंधन ढीले हो जाते हैं और एक का दुख सुख दूसरे शरीर में नहीं व्यापता।।

१९ - ऊपर के बयान से साफ़ ज़ाहिर है कि मुक्ति और उद्धार यानी देहियों और रचना के बंधनों से छूटने का रास्ता, आँख के मुक़ाम से अन्दर में ऊपर की तरफ़ जारी है। जो कोई उस रास्ते पर चलने का जतन करे, वह स्वतंत्र यानी बा-इख़्तियार अपने, जब चाहे तब स्थूल सूक्ष्म और कारन देहियों से न्यारा हो सकता है।।

२० - अलावा इसके मरने के वक़्त जीव इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से घर की तरफ़ को जाते हैं यानी पैरों की उँगलियों से खिंचाव शुरू होता है और जब आँख के मुक़ाम तक पहुँच कर पुतली खिंचती है, तब मौत हो जाती है। अब ख़्याल करो कि जिस रास्ते से सोते वक़्त धार सुरत की अन्तर में खिंच जाती है, इसी रास्ते से मौत के वक़्त खिंचाव होता है, तो फिर यही रास्ता देह को छोड़ कर घर की तरफ़ जाने का ठहरा और उसी रास्ते से अन्तर में पैदायश के वक़्त सुरत ऊँचे मुक़ाम से पिंड में उतर कर आई है, सो उसी रास्ते से मरते वक़्त पिंड को छोड़ कर जाती है।।

२१ - जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुक्खों से और भी मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहे, उसको मुनासिब है कि इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से चलने का जतन शुरू करे और वह जतन सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास है यानी सुरत को धुन में जो घट घट में हर वक़्त हो रही है, लगा कर ऊपर को चढ़ावे और जो शब्द की धुन है, वही चैतन्य या जान

की धार है। ख़ुलासा यह कि जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार पर चढ़ कर उलटना और जहाँ से वह धार आई है, वहाँ पहुँचना चाहिये।।

२२ - अगर यह कार्रवाई नहीं की जावेगी और उमर भर संसार के कारोबार और भोग बिलास में ख़र्च की जावेगी, तो इस स्वभाव और संसारी आसा और बासना के मुवाफ़िक़, बाद मरने के फिर देह धारन करनी पड़ेगी, और जो दुख सुख कि देही के साथ लाज़मी हैं, उनका भोग करना पड़ेगा और मौत के वक़्त का भारी कष्ट सहना पड़ेगा और यह चक्कर कभी बन्द नहीं होगा।।

२३ - सिवाय सुरत शब्द मार्ग के और कोई जुगत या जतन या अभ्यास, वास्ते उलटाने सुरत के और पहुँचाने उसके निज घर में, रचा नहीं गया यानी सिर्फ़ शब्द की धार को पकड़ करके सुरत धुर पद में पहुँच सक्ती है क्योंकि आदि में शब्द प्रकट हुआ और बाक़ी रचना शब्द की धार से पैदा हुई, इस वास्ते जो कोई शब्द का भेद लेकर और उसकी धार को पकड़ के घट में चलेगा, वही कुल्ल-मालिक के चरनों में जहाँ से आदि शब्द प्रकट हुआ, पहुँच सकता है और जो कोई और किसी धार को पकड़ के चलेगा, वह माया के घेर में रहेगा, क्योंकि और सब धारें चैतन्य और माया की मिलौनी से जारी हुई हैं और यह सब धारें शब्द की धार के जो रूह और जान की धार है, आधीन और ताबेदार हैं और उसी की शक्ति से चैतन्य और क़ायम हैं और अपनी २ कार्रवाई कर रही हैं। जो रूह यानी शब्द की धार खिंच जावे, तो और सब धारें बेकार हो जाती हैं बल्कि उनका अभाव हो जाता है यानी जब

तक कि रूह की धार वापिस न आवे, तब तक और धारें गुप्त और बेकार हो जाती हैं।।

२४ - शब्द की धार से मतलब चैतन्य की धार से है, क्योंकि शब्द चैतन्य का ज़हूरा और निशान है और उसका भेद सिर्फ़ संतों या उनके प्रेमी सेवकों के पास है और आज कल राधास्वामी संगत में उसका अभ्यास जारी है। जो कोई सच्चा खोजी या दर्दी होवे, वह वहाँ से उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके अपने जीव का काज बना सकता है और जो कोई बाहरमुख परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं या करेंगे, उनको शुभ कर्म का फल कुछ सुख मिल सकता है, पर जीव का उद्धार यानी जनम मरन से बचाव हरगिज़ नहीं हो सकता।।

बचन छब्बीसवाँ

रचो, भजो, हटो, तजो, मरो, जीवो, और बसो।

गुरु के रंग रचो, गुरु का नाम भजो, जगत से हटो, देह का मोह तजो, शब्द में मरो, अमर होके जीवो और अमर धाम में बसो।।

१ - इस लोक में मौत का बाज़ार बड़ा गरम है। कोई जीव इस से बच नहीं सकता, चाहे कैसा ही जतन करो।।

२ - जब तक देह और कुटुम्ब परिवार और इस लोक के भोगों और पदार्थों में मोह और उन्हीं की आसा और बासना मन में रहेगी, तब तक सिर्फ़ एक बार नहीं बल्कि बारम्बार जनमना और मरना पड़ेगा और मौत का भारी कष्ट और क्लेश हर बार सहना पड़ेगा।।

३ - जो कोई इस कष्ट और क्लेश से बचना चाहे और अमर धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होना चाहे, तो इस बात के हासिल करने के लिये सिर्फ़ एक ही जतन है और वह यह है कि पहिले संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होवे और बचन सुन कर उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे।।

४ - और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का और भी रास्ते और मंज़िलों का भेद और चलने के तरीक़े का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे।।

५ - संत सतगुरु उपदेश के वक़्त गुरु स्वरूप के ध्यान की और घट में शब्द के सुनने की हिदायत करेंगे। यही शब्द धुन्यात्मक नाम और गुरु और मालिक का नाम कहलाता है। इस में तवज्जह करने से नाम के अभ्यास की बहुत जल्द तरक़्क़ी होगी यानी मन और सुरत घट में सिमटेंगे और परम धाम की तरफ़ चढ़ना शुरू करेंगे।।

६ - जो थोड़ा बहुत रस अंतर में मिलना शुरू होगा तो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी और दूसरों के मन में भी यह हाल सुन कर इसी काम यानी अभ्यास करने का शौक़

पैदा होगा और वे भी सतसंग में शामिल होकर, संत सतगुरु की दया का फ़ायदा उठावेंगे।।

७ - जब अभ्यासी को घट में दया और रक्षा के परचे मिलने शुरू होंगे, तब उसके मन में प्रेम संत सतगुरु के चरनों का बढ़ेगा और उनके रंग में रच जावेगा और उमंग के साथ उनके नाम को भजेगा यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शौक़ के साथ करेगा।।

८ - जिस क़दर यह कैफ़ियत और हालत बढ़ती जावेगी, उसी क़दर अभ्यासी का चित्त संसार और उसके भोगों और पदार्थों की तरफ़ से हटता जावेगा और परमार्थी अनुराग की दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी, यहाँ तक कि लोक लाज और मोह जाल के बंधन ढीले होते जावेंगे और भक्ति अंग और भक्ति रीत में बे-तकल्लुफ़ और बग़ैर झिझक के बर्ताव करेगा।।

९ - ऐसे अभ्यासी को यह दुनिया धोखे की जगह नज़र आवेगी और उस में भाव और प्यार घटता और दूर होता जावेगा और सतसंग और संत सतगुरु और प्रेमी जन प्यारे लगेंगे और राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने का इरादा तेज़ और मज़बूत होता जावेगा।।

१० - जिस क़दर अभ्यास यानी ध्यान और भजन में मन और सुरत सिमटते और सरकते जावेंगे, उसी क़दर देह और कुटुम्ब का मोह और उस के बंधन कम और ढीले होते जावेंगे और सुरत की चढ़ाई का शौक़ और अभ्यास तेज़ होता जावेगा।।

११ - जब दया से इस क़दर अभ्यास बढ़ेगा कि मन और सुरत चढ़ कर तीसरे तिल में और उसके पार

पहुँचेंगे, तब वे मौत और काल के मुक़ाम से गुज़र जावेंगे यानी मर कर जी उठेंगे और उन को इस क़दर ताक़त हासिल हो जावेगी कि चाहे जब ऊपर की तरफ़ को सैर करें और चाहे जब देह में उतर आवें। इसी का नाम काल और मौत का जीतना है।।

१२ - यह काम जल्दी का नहीं है, सहज २ संत सतगुरु की दया और नित्त के अभ्यास से दुरुस्त बनेगा और मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ने और ठहरने की ताक़त हासिल होवेगी।।

१३ - जो कोई अपने तन, मन, धन को सतगुरु पर वारे और प्रेम प्रीत उनके चरनों में करे, उसी को सच्चा बैराग संसार और उसके सामान की तरफ़ से हासिल होवेगा और वही सच्चा अनुराग कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में करेगा और उसी की हालत अंतर अभ्यास में बदलती जावेगी यानी उसके मन और सुरत सिमटते और घर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे। फिर उसी का देह और इन्द्रियाँ और मन रूपी आपा, शब्द में तीसरे तिल के मुक़ाम और उसके परे पहुँचने पर मर जावेगा, यानी यह आपा तीसरे तिल में और कुछ उसके नीचे रह जावेगा और सुरत और निज मन चेत कर ऊपर चढ़ेंगे।।

१४ - फिर वहाँ से त्रिकुटी में पहुँच कर निज मन भी रह जावेगा और सुरत न्यारी होकर, छड़ी, अपने निज घर की तरफ़ चलेगी और संत सतगुरु की मेहर और दया से अमर लोक में पहुँच कर बासा पावेगी और अमर आनन्द को प्राप्त होवेगी।।

१५ - जब तक इस तौर पर कार्रवाई न की जावेगी तब तक जीव का सच्चा कल्यान नहीं होगा यानी किसी न किसी क़िस्म की देही के साथ बंधन और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर नहीं मिटेगा। इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बन सके, अभ्यास करें और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करें, तो वे दया करके सब भांति बचावेंगे और एक दिन दयाल देश में बासा देंगे, जहाँ हमेशा को सुखी हो जावेंगे।।

बचन सत्ताईसवाँ

निरखो और छोड़ो, परखो और पकड़ो। दुनिया का हाल नाशमानता का निरख कर उसको मन से छोड़ते जाओ और सत्त की अंस जो यहाँ मौजूद है, उसकी परख करो और पकड़ के सत्त सिंध से मिलो।।

१ - जो कोई नज़र ग़ौर और विचार से इस दुनिया और उसके सामान और हाल को देखे, उसको मालूम होगा कि सब कारख़ाना और सुख और आनन्द यहाँ का नाशमान है और चाहे जिस क़दर मेहनत और कोशिश करके, चाहे जितना सामान और दौलत कोई जमा करे, वह सब एक दिन छोड़ना पड़ेगा।।

२ - इसी तरह नेकनामी और शोहरत और इज़्ज़त इस लोक की ठहराऊ नहीं है। उसके हासिल करने के

लिये पचना और खपना और जान देना, अपनी उमर और चैतन्यता यानी जान को ओछी पूँजी और थोड़े फ़ायदे के लिये ख़र्च करना है।।

३ - परमार्थी हिसाब में वह शख़्स अक़्लमन्द और विचारवान और बड़भागी समझा जाता है कि जो अपने तन, मन, धन, और उमर को कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की भक्ति और उनके दर्शनों की प्राप्ति के निमित्त ख़र्च करे। ऐसी कार्रवाई से उसको बग़ैर माँगे बड़ाई और शोहरत इस लोक में और परम आनन्द और अमर स्थान बाद छोड़ने इस देह और देश के प्राप्त होगा और देहियों के साथ दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर क़तई दूर हो जावेगा। यह फ़ायदा संसारी कार्रवाई से चाहे वह किसी क़दर मेहनत और कोशिश और धन ख़र्च करके की जावे, हासिल नहीं हो सकता है।।

४ - जो कोई रस्मी यानी संसारी परमार्थ की कार्रवाई करे, उससे भी उस फ़ायदे का हासिल होना जो ऊपर लिखा गया है यानी सत्तपुरुष राधास्वामी देश में बासा और अमर आनंद का प्राप्त होना, मुमकिन नहीं है।।

५ - रस्मी और संसारी परमार्थ से मुराद उन मतों की कार्रवाई से है कि जो संत अथवा राधास्वामी मत से अलेहदा इस संसार में जारी हैं और जिनमें कुल्ल-मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और उनके धाम का पता और भेद और तरीक़ा चढ़ कर पहुँचने का उस धाम में और हासिल करने दर्शन कुल्ल-मालिक का, पाया नहीं जाता है।।

६ - संत मत के मुवाफ़िक़ जब तक कार्रवाई नहीं की जावेगी, तब तक असली सत्त पद में पहुँचना मुमकिन नहीं है और न उस सत्त सिंध की अंस यानी सुरत की परख और पहिचान आवेगी जिसके आसरे तमाम रचना पिंडों की ठहरी हुई और कार्रवाई कर रही है।।

७ - बड़भागी वही जीव है कि जिसको संतों का सतसंग मिल गया। उनके दर्शन और बचन से नित्त आँख खुलती चली जावेगी। और इस दुनिया का हाल कि धोखे का मुक़ाम है, अच्छी तरह समझ में आवेगा और कुल्ल-मालिक और उसके धाम की महिमा ब-ख़ूबी मालूम पड़ेगी। तब यह शख़्स संसार और उसके सामान और कारोबार को ओछा और नाशमान यक़ीन करके निज धाम में पहुँचने और कुल्ल-मालिक का दर्शन करने का इरादा सच्चा और पक्का करके जो जुगत कि सुरत शब्द मार्ग की राधास्वामी मत में समझाई है, उसका अभ्यास शौक़ के साथ शुरू करेगा और संत सतगुरु की दया से एक दिन कारज उसके जीव का दुरुस्त बन जावेगा, यानी परम धाम में बासा पावेगा।।

८ - दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास का छोड़ना आसान नहीं है। ब-सबब जीव के जनमान जनम से बर्ताव करने और फँसे रहने के संसार में, मन और इन्द्रियों का यही स्वभाव पड़ गया है कि भोगों में लिपटे रहते हैं और उन्हीं की बारम्बार चाह उठाते हैं और जतन करते हैं। इस वजह से मन कभी संसारी

करतूत और ख़्यालों से ख़ाली नहीं रहता। जब कभी परमार्थ के बचन सुनता है, उस वक़्त वे किसी क़दर अच्छे मालूम होते हैं लेकिन जब वहाँ से अलेहदा हुआ या बचन मौक़ूफ़ हुये, तब फ़ौरन संसारी ख़्याल और गुनावन पैदा होकर उसकी तवज्जह को फिर संसार में खींच कर लगा देते हैं।।

९ - यह स्वभाव मन और इन्द्रियों का जब तक कि संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग कुछ अर्से के वास्ते नित्त नहीं मिलेगा, तब तक बदला नहीं जावेगा। इस वास्ते सच्चे प्रेमी को मुनासिब है कि पहिले कोई दिन संत सतगुरु का संग करके अपनी समझ बूझ और ख़्याल और पकड़ और स्वभाव को बदलवावे और भक्ति की रीति और बर्तावा और संसार से किसी क़दर बैराग की चाल ढाल और प्रेम की हालत को अपने हृदय में बसावे और उसी मुवाफ़िक़ प्रेमी जन के संग बर्ताव शुरू करे, तब मन और इंद्रियाँ थोड़े बहुत सीधे चलेंगे और किसी क़दर सफ़ाई और थिरता यानी निश्चलता हासिल करेंगे और अन्तर अभ्यास में सुरत शब्द मार्ग के लगेंगे।।

१० - इस तरह कार्रवाई करने से हालत जल्द बदलेगी और कुछ पहिचान सुरत और शब्द की आवेगी और शौक़ सत्त सिन्ध में पहुँचने का बढ़ेगा और संत सतगुरु की मेहर से एक दिन सुरत चढ़ कर निज पद में बासा पावेगी और परम आनन्द को प्राप्त होगी।।

* * * * * *

बचन अट्ठाईसवाँ

समेटो और चढ़ाओ।
मत बिखेरो और मत उतारो।

मन और सुरत को समेटो और चढ़ाओ और उनको फ़िज़ूल मत बिखेरो और मत उतारो।।

१ - मन और सुरत देह में और भी संसार में बिखर रहे हैं और अनेक जगह इनका बंधन हो रहा है कि जिसके सबब से दुख सुख सहते हैं।।

२ - ऐसे ही मरने के वक़्त मन और सुरत को, इस देह के छोड़ने में निहायत दरजे की तकलीफ़ होती है और कोई उस वक़्त सहायता नहीं कर सकता। जो कोई देह के संग जो दुख सुख व्यापता है और मौत के वक़्त जो सख़्त तकलीफ़ होती है, उनसे बचना चाहे, तो उसको मुनासिब है कि आहिस्ते आहिस्ते अपनी बैठक बदले यानी जो जाग्रत के वक़्त सुरत का आँखो में बासा है, वहाँ से राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, उसको ऊपर यानी निज घर की तरफ चलावे।।

३ - इस कार्रवाई से दोनों मन और सुरत का सिमटाव होगा और आँख के स्थान से हट कर ऊपर की तरफ़ चढ़ेंगे। इस तौर से उनका फैलाव और बिस्तार संसार में कम होता जावेगा और बंधन भी ढीले होवेंगे कि जिसके सबब से दुनिया और देह का दुख सुख कम व्यापेगा।।

४ - यह अभ्यास मन और सुरत को समेटने और चढ़ाने का अख़ीर वक़्त में यानी मौत के समय बहुत कुछ मदद दुख सुख के भुलाने और मौत का असर न व्यापने में देगा यानी जिस सिमटाव और खिंचाव को यह शख़्स अभ्यास के वक़्त रोज़मर्रा ज़ोर देकर चाहता रहता है, वह अख़ीर वक़्त पर मौज से सर्व अंग करके होवेगा और तब शब्द भी खुलेगा और रूप भी दरसेगा और निहायत दरजे का आनंद प्राप्त होवेगा।।

५ - यह तरकीब समेटने और चढ़ाने मन और सुरत की, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है। जो कोई अपना सच्चा उद्धार यानी बारम्बार देह धारन करने और छोड़ने से बचना चाहे, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर सतसंग और अभ्यास करे। तब कोई दिन में उसको वह कैफ़ियत और हालत जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है, मालूम होवेगी।।

६ - फिर जिस क़दर प्रीत और प्रतीत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में और भाव और प्यार संत सतगुरु में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर चढ़ाई ज़्यादा होती जावेगी और अंतर में रस और आनंद विशेष आवेगा और देह और दुनिया से आहिस्ते २ छुटकारा होता जावेगा।

७ - परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है कि बहुत बखेड़ों के काम में न पड़े और न फ़िज़ूल चाह अपने बिस्तार और नामवारी की इस दुनिया में उठावे, क्योंकि ऐसी चाहें जीव को हमेशा कर्म में बाँधे रखती हैं और इस तरह कभी निःकर्म नहीं होवेगा।।

८ - जिस क़दर कार्रवाई मन और इंद्रियों की बाहरमुख ज़्यादा होगी, उसी क़दर मन और सुरत बाहर बिखरेंगे और सिमटाव कम होगा। इस वास्ते मुनासिब है कि जो कोई सच्चा परमार्थ कमाना चाहे, वह सिर्फ़ ज़रूरी और मुनासिब कार्रवाई देह और घरबार और रोज़गार की करे और फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा और बे-मतलब अपना वक़्त इस क़िस्म के कामों में ख़र्च न करे।।

९ - अलावा इसके उसको मुनासिब है कि दो तीन बार अभ्यास समेटने और चढ़ाने अपने मन और सुरत का दिन रात में जिस क़दर दुरुस्ती के साथ बने करता रहे तो उसको यह फ़ायदा हासिल होगा कि जिस क़दर मन और सुरत बाहरमुखी कार्रवाई के सबब से उतरेंगे या फैलेंगे, उसी क़दर कमोबेश सिमट आवेंगे और अपने ठिकाने और निशाने पर जा पहुँचेंगे बल्कि प्रेमी जन के सुरत और मन रोज़-बरोज़ सिमटाव और चढ़ाई में थोड़ी बहुत तरक़्क़ी करेंगे कि जिससे मुक़ाम मन और सुरत के चढ़ाई का ऊँचे की तरफ़ को ज़्यादा बदलता और बढ़ता जावेगा।।

१० - जिस क़दर कि अभ्यास के वक़्त मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी, उसमें से किसी क़दर अंग मन और सुरत का ऊँचे देश में आहिस्ते आहिस्ते बसता जावेगा और तब वक़्त अभ्यास के बाक़ी अंग को समेटने और चढ़ाने में बहुत दिक़्क़त न होगी।।

११ - लेकिन यह हालत सच्चे और गहरे प्रेमी सतसंगी की होगी और उसी से अभ्यास इस क़दर

दुरुस्ती से बन पड़ेगा कि जिससे सिमटाव और चढ़ाई मन और सुरत की ऊँचे देश की तरफ़ थोड़ी बहुत आहिस्ते आहिस्ते होती जावेगी।।

१२ - ऐसे प्रेमी सतसंगी को आप फ़ायदा चढ़ाई का और किसी क़दर मन और सुरत के अंग का ऊँचे देश में बस जाने का नज़र आवेगा और वह अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ इस बात की बड़ी अहतियात रक्खेगा कि उसके मन और सुरत फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा उतरने और बिखरने न पावें और वह ध्यान का अभ्यास थोड़ा थोड़ा यानी पाँच सात या दस मिनट दिन रात में दस बारह दफ़े करता रहेगा कि जिससे हालत सिमटाव और चढ़ाई की थोड़ी बहुत बराबर बनी रहेगी और दुनिया और देह और रोज़गार की कार्रवाई भी ब-ख़ूबी जारी रहेगी और यह हालत ऐसे प्रेमी अभ्यासी की कोई शख़्स समझ और परख नहीं सकेगा, लेकिन संत सतगुरु और बराबर के प्रेमी जन से यह हालत छिपी नहीं रह सकती।।

१३ - दुनिया के भोग और बिलास में मन और इन्द्रिय जल्द उतर कर लिपट जाते हैं और उधर ही तरक़्क़ी चाहने की वजह से, उनका उतार और फैलाव देह और दुनिया में बहुत जल्द और कसरत से हो जाता है। पर दुनिया के लोग और रस्मी परमार्थ की कार्रवाई करने वाले इस हाल से बे-ख़बर हैं और अपने नुक़सान का कुछ इलाज नहीं सोचते और नहीं करते हैं। बल्कि कुछ रस और मज़ा मन और इन्द्रियों का पाकर दिन दिन उसी में लिपटते और गिरते और बिखरते चले जाते हैं, यहाँ तक कि फिर जो कोई

उपदेश चढ़ाई का करे और जुगत बतावे, तो उसको बिलकुल नहीं सुनते। बल्कि उलटे संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की निन्दा करते हैं और आप और अपने संगियों को दर्शनों से संत सतगुरु के दूर हटाये रखते हैं और नतीजा उसका यह होता है कि ज़िन्दगी में और भी मौत के वक़्त सख़्त तकलीफ़ और महा दुख सहते हैं और फिर जनम मरन का चक्कर जारी रहता है।।

बचन उन्तीसवाँ

बचो, सजो, चलो और मिलो

संसार और उसके भोग बिलास और मान बड़ाई से बचो, सतसंग में बैठ कर अपने मन और सुरत को सजो यानी उनका सिंगार करो और फिर घट में धुन के संग चलो और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल से मिलो।।

१ - इस दुनिया में निज मन यानी काल पुरुष और माया ने बहुत से पदार्थ और भोग वास्ते लुभाने और फँसाने जीव के और बहुत सी डोरियाँ कुटुम्ब परिवार और रिश्तेदारी की, वास्ते उसके बाँधने के रचे हैं और जीव अजान उन में फँस गया और बँध रहा है।।

२ - सिवाय इसके अनेक तरह की तरंगें और ख़्वाहिशें मन में पैदा होती रहती हैं कि जिनके सबब से

जीव हमेशा कर्म के चक्कर में पड़ा रहता है और पाप पुन्य का भागी होता है।।

३ - ऐसे तौर से कार्रवाई दुनिया की जारी की है कि कुल्ल जीव, क्या अमीर , क्या ग़रीब, क्या औरत, क्या मर्द, हमेशा धंधे में लगे रहते हैं और जब बाहर के कामों से थोड़ी देर को फ़ुर्सत होती है, तब अंतर में अनेक तरह के ख़्याल उठाते रहते हैं और आसा और तृष्णा की लहरों में बहते रहते हैं।।

४ - ख़ुलासा यह कि जीवों को बहुत कम फ़ुर्सत अपने आपे और अपने मालिक की निसबत खोज और बिचार करने की मिलती है और उस में भी सच्ची तवज्जह वास्ते लगाने सच्चे खोज के नहीं आती है और न कोई सच्चा भेदी जिससे मुफ़स्सिल हाल सच्चे मालिक के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का और तरकीब चलने और रास्ता तै करने की मालूम पड़े, मिलता है।।

५ - दुनिया का हाल नाशमानता का साफ़ आँख से नज़र आता है और जीव भी जो पैदा होते हैं, वे भी बाद कार्रवाई चंद-रोज़ा के गुज़रते चले जाते हैं और अख़ीर में सिवाय हसरत और अफ़सोस के उन के साथ कुछ नहीं जाता और यह भी देखने में आता है कि देह धर कर कोई जीव दुख सुख भोगने से ख़ाली नहीं रहता और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय निहायत कष्ट और क्लेश हर एक को सहना पड़ता है जैसा कि मरने के वक़्त की हालत और बाद मरने के रंग रूप बिगड़ जाने की सूरत से ज़ाहिर होता है।।

६ - यह सब हालत और कैफ़ियत देख कर भी जीवों के मन में ख़्याल तहक़ीक़ात का इस मुआमले में नहीं आता। बल्कि भूल और ग़फ़लत इस क़दर बढ़ी हुई है कि कोई शख़्स इस मुआमले की निसबत गुफ़्तगू भी नहीं करता और न कुछ हाल उसका सुनना चाहता है।।

७ - सबब इसका यह है कि जीवों के दिल में ऐसा ख़्याल पैदा कर दिया है कि कुल्ल-मालिक का पता और भेद मिलना ना-मुमकिन है और न कोई उससे उसके धाम में पहुँच कर मिल सकता है। फिर लोगों ने परमार्थी लिबास पहिन कर अनेक तरह के धोखे जीवों को दिये और उनके साथ बहुत क़िस्म की दग़ाबाज़ी करी, जिसके सबब से जीवों को अक्सर एतबार परमार्थी पेशेवालों और गुफ़्तगू करने वालों का जाता रहा और इस मुआमले में तहक़ीक़ात और कार्रवाई अभ्यास वग़ैरा की फ़िज़ूल समझी गई।।

८ - इस सबब से पूरी तवज्जह कुल्ल जीवों की दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास और मान बड़ाई हासिल करने के लिये ख़र्च होने लगी और परमार्थी कार्रवाई रस्मी और टेकियों की सी रह गई।।

९ - बहुत से लोग परमार्थी रस्मों को इस ख़ौफ़ से जारी रखते हैं कि कहीं उनके क़बायल[१] की तनदुरुस्ती, और उनके पेशे की आमदनी और ख़ानदानी इज़्ज़त और आबरू में खलल न पड़े क्योंकि रोज़गारियों ने उनको इसी क़िस्म का डर दिखाया कि अगर पुरानी रस्मों को जारी न रक्खेंगे तो नुक़सान होगा।।

१ - कुटुम्बियों।

१० - देखने में आता है कि बहुत सी पुरानी रस्में दुखदाई या सरीह बे-मतलब और बे-फ़ायदा हैं, पर लोग उनको टेक और पक्ष और हठ के साथ बतौर लीक पीटने के अंजाम देते हैं और बाज़े आप उन रस्मों को फ़िज़ूल और थोथा समझते हैं, पर टेकियों के ज़ोर शोर के सबब से छोड़ नहीं सकते।।

११ - जो लोग कि विचारवान हैं और सच्चे मन से सच्चा परमार्थ चाहते हैं और किसी टेक या लीक के बँधे नहीं हैं, उनके वास्ते यह बचन कहा जाता है कि पहिले संत सतगुरु का खोज करो और उनके सतसंग में प्रीत और दीनता और शौक़ के साथ रलो और मिलो, तब स्वार्थ और परमार्थ की सच्ची ख़बर पड़ेगी।।

१२ - इन दिनों में सच्चे और कुल्ल-मालिक का भेद और उसके निज धाम का रास्ता और चलने की जुगत का हाल मुफ़स्सिल तौर से राधास्वामी संगत में मालूम हो सकता है। जो सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको चाहिये कि उस संगत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर अभ्यास शुरू करे और दुनिया के जाल में न फँसे यानी भोग बिलास और मान बड़ाई और धन और माल की चाह औसत दरजे की (जिसमें अपना और कुटुम्ब का गुज़ारा हो जावे) उठावे और फ़िज़ूली और ज़्यादती न करे।।

१३ - इस तरह संसार और उसके बखेड़े से बचे और सतसंग में बैठ कर और संतों के बचन और बानी को सुन कर, विचार के साथ उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, तब सहज में संसार से निबेड़ा होता जावेगा और

उसी क़दर मन और सुरत संत सतगुरु की दया से अभ्यास में लगेंगे।।

१४ - मन के अंदर बहुत बिकार और नाक़िस स्वभाव धरे हैं और दस इंद्रिय और पाँच दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार) का इस पिंड में भारी ज़ोर और शोर है। सो यह सब सफ़ाई और इनके ज़ोर का घटाव, संत सतगुरु की दया और उनके सतसंग और उपदेश की कमाई से मुमकिन है। इसी को सुरत और मन का सजना और सिंगार कहते हैं।।

१५ - जब दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग होगा और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम और अनुराग पैदा होगा, तब ऊँचे देश की तरफ़ चलना यानी रास्ता तै करना शुरू होगा।।

१६ - जो मेहर और दया से इस तौर से कार्रवाई जारी रही, यानी संसार से उदासीनता और चरनों में प्रीत और प्रतीत आहिस्ता २ बढ़ती गई तो एक दिन ऐसा प्रेमी अभ्यासी धुर धाम में पहुँच कर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन हासिल करेगा और उसी धाम में विश्राम पाकर अमर आनंद को प्राप्त होगा और देहियों के बंधन और उनके दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और क्लेश से कतई छुटकारा हो जावेगा।।

बचन तीसवाँ

दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना और बाक़ी कुल्ल-मालिक राधास्वामी

दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ना चाहिये और जो रास्ता कि मालिक ने घट में चलने और चढ़ने का निज घर की तरफ़ दिखा रक्खा है उस पर जीते जी चलना चाहिये, ताकि एक दिन निज घर में पहुँच कर और विश्राम पाकर परम आनंद को प्राप्त होवे और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से बच जावे।।

१ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल सर्व समर्थ कुल्ल करतार घट २ अंतरजामी परम पुरुष पूरन धनी हैं और जीव उनकी अंस है, जैसे सूरज और सूरज की किरन।।

२ - कुल्ल रचना आदि सुरत या आदि धार ने जो राधास्वामी दयाल के चरनों से प्रकट हुई, करी है और जितने पिंड या देही हैं, वह सुरतों ने रचे हैं और उनमें बैठ करके कार्रवाई हर एक देह की कर रही है।।

३ - सुरत की बैठक पिंड में आँख के मुक़ाम पर है, और स्थूल और सूक्ष्म और कारन शरीर में हर रोज़ जागते और सोते वक़्त फेरा रहता है और जब एक शरीर से दूसरे में गुज़र होता है, तब पहिले की कार्रवाई बंद हो जाती है और वहाँ का दुख सुख और चिन्ता और फ़िक्र सब हवा हो जाता है और जब फिर सुरत की धार लौट आती है, तब वह शरीर ब-दस्तूर चैतन्य हो जाता है यानी कार्रवाई उसकी जारी हो जाती है।।

४ - यह हालतें जाग्रत और सुपन और गहरी नींद की जो हर एक जीव पर रोज़ गुज़रती हैं, साफ़ साबित करती हैं कि स्थूल सूक्ष्म और कारन शरीर सुरत के ग़िलाफ़ हैं और माया के मसाले से बने हुए और जड़ हैं और सुरत चैतन्य की धार से अपनी चैतन्यता ले रहे हैं यानी उसकी ताक़त से कार्रवाई कर रहे हैं और सुरत चैतन्य इनसे और इनके मसाले से अलेहदा है क्योंकि जब सुरत इन सब से जुदा हो जाती है, जैसे सकते या सन्निपात की बीमारी में या मौत के वक़्त, तब यह शरीर ब-दस्तूर सही और सालिम बने रहते हैं, लेकिन महज़ बेकार और मुर्दे।।

५ - जब कि तीसरे दरजे यानी पिंड देश में सुरत कुल्ल की चैतन्य करने वाली और शरीरों से न्यारी है, तब ब्रह्मांड यानी दूसरे दरजे में भी इसी तरह से उन तीनों रूप से जो परमेश्वर यानी ब्रह्म ने धारन किये हैं, वह जुदा है और पिंड और ब्रह्मांड के परे अव्वल दरजे में जो संतों का निज देश और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का निज धाम है, सुरत का निज घर है और वहीं यह अपने अंसी कुल्ल-मालिक से मिल कर परम आनंद को प्राप्त हो सकती है।।

६ - जो जीव यानी सुरतें इस लोक में देह और कुटुम्ब परिवार और संसार के भोग बिलास में बँध गई और रच गई हैं और इन्द्रिय रस और भोगों के हासिल करने के लिये धन पैदा करने में अपनी तमाम उमर ख़र्च कर रही हैं और इस जड़ देही को ही अपना रूप समझा है, वे अपनी चाह और बासना के मुवाफ़िक़ बाद मरने के फिर जनमेंगी और देह धारन करेंगी और देह के साथ जो दुख सुख का भोग लाज़मी है वह जब तब

अपनी उमर में भोगती रहेंगी और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय महा कष्ट और क्लेश उनको सहना पड़ेगा जैसा कि मरने वालों की हालत से ज़ाहिर है।।

७ - अब संत सतगुरु जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के निज मुसाहब और निज पुत्र हैं और संसार में जब तब देह धारन करके वास्ते उद्धार और उपकार जीवों के प्रकट होते हैं, इस तौर पर फ़रमाते हैं कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी जीवों पर इस क़दर दयाल हैं कि जहाँ वह जाते हैं यानी पैदा होते हैं, उनके अंग संग रहते हैं और कृपा करके उनको रास्ता उद्धार का या उलट कर उनके निज धाम में जाने का हर एक के घट में साफ़ दिखला दिया है यानी जिस रास्ते पर सोते वक़्त हर रोज़ जाते हैं या मरने के वक़्त गुज़र करते हैं, वही ठीक रास्ता घर जाने का है और जिस क़दर कि सुरत आँख के मुक़ाम से सरकती जाती है, उसी क़दर देह और दुनिया की तरफ़ से अलेहदगी होती जाती है और दुख सुख उसका कम व्यापता है।।

८ - जो जीव अपना सच्चा उद्धार और कुल्ल-मालिक के निज धाम में पहुँचना चाहें, उनको मुनासिब है कि आँख के मुक़ाम से चलना शुरू करें। मगर इस रास्ते का हाल और चलने की तरकीब सिर्फ़ भेदी और वाक़िफ़कार गुरु से मालूम होगी, और सब इस भेद और हाल से बे-ख़बर हैं।।

९ - जो संत सतगुरु से मिल कर और उनकी दया से करनी करके धुर मुक़ाम तक पहुँचे हैं या असल में वहीं से आये हैं उनको सच्चा और पूरा गुरु और संत सतगुरु कहते हैं और जो संत सतगुरु से मिल कर

और उपदेश लेकर अभ्यास कर रहे हैं और अभी ब्रह्म पद तक पहुँचे हैं, उनको साध-गुरु कहते हैं और जो संत सतगुरु या साध-गुरु से मिल कर उपदेश कमा रहे हैं और घट में कुछ रास्ता भी तै किया है, उनको प्रेमी सतसंगी कहते है। जो कोई संत सतगुरु या साधगुरु से मिलेगा, उसका काम सर्व अंग करके दुरुस्त बन जावेगा यानी उनकी दया लेकर रास्ता उसका घट में जारी हो जावेगा और एक दिन धुर मुक़ाम में पहुँच कर विश्राम करेगा और जो कोई प्रेमी सतसंगी से मिलेगा, उसका भी काम आहिस्तगी के साथ दुरुस्त बन जावेगा और मौज से उसको संत सतगुरु भी मिल जावेंगे।।

१० - अब ग़ौर करना चाहिये कि इस लोक में जितने पदार्थ और भोग हैं, वह सब जड़ हैं और सुरत चैतन्य है, इसका और उनका आपस में मेल नहीं है और जो कि वे और सुरत का देह रूप दोनों नाशमान हैं, इस वास्ते आपस में मेल और मुहब्बत का फल, सुख थोड़ा और दुख घनेरा होता है। इसी तरह कुटुम्ब परिवार की मुहब्बत का हाल समझना चाहिये।।

११ - सच्चे परमार्थी को विचार के साथ बर्ताव करना चाहिये यानी इस क़दर विशेष बंधन और प्रीत किसी में नहीं करना चाहिये, जिसमें दुख और क्लेश पैदा होवे और तवज्जह अपनी हमेशा चरनों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के मज़बूत करना और बढ़ाना चाहिये, तब दुनिया के दुख सुख कम व्यापेंगे और अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ नहीं होवेगी, बल्कि ख़ुशी और आनंद प्राप्त होवेगा।।

१२ - जो रास्ता घट में चलने और चढ़ने का आँख के मुक़ाम से मालिक ने दिखा रखा है, उस रास्ते पर चलने की जुगत संत सतगुरु या उनके प्रेमी सतसंगी से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करना मुनासिब है यानी अपनी सुरत को चैतन्य की धार में जो शब्द की धार है, जोड़ना और धुन के आसरे चढ़ाना चाहिये।।

१३ - सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ति और सच्चे मालिक के दर्शनों की प्राप्ति का यही एक जतन है। जो इसको यानी सुरत शब्द की कमाई नहीं करेंगे वह अपनी ज़िन्दगी में और भी वक़्त मरने और बाद मरने के बहुत कष्ट और क्लेश पावेंगे और उस दुख में कोई उनकी सहायता नहीं कर सकेगा।।

१४ - सुरत शब्द मार्ग के संग कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु की दया हमेशा मौजूद रहती है। जो कोई यह अभ्यास करेगा, उसको वह दया अपने घट में मालूम पड़ेगी, और दुख और क्लेश के वक़्त हमेशा उसकी सहायता होगी और जो यह अभ्यास नहीं करेगा, वह काल और जमदूतों के हाथ से दुख और कष्ट सहेगा।।

१५ - यह अभ्यास ऐसा सहज है कि जो मन में थोड़ा प्रेम भी है, तो वह थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बन पड़ेगा और अपना फल अभ्यासी को दिखावेगा, यानी उसकी प्रीत और प्रतीत को आहिस्ता आहिस्ता बढ़ावेगा और इस अभ्यास को लड़का जवान और बूढ़ा और स्त्री और पुरुष और गृहस्थ और विरक्त और पढ़ा हुआ और अन-पढ़, थोड़े शौक़ के साथ बे-तकलीफ़ कर सकते हैं और इस कमाई से सहज वैराग दुनिया और उसके

सामान की तरफ़ से आहिस्ता २ मन में पैदा होता जावेगा। जो कोई इस अभ्यास में लग जावे, उसी को सच्चा परमार्थी और बड़भागी और मेहरी समझना चाहिये।।

बचन इकत्तीसवाँ

चलो २ घर घंट पुकारे।
रलो मिलो संग दयाल पियारे।।

१ - जब से कि सुरत उतर कर पिंड में आँख के मुक़ाम पर बैठी है, तब से सहसदल कँवल के मुक़ाम से बराबर घंटे की आवाज़ हो रही है, गोया इस सुरत को पुकार रही है कि चलो और अपने घर की सुध लो, पर सुरत की तवज्जह मन और इन्द्रियों के सबब से भोगों में और कुटुम्ब परिवार और धन और माल में ऐसी ज़बर हो रही है कि वह इस धुन की जो हर वक़्त घट में जारी है, ख़बर भी नहीं लेती।।

२ - कुल्ल जीव अपने निज घर और कुल्ल-मालिक की तरफ़ से बे-ख़बर हैं और हरचंद ज़मीनी और आसमानी रचना छोटी और बड़ी और बहुत ख़ुशनुमा और सुहावनी और रंगारंग देखते हैं और जानते हैं कि यह काम मनुष्य का नहीं है, फिर भी कोई खोज उसके करता का नहीं करते सिर्फ इतनी समझ लेकर कि कोई मालिक है, निचिन्त हो बैठे हैं।

३ - सबब इस बे-ख़बरी और बे-तवज्जही और बे-परवाही का साफ़ यह मालूम होता है कि जो कि पिछले लोगों ने उस मालिक की सिफ़त अलख और

अगम और अकह और अपार और अनंत कहा है, सो जीवों ने इन नामों के यह अर्थ समझ कर कि कोई उस मालिक को जान नहीं सकता और लख नहीं सकता और उसके पास पहुँच नहीं सकता और वह कहने में और समझने में आ नहीं सकता, तहक़ीक़ात और दरियाफ़्त करने की कोशिश छोड़ दी और इस सबब से सब के सब क्या विद्यावान और क्या अन-पढ़, उस मालिक के पते और धाम के भेद से बे-ख़बर रहे।।

४ - जो कोई ज़्यादा खोज भी करे तो उसको पंडित भेष मौलवी और शेख़ वग़ैरा नास्तिक और काफ़िर कह कर हटा देते हैं और अपनी नादानी और बे-ख़बरी के दूर करने का ज़रा भी जतन नहीं करते।।

५ - संत सतगुरु जो कुल्ल-मालिक के धाम से आए और उसके पूरे भेदी और वाक़िफ़कार हैं, पता और भेद कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का (जो कि आँख के मुक़ाम से जारी है) और तरीक़ा चलने और रास्ता तै करने का खोल कर सुनाते और समझाते हैं और जो कोई उनके बचन को माने और मुवाफ़िक़ उनके उपदेश के अभ्यास करे, उसको अपनी मेहर और दया से मदद देकर धुर धाम में पहुँचाते हैं और दर्शन कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का कराते हैं।।

६ - इस देश में माया और काल का भारी ज़ोर और शोर है और जो रचना यहाँ नज़र आती है, क्या चैतन्य जानदार, क्या जड़, सब का अभाव होता नज़र आता है। जो कोई विचारवान पुरुष इस कैफ़ियत को देख कर और इस लोक की रचना से उदास और

निरास होकर दरियाफ़्त करना चाहे कि कोई अमर लोक और अमर पुरुष और सदा सुख का स्थान भी है और वह कहाँ है और कैसे मिले, उसको चाहिये कि पहिले संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सन्मुख ज्यों त्यों आवे। जो हाल कि उसको दरियाफ़्त करना है, उससे ज़्यादा और मुफ़स्सिल तौर पर उसको वहाँ मालूम होवेगा और उस अमर धाम में पहुँचने की तरकीब और जुगत भी मालूम हो जावेगी और उसके अभ्यास में मदद मिलेगी।।

७ - जो इत्तिफ़ाक़ से संत सतगुरु का पता और भेद न मिले, तो उनके सतसंग का जो राधास्वामी संगत के नाम से मशहूर है पता लगा कर, उसमें शौक़ और दीनता के साथ शामिल होवे और राधास्वामी दयाल के प्रेमी और अभ्यासी सेवक से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे। जो उसका शौक़ सच्चा और पक्का है, तो संत सतगुरु के भी उसको दर्शन हो जावेंगे और अंतर में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल आप उस पर दया फ़रमावेंगे।।

८ - काल देश में मन और माया का ज़ोर है और कोई चीज़ यहाँ पर थिर और क़ायम रहने वाली नहीं है और कष्ट और क्लेश मौत का हर किसी को व्यापता है यानी जनम मरन का चक्कर चल रहा है।।

९ - माया की हद के पार दयाल देश है और वहीं कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का धाम है, जहाँ से कि जीव आदि में आया है। इस देश में माया का नाम और निशान भी नहीं है और न काल और कर्म का फेरा है और न जनम मरन का चक्कर चल रहा है, यहाँ

सदा आनंद ही आनंद है और कुल्ल रचना यहाँ की अमर है।।

१० - कुल्ल-मालिक परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी महा दयाल हैं और महा प्रेम और महा आनंद का भंडार हैं और कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं। जो कोई उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे और दर्शनों की चाह उठा कर उनके धाम की तरफ़ चलना चाहे, उसको चाहिये कि संत सतगुरु से मिल कर और उनसे सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन उनकी मेहर और दया से राधास्वामी धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और अमर आनंद को प्राप्त होगा।।

११ - जब तक कि कोई दयाल देश में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं पहुँचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार यानी काल और माया के जाल से क़तई छुटकारा नहीं होगा। इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने असली कल्यान के निमित्त, थोड़ा बहुत सतसंग संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का करें और वहाँ उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर जिस क़दर बने, अभ्यास करें तो रफ़्ता रफ़्ता दो तीन चार जनम में उनका काम बन जावेगा और जो यह अभ्यास और संतों का सतसंग नहीं किया जावेगा और सिर्फ़ दुनियावी यानी रस्मी परमार्थ की बाहरमुख कार्रवाई करते रहेंगे, तो जनम मरन का चक्कर और माया देश का बासा और चौरासी में भरमना नहीं छूटेगा और अंत को बहुत पछताना पड़ेगा और इस नर देही, जिसमें यह कार्रवाई सतसंग

और अभ्यास की बन सकती है, मिलने का भरोसा नहीं है।।

बचन बत्तीसवाँ

“निरबंधी बंधन बँधा, बँध निरबंधी होय”

बंधन ही से ऊपजें दुख सुख और त्रिय ताप।
बंधन ही से सहत है जनम मरन की घात।।
बंधन से बंधन कटें निरबँध हो जावे।
राधास्वामी दया से निज घर चढ़ जावे।।

१ - जो ग़ौर करके दुनिया और दुनियादारों के हाल को देखा जावे, तो मालूम होगा कि जिस क़दर दुख सुख जीव सह रहे हैं और तीन ताप यानी मानसी दुख और तन का रोग और उपाधि वग़ैरा का चक्कर चल रहा है यह सब सुरत और मन के बंधन का फल है।।

२ - जिस क़दर जो कोई संसार में बँधा है, यानी जितना जिस किसी के कुटुम्ब और परिवार और धन और माल और अनेक तरह का सामान दुनिया का है, वह उसी क़दर उनमें फँसा हुआ है और उसी मुवाफ़िक़ यानी अपने मन के बंधन और लपेट के मुताबिक़ दुख सुख का भोग करता है यानी जो काम कि इसके और इसके प्यारों की चाह के मुवाफ़िक़ हो जावे, उसमें सुख मानता है और जो काम उलटा हो जावे, उसमें दुखी होता है।

३ - जिस क़दर जिसके कुटुम्ब परिवार और दुनिया का सामान कम है, उसी क़दर उस पर दुख सुख का चक्कर कम आता है और उतनी ही आज़ादगी के सबब से वह हलका और सुखी रहता है।।

४ - देखने में आता है कि दुनिया में भारी कुटुम्बी और विशेष धनवान ज़्यादा बंधनों में हैं और इस सबब से दुख सुख के चक्कर में फँसे रहते हैं और आज़ाद आदमी जैसे भेष वग़ैरा या जिनकी शादी नहीं हुई है, किसी क़दर निरबंध और बे-ग़म जीते हैं। अलबत्ता देह में और जिस चीज़ या काम में उनका शौक़ है, वे भी बँधे रहते हैं और थोड़ा बहुत दुख सुख वे भी भोगते हैं।।

५ - सिवाय इन बंधनों के जगत की आसा का बंधन बहुत भारी है। जिस बात की जिस किसी ने तरंग उठा कर आसा बाँधी और पूरा करने के निमित्त कर्म करने लगा, तो इसी तरह दुनिया में फँसाव और करम का सिलसिला जारी हुआ और आइंदा उसकी तरक़्क़ी में दुख सुख का भोग ज़रूर करना पड़ेगा।।

६ - अलावा इसके देह का बंधन कुल्ल बन्धनों पर भारी है और कई जगह इस बंधन की गाँठें लगी हुई हैं कि जिनको कोई जीव अपने बल से नहीं खोल सकता है। पहिली गाँठ त्रिकुटी में जहाँ से तीनों गुन और पाँचों तत्त उपजे हैं, लगी है और दूसरी गाँठ छठे चक्र के स्थान पर जो पिंड का नाका है और तीसरी गाँठ मन के मुक़ाम पर लगी है। इन तीनों गाँठों के सबब से, सुरत का मन के साथ और मन का देह और इन्द्रियों

के साथ और फिर इन सब का बाहर की तरफ़ जीवों और अनेक भोगों और पदार्थों में, बंधन हो गया है।।

७ - सुरत यानी जीव असल में निरबंध था। लेकिन जब से कि माया के घेर में इसका उतार हुआ और पिंड में आकर ठहरा, तब से माया और उसके मसाले की मिलौनी और उसके रचे हुए पदार्थों के संग से बंधन पर बन्धन पड़ते गये।।

८ - बँधा हुआ अपने को आप नहीं खोल सकता। लेकिन जो कोई निरबंध मिले और धुर घर का भेदी और बासी होवे, वह अलबत्ता सहज में आहिस्ता २ सब बंधनों को ढीला करके, बँधे को अपने मुवाफ़िक़ निरबंध कर सक्ता है और तब दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा मुमकिन है।।

९ - ऐसे निरबन्ध को संत सतगुरु कहते हैं। जिसको भाग से उनका दर्शन और संग मिल जावे, उसी के बन्धन ढीले होने और कटने शुरू हो जावें और घर की तरफ़ रास्ता चलने लगे।।

१० - जो कोई दुनिया का हाल नाशमानता और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर को देख कर घबराता है और सच्चे मन से चाहता है कि कोई ऐसा उसको मिले कि जो कुल्ल-मालिक और उसके धाम का पता जहाँ से जीव आदि में आया है, बतावे और रास्ते का भेद और चलने की जुगत समझा कर, चलना शुरू करावे और सब तरह की मदद देकर एक दिन निज घर में पहुँचावे, जहाँ कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख नहीं है और हमेशा आनंद ही आनंद रहता है।।

११ - ऐसे दर्दी और खोजी जीव को संत सतगुरु ज़रूर मिलते हैं और वह उनके बचन सुन कर निहायत मगन होता है और प्रेम में भर कर उनकी और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ति निहायत उमंग के साथ करता है और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग की कमाई बहुत शौक़ के साथ करता है।।

१२ - सुरत शब्द जोग से मतलब यह है कि सुरत यानी रूह को, आवाज़ के वसीले से, जो घट घट में हरदम हो रही है, अन्तर में लगाना और उँचे देश की तरफ़ जहाँ कुल्ल-मालिक का धाम है, चढ़ाना। सिवाय इसके कोई दूसरा मार्ग निज घर में जाने का नहीं है। इसी अभ्यास से मन और इन्द्रियाँ थोड़े बहुत क़ाबू में आवेंगे और अन्तर और बाहर के बंधन ढीले होवेंगे और जो कोई दूसरी जुगत या तरीक़ा अभ्यास का कहता है, वह निहायत कठिन होगा और माया के घेर में ख़तम हो जावेगा, जिस सबब से जनम मरन का चक्कर चाहे देर के बाद होवे, जारी रहेगा।।

१३ - अब समझना चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग और उपदेश की महिमा ज़्यादा से ज़्यादा है। जिस किसी ने उनके बचन चित्त देकर सुने और समझे, उसी के संशय और भरम दूर हो जावेंगे और उनके जुगत की कमाई करके, अन्तर में कुछ रस मिलेगा और जलवा नज़र आवेगा और जिस क़दर उनके चरनों में प्रीत पैदा होती जावेगी, उसी क़दर बाहर के यानी संसारी बंधन ढीले होते जावेंगे।।

१४ - अब ख़्याल करो कि सुरत असल में निरबन्ध थी, लेकिन माया के घेर में उतर कर उस पर

ख़ोल पै ख़ोल चढ़ते गये, जिनका नाम देही है और उनमें बंधन होता गया। पिंड में उतर कर सुरत का बंधन कारन और सूक्ष्म और स्थूल शरीर में हो गया स्थूल शरीर में बैठ कर, इस लोक के भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और दोस्त आश्ना और दुनिया के सामान वग़ैरा के संग बर्तावा करके, इस क़दर बंधन हुआ कि उसके सबब से दुख सुख ज़िन्दगी भर सहना पड़ता है और उसी की चाह और याद करके, मरते वक़्त निहायत दरजे की तकलीफ़ उठानी पड़ती है और फिर देह धारन करके थोड़ी बहुत वही करतूत, जो पिछले जनम में करी बारम्बार करनी पड़ती है और वही दुख सुख और मौत का चक्कर सहना पड़ता है। यह सब हालत और कैफ़ियत बंधनों के सबब से पैदा हुई।।

१५ - अब जो कोई इन बंधनों से छूट कर फिर अपनी असली हालत हासिल करना चाहे यानी निरबंध होने की ख़्वाहिश करे, तो उसको चाहिये कि सतगुरु के सन्मुख जावे और उनसे और उनके सतसंग में प्रीत करे और जो वह सुरत शब्द मार्ग का उपदेश करें, उसका शौक़ के साथ हर रोज़ अभ्यास करे यानी अपने मन और सुरत को सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में जोड़े, तो आहिस्ता आहिस्ता उसके संसारी और देही के बन्धन सहज में ढीले होते जावेंगे यानी इस नये बन्धन से जो सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पैदा होगा, सब पिछले बन्धन दुनिया और देह के आहिस्ता आहिस्ता काटे जायँगे।।

१६ - यह क़ायदा है कि काँटे से काँटा निकाला जाता है यानी एक बंधन से दूसरा बंधन काटा जाता है। सो जो कोई सतगुरु और उनके सतसंग से प्रीत करेगा, उसके संसारी यानी बाहरी बंधन ढीले होवेंगे और जब उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ उनके निज स्वरूप यानी शब्द और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव लावेगा, तब उसके देही के बंधन ढीले होते जावेंगे यानी जो गाँठें लगी हैं, वह खुलती जावेंगी और रफ़्ता रफ़्ता एक दिन दोनों क़िस्म के बंधनों यानी दुनिया और देह से आज़ादगी हासिल हो जावेगी।।

१७ - सतगुरु के निज स्वरूप यानी शब्द से मतलब कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की धार से है। सो जिस क़दर प्यार और भाव कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में आता जावेगा, उसी क़दर मन और सुरत सिमट कर और शब्द की धार यानी धुन को पकड़ के, ऊपर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे और रफ़्ता रफ़्ता एक दिन कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँच कर और उसका दर्शन करके, परम आनंद को प्राप्त होंगे। यह निज धाम माया के घेर के पार है। वहाँ पहुँच कर किसी क़िस्म का बन्धन या कष्ट और क्लेश नहीं रहेगा और अमर आनंद प्राप्त होगा।।

१८ - यह दुर्लभ बख़्शिश संत सतगुरु की दया और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर से हासिल होगी। तब जीव को मालूम होवेगा कि निरबन्धी कैसे माया के घेर में मन और इन्द्रियों के सबब से, देह और दुनिया और उसके सामान में फँस गया और अनेक बंधनों में गिरिफ़्तार हो गया था और

फिर संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत लाने से किस तरह सहज में उसके सर्व बन्धन छूट गये और निरबन्ध होकर अपने निज देश में, अपने सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच कर, अमर आनंद को प्राप्त हुआ और वही संत सतगुरु और उनके सतसंग की महिमा जानेगा।।

१९ - इससे ज़ाहिर है कि जो कोई देह और दुनिया से प्रीत करेगा यानी जगत के बन्धनों में गिरिफ़्तार रहेगा, वह चौरासी में भरमेगा यानी बारम्बार देह धारन करके दुख सुख और जनम मरन का क्लेश सहता रहेगा। लेकिन जो कोई संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में प्रीत करेगा, वह एक दिन निरबन्ध होकर निज धाम में बासा पावेगा और परम आनन्द को प्राप्त होगा।।

बचन तेतीसवाँ

सच्चे परमार्थी की भक्ति की कार्रवाई का वर्णन

पहिले, संत सतगुरु की ख़ास ज़रूरत

१ - आदि में जब कुछ रचना न थी, तब अनामी पुरुष राधास्वामी के चरनों से आदि धार शब्द की प्रकट हुई और उसी ने चाँदना किया और ग़ुबार को हटाती हुई और हर एक मंडल की जुदा जुदा रचना करती हुई, नीचे उतरी और पिंड में ठहरी और मन और इन्द्रियों के वसीले से बाहर माया की रचना में

फँस गई और अनेक जनम धारन करके अपने निज घर और कुल्ल-मालिक को (जो उसके सच्चे माता पिता हैं) भूल गई और कुटुम्ब परिवार और भोगों में बँध कर दुख सुख सहती है।।

२ - अब वास्ते दूर करने इस भूल और भरम और दुख सुख के चक्कर के ज़रूर है कि कोई राधास्वामी देश का भेदी और बासी मिले, तो वह अपने बचनों की धार से घट का तमोगुन और अन्धकार हटा कर और शब्द का उपदेश करके, घट में चाँदना करे और आहिस्ता आहिस्ता तमोगुनी रचना यानी बिकारों को, जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ईर्षा वग़ैरा को घटा कर सतोगुनी अंग जैसे सील सन्तोष क्षमा दीनता और प्रेम को पैदा करे। ऐसे निज धाम के बासी और उपदेश करने वाले का नाम सन्त सतगुरु है।।

३ - जब तक ऐसे सन्त सतगुरु नहीं मिलेंगे, तब तक निज धाम का भेद और जुगत रास्ता तै करके वहाँ पहुँचने की हरगिज़ मालूम नहीं होगी क्योंकि सिवाय भेदी और बासी उस धाम के, और किसकी ताक़त है कि जो भेद और जुगत को बतावे और अपनी मदद से रास्ता तै करावे?

४ - अब समझना चाहिये कि जैसे आदि शब्द की धार ने (जो कि चैतन्य की धार है) प्रथम चाँदना करके सत्त का प्रकाश किया और प्रेम और आनन्द का भंडार खोला, इसी तरह जब तक कि सन्त सतगुरु के बचनों की धार से घट का अन्धकार नहीं हटाया जावेगा, तब तक जीव को असली सत्त और असत्त की तमीज़ नहीं होगी और जब तक कि उनसे सुरत शब्द मार्ग का

उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास नहीं करेगा, तब तक शब्द का चाँदना नहीं होगा और प्रेम और आनन्द प्रकट नहीं होंगे और रास्ता नहीं चलेगा।।

५ - इस वास्ते हर एक जीव को जो अपना सच्चा कल्यान और उद्धार चाहे, ज़रूर है कि पहले संत सतगुरु से मिले और उनका सतसंग करके और उपदेश लेकर, अंतर अभ्यास सुरत शब्द जोग का शुरू करे और जो कोई और लोगों से (जिनका नाम गुरु हरगिज़ नहीं हो सकता) समझौती लेकर परमार्थी कार्रवाई करेगा, वह निज घर में नहीं पहुँचेगा और रास्ते में माया के घेर में कहीं न कहीं अटक कर रह जावेगा और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से उसका बचाव हरगिज़ नहीं होवेगा क्योंकि गुरु नाम अँधेरे में चाँदना करने वाले और निज घर का रास्ता तै कराने वाले का है सो जहाँ तक माया का घेर है, वहाँ तक अँधेरा है और उस अन्धेरे में सिर्फ़ शब्द ही प्रकाश करनेवाला है। सो जो कोई शब्द का भेद बतावे और उसको प्रकट कराके घट में चाँदना करे और असली सत्त पद में पहुँचावे, वही सच्चा गुरु है। और किसी का नाम सच्चा गुरु नहीं हो सकता है।।

६ - अब समझो कि जीव को ऐसे गुरु की वास्ते निज घर में पहुँचने के ख़ास ज़रूरत है कि नहीं।।

दूसरे, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की भक्ति की ज़रूरत

७ - कुल्ल जीव पहिले माँ बाप के हुकुम में चलते हैं, फिर वास्ते सिखाने विद्या और हुनर के उस्ताद के सुपुर्द किये जाते हैं। बाद इसके हाकिम या अपने

आक़ा की ताबेदारी करते हैं और अपने घर के कारोबार स्त्री की सलाह से करते हैं। तब दुनिया और गृहस्थ के सब काम दुरुस्ती से चलते हैं और उनको उन कामों के अंजाम देने की दुरुस्त समझ बूझ आती है।।

८ - इसी तरह जब परमार्थी जीव सन्त सतगुरु और कुल्ल-मालिक की आज्ञा में बर्तेगा और उनकी बानी और बचन से समझ बूझ दुरुस्त हासिल करेगा, और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत लावेगा, तब परमार्थी की कार्रवाई दुरुस्ती से बन पड़ेगी यानी भक्ति की रीत में मुनासिब तौर से बर्ताव कर सकेगा और अन्तर अभ्यास में तरक़्क़ी होती जावेगी।।

९ - चाहे कोई कितना ही सतसंग और अन्तर अभ्यास करे, लेकिन जो सन्त सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत न होगी और उनकी आज्ञा के मुवाफ़िक कार्रवाई नहीं करेगा और भक्ति के क़ायदों में थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ नहीं बर्तेगा, तब तक उसकी असली तरक़्क़ी परमार्थ में नहीं होगी यानी मन की चाल ढाल नहीं बदलेगी और न उसके घट में प्रेम जागेगा और न अंतर और बाहर के सतसंग में रस और आनन्द मिलेगा।।

तीसरे, भक्ति के ख़ास अंग यह हैं

१० - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल को सर्व समर्थ और अपने घट में मौजूद और हर वक़्त और हर जगह हाज़िर नाज़िर जानना, और उनकी मौज के साथ जहाँ तक बन सके, मुवाफ़क़त करना और संसार और भोगों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग और उदासीनता रखना और सन्त सतगुरु के चरनों में दीनता और

अनुराग बढ़ाते रहना और उनको अपना सच्चा हितकारी और उद्धार-कर्ता मानना।।

चौथे, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु के चरनों में गहरी प्रीत और पकड़

११ - जैसे कि गृहस्थी को अपने स्त्री और पुत्र और कुटुम्ब परिवार में गहरा मोह और प्यार और मज़बूत बन्धन होता है और उसके सबब से वह चाहे जहाँ परदेश में जावे और कितने ही दिन वहाँ रहे, लेकिन किसी में उसका बंधन नहीं होता और अपनी पूँजी अपने घर को भेजता रहता है और हमेशा मुन्तज़िर इस बात का रहता है कि कब मौक़ा मिले और छुटकारा होवे, तब ही घर को जावे और अपने कुटुम्ब से मिले।।

१२ - इसी तरह सच्चे परमार्थी का बन्धन संत सतगुरु और उनके सतसंग में होता है कि सिवाय उनके और कोई संग उसको प्यारा नहीं लगता और हमेशा इरादा और कोशिश अपने निज घर में जाने की करता रहता है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों की तड़प हृदय में लगी रहती है।।

१३ - इस बंधन और शौक़ का फ़ायदा यह है कि उस परमार्थी का मन और किसी जगह इस संसार में ऐसा मज़बूत नहीं बँधता और चित्त किसी तरफ़ यानी माया और उसके पदार्थों में नहीं जाता। अपने प्रीतम और निज घर की याद ज़बर रहती है और अन्तर में थोड़ा बहुत रस लेता रहता है कि और जगह उसको चैन नहीं आता।।

१४ - जब तक इस क़दर गहरी प्रीत और पकड़ चरनों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के न होगी, तब तक ख़ौफ़ रहता है कि माया के ज़बर भोग मिलने के वक़्त झोका खा जावे और अपने प्रीतम की प्रीत ढीली करके, माया के पदार्थों और संसार की मान बड़ाई में लिपट जावे।।

पाँचवें, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में ज़रूरत शौक़ और मेहनत की वास्ते प्राप्ति रस और आनंद के

१५ - जैसे दुनिया के लोग अपने अपने पेशे और रोज़गार में निहायत तवज्जह और मेहनत के साथ कार्रवाई करते हैं और जो फ़ायदा यानी धन उससे प्राप्त होता है, उससे आप और अपने कुटुम्ब को पालते हैं और भोग बिलास करके मगन रहते हैं और आइन्दा अपने काम में तरक़्क़ी हासिल करते हैं।।

१६ - इसी तरह परमार्थी शख़्स भी अपने अभ्यास में मेहनत करके रस और आनंद लेता है और वही आनंद सुरत और मन का आहार है और जिस क़दर यह आनंद बढ़ता है उसी क़दर उसका असर इन्द्रियों और देह तक पहुँच कर उनको निर्मल और ताज़ा करता है और कुल्ल-मालिक और सन्त सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाता है कि जिससे आइन्दा अभ्यास की तरक़्क़ी होती जाती है।।

छठे, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की सरन और उनकी दया का भरोसा

१७ - जैसे दुनिया के लोग अपनी विद्या और बुद्धि और पौरुष और ताक़त का बल और भरोसा रख के दुनिया के काम करते हैं और ख़्याल करते हैं कि वे अपनी समझ बूझ और चतुराई से कैसा ही काम आकर पड़े, उसको दुरुस्ती से अंजाम देंगे।।

१८ - इसी तरह सच्चे परमार्थी को चाहिये कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की सरन और उनकी दया का भरोसा दृढ़ करे कि जिसके बल से वह मन और माया के विघ्नों से बच कर और अपना अभ्यास और भक्ति दुरुस्ती से करके एक दिन अपने जीव का कारज बना लेगा और भक्ति के अंग और रीत में, चाहे जैसे कठिन होवें, उनकी मेहर और दया से आसानी से बर्त सकेगा।।

१९ - बग़ैर सरन और दया के यह रास्ता तै करना निहायत मुशकिल है, बल्कि ना-मुमकिन है। जो अपने पुरुषार्थ और बल का आसरा लेकर अभ्यास करेगा, वह अहंकारी हो जावेगा और उसकी तरक़्क़ी का रास्ता बन्द हो जावेगा, क्योंकि किसी की ताक़त नहीं है कि काल और कर्म और मन और माया पर ग़ालिब आ सके। लेकिन सच्चा परमार्थी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से, इन सब को जीत कर, एक दिन अपने निज घर में जा सकता है।।

सातवें, ख़ुलासा और नतीजा

२० - ऊपर के बयान से ज़ाहिर होगा कि सच्चे परमार्थी को भक्ति की कार्रवाई थोड़ी बहुत उसी तौर पर करनी होती है, जैसे कि दुनियादार आदमी दुनिया

की कार्रवाई दुरुस्ती से करके उससे फ़ायदा उठाते हैं और गृहस्थ का कार चलाते हैं यानी परमार्थी को कोई नई बात या नया काम नहीं करना होता है। जैसे दुनियादार जिस काम में कि उनका शौक़ ज़बर है, बग़ैर ख़ौफ़ और लज्जा बिरादरी वग़ैरा के बे-तकल्लुफ़ करते हैं, इसी तरह परमार्थी को भी मुनासिब है कि दुनिया के लोगों का जो सच्चे परमार्थ से बे-ख़बर हैं, डर और शरम और लिहाज़ और झिझक छोड़ कर, भक्ति के क़ायदों और रीत में बर्ताव करे और संत सतगुरु और प्रेमी जन में विशेष प्यार लाना चाहिये, तब उसका परमार्थ दुरुस्त और पूरा बन सकेगा और जो कोई कुल की मरजादा और दुनिया की लाज और दुनियादारों के डर में अटका रहेगा, उसके परमार्थ में कसर पड़ेगी यानी प्रेमाभक्ति के अंगों में जैसा चाहिये, नहीं बर्त सकेगा और इसी तरह कुटुम्ब परिवार का विशेष मोह और डर परमार्थ में बहुत विघ्न और ख़लल डालता है, इस वास्ते ज़रुरत के मुवाफ़िक़ सब से प्रीत करना और व्यवहार में बर्तना जायज़ और दुरुस्त है, लेकिन ज़्यादती में नुक़सान होता है क्योंकि ऐसा स्वभाव और बरताव कुटुम्ब के साथ दुनिया के कामों में भी बहुत ख़लल डालता है और दुनिया की तरक़्क़ी से महरूम रखता है। जो कोई राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, उसके दोनों काम परमार्थ और स्वार्थ यानी दुनिया और दीन दुरुस्त बन सकते हैं और दोनों की कार्रवाई बराबर जारी रह सकती है।।

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

छाँटे हुए शब्द, प्रेम बानी भाग ४

शब्द १

मन तू कर ले हिये धर प्यार।
राधास्वामी नाम का आधार।।
राधास्वामी नाम है अगम अपारा।
जो सुमिरे तिस लेहि उबारा।।
सुन घट में अनहद झनकार।। १ ।।
राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा।।
दरस किया जाय कुल करतार।। २ ।।
राधास्वामी नाम की महिमा भारी।
शेष महेश कहत सब हारी।।
लीला अपर अपार।। ३ ।।
राधास्वामी परम पुरुष जग आये।
हंस जीव सब लिये मुक्ताये।।
और जीवन पर बीजा डार।। ४ ।।
नाम की महिमा बहु बिधि गाई।
मुक्ती की यहि जुगत बताई।।
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार।। ५ ।।
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया।
सुरत शब्द मारग दरसाया।।
धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार।। ६ ।।

ध्वन्यात्मक जो राधास्वामी नामा।
तिस महिमा कस करूँ बखाना।।
जो सुने सोइ जाय निज घरबार।। ७ ।।

शब्द २

सुरतिया हरख रही।
निरखत गुरु चरन बिलास।। १ ।।
बिगसत खेलत संग गुरू के।
दिन दिन बढ़त हुलास।। २ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में।
तजत काम और भोग बिलास।। ३ ।।
उमँग उमँग कर गावत बानी।
मगन होय रह गुरु के पास।। ४ ।।
चित दे सुनत बचन सतसँग के।
चेत करत घट में अभ्यास।। ५ ।।
मन और सुरत सिमट कर चालें।
तजत देश जहँ माया बास।। ६ ।।
तीसर तिल धस सुनती बाजा।
लखती जहँ वहँ जोत उजास।। ७ ।।
गगन ओर धावत सुर्त प्यारी।
पावत काल तरास।। ८ ।।
अधर चढ़त सुन सुन धुन अक्षर।
सुन में हंसन संग बिलास।। ९ ।।
भँवरगुफा धुन सुन गई आगे।
निज सूरज सँग मिला अभास।।१० ।।
अलख अगम लख हुई अचिन्ती।
मिल गई प्रेम आनंद की रास।।११ ।।

प्रेम पियारी सुरत रँगीली।
प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास।। १२ ।।
दरशन कर अति कर मगनानी।
पाय गई धुर धाम निवास।। १३ ।।
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में।
प्रेम स्वरूप किया हिरदे बास।। १४ ।।
यह गत मत है अगम अपारा।
पावे मेहर से कोइ निज दास।। १५ ।।
कर सतसंग गहे स्वामी सरना।
सुरत चढ़ावे निज आकाश।। १६ ।।
सुरत होय तब स्वामी प्यारी।
प्रेम की दौलत पावे ख़ास।। १७ ।।
राधास्वामी मेहर दृष्टि से हेरें।
प्रेम दुलार होय ख़ासुलख़ास।। १८ ।।
जो अस दुर्लभ भक्ति कमावे।
जावे निज घर बिन परियास।। १९ ।।
सुरत निमानी मेरी स्वामी सँवारी।
गावत उन गुन स्वाँसो स्वाँस।। २० ।।
प्रेम दुलारी शब्द पियारी।
होय निहाल बैठी चरनन पास।। २१ ।।
दयाल सरन ले काज बनाया।
तज दिया जग का मोह और आस।। २२ ।।
प्रेम अधार जियत सुर्त प्यारी।
जग से रहती सहज उदास।। २३ ।।
धूम हुई भक्ती की भारी।
करम भरम सब हो गये नाश।। २४ ।।

प्रेम अधारी सुरत सिरोमन।
आरत दीपक करती चास।। २५ ।।
सब सखियाँ मिल आरत गावें।
राधास्वामी चरनन धर विश्वास।। २६ ।।
दया करी राधास्वामी प्यारे।
घट घट कीन्हा प्रेम प्रकाश।। २७ ।।

शब्द ३

सुरतिया वार रही।
तन मन गुरु चरन निहार।। १ ।।
बिमल बैराग धार कर मन में।
छोड़ दिया संसार।। २ ।।
मोह जाल के बंधन काटे।
गुरु सेवा में रहे हुशियार।। ३ ।।
सतसँग बचन धार कर चित में।
मन को छिन छिन डारत मार।। ४ ।।
भोग अंक को काटत छिन छिन।
राधास्वामी नाम जपत हर बार।। ५ ।।
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती।
शब्द सुनत हियरे धर प्यार।। ६ ।।
घंटा संख मचावत शोरा।
छिटक रहा घट जोत उजार।। ७ ।।
अनहद शब्द लगा अब गरजन।
चढ़ कर पहुँची गगन मँझार।। ८ ।।
द्वारा फोड़ गई अब सुन में।
न्हाई मानसर मैल उतार।। ९ ।।

भँवरगुफा का देख उजारा।
बीन सुनी सतगुरु दरबार॥१० ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी चरन मिला आधार॥११ ॥
तन मन तोड़ किया जब सतसँग।
भोग बासना दई निकार॥१२ ॥
गुरु चरनन में प्रीत घनेरी।
कीन्ही हिये से तन मन वार॥१३ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में।
मन के मान दिये सब झाड़॥१४ ॥
तब गुरु परसन होय मेहर से।
अंग लगाया किरपा धार॥१५ ॥
अस सतसंग करे जो कोई।
सोई जावे भौजल पार॥१६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारा।
पहुँचावें फिर निज घर बार॥१७ ॥
होय निचिन्त बसे सुख सागर।
हर दम राधास्वामी दरश निहार॥१८ ॥
अचरज नाम और अचरज रूपा।
अचरज मेहर का वार न पार॥१९ ॥
लख लख भाग सराहत अपना।
राधास्वामी चरन पकड़ रहि सार॥ २० ॥
राधास्वामी द्याल सरन हिये धारी।
उन मेहर से दिया मेरा काज सँवार॥ २१ ॥

बचन चौतीसवाँ

सहज उपदेश

फ़ेहरिस्त मज़मून सहज उपदेश

(१) रचना का कुल्ल-मालिक और करतार ज़रूर है।।

(२) सुरत यानी जीव किसको कहते हैं और कहाँ से आए?

(३) संत सतगुरु किसको कहते हैं ?

(४) सुरत यानी जीव कुल्ल-मालिक की अंस है।।

(५) मन और सुरत और इन्द्रियों का बंधन जगत और उसके भोगों में और उसके सबब से दुख सुख सहना।।

(६) तीन ताप दुख का रूप हैं।।

(७) दुख सुख और जनम मरन से बग़ैर दया संत सतगुरु के छुटकारा नहीं हो सकता है।।

(८) वर्णन इस बात का कि वास्ते प्राप्ति सच्चे परमार्थ के संत सतगुरु से मिल कर उपदेश लेना ज़रूरी है।।

(९) सिफ़त पूरे और सच्चे गुरु की।।

(१०) जब पूरे गुरु मिलें और कुल्ल-मालिक का भेद देवें तब उनके साथ किस तरह बर्तावा करना चाहिये।।

(११) जीव की जाग्रत के समय आँख में बैठक है और वहीं से खिंच जाना, अंदर और ऊपर की तरफ़,

वक़्त नींद और मौत के और बे-ख़बर हो जाना देह और दुनिया के दुख सुख से।।

(१२) टेकियों की मूर्खता और अहंकारी-पन और वाद विवाद करने की आदत और ना-क़ाबलियत वास्ते करने किसी क़िस्म के अंतरी अभ्यास के या शामिल होने संतों के सतसंग के।।

(१३) ज़ात पांत के टेकी भी वैसे ही मूर्ख और नादान हैं और अपने परमार्थी नफ़े और नुक़सान से गाफ़िल, यह लोग संतों के दर्शन और सतसंग के फ़ैज़ और फ़ायदे से हमेशा महरूम रहेंगे।।

(१४) बाज़े लोगों के ओछे और नाक़िस ख़्याल निसबत औरतों के परदे के और हारिज होने उनकी तरक़्क़ी इल्म और अक़्ल, समझ और तजरुबा और सच्चे परमार्थ में।।

(१५) एक गुरु करके दूसरा गुरु न करने के बयान में।।

(१६) क़ायदा बर्ताव का सतसंग में और पूरे गुरु के साथ।।

(१७) आरती का क़ायदा और फ़ायदा।।

(१८) हार चढ़ाने का फ़ायदा।।

(१९) मत्था टेकने और बंदगी करने का फ़ायदा।।

(२०) परशादी और चरनामृत का फ़ायदा।।

(२१) ज़ात का भेद और उसका मुक़र्रर होना कर्म के ब-मूजिब।।

(२२) सेवा का वर्णन।।

(२३) महिमा सतसंग की।।

(२४) महिमा अंतर अभ्यास यानी अंतरी सतसंग की।।

(२५) जीवों का बेजा और ग़लत भरम और ख़ौफ़ निसबत राधास्वामी मत में शामिल होने के।।

(२६) दुनिया के लोगों का धरम और ईमान।।

(२७) प्रेम की महिमा।।

(२८) सरन की महिमा।।

(२९) हिदायत यानी उपदेश कुल्ल जीवों को।।

(३०) गोश्त खाने का नुक़सान।।

(३१) शराब और भंग और दूसरे नशों के खाने पीने का नुक़सान।।

(३२) तितिम्मा यानी आख़री बचन।।

(१) रचना का कुल्ल-मालिक और करतार ज़रूर है

१ - समझवार और विचारवान मनुष्य को अनेक प्रकार की ज़मीनी और आसमानी रचना और उसकी भारी और बारीक कारीगरी को देख कर मन में फ़ौरन यह ख़्याल पैदा होगा कि उसका करता ज़रूर है और वह सर्व समर्थ और अंतरजामी और सर्व व्यापक पुरुष है।।

२ - सबूत इस बात का कि कोई कुल्ल-मालिक ज़रूर है, यह है कि हरचंद चैतन्य सब जगह मौजूद है,

मगर बग़ैर मदद अपने से विशेष चैतन्य के कुछ कार्रवाई रचना और उसके पालन पोषन वग़ैरे की नहीं कर सकता। जैसे इस लोक का चैतन्य बग़ैर मदद अपने विशेष चैतन्य के, जिसकी धार इस सूरज से आती है, कोई कार्रवाई नहीं कर सकता है, इसी तरह से यह सूरज अपने विशेष चैतन्य निरंजन के आसरे और वह ब्रह्म रूपी सूरज और फिर वह सत्त नाम रूपी निज सूरज और फिर वह भी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के अधीन है।

३ - इस सूरज से विशेष चैतन्य सूरज का पता नजूमी देते हैं और ब्रह्म-रूपी सूरज की महिमा जोगीश्वर ज्ञानियों ने की है और ब्रह्म के परे सत्त नाम रूपी सूरज का भेद सन्तों ने वर्णन किया है और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का पद, कुल्ल-मालिक ने आप परम सन्त रूप धारन करके प्रकट किया।।

४ - इन स्थानों या सूरजों से जो चैतन्य धार आती है, वह अपने अपने समान-चैतन्य सूरज मंडल की रचना की कुल्ल कार्रवाई में मदद देती है और इन हर एक स्थानों का जो धनी है, वही नीचे की रचना का मालिक और मुख़्तार है और राधास्वामी दयाल कुल्ल-मालिक हैं और सिर्फ़ परम संत उनके धाम तक पहुँचे हैं।।

५ - जो आदि धार राधास्वामी धाम से निकली, वही कुल्ल रचना की करतार है यानी उस धार से पहिले सत्तलोक तक यानी दयाल देश की रचना हुई और सत्तलोक से जो दो धार प्रकट हुईं, उन से दूसरे दरजे (ब्रह्मांड) यानी निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया

देश की रचना हुई और निरंजन जोत से जो तीन धारें प्रकट हुईं, उन से तीसरे दरजे (पिंड) यानी निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश की रचना हुई।।

६ - हरचंद कि निर्मल चैतन्य सब जगह मौजूद है, लेकिन शुद्ध माया देश यानी दूसरे दरजे में शुद्ध माया के ग़िलाफ़ों से और मलीन माया देश यानी तीसरे दरजे में मलीन माया के ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है। इस सबब से माया देश में नीचे के दरजे का चैतन्य समान और ऊपर के दरजे का विशेष कहलाता है, क्योंकि बग़ैर मदद विशेष चैतन्य के वह पूरी तौर से रचना की कार्रवाई नहीं कर सकता।।

७ - हर एक मंडल और दरजे में जो रचना है, उस को ग़ौर से देखने और विचारने से भारी कारीगरी और समर्थता और इरादा या मतलब रचना करने वाले का साफ़ पाया जाता है। यह समर्थता कुल्ल-मालिक की इन कामों में साफ़ ज़ाहिर है, जैसे माया और उसके अजज़ा, तत्त्व और गुन वग़ैरे को पैदा करना और उस मसाले से अनेक तरह के रूप और रंग निहायत बारीकी और कारीगरी से बनाना और फिर उनसे और उनके अंग अंग से जुदा जुदा काम लेना। जो नज़र ग़ौर से देखा जाय तो यह कैफ़ियत कुल्ल रचना में और भी एक एक देह और उसके बनाव में, साफ़ मालूम होती है।।

८ - जब समर्थता और कारीगरी और इरादा और मतलब कुल्ल आसमानी और ज़मीनी रचना में पाया जाता है और तीनों शक्ति यानी पैदा करने और पालन पोषन करने और संहार करने की, हर जिस्म यानी हर

एक नाम और रूप में कार्रवाई कर रही हैं, फिर साबित हुआ कि कोई कुल्ल-मालिक इस रचना का ज़रूर है और वह सर्व समर्थ और भारी कारीगर और सब जगह मौजूद और अन्तरजामी और सर्व ज्ञानी और अमर और अजर है।।

९ - यह कुल्ल-मालिक घट घट में मौजूद है और ऊँचे से ऊँचा उसका धाम है और राधास्वामी उसका नाम है।।

१० - यह नाम ध्वन्यात्मक है यानी इसकी आवाज़ बे ज़बान और बे बाजे के, ऊँचे मंडल में हर एक के घट में हर वक़्त हो रही है और गहरे अभ्यासी और प्रेमी उसको अपने अंतर में सुनते हैं। यह नाम किसी मनुष्य का धरा हुआ नहीं है। कुल्ल-मालिक ने आप संत रूप धारन करके, जीवों के उद्धार के निमित्त उसको आप अति दया करके प्रकट किया।।

११ - मालूम होवे कि मनुष्य का स्वरूप कुल्ल रचना का नमूना है और जितने मंडल बाहर हैं, वे सब छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ घट घट में मौजूद हैं और बाहर के मंडलों से मुवाफ़िक़त रखते हैं यानी एक हो रहे हैं, जैसे सात खन के मकान की हवा, बाहर की हवा के मंडल से, अपने अपने दरजे के मुवाफ़िक़ मेल रखती है और एक हो रही है।।

(२) सुरत यानी जीव किसको कहते हैं और कहाँ से आये

१२ - आदि में सब जीव धुर मुक़ाम से आये, जैसे सूरज और सूरज की किरन। वह किरन यानी आदि

धार जब माया के घेर में उतरी, तब माया के ख़ोल उस पर चढ़ते चले आये। इन ख़ोलों का नाम देही है। जिस मंडल में सुरत उतर कर ठहरी, उसी मंडल के माया के मसाले की देह उसकी बन गई और उसमें बैठ कर सुरत उसी रचना के साथ बर्ताव करने लगी और उसमें किसी क़दर बँध गई।।

१३ - इसी तरह इस लोक में उतर कर मनुष्य देह धारन करी और उसमें उसका बंधन हो गया और ऊपर के मंडलों के पट बंद हो गये यानी सुरत का रुख़ नीचे की तरफ़ हो गया। ऐसी सुरतों को जिनका देह में और भी इस लोक की रचना में बंधन हो गया, जीव कहते हैं यानी उनको अपने मालिक और निज धाम की सुध बिसर गई।।

(३) सन्त सतगुरु किसको कहते हैं

१४ - जो सुरत कि उस आदि धाम से एक दम उतर कर बा-ख़बर और होशियार आई, और नर रूप धारन किया, उसके घट में सब पट खुले रहते हैं यानी जब वह चाहे धुर पद में चली जावे और कुल्ल-मालिक का दर्शन करे और जब चाहे जब पिंड में उतर कर इस दुनिया की सैर करे। ऐसी सुरत को संत और सतगुरु कहते हैं और उसका कुल्ल-मालिक के साथ बराबर मेल रहता है और वह किसी मंडल की रचना या इस दुनिया में नहीं फँसती है।।

(४) सुरत यानी जीव कुल्ल-मालिक की अंश है

१५ - दफ़ा १२ और १३ में लिखा गया है कि सब जीव बतौर किरनियों के आदि धाम से आये और माया के घेर में उन पर दरजे-ब-दरजे ख़ोल चढ़ते चले आये और इन ख़ोलों यानी देहियों में उनका बंधन हो गया, पर जौहर उनका और कुल्ल-मालिक का एक है और सूत उनका कुल्ल-मालिक से लगा हुआ है, पर रास्ते में जा-ब-जा पट लगे हुए हैं, क्योंकि धार का रुख़ नीचे और बाहर की तरफ़ हो रहा है।।

१६ - अब मालूम होवे कि कुल्ल रचना हर एक मंडल में, सुरत यानी आदि धार ने जो धुर पद से आई, करी है और इस लोक में भी साफ़ नज़र आता है कि एक एक सुरत ने अपने क़याम के वास्ते, यहाँ एक एक पिंड रचा और उस पिंड की सम्हाल और पालन पोषन उसी की शक्ति से हो रहा है यानी तीनों गुन और पाँचों तत्त्व और उनकी प्रकृतियाँ और अनेक शक्तियाँ जैसे बिजली की शक्ति और रोशनी की शक्ति और खैंच शक्ति और हटाव शक्ति और बनाव शक्ति वग़ैरा सब ताबेदारी में सुरत के जब कि उसने पहिले ही अपना ज़हूर किया, हाज़िर होकर पिंड के बनाव और सम्हाल में मदद देती हैं और सब आपस में रल मिल कर काम करती हैं और जब सुरत पिंड को छोड़ती है, तब वे सब आपस में लड़भिड़ कर पिंड को बिगाड़ देती हैं यानी उसका अभाव हो जाता है।।

१७ - इससे ज़ाहिर है कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल, अपनी किरनियों या धारों के वसीले से यहाँ सब जगह मौजूद हैं और उन्हीं किरनियों की मार्फ़त यहाँ अनेक प्रकार की रचना करा रहे हैं और

जब उन किरनियों यानी सुरतों का पिंडों से वियोग होता है तब उन देहियों का अभाव हो जाता है और कुल्ल मसाला माया का जैसे तत्त्व और गुन और शक्तियाँ सुरत के आधीन हैं यानी उसकी मौज या हुक्म अनुसार कार्रवाई कर रहा है।।

१८ - यह बात दरख़्त की पैदायश पर नज़र करने से बहुत आसानी से समझ में आ सकती है। जिस वक़्त कि किसी बीज में से आदि धार निकली यानी कुला फूटा और सुरत ने अपना ज़हूर किया, उसी वक़्त से तीनों गुन और पाँचों तत्त्व और सर्व शक्तियाँ वहाँ मौजूद होकर, उस दरख़्त के बढ़ाव और बनाव में मदद देती हैं और इसी आकाश से मसाला खींच कर लेती हैं और फ़िज़ूल माद्दा ख़ारिज करती हैं और वही आदि धार यानी कुला जो फूटा है, बढ़ता हुआ कुल्ल दरख़्त का कर्त्ता है और उस दरख़्त के रूह की धारें नसाजाल के वसीले जड़ से पत्ती तक फैली हुई हैं।।

१९ - जब वह दरख़्त मर जाता है यानी उसकी रूह खिंच जाती है, उस वक़्त उसका जिस्म बतौर ईंधन के पड़ा रहता है, चाहे जला दिया जावे या कुछ अर्से में गल कर ख़ाक हो जावे।।

२० - जो माया और उसका मसाला और कुल्ल शक्तियाँ और गुन और तत्त्व वग़ैरे सुरत के आधीन और ताबेदार न होते, तो तीन लोक की रचना भी न होती और जो कि कुल्ल-मालिक का सत्त चित्त आनन्द रूप है, इस वास्ते सुरत का भी वही स्वरूप है यानी इस रचना में वही चैतन्य है और सर्व रस और आनन्द उसी की धार में हैं और इस रचना में सत्त भी वही है यानी

सुरत ही रचना करती है और उसी के सबब से सब रचना ठहरी हुई और क़ायम नज़र आती है और उसके वियोग में उस रचना का यानी देहियों का अभाव हो जाता है।।

२१ - यही सुरत संत सतगुरु की कृपा और सतसंग से उलट कर अपने निज घर में पहुँच सकती है। पर माया का मसाला जो कि जड़ है और जिससे देहियाँ और उनके अनेक औज़ार, जैसे इन्द्रियाँ वग़ैरे, बने हैं, उलट नहीं सकता यानी अपनी हद्द के पार नहीं जा सकता।।

२२ - यह सुरत अंस मुवाफ़िक़ अपने अंसी यानी कुल्ल-मालिक के अमर और अजर है और जब एक देह को छोड़ती है, तब अपनी चाह और बासना के मुवाफ़िक़ दूसरी देह धारन करती है क्योंकि जब तक कुल्ल-मालिक का भेद लेकर और जुगत दरियाफ़्त करके उस तरफ़ को चलना शुरू न करेगी, तब तक उसका बंधन देह और दुनिया से नहीं छूटेगा और बारम्बार देह धरनी पड़ेगी।।

(५) मन और सुरत और इन्द्रियों का बंधन जगत और उसके भोगों में और उसके सबब से दुख सुख सहना

२३ - सुरत का पिंड में बैठने और इन्द्रियों के वसीले से संसार में बर्ताव करने से, देह और दुनिया में बंधन हो गया और जो कि देह और इन्द्रियाँ माया के मसाले से बनी हुई हैं, इस वास्ते उनको इसी देश की

रचना में से अहार लेना ज़रूर पड़ा और यही इन्द्रियों के भोग, बंधन का कारन हो गये।।

२४ - जब किसी इन्द्रिय के अहार या भोग की ख़्वाहिश पैदा होती है, जो वह ख़ातिर-ख़्वाह मिल गया तो सुख, नहीं तो दुख होता है या जब किसी औज़ार में देह के कोई ख़लल या बिगाड़ हो जाता है, तब भी दुख होता है।।

२५ - यह हाल दुख सुख का जो निज देह के साथ ताल्लुक़ रखता है, बयान हुआ। इसी तरह हर एक देह को जो जानदार है, दुख सुख होता है और जिसका जिस दूसरी देह या देहियों में बंधन है, उसको भी उसी क़दर उसका असर पहुँचता है। इस सबब से हर एक शख़्स अपने निज कर्मों का, और भी दूसरे के कर्मों का, फल जो दुख सुख है भोग करता है और सबब इस भोगने का बंधन या लाग और लगन है।।

(६) तीन ताप दुख का रूप हैं

२६ - ऐसे कम लोग हैं जिनको सुख विशेष हासिल है और दुख बहुत कम, लेकिन ऐसे जीव कसरत से हैं जिनकी ख़्वाहिशें भोगों की ज्यों की त्यों पूरी नहीं होती हैं और इस वास्ते दुख सहते हैं।।

२७ - यह दुख तीन क़िस्म के हैं यानी आधि, व्याधि और उपाधि। आधि, मन के दुख को कहते हैं और व्याधि, देह में रोग को कहते हैं और उपाधि, बाहर के क़ज़िये और झगड़े को कहते हैं। इन तीन ताप से इस रचना में कोई जीव खाली नहीं रहता यानी अपने अपने चक्कर के मुवाफ़िक़ यह ताप सब जीवों को

व्यापते हैं, चाहे अमीर होवे या ग़रीब, और सिर्फ़ इसी देह में नहीं, बल्कि दूसरी देहों तक कर्म का फल असर करता है।।

(७) सुख दुख और जनम मरन से बग़ैर दया संत सतगुरु के छुटकारा नहीं हो सकता है

२८ - अब जो कोई इन तीनों तापों के असर से और भी जनम और मरन के कष्ट और क्लेश से बचना चाहे, उसके वास्ते संतों ने यही जतन फ़रमाया है कि जैसे बने तैसे देह और दुनिया के बंधनों को ढीला करे और चित्त को राधास्वामी दयाल के चरनों में जोड़े और यह बात संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होने और उनके चरनों में प्रीत करने से हासिल हो सकती है। बग़ैर उनकी दया के किसी का छुटकारा इन दुक्खों से मुमकिन नहीं है।।

(८) वर्णन इस बात का कि वास्ते प्राप्ति सच्चे परमार्थ के, संत सतगुरु से मिल कर उपदेश लेना ज़रूरी है

२९ - दुनिया और जीवों के हाल को देख कर मालूम होता है कि कोई काम बग़ैर गुरु या उस्ताद या सिखाने वाले के कोई नहीं सीख सकता, फिर सच्चे परमार्थ की कार्रवाई बग़ैर मिलाप सच्चे गुरु के और उनसे उपदेश लेकर कमाई करने के कैसे मुमकिन है?

३० - जो कोई ऐसा ख़्याल करते हैं कि गुरु की कुछ ज़रूरत नहीं हैं और पोथियाँ पढ़ कर ज़ाहिरी कार्रवाई आप कर सकते हैं, उनको यह मालूम नहीं है कि सच्चा परमार्थ किसे कहते हैं। वे लोग सिर्फ़ बाहरी

करतूत को परमार्थ समझते हैं, जैसे पोथी पढ़ना और पढ़ाना, भजन गाना और प्रार्थना करना और व्रत रखना और ज़बान से या स्वाँसा और मन से नाम का जाप करना या बे-ठिकाने मूर्ति या किसी और स्वरूप या अरूप ब्रह्म का ध्यान करना या तीर्थों और मन्दिरों में जाना और ख़ैरात करना या पाठशाला धर्मशाला कुँयें बावड़ी बाग़ या और कोई मकान वास्ते जीवों के उपकार और आराम के बनाना वग़ैरा वग़ैरा।

३१ - यह सब काम हर कोई जिसने थोड़ी बहुत विद्या पढ़ी है, बग़ैर मदद गुरु या उस्ताद के पोथियाँ पढ़ कर और बाहरमुखी परमार्थियों की चाल ढाल देख कर आसानी से कर सकता है, लेकिन सच्चा परमार्थ, बग़ैर सच्चे और पूरे गुरु के कोई नहीं कमा सकता, क्योंकि उसमें कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का भेद लेकर, निज घर की तरफ़ चलना पड़ता है और वह चाल बग़ैर मालूम होने जुगत और सवारी के और मिलने मदद के ऐसे शख़्स से जो आप रास्ता तै कर चुका है, कोई नहीं चल सकता और जो कार्रवाई कि बाहरमुखी परमार्थी लोग करते हैं, उसमें चलना और चढ़ना बिल्कुल नहीं है और न सच्चे मालिक के धाम का पता और भेद है।।

(९) सिफ़त सच्चे और पूरे गुरु की

३२ - गुरु नाम उसका है कि जो अन्धेरे में चाँदना करे और रास्ता बतावे और उस रास्ते पर ख़ास जुगत के साथ चला कर निज धाम में पहुँचावे। सो यह सिफ़त पहिले तो कुल्ल-मालिक की है कि जिसने मौज से अपने चरनों से आदि धार प्रकट करके अँधेरे में

चाँदना किया और रचना करी और जीवों को उस धार से मिला कर अपनी तरफ़ खींचता है, इस वास्ते वही आदि गुरु और परम गुरु है।।

३३ - दूसरे यह सिफ़त सन्त सतगुरु की है कि जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के निज पुत्र या मुसाहब हैं और उसकी मौज से दुनिया में आकर जीवों को उपदेश करके निज धाम में पहुँचाते हैं यानी अपने बचनों से उन के घट का तमोगुन और अन्धकार दूर करके और रास्ता और जुगत बता कर और मेहर से चाँदना करके उनसे रास्ता तै करवाते हैं और सिवाय उनके जीव के कल्यान के, और कोई मतलब जीवों से नहीं रखते हैं। जब तक ऐसे गुरु नहीं मिलेंगे और रास्ता तै न होगा, तब तक किसी जीव का सच्चा उद्धार होना क़तई मुमकिन नहीं है।।

(१०) जब पूरे गुरु मिलें और कुल्ल-मालिक का भेद देवें, तब उनके साथ किस तरह बरतावा करना चाहिये

३४ - जिस किसी को भाग से सतगुरु मिल जावें और वे कुल्ल-मालिक का पता और भेद देवें और जुगत उस से घट में चढ़ कर मिलने की बतावें, तब उसको चाहिये कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रतीत और प्रीत लावे।।

३५ - प्रतीत की शरह यह है कि उनको (१) सर्व समर्थ और (२) हाज़िर नाज़िर और (३) हर वक़्त अपने अंग संग समझे। ऐसा यक़ीन मुशकिल से आता है लेकिन जिसके दिल में थोड़ा बहुत पैदा हुआ, वह

उसके मन और उसकी कार्रवाई की गढ़त बहुत जल्द कर देगा यानी जब वह कुल्ल-मालिक को हाज़िर नाज़िर और हर वक़्त अपने संग समझेगा, तो बहुत कम उसका मन नाक़िस तरंगों में बर्ताव करेगा और कुल्ल-मालिक को हर काम में करता धरता मानेगा और यही भक्तों की चाल और समझ रहती है।।

३६ - प्रीत की शरह यह है कि कुल्ल-मालिक की, ऊपर के लिखे हुए के मुवाफ़िक़, प्रतीत करके उसके चरनों में इस क़दर प्यार और भाव लावे कि संसारियों की प्रीत उस से नीचे दरजे की रहे और दर्शन का शौक़ ऐसा तेज़ होवे कि दुनिया और दुनिया के सामान की चाह और प्रीत हलकी पड़ जावे बल्कि फ़िज़ूल ख़्वाहिशें बिलकुल बंद हो जावें यानी कोई संसारी चाह, सिवाय औसत दरजे पर, अपने और अपने कुटुम्ब के गुज़ारा करने के मन में न रहे और जो कुछ कि हो रहा है और आइन्दा होवे, वह सब अपने मालिक का हुक्म और मौज समझे और उसके साथ जिस क़दर बन सके मुवाफ़क़त करे। यह भक्ति भाव का स्वरूप और बर्तावा है।।

३७ - जो कि संत सतगुरु की महिमा अगम और अपार है और वह कुल्ल-मालिक के निज धाम के बासी हैं और सिर्फ़ जीवों के कल्यान के वास्ते जब तब संसार में आते रहते हैं, इस वास्ते प्रेमी परमार्थी को मुनासिब है कि उनके साथ थोड़ा बहुत उसी मुवाफ़िक़ बर्ताव करे जैसे कुल्ल-मालिक की निसबत समझ बूझ धारन की है।।

(११) जीव की जाग्रत के समय आँखों में बैठक है और वहीं से खिंच जाना अन्दर और ऊपर की तरफ़ वक़्त नींद और मौत के और बे-ख़बर हो जाना देह और दुनिया के दुख सुख से

३८ - जाग्रत के समय जीव की बैठक आँखों में होती है और जब नींद के बस उसका खिंचाव अन्दर में ऊपर की तरफ़ होता है, तब उसको देह और दुनिया के सुख दुख की सुध बिसर जाती है। इसी तरह जब मौत के वक़्त ज़्यादा खिंचाव हो जाता है, तब देह और दुनिया से नाता टूट जाता है यानी इधर की बिलकुल सुध बुध नहीं रहती है, लेकिन वक़्त खिंचाव के इस क़दर तकलीफ़ मरने वाले को होती है और ऐसी सूरत उसकी बिगड़ जाती है कि किसी से देखा नहीं जा सकता है।।

३९ - अब ग़ौर करना चाहिये कि आँखों के मुक़ाम पर बैठने से जीव का बंधन देह और दुनिया के साथ पैदा होता है और यहाँ से सरकने पर यह बंधन ढीले हो जाते हैं तो साबित हुआ कि निरबंध होकर सच्चे मुक्ति पद में पहुँचने और निज घर में जाने का रास्ता आँख के मुक़ाम से शुरू होता है।।

४० - जो कोई जीते जी इस रास्ते पर संत सतगुरु से उपदेश लेकर चलना शुरू करेगा, उसको कुछ मालिक की क़ुदरत अंतर में नज़र आवेगी और मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का रस आवेगा और संसार और उसके भोगों की क़दर उसके चित्त से कम

होती जावेगी और रफ़्ता रफ़्ता सतगुरु की दया से एक दिन निज घर में पहुँच कर (जो माया देश के पार है) विश्राम पावेगा और अमर आनन्द को प्राप्त होगा यानी जनम मरन का चक्कर उसका बंद हो जावेगा।।

४१ - लेकिन जो जीव कि यह कार्रवाई नहीं करेंगे और उमर भर दुनिया और उसके भोग बिलास में ख़र्च करेंगें और उन्हीं की प्राप्ति के लिये जतन करते रहेंगे, तो अखीर वक़्त यानी मृत्यु के समय उनकी तबीयत का मैलान और झुकाव देह और दुनिया की तरफ़ रहेगा और जो कि काल पुरुष उनको पिंड से अलेहदा करके ऊपर की तरफ़ खींचेगा, इस सबब से इस खींचातानी में जीवों को बहुत कष्ट और क्लेश होवेगा, जैसा कि उनके मरने के वक़्त की हालत और मरने के बाद की सूरत से ज़ाहिर होता है यानी उनका चेहरा और रंग ऐसा बदल जाता है कि देखने में डर मालूम होता है और जब कि वह पिंड के नाके के पार पहुँचेंगे, वहाँ उनको देह और दुनिया और उसके सामान की फुरना यानी याद उठेगी और वह फुरना उनको नीच ऊँच जोन में मुवाफ़िक़ उनकी करनी के जनम देगी। ख़ुलासा यह कि ऐसे जीवों का बारम्बार देह धर कर दुख सुख सहने और जनम मरन का कष्ट भोगने का चक्कर बराबर जारी रहेगा।।

४२ - जो कोई जीव सिवाय ऊपर की लिखी हुई करनी के, और और जतन परमार्थ के नाम से बाहरमुखी या अंतरमुखी नीचे के घट में, कर रहे हैं, उनको शुभ कर्म का फल मिलेगा, पर सच्चा उद्धार नहीं होगा और न उनकी चाल उस रास्ते पर चलेगी जो कि घर की

तरफ़ जारी है और जहाँ होकर अख़ीर वक़्त पर चलना पड़ेगा।।

४३ - लेकिन जो बाहरमुखी करनी कि अंतर अभ्यास में मदद देनेवाली है, जैसे सन्त सतगुरु का संग और उनके प्रेमी जन की सेवा और संतों की बानी का (जिसमें प्रेम और भेद और चितावनी का वर्णन है) पाठ करना और गाना और राधास्वामी मत की चरचा करना वग़ैरे उसकी कार्रवाई सच्चे परमार्थ का फल देगी और संत सतगुरु और सच्चे मालिक की दया की बख़्शिश करावेगी कि जिससे भक्ति और प्रेम बढ़ेगा और मन और सुरत अंतर में सिमटेंगे और चढ़ेंगे।।

(१२) टेकियों की मूर्खता और अहंकारीपन और वाद विवाद करने की आदत और नाक़ाबलियत वास्ते करने किसी क़िस्म के अंतरी अभ्यास के या शामिल होने संतों के सतसंग के

४४ - जो कोई पिछले वक़्त की परमार्थी कार्रवाई और इष्टों की टेक बाँध रहे हैं और उनकी महिमा करते हैं पर कोई कार्रवाई उसकी जैसे अष्टांग जोग जिसमें प्राणायाम शामिल है और मुद्रा का साधन और उनके संजम वग़ैरा और हठ जोग आप नहीं करे, तो ऐसे लोग उन साधनों के फ़ायदे और नुक़सान से बिलकुल बे-ख़बर हैं, और न उनको गुरु की ज़रूरत और महिमा की ख़बर पड़ेगी, क्योंकि जितने अंतरी साधन हैं, वह बग़ैर अभ्यासी गुरु के सतसंग और उपदेश और मदद के मुतलक़ बन नहीं सकते हैं और जो कोई पढ़ कर और सुन कर कुछ कर रहे हैं, वह ग़लती और धोखे में

पड़े हैं और मुमकिन नहीं कि वे सिवाय चंद - रोज़ के कोई अंतर अभ्यास बग़ैर मदद गुरु के जारी रख सकें। ऐसे लोग सच्चे परमार्थ की तरफ़ से नादान और बे-परवाह रहते हैं और इस वास्ते उनके जीव का कारज जैसा चाहिये, नहीं बनता। इनकी करनी और रहनी कर्मी जीवों के मुवाफ़िक़ रहती है और उसी मुवाफ़िक़ उनको फल मिलता है। यह लोग हुज्जत और तकरार और लड़ाई और झगड़े और वाद विवाद करने को हमेशा तैयार रहते हैं और अपनी टेक और पक्ष उस वक़्त बहुत ज़ोर और शोर से ज़ाहिर करते हैं, पर सच्चे प्रेमी उनको नादान और जाहिल और अहंकारी समझ कर, उनके साथ गुफ़्तगू या चर्चा नहीं करते हैं, मुवाफ़िक़ इस क़ौल के

।। दोहा ।।

बहते को मत बहन दे गह पकड़ाओ ठौर।
समझाया समझे नहीं तो कहो बचन दो और।।
बहते को बह जान दे मत पकड़ाओ ठौर।
समझाया समझे नहीं तो दे धक्के दो और।।

४५ - बड़ा अफ़सोस है कि इन लोगों की समझ और अक़ल बड़ी मोटी है। ज़रा भी ग़ौर करके बात को नहीं विचारते। ख़ुद अपनी ज़बान से कहते हैं कि पुराने वक़्तों की चाल ढाल और व्यवहार और लोगों के स्वभाव बहुत बदल गये हैं और दिन दिन बदलते जाते हैं और यह हाल सिर्फ़ अपनी दो तीन पुश्त का कहते हैं और परमार्थ की निसबत इनके मन और अक़ल में यह बात ज़रा नहीं समाती कि जो साधन उस वक़्त में जारी थे, जिसको हज़ारों वर्ष गुज़र गये, किस तरह हाल के ज़माने के लोगों के लायक़ हो सकते हैं और इस वक़्त के जीव जो कि धन और देह और बल और

पराक्रम वग़ैरा में निहायत निबल और लाचार हैं, किस तरह पुराने साधन और पुरानी चाल में बर्ताव कर सकते हैं? यही सबब है कि ज़बान से मनु धर्मशास्त्र और पातंजलि योगशास्त्र और अनेक पुराने ग्रंथों को पढ़ा करें और गाया करें और आप समझें और औरों को समझावें और इधर उधर हुज्जत और तकरार करने को उनके हवाले और गवाही देवें, लेकिन किसी शास्त्र के मुवाफ़िक़ कार्रवाई गृहस्थ या परमार्थ की, न इनके बाप दादे और बंसावली गुरु से और पंडित और पुरोहित से बनी और न इनसे और न इनकी औलाद से बन सकती है। सिर्फ़ ख़ाली बातें बनाते हैं और अपनी ना-लियाक़ती और बे-ताक़ती पर नहीं शरमाते और न अफ़सोस करते हैं और जो कोई उनको इस समय के लायक़ कार्रवाई व्यवहार और परमार्थ के साधन की बतावे (जो कि मुवाफ़िक़ हुकुम संतों के है और हर एक से बन सकती है) उसको नहीं सुनते और अहंकार करके और पिछले ग्रन्थों की टेक बाँध कर संतों के बानी बचन का निरादर करते हैं। इन जीवों को अभागी और क़हरी समझना चाहिये।।

४६ - संतों ने अपनी बानी और बचन में वह जुगत प्रकट की है कि पिछले वक़्त के महात्माओं को उसकी ख़बर भी नहीं थी और इस क़दर उसको आसान कर दिया है कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द और पढ़ा और अनपढ़, सब उसकी कार्रवाई आसानी से, बग़ैर छोड़ने घरबार और रोज़गार के, कर सकते हैं और तत्काल यानी चन्द रोज़ में उसका फल देख सकते हैं यानी अपनी मुक्ति होती हुई और कुल्ल-मालिक के निज धाम की तरफ़ चाल चलती हुई

नज़र आवेगी और उधर से संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक की दया और रक्षा सूझ पड़ेगी।।

४७ - पिछले वक़्त के महात्माओं ने जो साधन मिस्ल अष्टांग योग वग़ैरा के जारी किये, वह विरक्तों से दुरुस्त न बन सके और गृहस्थियों की तो मुतलक़ ताक़त नहीं कि उस रास्ते पर कदम धर सकें, जब तक कि घरबार और रोजगार न छोड़ें। यह कठिन साधन पिछले वक़्तों में यानी सतजुग से शुरू, कलजुग तक, सिवाय पन्द्रह बीस ऋषीश्वरों और मुनीश्वरों और औतारों के जैसे राम, कृष्ण, व्यास , वशिष्ठ, याज्ञवल्क, उद्यालक और सुखदेवजी वग़ैरा के, जिनके नाम उपनिषद और शास्त्रों और पुरानों वग़ैरा में दर्ज हैं, और किसी से नहीं बने। अब किस क़दर ताज्जुब की बात है कि आजकल के जीव थोड़ी सी विद्या पढ़ कर और अपने मत के हाल से बिल्कुल ना-वाफ़िक़, पर थोड़ा तरजुमा मनु धर्मशास्त्र और योगशास्त्र का अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ पढ़ कर, संतों और उनके प्रेमी-जनों से मुक़ाबला और हुज्जत और तकरार करने को मुस्तैद होते हैं और अपनी दानाई को जो कि महज़ नादानी और जिहालत है, बड़ी मर्दानगी के साथ ज़ाहिर करते हैं। इनको अपनी नादानी और गफ़लत की ख़बर जब पड़े कि जब कम से कम एक महीना चुप बैठ कर संतों की बानी और बचन पक्षपात छोड़ कर सुनें और समझें और अपनी ओछी बुद्धि और विद्या को उसमें दख़ल न देवें। लेकिन अफ़सोस है कि इनका ऐसा भाग नहीं है। इनसे तो वही करनी बन पड़ेगी जो इनको चौरासी में भरमावे।।

(१३) ज़ात पाँत के टेकी भी वैसे ही मूर्ख और नादान हैं और अपने परमार्थी नफ़े और नुक़सान से ग़ाफ़िल, यह लोग संतों के दर्शन और सतसंग के फ़ैज़ और फ़ायदे से हमेशा महरूम[1] रहेंगे

४८ - सिवाय पुराने वक़्त के परमार्थी टेकवालों के, बाज़े लोग जातपाँत के भी टेकी हैं। चाहे उनका परमार्थ बने या बिगड़े, अपने से कम ज़ात वाले से कभी दीन न होंगे और परमार्थ की दौलत चाहे कैसी ही भारी और सस्ती और आसानी से मिलती होवे, हासिल नहीं करेंगे। लेकिन दुनिया के कामों और धन के लेने के वास्ते, चाहे कोई ज़ात होवे, उसकी ख़ुशामद और ख़िदमत करने को बहुत ख़ुशी से तैयार रहते हैं, जैसे वकील और डाक्टर और हकीम और धनवान और हाकिम और उस्ताद और मास्टर और सयाने दिवाने और रंडी मुँडी वग़ैरा। इनकी कभी ज़ात नहीं देखते और पूछते और बग़ैर किसी के कहने के उनकी हाज़िरी और अनेक तरह की ख़िदमत करने को मुस्तैद रहते हैं।।

४९ - जब कोई परमार्थ के हासिल करने के वास्ते अपने से कम ज़ात की तरफ़ रुजू लावे, तो उसके साथ तमाम बिरादरी और कुटुम्ब परिवार झगड़े और फ़िसाद करने को तैयार होते हैं। लेकिन जब इनमें से कोई अंगरेज़ी सराय में जाकर अंगरेज़ी खाना खावे या रंडी घर में डाल लेवे या शराबी कबाबी या तमाशबीन

१ - अभागी। वंचित।

और जुआरियों का संग करे, तो उससे कोई कुटुम्बी या बिरादरी वाला मुज़ाहिम नहीं होता और न किसी क़िस्म की बाज़पुर्स करते हैं, बल्कि उल्टा उससे डरते हैं। यह सब काम खराब और ख़िलाफ़ मजहब हैं, मगर उनमें कोई दख़ल नहीं देता और परमार्थ यानी सच्चे मालिक की पूजा और भक्ति, जो कि सब कामों में बढ़ कर काम है, दुनियादारों की नज़र में ऐसा ओछा और फ़िज़ूल दिखलाई देता है कि उसकी कार्रवाई करनेवालों की निंदा करते और तान तंज लगाने से नहीं डरते। बल्कि इस क़िस्म की उपाधियाँ उठाने को तैयार होते हैं कि जिससे उसकी परमार्थी तरक़्क़ी में ख़लल पड़े या वह कार्रवाई बन्द हो जावे। यह लोग बजाय कारे - सवाब यानी पुन्य के, अपने ऊपर भारी पाप का भार चढ़ाते हैं जिसके सबब से उनकी आक़बत कभी नहीं सुधरेगी यानी उनका परलोक कभी नहीं बनेगा।।

(१४) बाज़े लोगों के ओछे और नाक़िस ख़्याल निसबत औरतों के परदे के और हारिज होने उनकी तरक़्क़ी इल्म और अक़्ल, समझ और तजरुबा और सच्चे परमार्थ में

५० - बहुत से मर्द दुनियादार, औरतों को परदे में रखने की कोशिश करते हैं और उनको सतसंग नहीं करने देते। इन लोगों की अक़्ल और समझ पर बड़ा अफ़सोस आता है कि बा - वजूद इस बात के कि औरतें आम तौर से किसी बात में मर्दों से कम नहीं हैं और इल्म और अक़्ल मर्दों के मुवाफ़िक़ हासिल करके, बन्दोबस्त घर का और बाहर का अच्छी तरह कर सकती हैं और इस क़िस्म की कार्रवाई आजकल बहुत

जगह जारी है यानी औरतें डाक्टरी और मुहर्रिरी और वकालत और मास्टरी और तिजारत के काम और दूकानदारी और मुसव्वरी और ख़बर - नवीसी और बहुत से फ़न और हुनर और नट विद्या और सिपहगरी के काम कर रही हैं, फिर भी यह लोग उन पर जो ज़रा क़दम बढ़ा कर रक्खें तो रोक टोक लगाने और तान तंज करने और बुरा भला कहने में कसर नही रखते। लेकिन इनकी इस क़िस्म की कार्रवाई बे-फ़ायदा है, क्योंकि अक्सर औरतें अनेक तरह की पूजायें जो ख़िलाफ़ शास्त्र हैं, मिस्ल सीतला और बराही और जखइया और क़बरों वग़ैरा की करने को बे-तकल्लुफ़ बाहर जाती हैं और मंदिरों में उत्सव के दिन दर्शन करती फिरती हैं और तीर्थों में तो यह कैफ़ियत ब-कसरत नज़र आती है यानी बराबर मर्द व औरत बे-क़ैद और बे-तकल्लुफ़ मंदिरों का गश्त और परिक्रमा वग़ैरा और साधों के अखाड़ों में और पंडितों की कथा वग़ैरे में जाती आती हैं। अलावा इसके झुंड के झुंड औरतों के कुछ रात बाक़ी रहे से और दिन चढ़े तक हमेशा और ख़ास कर परबी के दिन और कार्तिक के महीने में, गंगा और जमुना और और दरियाओं पर नहाने और पूजा करने को जाती हैं। सिवाय इसके अक्सर औरतें बिरादरी के अनेक कामों और रस्मों और व्यवहारों में घर २ जाती आती हैं और कोई ख़ास तौर पर परदा नहीं करती हैं।।

५१ - ज़्यादातर अफसोस इन लोगों की इस समझ पर आता है कि औरतों की निसबत गुरु धारन करना ना-जायज़ कहते हैं और बयान करते हैं कि उनका पति ही उनका गुरु और परमेश्वर है। अब ख़्याल करो कि

जब पति को गुरु और परमेश्वर क़रार दिया, तो सच्चे मालिक की भक्ति और पूजा से उनको एक दम हटा दिया और सच्चे गुरु से भी जो मालिक से मिलने का जतन बताते और भक्ति पूजा की विधि समझाते, उनको रोका और हटाया और जो उनके पति संसारी और टेकी पुरुष हैं और जो वे सिवाय घर बार के कारोबार और व्यवहार और रोज़गार वग़ैरे और भोग विलास के कुछ नहीं जानते हैं, तो दोनों निपट संसारी रहे और अपने पैदा करने वाले मालिक का कुछ भेद न जाना और न उसकी कुछ भक्ति करी, तो दोनों का परलोक बिगड़ा और चौरासी में भरमने के अधिकारी हुये और यही सबब है कि ऐसे दुनियादार मर्द और औरतें वक़्त तकलीफ़ या बीमारी वग़ैरा के भूत, पलीत और भंगी और धोबी, मुर्दों और मुसलमानों के क़बरों की पूजा बे-तकल्लुफ़ करने लगती हैं। ऐसी पूजायें जब एक दफ़े शुरू हुई, तो सालहा साल और नसलन बाद नसलन उनके घराने में जारी रहती हैं। अब उनसे पूछना चाहिये कि यह पूजायें कौन से शास्त्र के मुवाफ़िक आप करते हैं और अपनी औरतों से कराते हैं ? सच पूछो तो यह लोग नास्तिक और भ्रष्ट हैं। इनको संतों और महात्माओं और भक्तों और प्रेमियों पर और उन के सतसंग और भक्ति की कार्रवाई पर तान मारते और निंदा करते शरम भी नहीं आती। ज़रा गरेबान में सिर डाल कर अपने हाल और चाल को देखें कि बिलकुल बे-मज़हब वालों के मुवाफ़िक़ गुज़रान कर रहे हैं और जो लोग कि सच्चे मालिक को चीन्ह कर उसकी भक्ति करते हैं, उनकी हँसी उड़ाते हैं और उनसे परहेज करना चाहते हैं। प्रेमीजन तो ख़ुश होते हैं कि जो यह

लोग अपनी मूर्खता से ख़ुद उनसे हटना चाहते हैं तो सहज में इनसे पीछा छूटता है, क्योंकि यह उनके संग और सोहबत के लायक़ बिलकुल नहीं हैं। पर इनका बहुत अकाज होता है। एक तो मालिक से बे-मुख और दूसरे संत और भक्तजन के निंदक और विरोधी। यह लोग मुफ़्त पापों का भार अपने सिर पर चढ़ाते हैं, जैसा कि गुरू नानक ने इन कड़ियों में कहा हैं

संत का निंदक महा अतिताई।
संत का निंदक खिन टिकन न पाई।।
संत का निंदक महा हत्यारा।
संत का निंदक परमेश्वर मारा।।
संत का निंदक राज से हीन।
संत का निंदक दुखिया और दीन।।
संत के दूषन मत होय मलीन।
संत के दूषन शोभा ते हीन।।
संत के निंदक को सर्व रोग।।
संत के निंदक को सदा विजोग।।
संत का दोषी जनमे मरे।
संत की दूखना सुख ते टरे।।
संत के दूषन सुख सब जाय।
संत के दूषन नर्क में पाय।।

५२ - ज़रा ग़ौर करने से इस ना-मुनासिब चाल की भारी ग़लती ज़ाहिर होती है। जब कि किसी स्त्री का पति थोड़ी या कुछ ज़्यादा उमर में गुज़र गया तो गोया उसका गुरु और परमेश्वर मर गया, अब वह किस का आसरा और सहारा लेकर अपनी जिंदगी बसर करे। जो पहिले ही सच्चे गुरु से उपदेश दिला कर, उसको थोड़े बहुत अंतरी ध्यान वग़ैरा में लगा देते तो इस वक़्त में उसको बहुत मदद मिलती यानी कुछ परमार्थ का

आनन्द पाकर दुनिया के दुक्ख को किसी क़दर बिसरती।।

५३ - देखने में आता है कि लोग बेवा हो जाने पर औरतों को बंसावली गुरुओं से उपदेश दिलाते हैं और वे मूर्ति पूजा वग़ैरे में लगा देते हैं, लेकिन उसमें कुछ शान्ति या अंतर आनंद नहीं आता। अब ग़ौर करो कि पति को गुरु मानने से क्या फ़ायदा हुआ, जब उसके मरने के बाद दूसरा गुरु धारन करना पड़ा और वह भी असली परमार्थ से बे-ख़बर ?

५४ - मालिक को कहते हैं कि सब जगह मौजूद है और जो ऐसा है तो हर एक जीव के घट में भी मौजूद है और उसकी पूजा घट में वाजिब और सही है। फिर जब बंसावली गुरु (पण्डित या भेष या गुसाईं या साहब-ज़ादे) ने घट का भेद न बताया, तो वह आप गुरुवाई की रीति और सच्चे मालिक के भेद से बे-ख़बर हुआ, फिर वह गुरुवाई के लायक़ किस तरह हो सकता है और उसको गुरु धारन करने से मालिक से मेल कैसे होगा और भरम कहाँ दूर हुआ। ख़ुलासा यह कि ऐसी बेचारी औरतें जैसी नादान थीं, वैसी ही रहीं और उनके उद्धार और मालिक के चरनों में मन के लगाव की कोई सूरत न निकली। यह नतीजा उस दस्तूर का हुआ कि जिसके मुवाफ़िक़ औरतों को गुरु धारन करने से बाज़ रक्खा और उनके पति को ही उनका गुरु और परमेश्वर क़रार दिया और बंसावली और सच्चे गुरु में तमीज़ और फ़र्क़ न किया और नक़्ल यानी मूर्ति को पेश करके असल का पता और भेद न समझाया, फिर शान्ति कैसे प्राप्त होवे। जैसे हाकिम या हकीम या ख़ाविंद की

तसवीर कुछ काम नहीं दे सकती, इसी तरह मालिक की तसवीर से भी कुछ काम नहीं निकल सकता।।

५५ - मुनासिब तो यह है कि कुल्ल औरत और मर्दों को, जब कि अठारह बीस वर्ष की उमर हो जावे, कुल्ल-मालिक के भेद से (जो कि घट में मौजूद है) समझौती देकर, जुगत उसके ध्यान और पूजा की बताना चाहिये, ताकि वे उसी वक़्त से एक या दो बार दिन रात में थोड़ा बहुत अभ्यास करें और जैसी उमर बढ़ती जावे और फुर्सत और मौक़ा मिले, उस अभ्यास को आहिस्ते आहिस्ते बढ़ाते जावें और वक़्त ज़रूरत किसी दूसरे के मुहताज न रहें और हमेशा अपने घट में आसरा और भरोसा अपने सच्चे मालिक का रक्खें और तकलीफ़ में इधर उधर न भरमें यानी अपने अंतर में थोड़ी बहुत शान्ति हासिल कर सकें।।

५६ - यह भेद और जुगत संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन से, जो संगत में शामिल हैं, मालूम हो सकता है। सुहागन औरतों को उनके ख़ाविन्द, अपने साथ सतसंग में ले जाकर, उपदेश दिला सकते हैं और जो बेवा हैं, वह अपने माँ, बाप या भाई या लड़के या सास या ससुर या देवर जेठ या कोई ख़ास रिश्तेदार के संग संगत में जाकर और उपदेश लेकर, अपने घर में बैठ कर अभ्यास कर सकती हैं और जब तब मौक़े मुनासिब पर सतसंग में भी शामिल होवें, इसमें परदा भी रहा आवेगा और सब तरह से हिफ़ाजत भी इनकी रहेगी यानी सतसंग में अकेली नहीं जावेंगी।।

५७ - सबब ऐसी समझ बूझ और बर्ताव का यह है कि यह मर्द आप ही परमार्थ से बे-ख़बर हैं यानी न तो

सच्चे मालिक के भेद से वाक़िफ़ हैं और न कुछ उसकी भक्ति या अंतरी पूजा करते हैं। फिर उनके मन में परमार्थ की क़दर और ज़रूरत, वास्ते हर एक जीव के कैसे समावे? और बर्ताव और व्यवहार उनका कैसे बदले ? इस वास्ते वे आप भी निपट संसारी हैं और नक़ली परमार्थ और देवताओं और भूतप्रेत की पूजा में राज़ी। फिर उनके स्त्री और बाल बच्चे भी उन्हीं के मुवाफ़िक़ नादान और सच्चे परमार्थ से बे-ख़बर और बे-परवाह बने रहते हैं और जिस किसी के सच्चा दर्द परमार्थ का पैदा होता है, उसकी कार्रवाई देख करके ऐसे पुरुष और स्त्रियों को अचरज मालूम होता है और अपनी मूर्खता से उस पर तान मारते हैं और हँसी उड़ाते हैं और अपनी ग़फ़लत और बे-परवाही का सोच विचार नहीं करते और न मरने के वक़्त की सख़्त तकलीफ़ का ख़ौफ़ दिल में लाते हैं।।

५८ - जो उनको सच्चे परमार्थ का उपदेश मिलता तो अपने कुल कुटुम्ब और रिश्तेदार और पड़ोसी वग़ैरे को समझा कर, उसी कार्रवाई में लगाते और अपने और उनके भागों को सराहते और मालिक की दया का शुकराना बजा लाते।।

(१५) एक गुरू करके दूसरा गुरू न करने के बयान में

५९ - बाज़े मर्द और औरतों का यह ख़्याल है कि एक गुरु करके दूसरा गुरु न करना चाहिये, सो यह बात उस हालत में दुरुस्त है जब कि सच्चे और पूरे गुरु पहिले ही मिल जावें और जो किसी ने बंसावली या मामूली गुरु कर लिया है और उसने सच्चे मालिक का

भेद और जुगत उसके मिलने की घट में नहीं समझाई और उलटा नक़ल यानी मूर्ति और तीर्थ में भरमा दिया, तो उसका नाम गुरु नहीं हो सकता बल्कि वह पाखंडी और धोखा देने वाला है और आप भी धोखा खाया हुआ है। फिर ऐसे गुरु को छोड़ने में जिस वक़्त कि सच्चे गुरु मिलें, हरगिज़ देर नहीं करनी चाहिये।।

।। साखी ।।

झूठे गुरू की टेक को तजत न कीजै बार।
द्वार न पावै शब्द का भटके बारम्बार।।

सुरत शब्द बिन जो गुरु होई। ताको छोड़ो पाप कटा।।

६० - सच्चे गुरु की पहिचान यह है कि घट में कुल्ल-मालिक और रचना का भेद बतावें और शब्द सुना कर अंतर में सुरत यानी रूह और मन को सिमटवावें और चढ़ावें और आँख के मुक़ाम से, जहाँ जाग्रत अवस्था में जीव की मुख्य कर बैठक है, चलने की तरकीब समझावें और आप कुल्ल-मालिक के स्थान से बा-ख़बर आये होवें या अपना काम यहीं अभ्यास करके पूरा कर चुके होवें या साधना कर रहे होवें। पहिले का नाम संत सतगुरु और दूसरे का साध गुरु या प्रेमी अभ्यासी है। उनके उपदेश और सतसंग से जीव का कारज बन सकता है, और कोई दूसरी जुगत से सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है और चौरासी का भरमना नहीं छूटेगा।।

६१ - अब जीवों को आप विचारना चाहिये कि सच्चे मालिक और असल से मिलने की सच्ची जुगत बताने वाला और रास्ता चलाने वाला ही गुरु हो सकता है या कि नक़ल और भरमों में और बाहरमुखी कर्मों में

भटकाने वाला और असल से बेमुख रखने वाला। वह तो आप ही बे-ख़बर है और भरमों में भरम रहा है और धन और पूजा के लालच औरों को भी भरमाता है। ऐसे झूठे आदमी से जिसने पाखंड करके या नादानी से अपना नाम गुरु रक्खा है, रिश्ता गुरुवाई का तोड़ना मुनासिब है या नहीं। इसमें कभी पाप नहीं होगा, बल्कि कुल्ल-मालिक राज़ी और ख़ुश होगा। उन जीवों का जिन्होंने सच्चा उपदेश लेकर अभ्यास शुरू किया है और सच्चे गुरु और सच्चे मालिक की सरन में आये हैं, अपनी मेहर से आप उद्धार करेगा और रास्ता तै करने में मदद देगा। इस बात की सचौटी का हाल थोड़े दिन के अभ्यास से जीव को मालूम हो सकता है।।

(१६) क़ायदा बर्ताव का सतसंग में और पूरे गुरु के साथ

६२ - जो कि बग़ैर पूरे गुरु और उनके सतसंग के किसी जीव का सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है, इस वास्ते कहा जाता है कि परमार्थियों को किस तौर से वहाँ बर्तना चाहिये, जिससे उनको पूरा फ़ायदा हासिल होवे।।

६३ - परमार्थी जीवों को पहिले खोज सतगुरु और उनके सतसंग का लगाना चाहिये और जब पता मिल जावे, तब जिस क़दर जल्दी बन सके, सतसंग में शामिल होवें और जब वहाँ जावें, तब वहाँ के क़ायदे के ब-मूजिब आदाब बजा लाना चाहिये यानी दृष्टि सतगुरु के सन्मुख करके चरनों पर मत्था टेकना या चरन छूकर बंदगी करना चाहिये और जहाँ तक मुमकिन होवे, सन्मुख या दायें बायें जहाँ सतगुरु की नज़र

पड़ती होवे, बैठना चाहिये - पीठ पीछे या नज़र के पीछे की तरफ़, जहाँ तक मुमकिन होवे न बैठे। क्योंकि वहाँ नज़र दया की भरी हुई उस पर नहीं पड़ेगी और बचन भी जैसा सन्मुख होने से सुनाई देंगे, नज़र से पीछे की तरफ़ बैठने से वैसे साफ़ नहीं मालूम होंगे और नज़र भी किसी क़दर चंचल रहेगी।।

६४ - जब सतसंग में जावे तब अपने तईं खाली और कम - वाक़िफ़कार समझ कर, दीनता के साथ जावे तब कुछ फ़ायदा उठावेगा और जो अपने तईं भरपूर और दाना समझ कर या मुमतहिन बन कर या सैर देखने की नज़र से जावेगा, तो वह ख़ाली आवेगा और शायद बजाय दया के, उनकी ना-मेहरबानी की नज़र उस पर पड़े और अकाज होवे।।

६५ - जब सतसंग में बैठे, तब नज़र सतगुरु पर रक्खे और बचन चित्त देकर सुने और समझे और कोई ख़्याल दुनिया यानी घरबार या रोज़गार वग़ैरा का मन में न लावे, नहीं तो बचन कम सुनाई और समझाई देगा और उसका रस भी नहीं मिलेगा और जिस वक़्त कि सतगुरु बचन कहते होवें, बीच में सवाल न करे और जब वे फ़िक़रा या बचन पूरा कर लें, तब जो कि दरियाफ़्त करना होवे पूछे और होशियारी रक्खे कि सिवाय असली मतलब की बात के या जो कुछ कि उससे ताल्लुक़ रखता होवे, दूसरी बात न पूछे और न कहे, नहीं तो मतलब ख़ब्त हो जावेगा और जो बात कि सुने, उसका विस्तार और फैलाव अपने मन में आप करे।।

६६ - जब सतसंग में बचन ऐसे होवें कि किसी नाक़िस चीज़ के खाने पीने या ख़्याल करने या नाक़िस

करतूत के करने से परहेज़ करना चाहिये, तो अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसके मानने में अंतर और बाहर कोशिश करे और जो बातें नई सुनाई देवें, उनको जहाँ तक मुमकिन होवे, याद करे, और बाद सतसंग के उसका मनन करके हृदय में बसाता जावे।।

६७ - फ़िज़ूल और बे-मतलब की बातचीत न करे और दुनिया की ख़बरें सतसंग में न सुनावे और न दुनिया के बड़े आदमी और अमीरों और राजाओं की कथा कहे और न उनके व्यवहार और चाल चलन की बातों का ज़िक्र करे और न कचहरी दरबार के मुआमलों और मुक़दमों और लड़ाई झगड़ों का ज़िक्र करे और अपनी बिरादरी और रिश्तेदारों के व्यवहार और उनके घरों की और शहर की चीज़ों का वर्णन न करे, क्योंकि यह सब कारखाने मलीन हैं और परमार्थ से उनका कुछ ताल्लुक़ नहीं हैं।।

६८ - सतसंग में बैठ कर मन को दुनियावी ख़्यालों और ज़िक्रों से खाली करना चाहिये, न कि नई नई चीजों और मतलब से ख़ारिज बातों का उस में भराव करना और औरों के मन को भी गदला करना।।

६९ - सतसंग में किसी की बुराई भलाई करना नहीं चाहिये और किसी के मुआमलों या कार्रवाई पर ख़्वाह दुनिया या राज दरबार के मुताल्लिक़ होवे, हर्फ़गीरी[1] या अपनी रायज़नी[2] करना मुनासिब नहीं है, क्योंकि सतसंग परमार्थ का घर है, न कि दुनिया के झगड़े रगड़े की कथा या मुआमलों के फ़ैसले करने की जगह। <u>इस क़िस्म की बातें</u>, बाद परमार्थी कथा के,

१ - कसर देखना। २ - अक़्ल लड़ाना।

जहाँ कहीं कि होती हैं, वह परमार्थ के अमोल और हितकारी बचनों को भुलानेवाली हैं। ऐसे संग और सुहबत में परमार्थी को कभी शामिल होना नहीं चाहिये।।

७० - जो कोई कहे कि विद्या और बुद्धि और चतुराई की बातें करने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं है, इस में अक़्ल और इल्म और बढ़ते हैं, तो उसको समझाया जाता है कि सच्चे सतसंग में विद्या और बुद्धि भुलाई जाती है, न कि उनकी याद दिलाई जावे और तरक़्क़ी की तदबीर की जावे। ऐसी कार्रवाई परमार्थी बचनों के मनन और अंतर में भजन और अभ्यास की तरक़्क़ी के वास्ते, निहायत दरजे की बिघ्नकारक और ख़लल डालनेवाली है और सच्चे परमार्थी को उससे सख़्त परहेज़ करना चाहिये।।

७१ - सतगुरु और उनके प्रेमी जन को यह सब बातें निहायत ना-पसंद हैं और ऐसे लोगों का जो स्वाभाविक ऐसी बातों में बर्तते हैं, सतसंग में शामिल होना मंजूर नहीं करते।।

७२ - सिवाय इन सब बातों के जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, सतसंग में बैठ कर ऊँघना या सोना परमार्थ की तरक़्क़ी में निहायत दरजे का ख़लल डालता है और वहाँ के क़ायदे और अदब के बर - ख़िलाफ़ है। लेकिन ऐसे लोग जो गहरा सतसंग कर चुके हैं, वह अपने मन और सुरत को समेट कर बैठें या एक गोशे पर अलेहदा लेट रहें, तो उनकी हालत मामूली ऊँघने और सोनेवालों से जुदा है। वे ग़ाफ़िल नहीं होते, और न उन पर तमोगुन का ग़ल्बा होता है। वे अपने मन और सुरत को समेटे हुये, अंतर में एक क़िस्म का रस लेते हैं और नई

ताक़त हासिल करते हैं। कभी २ ज़्यादा खिंच जाते हैं; नहीं तो थोड़ी तवज्जह उनकी सतसंग की कार्रवाई या अपनी सेवा की तरफ़ रही आती है। बाज़े लोग जो पहिले दुरुस्ती के साथ अर्से तक सतसंग कर चुके हैं, वह वक़्त सतसंग के अपने अंतरी अभ्यास (जैसे ध्यान वग़ैरा) में मशग़ूल हो जाते हैं। जाहिर में बैठे २ सोते हुये नज़र आते हैं लेकिन असल में वे होशियार हैं और अंतर में रस ले रहे हैं या चरनों में लय हो रहे हैं और मालूम होवे कि मन और सुरत को समेट कर और ऊँचे स्थान पर बिठला कर, बचन या शब्द सुनने और दर्शन करने का रस और मज़ा ब-निसबत मामूली तौर से बैठने के ज़्यादा मिलता है। मगर यह हालत गहरे सतसंगी और अभ्यासियों की है। नये परमार्थियों को होशियारी से बैठना और आँखें खोले हुये दर्शन करना और बचन चित्त से सुनना और फिर उनका मनन करना लाज़िम और ज़रूरी है और जो इस तरह कार्रवाई नहीं करेंगे, तो गहरे सतसंगियों के दरजे तक नहीं पहुँचेंगे बल्कि सच्चे खोजी और दर्दी का निशान यही है कि सतसंग में बहुत होशियार बैठे और किसी बचन का एक लफ़्ज़ भी न जाने देवे यानी कुल्ल बचन को ग़ौर से सुने और समझे और फिर उसका मनन करे।।

(१७) आरती का क़ायदा और फ़ायदा

७३ - वक़्त सतसंग के एक तरीक़ा आरती का जारी है। उस वक़्त प्रेम के शब्दों का बानी में से पाठ किया जाता है और जो शख़्स आरती करना चाहता है, वह सन्मुख बैठता है और सतगुरु की दृष्टि से अपनी दृष्टि जोड़ कर और मन को समेट कर शब्द के

मज़मून पर नज़र रखता है और पहिले या दूसरे मुक़ाम पर अपनी सुरत को ठहराता है। यह तरीक़ा असल में ध्यान का है।लेकिन तनहाई में मन ऐसा नहीं लगता, जैसा कि सतगुरु के सन्मुख यानी उस वक़्त दुनियावी ख़्यालात नहीं उठते हैं और सतगुरु की नज़र के आसरे से रस और आनंद विशेष हासिल होता है। अकसर दस पाँच या ज़्यादा सतसंगी इस तरह पर आरती करते हैं और सब सन्मुख बैठते हैं और हर एक के वास्ते एक या दो शब्द का जुदागाना पाठ किया जाता है और जब तक कि कुल्ल आरतियाँ ख़तम होवें, सब सतसंगी इसी तरह दृष्टि अपनी सतगुरु के स्वरूप पर जमा कर और मन को समेटे हुए, बैठे रहते हैं और अंतर में रस और आनंद लेते हैं।।

७४ - बाद ख़तम होने आरतियों के, हर एक सतसंगी आरती करने वाला, अपनी सरधा और ताक़त के मुवाफ़िक़, भेंट पेश करता है और एक या दो या सब आरती करने वाले मिल कर शीरीनी वग़ैरा बतौर परशाद के मँगवाते हैं कि वह आरती के ख़तम होने पर, कुल्ल सतसंगी और हाज़िरान सतसंग में बराबर तक़सीम हो जाता है और शुरू आरती में हार चढ़ाते हैं, सो परशादी होकर सतगुरु से वापिस मिल जाता है और बाद देने भेंट और वापस लेने हार के, मत्था टेक कर और दृष्टि जोड़ कर बंदगी करते हैं।।

(१८) हार चढ़ाने का फ़ायदा

७५ - जो कि संत सतगुरु या साध गुरु की सुरत ऊँचे देश की बासी है और जब नीचे उतरी तो भी पिंड में ऊँचे मुक़ाम पर उसकी बैठक रहती है, इस सबब से

उनकी देह से जो रूहानी धारें निकलती हैं वह भी ऊँचे मुक़ाम की और निहायत निर्मल और सीतल होती हैं और फूल निहायत नाज़ुक और लतीफ़ होता है और चाहे किसी क़िस्म की धार हो, उसका असर उस पर बहुत जल्द पैदा होता है। सो जब कि हार बना कर संत सतगुरु या साध गुरु के गले में डाला गया, तब उनकी देह और हाथों के स्पर्श से उस में बहुत असर उनकी रूहानी धार का आ जाता है और पहिनने वाले के बदन में वह असर प्रवेश करता है यानी संतों की रूहानी धार, हार पहिनने वाले की रूहानी धार से मिल कर नया असर पैदा करती है और निर्मलता और सीतलता को बढ़ाती है यानी ऊँचे मुक़ाम की तरफ़ उसका मुख मोड़ती है।।

(१९) मत्था टेकने और बंदगी करने का फ़ायदा

७६ - ज़ाहिर है कि आँखें, झरोखे दर्शन हैं क्योंकि हर एक शख़्स की बैठक उसके अंतर में है और वहीं से वह जगत और उसकी रचना को देखता है। जैसा जिसका मन वैसी उसकी नज़र होती है। संत सतगुरु और साध गुरु उँचे देश के बासी और महा निर्मल और महा सीतल और दयाल हैं और उन की नज़र भी दयालुता और सीतलता और मेहर से भरी हुई है, और जिस पर वह नज़र तवज्जह के साथ पड़ती है, उसके दिल पर भी वही असर किसी क़दर पैदा करती है। इस वास्ते उनकी नज़र के साथ नज़र मिला कर बंदगी करने में बहुत फ़ायदा होता है यानी उनकी दया और मेहर हासिल होती है और जो कि उनकी देही और

ख़ास कर हाथों और चरनों से हर वक़्त महा पवित्र रूहानी धारें निकलती रहती हैं, इस वास्ते उनके चरनों पर मत्था टेकने से, गहरा असर रूहानियत का बन्दगी करने वाले में आता है और प्रीत पैदा करता है।।

७७ - दुनिया में भी दस्तूर है कि जो कोई जिस से मिलता है - और ख़ास कर अपने से बड़े के साथ - तब नज़र के रूबरू होकर बंदगी या प्रणाम करता है। अगर सन्मुख यानी नज़र के सामने न हुआ तो बंदगी दुरुस्त न हुई और जब कुछ ख़्वाहिश या दरख़्वास्त पेश करता है, तो नज़र मेहरबानी की मांगता है और जब अपने बराबर या छोटे से मिलता है, तब मुहब्बत और प्यार की नज़र से उस को देखता है और हर कोई मर्द या औरत या बालक नज़र को पहिचानते हैं यानी नज़र से हाल मन की मुहब्बत और दोस्ती या दुश्मनी और बर-ख़िलाफ़ी का दरियाफ़्त करके, उसी मुवाफ़िक़ आपस में बर्ताव करते हैं।।

७८ - आपस में मिलने के वक़्त एक दूसरे के बदन को स्पर्श करने का भी दस्तूर आम है और यह निशान अदब और दोस्ती और मुहब्बत का समझा जाता है। जैसे कोई (जहाँ मुहब्बत ज़्यादा है) बग़लगीर होकर मिलते हैं यानी सीने से सीना मिलाते हैं या हाथ से हाथ मिलाते हैं या जहाँ बड़ाई छुटाई का हिसाब है, घोंटे या पांव छूते हैं या चरन चूमते हैं। इस कार्रवाई से दोनों की रूहानी धारें आपस में मिलती हैं और एक का असर दूसरे में प्रवेश करता है। बालकों को जिनके रूह और मन निर्मल होते हैं, हर कोई ज़्यादती प्यार से गोद में लेकर चिपटाता है और चूमता है।।

(२०) परशादी और चरनामृत का फ़ायदा

७९ - ऊपर लिखा गया है कि सतसंग में शीरीनी वग़ैरे की क़िस्म से परशाद बँटता है। यह परशाद या तो पहिले ही परशादी होकर बाँटा जाता है या बाद तक़सीम के जिस जिस के दिल में आता है, वह अपने हिस्से को परशादी करा कर खाता है।।

८० - परशादी से यह मतलब है कि सतगुरु या साध गुरु उसको अपनी ज़बान से छू दें या लब लगा कर पवित्र कर दें। जब तक किसी के मन में सच्चा भाव और प्यार सतगुरु का न होगा, तब तक परशादी नहीं खाई जावेगी और भाव और प्यार उस वक़्त आता है, जब कि कुछ पहिचान आती है और दया का परचा मिलता है। बग़ैर ऐसी महिमा जानने के कोई परशादी नहीं ले सकता।।

८१ - आम तौर पर हर एक के लब में चाहे मनुष्य होवे या जानवर, ख़ास असर है। देखो मनुष्य अपने लब से फोड़े फुंसी और दाद और ज़ख़्म वग़ैरा को अच्छा कर लेते हैं और कुत्ता अपने लब से अपने ज़ख़्म को चंगा कर लेता है और गाय भैंस बल्कि कुल्ल जानवर अपने बच्चों को चाट चाट कर ताक़त देते हैं। फिर जब कि आम मनुष्य और जानवरों के लब में इस क़दर असर अमृत का है, तो संत सतगुरु और साध गुरु के लब में जिनकी धार अमृत के भंडार से और ऊँचे मुक़ाम से आती है, किस क़दर असर अमृत का होना चाहिये ? वही लब यानी अमृत की धार हर एक के ज़बान पर सर्व रस और स्वाद और सीतलता का भंडार है। बुख़ार या बीमारी में जब कि उस धार की

आमद में कमी हो जाती है और नाक़िस मवाद का असर बढ़ जाता है, तब किसी क़दर ज़बान का मज़ा कड़ुवा और फीका हो जाता है। इस वास्ते जो कोई निर्मल अमी का रस लेना चाहे, वह संत सतगुरु की परशादी से हासिल हो सकता है और ख़्याल करो कि जब एक के लब से जो बीमार है, दूसरे आदमी के मुँह और बदन में बीमारी का असर फ़ौरन पैदा हो जाता है फिर अमृत और निर्मलता और सीतलता का भी असर संत सतगुरु के लब से ज़रूर पैदा होगा। इस वास्ते वही बड़ भागी हैं, जिनको नित्त संत सतगुरु की प्रशादी, जो अमी यानी निर्मल रूहानी धार से भरी हुई है, खाने को मिलती है और जो उससे परहेज़ करते हैं, वह अजान हैं और उनको अभागी समझना चाहिये।।

८२ - दुनिया के लोग निपट नादान हैं और ज़रा ग़ौर और विचार को काम में नहीं लाते हैं, नहीं तो संत सतगुरु और साध गुरु की परशादी लेनेवालों पर तान न मारते क्योंकि देखो आप कितने जानवरों की परशादी रोज़मर्रा खा रहे हैं। (१)चिड़ियाँ मोरी में से कीड़े बीनती हुई उसी चोंच से चौके में से रोटी का आटा नोच कर ले जाती हैं और (२)इसी तरह से चूहे और चूहियाँ मोरी में से निकल कर और चौके में जाकर आटा या रोटी खींच ले जाती हैं। (३) बिल्ली और कउवे भी पानी और खाने की चीज़ में मुँह डाल देते हैं और (४) हलवाई की दूकानों में बिल्ली और चूहे थोड़ा और बहुत सब ही मिठाई को झूँठा कर देते हैं। (५) गाँड़े का रस जहाँ निकाला जाता है, उसको हर कोई झूँठा कर देता है और (६) नाज जब बालों में से निकाला जाता है, तो आदमी और बैल उसको पैरों से खूँदते हैं और बैल

उसमें पेशाब भी कर देते हैं। (७) अफ़यून को हर एक ज़ात के मर्द और औरत अपना थूँक लगा कर दरख़्त से उतारते हैं। (८) घी भंगी और चमारों तक के घर से आता है और (९) गँडेरियाँ तरकारी और सिंघाड़े वग़ैरा कुँजड़ों (मुसलमान) के पानी से, जो एक नँदोले में भरा रहता है (और उस में वे और उनके लड़के बाले हाथ धोते हैं) छिडके जाते हैं। (१०) बनिये बेचने के वक़्त मुसलमानों के बर्तन में घी तौलते हैं और जब तौल से ज़्यादा भर जाता है, तब उस में से निकाल कर अपने बरतन में डाल लेते हैं। (११) हलवाई जब चमार और भंगी के हाथ पूरी और मिठाई बेचते हैं, तब उनके हाथ से रुपये और पैसे लेते जाते हैं और माल तौल कर देते जाते हैं। (१२) बहुत से लोग जो तमाशबीनी करते हैं, रंडियों के मुँह से मुँह और ज़बान से ज़बान मिलाते हैं और जब उनके यहाँ रात भर रहते हैं, तो वहीं खानपान भी करते हैं। इनकी कौन ज़ात है ? ज़ाहिर में मुसलमान वरना असल में कोई ज़ात नहीं है। (१३) नई रोशनीवाले जवान लड़के हर एक क़ौम के, डाक बँगले और होटल और अंगरेज़ी सराय और स्टेशन के अंगरेज़ी खाने के कमरे में जाकर बराबर शराब और कबाब और खाना मुसलमानों का पकाया हुआ खाते हैं। (१४) आटा जो कोलन और चमारियां पीसती हैं, गरमियों में उनका पसीना ब-कसरत उसमें गिरता जाता है, और उनके पैरों से खुंदता है और वहीं वे अपनी रोटियों के टुकड़े भी खाती जाती हैं। (१५) भड़भूंजे हिन्दू और मुसलमान जब खीलें और चना भूनते हैं, तब अपनी हांड़ियों के पानी से उन्हें भिगोते हैं और उबालते हैं और (१६) गड़रिया और

कहार और कहारियां सुबह उठ कर और पाख़ाने होकर जो कि हाथ भी अच्छी तरह से नहीं धोते, बड़ी जातवालों के घरों में से मटके और कलसे दरिया या नल पर ले जाते हैं और भर कर लाते हैं। दरिया का पानी सर्व ज़ात का धोवन और चरनामृत है क्योंकि हर कोई उसमें नहाता है और कपड़े धोता है और ताज्जुब यह कि जो उस मटके या कलसे को ख़ाविंद या बेटे या भाई जो अपनी अंस हैं और रोज नहाते हैं और सफ़ाई रखते हैं, अगर छू लेवें तो वह नापाक समझ कर उतार दिये जावें और उनका पानी फेंक दिया जावे। (१७) रूई से बने हुये कपड़े को जैसे धोती व कुर्ता और पगड़ी और टोपी वग़ैरा को नापाक समझते हैं और बाज़ें चौके वग़ैरे में नहीं पहिनते और ऊनी कपड़ा जो भेड़ बकरी के बालों से बुना गया है या रेशमी कपड़ा जो कीड़ो की हगार से तैयार हुआ है, उसको शुद्ध समझ कर चौके में पहिनते हैं। (१८) शहद जो मक्खियों का हगार और उगलन और थूक है, उसको पवित्र समझ कर सर्व ज़ात वाले खाते और पीते हैं। (१९) चिड़ियां, कउवे और तोते वग़ैरा अनेक फलों को कुतर जाते हैं और लोग बिला तकल्लुफ़ उनको खाते हैं। (२०) अंगरेज़ी दवाइयाँ जैसे अर्क़ वग़ैरा भिश्ती के पानी में, मुसलमान और छोटी क़ौम वाले तैयार करते हैं और हर कोई उनको बीमारी में पीता है। (२१) अक्सर लोग अपनी बिरादरी के साथ एक ही हुक्का पीते हैं। इससे ज़्यादा और झूंठन क्या होगी यानी एक दूसरे का थूक चाटता है। (२२) अक्सर क़ौमों में बिरादरी के लोग शरबत या शराब या पानी एक ही कटोरे या प्याले में पीते हैं। इस तरह सब

आपस में एक दूसरे का झूंठा पीते हैं, बिला ख़्याल इस बात के कि हर एक की रहनी और कर्म किस क़िस्म के हैं और कहाँ और किस के साथ क्या २ चीज़ ख़ाता पीता है।

८३ - अब इन साहबों से पूछना चाहिये कि ज़रा ग़ौर करके जवाब दो कि आप किस किस की झूँठन और छुई हुई चीजें हर रोज़ खा रहे हो और संत सतगुरु और भक्त जन से इस क़दर परहेज़ करते हो और प्रेमी जन पर जो अपनी बड़ भागता से उनकी परशादी ले रहें हैं, क्या मुँह लेकर तान मारते हो? यही सबब है कि पिछले वक़्त में जब महात्माओं ने देखा कि तमाम दुनियादार, हैवानों यानी पशुओं के मुवाफ़िक़ रहते हैं और संत साध और भक्त जन की ज़रा भी महिमा या अदब और आदर नहीं करते बल्कि उनको अपने बराबर या अपने से और कमतर यानी ओछा मनुष्य देखते हैं और कुल्ल-मालिक के भेद से बे-ख़बर रहते हैं और उसके जानने की चाह भी नहीं रखते हैं, तब उन्होंने मुनासिब समझ कर हुक्म दिया कि इन लोगों का गुरु और महात्मा भी पशु होना चाहिये।।

८४ - सब पशुओं में जब ग़ौर से देखा तो गाय को उत्तम पाया कि अपनी ज़िंदगी में घास और भूसा खाती है और दूध और घी देती है और अपने पालनेवाले को खिलाती है और बाद मरने के भी उसके शरीर से उपकार जारी रहता है यानी उसकी खाल का चरसा बना कर बाग़ और खेती को पानी देते हैं कि जिससे मेवा और नाज पैदा होता है, जो जीवों का अहार है और उसकी खाल के जूते बना कर पहिनते हैं और

उसके सींग वग़ैरे भी काम में आते हैं और आदमी उसकी पूँछ पकड़ कर नदी और नालों के पार जा सकते हैं, इस वास्ते गाय को इन मूर्ख दुनियादारों का गुरु और उद्धार-करता क़रार दिया और चूँकि गुरु और महात्मा की परशादी और चरनामृत वास्ते सफ़ाई मन और इन्द्रियों के खाते हैं, इस वास्ते पिछले महात्माओं ने हुक्म दिया कि यह दुनियादार लोग गाय का गोबर खावें और बछिया का मूत पियें, तब उनकी सफ़ाई होगी, चुनांचे यह लोग ख़ुशी से ताज़ीम के साथ गाय का गू और मूत खाते पीते हैं।।

८५ - अब ख़्याल करो कि इस रचना में मनुष्य सब से श्रेष्ठ है और पशुओं का नम्बर दूसरा है। फिर जिन मनुष्यों ने संत और साध और भक्त और महात्माओं को न पहिचान कर और उनकी क़दर न जान कर, गाय को बड़ा माना और उसका गू और मूत पवित्र समझा, तो वे पशु से भी दरजे में कम हुये क्योंकि देखने में आता है कि गाय मनुष्यों का ग़लीज़ बहुत मज़े से खाती है और वे गाय का ग़लीज़ पवित्र समझ कर खाते है तो अब उनका क्या दर्जा ठहरा ? और वे संत साध और भक्त जन और महात्माओं के सन्मुख जाने के कहाँ क़ाबिल रहे और उनकी प्रशादी कैसे मिले और वे कैसे उसकी क़दर जानें?

(२१) ज़ात का भेद और उसका मुक़र्रर होना कर्म के ब-मूजिब

८६ - दुनियादार लोग ज़ात पर बहुत ज़ोर देते हैं, ख़ास कर परमार्थ के मुआमले में, पर यह नहीं जानते और न ज़रा विचार को काम में लाते हैं कि ज़ात पांत

कर्म के मुवाफ़िक़ मुक़र्रर हुई, जैसे जो लोग कि मालिक का खोज लगा कर उसकी भक्ति और ध्यान करते थे, वह ब्राह्मण कहलाये गये और जो सिपाहीगिरी करते थे, वह क्षत्रिय और जो बनिज व्यापार करते थे, वह वैश्य यानी बनिये और दुकानदार कहलाये और जो नौकरी और मेहनत और मज़दूरी करते थे, वह शुद्र।।

८७ - अब जो ब्राह्मण रोटी पकाने या किसानी या चपरास - गीरी या दूकानदारी वग़ैरा करते हैं और जो काम कि मुताल्लिक़ उनकी ज़ात के था, नहीं करते, वे असल में किस तरह ब्राह्मण समझे जा सकते हैं ? इसी तरह से जिन ज़ात वालों ने अपना काम छोड़ कर दूसरा काम ले लिया, वह भी असल में उस ज़ात में न रहे। क्योंकि जो कोई शख़्स पुरानी चाल के मुवाफ़िक़ ऐसे ज़ात ब्राह्मणों से उनके असली पेशे यानी परमार्थी कार्रवाई का हाल दरियाफ़्त करना या उनसे ब्रह्म विद्या सीखना चाहे तो वह कुछ भी नहीं कह सकते। फिर जो कोई टेक धारन करके उन्हीं को अपना गुरु बनावे तो धोखा खावेगा और उनसे उसको कुछ हासिल न होगा। इसी तरह जो कोई वैद्य या हकीम के ख़ानदान में से है या किसी वक़्त के बड़े हाकिम या राजा के घराने में से है और अब उसने दूसरा पेशा इख़्तियार कर लिया है और न वैद्यक और हकीमी जानता है और न अमीरी और राज उसके घर में है तो जो कोई उससे अपनी बीमारी का इलाज कराना चाहे या कोई क़ज़िये झगड़े का फैसला चाहे तो वह कुछ भी कार्रवाई बाप दादे के मुवाफ़िक़ नहीं कर सकता। जो टेक धारी हठ करके वैद्य या राजा की औलाद से रुजू लावेगा, उसका काम हरगिज़ नहीं बनेगा और नुक़सान उठावेगा।।

८८ - मालूम होवे कि ब्राह्मण उसका नाम है कि जो ब्रह्म को जाने, न कि जनेऊ धारी का नाम ब्राह्मण है।

जन्मनेजायतेशूद्रः संस्काराद्विज उच्चते।
वेदपाठी भवेद् विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः।।

यानी पैदायश के वक़्त सब ब्राह्मणों की औलाद शूद्र है और जब जनेऊ धारन करके गुरु की सेवा में लगें, तब द्विज, और वेद पढ़ लेवें और उसका पाठ करें, तब विप्र और जब ब्रह्म को पहिचानें, तब ब्राह्मण नाम कहा जाता है। फिर जो ब्राह्मण कि रस्मी परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं यानी सत्तनारायण और एकादशी और दसमस्कन्ध भागवत और रुक्मिनी मंगल और रामायन और दुर्गा वग़ैरा की कथा कह कर अपने कुटुम्ब का गुज़ारा कर रहे हैं या मन्दिरों में पुजारी का काम कर रहे हैं या बीमारों और कामनावालों की तरफ़ से जाप करते हैं या पत्रा देख कर मुहूर्त्त वग़ैरा बताते हैं और विवाह कराते हैं या तीर्थों के मुक़ाम पर पंडे कहलाते हैं या कंठी बाँध कर मामूली नाम या मंत्र कान में फूँक कर जीवों को चेला करते हैं और हर साल रामत यानी उगाही करने को शहर - ब-शहर चेलों के घरों पर जाते हैं, यह सब और बहुतेरे जो इसी क़िस्म के काम करते हैं और दान पुण्य और ख़ैरात लेते हैं, सब पेशेवाले और रोज़गारी हैं। इनके मन में मालिक का खोज या प्यार या भाव बिल्कुल नहीं है और न चाह उसके दर्शनों की या भेद या जुगत के जानने की है। ऐसे ब्राह्मणों से एक ज़र्रा सच्चे परमार्थ का किसी को हासिल नहीं हो सकता है।।

८९ - यही हाल भेषों का है कि घरबार न मालूम किस आफ़त के वाक़े होने से छोड़ कर और कपड़े रँग कर शहर - ब-शहर और घर २ माँगते, खाते और सैर करते फिरते हैं और सिवाय बानी और पोथियों के पाठ कर लेने के या तीर्थों में भरमने के, एक ज़र्रा भी सच्चे परमार्थ की चाह या खोज या दर्द उनके मन में नहीं है। ज़्यादा कार्रवाई करी तो कुछ संस्कृत सीख ली और श्लोक पढ़ कर लोगों को अपनी महिमा जताने लगे या बाचक ज्ञान कथ कर अपने तईं ब्रह्म मानने लगे और गृहस्थी जीवों को बातों से धोखा देकर अपना मतलब बनाते हैं।।

९० - पिछले वक़्त में लोगों की नज़र कर्म और रहनी पर थी, न कि नसली ज़ात पर। देखो व्यास जी मच्छोदरी के लड़के थे और वशिष्ठ जी गनिका से पैदा हुये और नारद जी दासी के लड़के थे और सूत पौराणिक जिन्होंने नीमषार में ऋषियों और मुनीश्वरों को कथा सुनाई, दासी के लड़के थे और कृष्ण महाराज ने ग्वाले के घर में परवरिश पाई और रामचन्द्र जी क्षत्रिय थे और सुखदेव जी जिन्होंने परीक्षित को भागवत सुनाई व्यास जी के लड़के थे और बाल्मीकजी बहेलिये थे। अब कहो कि इनमें से कौन ब्राह्मण ज़ात का था ? सब अपनी परमार्थी कार्रवाई से इस दरजे को पहुँचे।।

९१ - इसी तरह जितने भक्त हुये उनमें से कोई भी ज़ात ब्राह्मण न था, बल्कि बहुतेरे नीच क़ौम से थे लेकिन ब-सबब भक्ति के किस क़दर महिमा उनकी संसार में हो रही है कि उस वक़्त के राजों और अमीरों और ज़ात ब्राह्मणों को कोई नहीं जानता, पर इनका

नाम औरत मर्द और लड़के, जहाँ २ उनकी मानता है, हर रोज़ ताज़ीम के साथ लेते हैं और गुन गाते हैं, जैसा कि कहा हैः -

ज़ात पांत पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।।

९२ - परमार्थी कार्रवाई में, ज़ात ब्राह्मण और दूसरी ऊँची ज़ात वाले, अपनी नसली ज़ात का बड़ा अहंकार और मान करते हैं और अपने से कम ज़ात वाले से चाहे कैसा ही परमार्थी होवे और तन मन धन ख़र्च करके निर्मल भक्ति यानी ख़ालिस परमार्थ की कार्रवाई करता होवे, उससे परमार्थ का खोज करने या शिक्षा लेने में निहायत दरजे का परहेज़ करते हैं। लेकिन दुनिया के मुआमले में चाहे कोई ज़ात होवे, उससे विद्या और हुनर सीखने में या उसके नीचे नौकरी करने में या उसकी तरह-ब-तरह की सेवा और ख़िदमत करने में ज़रा भी ख़्याल जात पांत का नहीं करते और उसके साथ निहायत दरजे की दीनता और अदब से पेश आते हैं और उसकी सवारी के साथ बे-तकल्लुफ़ दौड़ते हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इन लोगों के मन में धन की क़दर है और सच्चे परमार्थ और सच्चे मालिक का ज़रा भी आदर और भाव नहीं है, फिर इनका कैसे उद्धार होगा और क्या परमार्थ इनसे बन आवेगा? इनको सच्चे परमार्थियों पर तान मारते हुये ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं आता और अपनी काहिली और ग़फ़लत और बेजा अहंकार पर ज़रा भी अफ़सोस और पछतावा नहीं करते। सच कहा है कि यह लोग मालिक के दरबार से निकाले हुये और हटाये हुये हैं। उनको मालिक के चरनों के प्रेम की दौलत, जब तक कि यह सच्चे संत और साध या प्रेमी जन के सन्मुख सच्चे मन

से दीनता और सेवा नहीं करेंगे, हरगिज़ २ नहीं मिल सकती है। जो यह लोग दुनिया के मुआमले और रस्मी परमार्थ में ज़ात पाँत का व्यवहार और बर्ताव जारी रक्खें तो मुज़ायका नहीं, क्योंकि वहाँ बहुत से काम ज़ाहिरी और नक़ली तौर पर किये जाते हैं, लेकिन सच्चे परमार्थ यानी सच्चे मालिक की भक्ति में, ज़ाहिरी और नक़ली कार्रवाई कपट में दाख़िल है और इस सबब से ऐसे लोगों को, जिनकी नज़र ऊपरी और नक़ली कार्रवाई पर है और असली और अंतरी भेद और भाव से बे-ख़बर हैं, मालिक के दरबार और संतों और प्रेमियों के सतसंग में दख़ल नहीं मिल सकता और इस वास्ते सच्चे परमार्थ की दौलत से वह हमेशा बे-नसीब रहेंगे।।

(२२) सेवा का वर्णन

९३ - सेवा चार क़िस्म की है। तन, मन, धन और सुरत की। संत सतगुरु या साध गुरु या प्रेमी जन किसी क़िस्म की सेवा के मोहताज नहीं हैं, पर भक्ति की तरक़्क़ी और प्रेम का जागना और मन की सफ़ाई बग़ैर थोड़ी बहुत सेवा के मुमकिन नहीं है।

९४ - सिवाय इसके सेवा से हाल प्रीत और प्रतीत और शौक़ सेवक का मालूम होता है यानी जिनके मन में सच्चे मालिक और सच्चे गुरु की और उनके सच्चे उपदेश और सुरत शब्द मार्ग की महिमा समाई है और सच्चा प्यार चरनों में आया है और सच्चा शौक़ भक्ति और शब्द का अभ्यास करके कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुँचने का मन में पैदा हुआ है, तो ऐसे परमार्थी जीव के हृदय में उमंग सेवा और ख़िदमत

करने की आप ही आप पैदा होवेगी और बग़ैर थोड़ा बहुत तन, मन, धन और सुरत के लगाने के उससे रहा नहीं जावेगा।

९५ - दुनिया में भी जहाँ जिसकी मुहब्बत है, वहाँ वह ख़ुशी के साथ तन, मन, धन ख़र्च करता है। बग़ैर प्रीत कहीं एक पैसा भी ख़र्च करने को मन नहीं चाहता। फिर परमार्थ में भी जब सच्ची प्रीत होती है, तब इसी तरह उमंग उठती है और सेवा करके हर्ष होता है और शान्ति आती है।

९६ - जब तक कि किसी प्रेमी के हृदय में सतगुरु और सच्चे मालिक की थोड़ी बहुत प्रतीत नहीं आती है, तब तक उससे तन की सेवा नीचे दरजे की नहीं बन सकती है और न विशेष धन ख़र्च कर सकता है और न उसके मन और सुरत जैसा चाहिये, शब्द के अन्तर अभ्यास में लग कर थोड़ा बहुत रस और आनंद पा सकते हैं।।

९७ - जितनी सेवा कि संतों के सतसंग में जारी हैं, वे सब प्रेमी जनों ने आप अपनी उमंग से निकाली हैं और फिर दूसरे प्रेमीजन देख कर उमंग उठाते हैं और उन सेवाओं में शामिल होते हैं और इस कार्रवाई से अपने अभ्यास में तरक़्क़ी पाते हैं।।

९८ - तन की सेवा यह है-जैसे चरन दाबना, पंखा हाँकना, हुक्का भरना, जल भर के पिलाना, भोजन तैयार करना, पलंग बिछाना, खाना या प्रशाद तक़सीम करना, पोथी का पाठ करना, शब्द गाना, झाड़ू लगाना और फ़र्श बिछाना वग़ैरा वग़ैरा। यह ज़रूर नहीं है कि हर

कोई यह सेवायें हर रोज़ करे, मगर एक दो या तीन बार हर एक क़िस्म की सेवा को कर लेना मुनासिब है, ताकि जब वक़्त आवे और ज़रूरत पड़े, तब फ़ौरन उमंग के साथ उस सेवा को अंजाम देवे और किसी तरह की झिझक या शरम मन में न लावे।।

९९ - फ़ायदा ख़िदमत और सेवा का यह है कि मन में मान और झिझक न रहे और सफ़ाई और प्यार पैदा होवे और प्रतीत सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में बढ़े और महिमा उनकी ज़्यादा से ज़्यादा चित्त में समावे और अंतर अभ्यास में आसानी होवे।।

१०० - मन और बुद्धि की सेवा - सतसंग में बैठ कर बचन सुनना और समझना और विचारना और संशय और भरम दूर करना और जो जो ख़्याल और भाव संसारियों के संग से मन में बसे हुए हैं, उनको ओछा और विघ्न कारक समझ कर निकालना और सुमिरन और ध्यान एकाग्र चित्त होकर करना और लीला और बिलास और परचे अंतर और बाहर देख कर मगन होना और प्रतीत बढ़ाना और आरती करके प्रीत जगाना और अंतर में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु की महिमा का विचार और मेहर और दया की परख करके, नई नई भक्ति रीति और सेवा की उमंग अंतर और बाहर उठाना।।

१०१ - इन सेवाओं का फ़ायदा यह है कि मन से संसारी ख़्यालों का निकालना और उसमें प्रेम का भरना और फिर उसको समेट कर अंतर स्वरूप में जोड़ना और रस लेना और बाहर सतसंग में दर्शन और बचन का आनन्द पाना।।

१०२ - धन की सेवा - अगर धन अपने पास मौजूद है तो उसको भूखे प्यासे को देना और सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा में ख़र्च करना।।

१०३ - फ़ायदा - धन में पकड़ और बंधन का घटना और सतगुरु और प्रेमी जन की प्रसन्नता और दया हासिल करना और ग़रीबों और मोहताजों की दुआ लेना। यह दया और दुआ प्रेम को बढ़ाती है और प्रेमी जन की प्रसन्नता सेवक की उमंग को जगाती है।।

१०४ - बाज़े प्रेमी जन सेवा की उमंग में उम्दा उम्दा पोशाक तैयार करके सतगुरु को पहिनाते हैं और आरती और भंडारा करते हैं। ऐसे उत्सव में सब सतसंगी दर्शन करके मगन होते हैं और बहुत से उस वक़्त के स्वरूप को मन में बसा कर, ध्यान के वक़्त उससे मदद लेते हैं। यह दर्शन मन और इन्द्रियों के समेटने और जोड़ने में, अंतर और बाहर, ज़्यादा फ़ायदा देते हैं और इस तरह से जब जब नया दर्शन नई पोशाक के साथ होता है, तब ध्यान में बहुत मदद मिलती है। सतगुरु शौक़ीन ऐसी पोशाक के नहीं हैं, पर प्रेमियों की ख़ातिर उनको पहिनना पड़ता है। क्योंकि इस रीति से उनके मन में नई उमंग और नई प्रीत जागती है और उनकी भक्ति की तरक़्क़ी होती है और अंतर अभ्यास में मदद मिलती है। मालूम होवे कि धन की सेवा ख़ास कर ज़रूरी नहीं है यानी जिस के पास धन नहीं है, उस पर यह सेवा फ़र्ज़ नहीं है। वह औरों की सेवा में तन से मदद देवे।।

१०५ - मन और सुरत की सेवा यह है कि सिमट कर घट में शब्द को सुनना और उसके आसरे ऊँचे की

तरफ़ को चलना और चढ़ना और रस और आनंद लेना।।

१०६ - फ़ायदा - चरनों में दिन दिन प्रीति और प्रतीत का बढ़ना, अभ्यास में तरक़्क़ी का होना और संसार और उसके पदार्थों और भोगों से आहिस्ते आहिस्ते मन में उदासीनता पैदा होनी और परमार्थ की क़दर का दिन दिन चित्त में बढ़ना और उसमें विशेष प्यार का आना और रहनी का सम्हलना यानी संसारी आदतों का छूटना और परमार्थी स्वभावों का बर्ताव जारी होना और मन और इन्द्रियों का दिन दिन तन से और सुरत का मन से न्यारे होना और अधर में चढ़ना और अन्तर शब्द में रचना।।

१०७ - जिन सेवाओं का ज़िक्र ऊपर किया गया, उनमें से बाज़ी बाज़ी को दुनिया के लोग देख कर अचरज करते हैं या तान मारते हैं और हँसी उड़ाते हैं। पर यह लोग बेचारे नादान हैं। इनको प्रेम की ज़रा भी ख़बर नहीं है। अलबत्ता दुनिया की मुहब्बत से जिसमें वे अपना तन, मन, धन लगा रहे हैं, ख़ूब वाक़िफ़ हैं और वहाँ दिल खोल कर मेहनत और ख़र्च करते हैं कि जिसमें उनके दोस्त आश्ना और रिश्तेदार और दुनिया के लोग तमाशा देख कर राज़ी होवें और उनकी वाह वाह करें। पर यह तारीफ़ चार दिन की है। परमार्थ के रास्ते में और खास कर अख़ीर वक़्त में, यह कार्रवाई कुछ काम नहीं देगी।।

१०८ - बर - ख़िलाफ़ इसके प्रेमी जन को कि जो संसार के भी काम दस्तूर के मुवाफ़िक़ औसत दरजे पर करते हैं और परमार्थ की क़दर जान कर उसमें भी

उमंग के साथ मेहनत और ख़र्च करते हैं, यहाँ भी लाभ और वहाँ भी गहरा फ़ायदा मिलता है। वे दुनिया की वाह वाह नहीं चाहते, पर संत सतगुरु और प्रेमी जन की प्रसन्नता दिल और जान से चाहते हैं और उसका फ़ायदा दुनिया में भी और अख़ीर वक़्त पर और बाद मरने के गहरे से गहरा उठाते हैं और दुनियादारों की निन्दा और स्तुति और तान और हँसी का ज़रा भी ख़्याल मन में नहीं लाते। उनके मन में मुख्यता इस बात की रहती है कि सतगुरु और कुल्ल-मालिक़ राज़ी और प्रसन्न होवें और संसारियों की चाह दुनियादारों के रिझाने की रहती है। फिर इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है और आपस में इनका मेल नहीं हो सकता।।

(२३) महिमा सतसंग की

१०९ - राधास्वामी मत में दो क़िस्म की कार्रवाई जारी है : - बाहर सतसंग और सेवा और अंतर सतसंग और सेवा यानी सुमिरन और ध्यान और शब्द का श्रवण जिसको भजन कहते हैं।।

११० - सतसंग में बचन सुनाये जाते हैं और बानी का पाठ और अर्थ किया जाता है।

१११ - जो कोई सच्चा शौक़ लेकर सतसंग में शामिल होगा, उसके मन और इन्द्रियों की गढ़त और सफ़ाई बचन सुन सुन और समझ समझ कर आहिस्ते आहिस्ते होती जावेगी और उसकी समझ बूझ भी बदलती जावेगी यानी संसारी ख़्याल निकस कर परमार्थी ख़्याल मन में धसते और बसते जावेंगे और दुनिया उसके सामान की प्रीत हलकी होती जावेगी और

कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम पैदा होकर दिन दिन बढ़ता जावेगा और स्वभाव और रहनी और बर्तावा भी आहिस्ते आहिस्ते मुवाफ़िक़ भक्तों और प्रेमीजन के होता जावेगा। मन की मलीनता और स्थूल विकार बग़ैर सतसंग के कभी दूर नहीं हो सकते हैं और अंतर अभ्यास में भी मदद सतसंग से ही मिलती है।।

(२४) महिमा अंतर अभ्यास यानी अंतरी सतसंग की

११२ - जो कोई बाहर सतसंग करेगा और उपदेश लेकर अंतर में सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास भी करेगा, तब उसके बंधन संसार के ढीले होते जावेंगे और स्थूल और सूक्ष्म विकार घटते जावेंगे और अन्तर में रस पाकर शौक़ बढ़ता जावेगा और परचे दया के देख कर चरनों में प्रतीत और प्रीत नई जागेगी और दिन दिन बढ़ती जावेगी, और सरन दृढ़ होती जावेगी और मन और इन्द्रियाँ और संसार और उसके सामान से, सुरत आहिस्ते आहिस्ते न्यारी होती जावेगी यानी उसके बंधन ढीले होते जावेंगे और देह और दुनिया का दुख सुख कम व्यापेगा और कोई अर्से के अभ्यास के बाद प्रेमी परमार्थी अपने अन्तर में थोड़ा बहुत हर वक़्त मगन रहेगा और काल और कर्म से बे-ख़ौफ़ होता जावेगा। इस हाल की जाँच सतगुरु या प्रेमी जन आप कर सकते हैं या थोड़ी सी इस हालत की ख़बर उन शख़्सों को पड़ सकती है जो प्रेमी अभ्यासी का मुद्दत से संग कर रहे हैं या उसके साथ रहते हैं, जैसे कुटुम्बी और

नौकर चाकर वग़ैरा। दूसरा शख़्स अच्छी तरह नहीं परख सकता।।

(२५) जीवों का बेजा और ग़लत भरम और ख़ौफ़ निसबत राधास्वामी मत में शामिल होने के

११३ - आम तौर पर उसूल और क़ायदे और भेद राधास्वामी मत का सुन कर थोड़ी बहुत सब को शान्ति होती है यानी जो बातें दरियाफ़्त करने के लायक़ हैं, उन का जवाब साफ़ साफ़ और थोड़ा बहुत तसल्ली देने वाला मिलता है। पर जीवों की समझ बूझ बहुत ओछी है, इस सबब से वे इस मत की महिमा और बुज़ुर्गी और सिफ़त उसके अभ्यास की आसानी और फ़ौरन असर दिखानेवाली ताक़त की, जैसा चाहिये, जान नहीं सकते। वजह इसकी यह है कि पहिले तो उनकी परमार्थी वाक़िफ़कारी बहुत कम, दूसरे कभी कुल्ल-मालिक और उसकी क़ुदरत और अपने आपे के मुआमले में खौज[१] और ग़ौर[२] और तहक़ीक़[३] नहीं किया, तीसरे सतसंग में नेम से पाँच सात दिन बराबर तहक़ीक़ात की नज़र से नहीं आये कि मुफ़स्सिल हाल सुनते और समझते और संशय और भरम अपने दूर कराते और जिन बातों का इल्म न था, उनको दरियाफ़्त करते। जो कभी सतसंग में आये तो एक रोज़ के वास्ते और फिर महीनों के बाद एक रोज़ और फिर चुपके होके बैठे रहे। यह ढंग तहक़ीक़ात का नहीं हैं और इससे बे-परवाही और कमी शौक़ की ज़ाहिर होती है।।

(१) गहन विचार, मनन, चिंतन। (२) सोच विचार।
(३) जाँच पड़ताल।

११४ - सबब इस बे-परवाही और ग़फलत के तीन हैं : - एक तो दुनिया के भोग बिलास में निहायत दरजे का लिप्त और फँसे होना और ज़्यादा मोह कुटुम्ब परिवार का और लोभ धन का; दूसरे बेजा ख़ौफ़ इस बात का कि राधास्वामी मत में शामिल होने से उनके भोग बिलास और मोह और लोभ वग़ैरा और दुनिया की चाह और मुहब्बत और गिरफ़्तारी में ख़लल पड़ेगा; तीसरे जगत और बिरादरी की लज्जा और शरम और ख़ौफ़ और बंधन कुल की मरजाद और पुरानी रस्मों और टेकों में, जिनको छोड़ते वे निहायत डरते और घबराते हैं।।

११५ - <u>यह तीनों सबब</u> निहायत दरजे की कचाई परमार्थी की और बे-ख़ौफ़ी दुनिया के दुक्खों और सख़्ती मौत की (जो हर एक के सिर पर खड़ी हुई है) और निहायत दरजे का फँसाव और लिपटाव दुनिया और उसके भोगों में ज़ाहिर करते हैं और यह कसरें सिर्फ़ सतसंग में संतों के बचन और बानी के सुनने से दूर हो सकती हैं, और कोई जतन या तदबीर उनके हटाने या घटाने की नहीं है।।

११६ - यह लोग अपनी आँख से देखते हैं कि राधास्वामी मत में किसी का कुटुम्ब परिवार और घरबार और रोज़गार और व्यवहार नहीं छुड़ाया जाता है, सिर्फ़ सच्चे कुल्ल-मालिक की महिमा सुनाई जाती है और उससे मिलने की जुगत समझाई जाती है और दुनिया की नाशमानता और दुनिदायारों की खुद - मतलबी कार्रवाई पर तवज्जह दिलाई जाती है। जो कोई थोड़े शौक़ और तवज्जह के साथ बचन सुनता

और समझता है और उपदेश लेकर उस जुगत का अभ्यास करता है उसको कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का जलवा और प्रकाश किसी क़दर अपने घट में नज़र आता है और उनकी मेहर और दया की परख आती है, तब वह ज़्यादा शौक़ और मुहब्बत के साथ, सतसंग और अंतर के अभ्यास में लगता है और फिर वक़्त अपना दुनियादारों की सोहबत में फ़िज़ूल बरबाद नहीं करता, बल्कि जहाँ तक मुमकिन होता है, राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर, कुछ ज़्यादा वक़्त परमार्थी कार्रवाई में ख़र्च करता है और अपना धन भी जिस क़दर बे-तकलीफ़ मुमकिन होता है, परमार्थ में लगाता है। लेकिन ऐसे शख़्स के कुटुम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी वालों को ऐसी हालत और चाल की बरदाश्त नहीं होती है क्योंकि उन्होंने कभी सच्चे परमार्थ में क़दम नहीं रक्खा और न कभी सच्चे परमार्थ में पैसा ख़र्च किया और न सच्चे मालिक की प्रतीत और प्रीत उनके मन में आई। इस सबब से वे जिस किसी की सच्ची हालत परमार्थ में देखते हैं, तब फौरन चौंकते हैं और ख़ौफ़ करते हैं कि शायद रफ़्ते रफ़्ते वह घरबार और कुटुम्ब परिवार और रोज़गार को छोड़ देगा और इस ख़ाम - ख़्याली के सबब से उसको रोकते हैं और धमकाते हैं और तरह तरह के ख़ौफ़ दिखलाते हैं और उसकी भक्ति में विघ्न डालते हैं।।

११७ - जिस किसी ने राधास्वामी मत को अच्छी तरह समझ लिया है और अभ्यास करके अंतर में कुछ रस पाया है, वह सतसंग का बल लेकर रोज़मर्रा अपनी पकाई करता है और मूर्ख कुटुम्बी और संसारियों की धमकी और चालबाज़ी को ख़्याल में नहीं लाता, बल्कि

उनको भी समझा कर सच्चे परमार्थ में लगाना चाहता है और जो न लगें, तो उनसे ज़्यादा हुज्जत या दलील नहीं करता और उनको उनके हाल और चाल पर मालिक की मौज विचार कर छोड़ देता है।।

११८ - अब इन मूर्ख संसारियों की हालत पर ग़ौर करो कि जो कोई उनके कुटुम्ब और बिरादरी में से बुरे से बुरे काम करता है, जैसे (१) रंडीबाज़ी करना और उन के घरों पर खाना पीना और ठहरना,(२) जुआ खेलना और खिलवाना, (३) ग़ैर क़ौमों के साथ शराब और कबाब खाना और पीना और (४) झूठ बोल कर और फ़रेब कर कर धन पैदा करना और (५) ग़ैर-क़ौम या नीच क़ौम की औरतों को घर में डालना और उनके साथ रहना वग़ैरा, उससे कोई नहीं कुछ कहता है और न धमकाता है और न ज़ात में से निकालने का इरादा करता है। लेकिन जो कोई सच्चे परमार्थ में शामिल होकर सच्चे मालिक की सच्ची भक्ति करता है और दिन दिन उसकी पुरानी चाल और स्वभाव और रहनी बदलती हुई आँखों से देखते हैं और नेक ख़सलतें और नेक व्यवहार और परमार्थी चाल उसकी परखते हैं, फिर भी अपनी नाक़िस समझ और आदत और पापों से भरी हुई बुद्धि के साथ, अनेक तरह के अड़ंगे परमार्थी शख़्स की भक्ति में लगाते हैं और तरह तरह के विघ्न और ख़लल डालने को (कुल्ल-मालिक से निडरता करके) तैयार होते हैं। अब समझो कि इन लोगों को शुभ कर्म और अच्छी करतूत और सच्चे मालिक की भक्ति प्यारी है कि पाप कर्म और नाक़िस चाल और बेईमानी पसंद है। फिर समझदार परमार्थी आदमी को, इन लोगों की बातों और धमकियों निन्दा वग़ैरे का किस

क़दर ख़्याल करना चाहिये यानी मूर्खों और पापियों की समझौती और धमकी वग़ैरे का अपने सच्चे मालिक की दया का भरोसा रख कर, ज़रा भी ख़्याल और अन्देशा न करना चाहिये और कुल्ल-मालिक की भक्ति हरगिज़ नहीं छोड़ना चाहिये, बल्कि उसको दिन दिन मज़बूत करना और बढ़ाना चाहिये। महात्माओं का क़ौल हैः -

गुरु राज़ी तो करता राज़ी।
काल करम की चले न बाज़ी।।

चो राज़ी शुद अज़ बंदा यज़दाने पाक।
गर ईंहा न गरदंद राज़ी चे बाक।।

यानी जो मालिक अपने भक्त से राज़ी है, तो जो दुनिया के लोग उससे नाराज़ रहें तो कुछ ख़ौफ़ नहीं है।।

(२६) दुनिया के लोगों का धर्म और ईमान

११९ - जो लोग कि निपट दुनियादार हैं, उनके मन में मुख्यता धन, स्त्री, पुत्र और अपनी मान बड़ाई की रहती है और इस ज़माने का हाल देख कर कहा जाता है कि इस क़िस्म के लोग कसरत से हैं और उनके मन में ख़ौफ़ और प्यार सच्चे मालिक का नहीं है, बल्कि बहुतेरों के मन में पूरा पूरा यक़ीन भी इस बात का नहीं है कि कोई सच्चा और कुल्ल-मालिक इस रचना का मौजूद है, फिर ख़ौफ़ और प्यार कैसे आवे। यह लोग थोड़ा सा इल्म पढ़ कर और नास्तिकों के बानी और बचन सुन कर या पढ़ कर, बहुत जल्द उसको क़बूल और मंज़ूर कर लेते हैं और धोखा खाते हैं।।

१२० - रस्मी परमार्थ जो दुनिया में जारी है और वह कार्रवाइयाँ बाहरमुखी जो हर एक मत में कर रहे हैं, वह थोड़े या बहुत पढ़े हुए लोगों को पसन्द नहीं आती हैं, अलबत्ता मूर्ख और नादान और टेकी लोग उनको अपने मन हठ से कर रहे हैं और इस में कुछ शक नहीं कि वह परमार्थी क़ायदे और रस्में आम लोगों के वास्ते किसी पुराने वक़्त में मुक़र्रर हुई थीं, खोजी और दर्दी को वह कार्रवाइयाँ शान्ति नहीं दे सकतीं और न विद्यावान को उन से तसल्ली हो सकती है। संत मत की इन लोगों को मुतलक़ खबर नही है, नहीं तो परमार्थ की तरफ़ से ऐसे बे-परवाह और मालिक की तरफ़ से ऐसे बे-ख़ौफ़ न हो जाते।।

१२१ - सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते दो बातें दरकार हैंः - एक बाहर से चाल और चलन और व्यवहार और बर्ताव का नेक और दुरुस्त होना, दूसरे सच्चे और कुल्ल-मालिक का भेद लेकर और उससे मिलने का जतन दरियाफ़्त करके, अपने घट में नित्य अभ्यास करना यानी निज धाम की तरफ़ रोज़मर्रा चलना और रास्ता तै करते जाना।।

१२२ - जब तक कि बाहर का चाल चलन और व्यवहार दुरुस्त न होगा और मन में थोड़ी बहुत सफ़ाई नहीं आवेगी और सच्चे मालिक का थोड़ा प्यार और खोज पैदा न होगा, तब तक अंतरमुख अभ्यास सुरत शब्द योग का (जिसके सिवाय और कोई जुगत मालिक से मिलने की नहीं है) दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा।।

१२३ - मन की गढ़त और उसका चाल चलन दुरुस्त करने के वास्ते किसी क़िस्म का डर ज़रूर

दरकार है, सो इस दुनिया में सात क़िस्म के बड़े डर हैं: - पहिला डर हाकिम और उसके क़ानून का, दूसरा डर और शर्म बिरादरी और रिश्तेदारों और दोस्तों वग़ैरे का, तीसरा डर नुक़सान अपनी इज़्ज़त और रोज़गार और माल और तनदुरुस्ती का, चौथा डर मौत और कष्ट क्लेश का, पाँचवाँ डर पूरे गुरु और सच्चे मालिक का, छठा डर ख़ानदानी इष्ट और पिछले महात्मा और देवता वग़ैरे का, सातवाँ डर आख़िरत यानी परलोक का।।

१२४ - सिवाय इनके कितने ही छोटे डर भी हैं जो मन को दुरुस्ती से चाल चलने में मदद देते हैं, जैसे बालकपन में मां बाप का डर और फिर उस्ताद का डर और स्त्रियों को पति का डर और नौकरों को अपने अपने मालिक का डर और ख़ानदान की बुज़ुर्गी और नेकनामी का डर वग़ैरे वग़ैरे, क्योंकि बग़ैर डर के यह मन सीधा नहीं चलता, क्या दुनिया के काम और व्यवहार में और क्या परमार्थ की कार्रवाई में।।

१२५ - पहिला डर हाकिम और उसके क़ानून का सब मानते हैं। दूसरा डर इस वक़्त में ऐसा ज़बर नहीं माना जाता है जैसा कि पिछले वक़्तों में था। तीसरा डर भी सब मानते हैं। चौथा डर मौत वग़ैरे का सब मानते हैं मगर भूले रहते हैं यानी उसकी याद बहुत कम आती है। पाँचवाँ डर गुरु और मालिक का किसी बिरले जीवों को होगा जो सच्चे गुरु की भक्ति में लगे हैं, पर आम तौर पर यह डर किसी के दिल में नहीं समाता क्योंकि यक़ीन सच्चे मालिक के हाज़िर और नाज़िर होने का नहीं है या बहुत कम है और वह भी बिसरा

हुआ रहता है। छठा ख़ानदानी इष्ट और पिछले महात्मा और देवता वग़ैरे का डर थोड़ा बहुत बाज़े मर्द और बहुत सी औरतें मानती हैं और उनकी मुक़र्रर पूजा और भेंट वग़ैरे करती हैं, इस ख़्याल से कि उसके न करने और छोड़ देने में किसी तरह का नुक़सान जान और माल और तन्दुरुस्ती वग़ैरे का न हो जावे। इस वास्ते यह डर दुनियावी है, परमार्थी नहीं है। सातवाँ डर आख़िरत और परलोक का अक्सर जीव मानते हैं। हरचंद वे कर्मी और टेकी हैं, मगर किसी क़दर ख़ैरात वग़ैरे और दूसरे शुभ कर्म जो कोई बतावे वास्ते अपने आइंदा की ज़िंदगी के आराम और फ़ायदे के, करते रहते हैं।।

१२६ - जिस क़दर डर ऊपर लिखे गये हैं वे सब संसारी हैं, सिवाय एक डर सच्चे गुरु और सच्चे मालिक के जो निर्मल परमार्थी है। पर चाहे किसी क़िस्म का डर होवे, वह जीव के चाल चलन और व्यवहार वग़ैरे के दुरुस्त करने में मदद देता है। लेकिन निर्मल परमार्थी डर का फ़ायदा बहुत भारी है यानी उससे पूरी सफ़ाई मन और इंद्रियों वग़ैरे की हासिल होवेगी और एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुँचावेगा। ऐसे डर वाले का हर हाल में ऐतबार हो सकता है, पर दूसरी क़िस्म के डरवालों का पूरा ऐतबार नहीं हो सकता, क्योंकि जब कोई कामना उनके मन में ज़बर उठेगी या किसी तरह से अपने काम को ग़ैरों की नज़र से बचा सकेंगे, तब डर के बिसर जाने का ख़ौफ़ रहेगा।।

१२७ - जिसके मन में सच्चे गुरु और सच्चे मालिक का डर है, वही बड़ भागी है और वही मन और इच्छा की आफ़तों से हर हाल में बचेगा।।

१२८ - जिसके मन में हाकिम और बिरादरी और अपने नुक़सान और मौत वग़ैरे का डर किसी क़दर रहेगा, उसका भी चाल चलन और व्यवहार दुनिया में थोड़ा बहुत दुरुस्त रहेगा।।

१२९ - जिसके मन में ख़ानदानी इष्ट और परलोक और मौत वग़ैरे का कुछ डर रहेगा, उससे भी थोड़े बहुत शुभ कर्म और ख़ैरात वग़ैरा बन पड़ेंगे और उसके एवज़ में थोड़ा बहुत सुख पावेगा।।

१३० - लेकिन जिनके मन में यह सब डर आरज़ी तौर पर कभी आ जाते हैं और अक्सर बिसरे रहते हैं, उनके क़ौल और फ़ेल यानी कथनी और करनी का ऐतबार नहीं हो सकता। वे अपने मतलब के पूरा करने के वास्ते जब जैसा मौक़ा होगा, बग़ैर सोच और विचार के कार्रवाई करने को तैयार हो जावेंगे और जब कोई डर ज़बर नहीं होगा, तब बिल्कुल जंगली और वहशी आदमियों के मुवाफ़िक़ बग़ैर दया और रहम के कार्रवाई करने को मुस्तैद हो जावेंगे।।

१३१ - ख़ुलासा यह है कि बग़ैर डर के शुरू में-बल्कि बहुत दूर तक - यह मन सीधा और दुरुस्ती और इंसाफ़ के साथ नहीं चल सकता है और न बन्दोबस्त दुनिया का दुरुस्ती के साथ जारी रह सकता है और न परमार्थ की कार्रवाई बन सकती है। इस वास्ते हर एक शख़्स को लाज़िम और मुनासिब है कि अव्वल नम्बर मालिक का ख़ौफ़ मन में रक्खे और जो

यह डर क़ायम न होवे, तो जितने डर कि ऊपर लिखे हैं, उनमें से कोई न कोई ज़बर करके माने, तो उसका किसी क़दर बचाव और सम्हाल मुमकिन होगी नहीं तो उसका बर्तावा दुनिया में पशुओं यानी जानवर और वहशी और जंगली आदमियों के मुवाफ़िक़ रहेगा और परमार्थ का भाग उसको मुतलक़ नहीं मिलेगा।।

१३२ - और छोटे डरों का जो ऊपर ज़िक्र हुआ, वे कोई कोई अवस्था में पैदा होते हैं और जब वह अवस्था या हालत ख़तम हो गई, तब जाते रहते हैं।।

१३३ - हाकिम के डर का फ़ायदा यह है कि जो बुरे काम ख़िलक़त के दुखदाई हैं और जिनके वास्ते कानून में सज़ा तजवीज़ की गई है, उनके करने से वे लोग जिनके मन में सच्चा डर आया है बच जाते हैं और ख़िलक़त को रिफ़ाहियत और आराम होता है।।

१३४ - बिरादरी और रिश्तेदारों के डर का फ़ायदा यह है कि जो बातें ख़िलाफ़ रस्म और मरजाद और क़ानून वग़ैरे के हैं, उन में भी बर्ताव न करें और व्यवहार वग़ैरे में फ़रेब और दग़ाबाजी को काम में न लावें।।

१३५ - तीसरे डर नुक़सान वग़ैरे का, फ़ायदा यह है कि आदमी बेजा और नाक़िस कार्रवाई और दूसरे की हक़-तलफ़ी करने और इक़रार वग़ैरे पूरा न करने से बच जाता है।।

१३६ - चौथे मौत के डर से जो याद रहा आवे, आदमी का चाल चलन और व्यवहार दूसरों के साथ बहुत दुरुस्त हो जाता है और संसार और उसके

पदार्थों में पकड़ और मोह किसी क़दर ढीला हो जाता है और शुभ कर्म की तरफ़ तबीअत रुजू होती है और मालिक और उसके धाम का खोज दिल में पैदा होता है। यह डर सब के वास्ते, चाहे संसारी हो या परमार्थी, मुफ़ीद है बल्कि परमार्थी के दिल में यह डर ज़रूर रहता है और उससे परमार्थ की कार्रवाई जल्दी करवाता है।।

१३७ - पाँचवाँ डर गुरु और सच्चे मालिक का, यह डर बग़ैर सच्चे सतसंग के पैदा नहीं होता। जिस किसी को भाग से संतों का या उनके सच्चे प्रेमियों का संग मिल जावे, तो अलबत्ता सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा सुन कर, उनके चरनों में भय और भाव यानी डर और प्यार दोनों पैदा हो सकते हैं और जब उपदेश लेकर अभ्यास शुरू किया जावे और दया से अंतर में कुछ रस मिलने लगे, तब वह डर और प्यार बढ़ता जावेगा।।

१३८ - डर के सबब से कुल्ल बुरे कामों से बचाव होगा बल्कि अंतर में भी नाक़िस ख़्याल उठाने में डरेगा और प्यार के सबब से सेवा की उमंग उठेगी और अंतर अभ्यास का शौक़ बढ़ेगा। इसी तरह मन और इन्द्रियों की गढ़त और सफ़ाई होती जावेगी। और चाल चलन बदलता जावेगा और दुनिया की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग पैदा होगा और मेहर और दया के अंतर और बाहर परचे पाकर, प्रतीत मज़बूत होती जावेगी और संत सतगुरु और मालिक के चरनों में दिन २ प्रेम और अनुराग बढ़ता जावेगा।।

१३९ - यह डर निर्मल है। जिस परमार्थी के मन में यह क़ायम हो जावे, तो उसका एक दिन पूरा काम बना कर छोड़ेगा यानी सब विकारों को आहिस्ते आहिस्ते दूर करता हुआ और मालिक का प्यार बढ़ाता हुआ, एक दिन धुर धाम में पहुँचावेगा और निःचिंत कर देगा। इस डर की जिस क़दर सिफ़त कही जावे थोड़ी है, जैसा कि इस कड़ी में कहा है।।

डर करनी डर परम गुरु डर पारस डर सार।
डरत रहे सो ऊबरे ग़ाफ़िल खाई मार।।

१४० - छठा डर ख़ानदानी इष्ट वग़ैरे का, यह डर संसारी और टेकी जीवों के मन में रहता है और इस सबब से उनकी खानदानी रस्में और पूजायें वग़ैरा जारी रहती हैं। इस कार्रवाई से दुनियादारों को एक क़िस्म का सहारा मिलता रहता है, ख़ास कर तकलीफ़ के वक़्त में वह अपने इष्ट वग़ैरे को याद करते हैं और मनाते हैं और पूजा वग़ैरा बोलते हैं और जब इत्तफ़ाक़ से फ़ायदा हो जावे तब अपने इक़रार के मुवाफ़िक़ भेंट पूजा और ज़ियारत व दर्शन वग़ैरा करते हैं। यह डर सिवाय वक़्त तकलीफ़ या कोई उत्सव जैसे शादी और पैदायश बच्चा वग़ैरे के और वक़्तों में साधारण रहता है और बिल्कुल दुनियावी है।।

१४१ - सातवाँ डर आख़िरत यानी परलोक का, इस डर से यह मतलब है कि कुछ ऐसी कार्रवाई जैसे व्रत और दान पुन्य और खिलाना पिलाना वग़ैरा जीव से बन आवे कि जिससे मरने के बाद दुक्खों से बचाव हो जावे। यह डर अक्सर संसारी जीवों को जो टेकी और किसी क़दर भोले हैं, होता है और वे अपने अपने

मज़हब के मुवाफ़िक़ वह कार्रवाई जो वास्ते हासिल होने सुख स्थान के बाद मरने के बताई है, उसको थोड़ी बहुत शौक़ और हठ के साथ करते हैं और उनकी ख़ैरात वग़ैरा से ब्राह्मणों और भेषियों और भी थोड़े ग़रीबों को फ़ायदा पहुँचता है। यह डर भी एक क़िस्म का दुनियावी है, क्योंकि दुनिया और माया के घेर से निकलने का जतन इसमें कुछ नहीं किया जाता।।

(२७) प्रेम की महिमा

१४२ - खौफ़ का जिक्र ऊपर हो चुका है। पहिले ख़ौफ़ ज़रूर चाहिये, ताकि परमार्थी चाल चलनी शुरू हो जावे और फिर शौक़ पैदा होता जावेगा और फिर आहिस्ते आहिस्ते उसकी तरक़्क़ी होकर प्रेम (यानी गहरा शौक़) प्रकट होगा।।

१४३ - जिस वक़्त से प्रेम आया, उसी वक़्त से प्रीतम के साथ मेल शुरू हुआ और जिस क़दर तरक़्क़ी प्रेम की होगी, उसी क़दर प्रीतम के साथ नज़दीकी होती जावेगी और अंतर और बाहर पूरी सफ़ाई हासिल होगी और एक दिन पूरा काम बन जावेगा यानी प्रीतम के धाम में पहुँच कर दर्शन और बासा मिलेगा।।

१४४ - पहिले डर के सबब से कुछ शौक़ पैदा होगा और तवज्जह प्रीतम की तरफ़ आवेगी और बिकारों का ज़ोर और शोर घटेगा और अभ्यास मामूली तौर से बनेगा और उसमें कुछ रस मिलेगा। लेकिन जब कि वह डर और शौक़ प्रेम के साथ बदलना शुरू होगा, तब विकारों की जड़ कटनी शुरू होगी और रसीला और सुखाला अभ्यास बनेगा और फिर प्रेम की तरक़्क़ी के

साथ रस और आनन्द बढ़ेगा और रस और आनन्द के बढ़ने से नया नया प्रेम जागता जावेगा और दया और मेहर के परचे बराबर मिलते जावेंगे।।

१४५ - यह कुछ ज़रूरी बात नहीं है कि पहिले डर पैदा होवे। प्रेम अंग वालों के मन में प्रीतम और उसके धाम की महिमा सुन कर, गहरा शौक़ और प्रेम एक दम पैदा हो जाता है और फिर अभ्यास के साथ रस और आनन्द मिलने से दिन दिन बढ़ता जाता है और फिर यह डर पैदा होता है कि किसी करतूत से प्रीतम की नाराज़गी न हो जावे। यह डर बहुत निर्मल है और बहुत जल्द सफ़ाई करता है और प्रीतम से मेल कराता है।।

१४६ - सच्चे प्रेमी के मन में यह डर आप ही पैदा होता है और जब तक कि काम पूरा न होवे यानी प्रीतम के पूरे पूरे दर्शन न मिलें, तब तक दूर नहीं होता। यह डर बड़ा असर वाला है और बिरले बड़भागी परमार्थियों के मन में प्रकट होता हैं।।

१४७ - यह डर असल में प्रेम स्वरूप है और सतगुरु की ख़ास दया का निशान है और जिस घट में प्रकट हुआ, गोया प्रेम और आनन्द का भंडार खुलना शुरू हो गया।।

१४८ - प्रेम की सिफ़्त बहुत से बहुत है। जहाँ प्रेम है, वहाँ दीनता, क्षमा और सीतलता हमेशा उसके संग रहती हैं और प्रेमी सदा मगन रहता है और जिस किसी को भाग से उसका संग मिल जावे, वह भी मगन हो जाता है और उसका भी रास्ता सुखाला चलने लगता है।।

१४९ - अहंकारी और अभिमानी और विद्यावान और चतुरा, प्रेमी को मूर्ख जानते हैं, क्योंकि वे संसारी हैं, और उनकी नज़र में दुनिया की लाज और बड़ाई और धन और माल बड़ी चीज़ें नज़र आती हैं, और इन्हीं के वास्ते वे जान तक देने को तैयार हो जाते हैं। लेकिन प्रेमी इन चीज़ों को तुच्छ और दुनिया का जाल समझ कर उन की परवाह नहीं करता और अपने कुल्ल-मालिक के प्रेम में मस्त और मगन रहता है और वह सच्चा मालिक हर वक़्त उसकी रक्षा और सम्हाल करता है। इस बात की समझ और प्रतीत दुनियादारों को जिनका प्रेम हैवानी और हरजाई है, नहीं आ सकती। हैवानी और हरजाई से मतलब यह है कि अनेक जीवों और पदार्थों के मोह में फँसे रहते हैं और अपने सच्चे मालिक की कभी सुध भी नहीं लेते।

१५० - जिस किसी के मन में गुरु और मालिक के चरनों का प्रेम है, उसका काम सब तरह से बना हुआ है। लेकिन जिसके मन में डर है और कुछ शौक़ भी रखता है, वह भी सतगुरु से मिल कर एक दिन प्रेमी हो जावेगा। पर वह लोग जिनके हृदय में न प्रेम है और न डर है बिल्कुल रूखे और फीके हैं। उनको सच्चा परमार्थ कभी हासिल नहीं होगा।।

(२८) सरन की महिमा

१५१ - जीव निहायत निबल और कमज़ोर है। अपने बल से मन और इन्द्रिय और काल और कर्म का मुक़ाबला नहीं कर सकता है और माया और उसके सामान का यहाँ इस क़दर ज़ोर और शोर है कि उससे

बचाव बग़ैर मदद और दया समर्थ पुरुष के, किसी सूरत में मुमकिन नहीं हैं।।

१५२ - पुराने वक़्तों में बड़े बड़े बैरागवान और ताक़त वाले हो गये, पर माया ने उन पर भी अपना चक्कर डाला और उनको अपने लपेट में ले आई। फिर जीवों की जो कि निपट मन और माया के आधीन हैं क्या ताक़त है कि उनकी और अनेक प्रकार के भोगों की जो कि उन्होंने दुनिया में रचे हैं, झटक झेल सकें।।

१५३ - सब जीवों को ज़रा ग़ौर करने से मालूम हो सकता है, बल्कि उनके रोजमर्रे का तजरुबा और इम्तिहान है कि माया का कारख़ाना नाशमान और धोखे का असबाब है। लेकिन उसमें ऐसी खैंच शक्ति और लुभाव शक्ति रक्खी है कि जान बूझ कर जीव उसमें फँसते चले जाते हैं और उसी गिरिफ़्तारी की चाह बढ़ाते हैं और उसके वास्ते जतन करते हैं।।

१५४ - बानी और बचन से दुनिया का हाल, जैसा कुछ कि है, हर कोई समझ सकता है और विद्या और बुद्धिवान अपनी किसी क़दर ज़ाहिर में दुरुस्ती भी रखते हैं, लेकिन जब मन और माया का किसी वक़्त जोर होता है, यानी अनेक तरह के भोग सन्मुख आते हैं, और संसार की मान बड़ाई और प्रभुता लुभाती है, उस वक़्त सब झोका खा जाते हैं और माया और उसके पदार्थों के अधीन हो जाते हैं।।

१५५ - इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि जिस मुक़ाम पर पिंड में जीव की बैठक है और जहाँ मन और इन्द्रियों और पाँचों दूतों का ज़ोर से चक्कर चल रहा है, वही मुक़ाम गिरिफ़्तारी और फँसाव का है।

सो जब तक जतन करके वह स्थान नहीं छोड़ा जावेगा, तब तक जीव मन और इच्छा और माया और ममता के पंजे से छूट नहीं सकता।।

१५६ - पिछले वक़्त में जोगी और जोगीश्वरों ने प्राणों को रोक कर और ब्रह्माण्ड में चढ़ा कर उस गिरफ़्तारी के स्थान से जीव को न्यारा किया, पर ब्रह्माण्डी मन और ईश्वरी माया के घेर से बाहर नहीं निकले और इस सबब से ब्रह्माण्डी मन और माया के झकोले सहते रहे और जनम मरन के चक्कर से चाहे ब-देर हुआ, उनका बचाव नहीं हुआ। अलबत्ता पिंडी मन और जीवी माया पर ग़ालिब रहे।

१५७ - लेकिन प्राणायाम का अभ्यास इस क़दर कठिन और उसके संजम ऐसे मुशकिल हैं कि जीवों की ताक़त नहीं है कि उसका अभ्यास दुरुस्ती से कर सकें। जो जोगी और जोगीश्वर पिछले वक़्त में गुज़र गये, वे ईश्वर कोटि थे। इस सबब से उनसे प्राणायाम का अभ्यास बन पड़ा, पर इनकी तादाद बहुत कम यानी तीन जुग में सिर्फ़ बीस पच्चीस स्वरूप प्रकट हुए। अब इस ज़माने में कुल्ल जीव, जीव-कोटि में हैं और इस वास्ते वे प्राणायाम के अभ्यास के हरगिज़ लायक नहीं हैं। जो कोई मन हठ से इस क़िस्म की कार्रवाई शुरू करेगा, वह चंद रोज़ में ही बीमार हो जावेगा और जो ज़्यादती करेगा तो जान के नुक़सान का ख़ौफ़ है।।

१५८ - जो कि पिछले वक़्त के महात्माओं ने सिवाय प्राणायाम के और कोई जुगत, जीव के पिंड से न्यारा करने और ब्रह्माण्ड में चढ़ाने की नहीं वर्णन करी

और प्राणायाम का अभ्यास किसी से, विरक्त होवे चाहे गृहस्थ, बन नहीं सकता, फिर उद्धार का रास्ता भी बन्द हो गया। अब जीव बजाय उलटने के अपने निज घर की तरफ़, चौरासी में कसरत से उतरने लगे और जो इस लोक में पैदा हुये, वह भी कसरत से कष्ट और क्लेश अनेक तरह के भोगने लगे।।

१५९ - ऐसी हालत जगत की देख कर यानी जीवों को महा कष्ट और क्लेश में गिरिफ़्तार मुलाहिज़ा करके, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धारन करके प्रकट हुये और अति दया करके उपदेश सहज जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग का देकर, जीवों को समझाया कि थोड़ी सी मेहनत अभ्यास की गवारा करके, वे अपने निज घर में जो कुल्ल-मालिक का धाम है, उनकी मेहर और दया से पहुँच कर, काल और कर्म और मन और माया के जाल से छूट सकते हैं।।

१६० - जो जुगत अभ्यास की बताई, वह ऐसी सहज कर दी कि जिसको गृहस्थ और विरक्त और लड़का और जवान और बूढ़ा और स्त्री और पुरुष और पढ़ा हुआ और अनपढ़ सब आसानी से कर सकते हैं और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद, इसी ज़िंदगी में अपने मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाव अपने घट में देख सकते हैं और उसी क़दर अपने आपे को संसार और पिंड से न्यारा होता हुआ परख सकते हैं।।

१६१ - और एक बढ़ की महिमा राधास्वामी मत की यह है कि बग़ैर छोड़ने घरबार और रोज़गार के, हर एक जीव चाहे मर्द होवे या औरत, सतसंग में शामिल

होकर और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मार्ग की कमाई कर सकते हैं। सिवाय इस अभ्यास के और कोई जुगत निज घर में जाने की क़तई नहीं है बल्कि रची भी नहीं गई।।

१६२ - इस जुगत की कमाई के वास्ते कोई क़ैद वक़्त या नहाने धोने की नहीं है। जिस वक़्त फ़ुर्सत होवे और मन चाहे, उसी वक़्त एकान्त जगह में पलंग या चौकी या गद्दी पर बैठ कर अभ्यास हो सकता है, चाहे रात होवे या दिन, खाने से पेश्तर या दो तीन घंटे बाद खाना खाने के, अभ्यास में बैठ सकते हैं। एक वक़्त में कम से कम आध घंटा या जो फ़ुरसत कम होवे तो बीस मिनट अभ्यास करना चाहिये और भजन में तवज्जह आवाज़ पर और सुमिरन ध्यान में तवज्जह रूप पर रखना चाहिये और जब तक रूप प्रकट न होवे, तब तक उसका ख़्याल करके ध्यान करना चाहिये और वास्ते आसानी अभ्यास के दो या तीन लुक़मे मामूली मुक़र्ररा खाने से कम खाना चाहिये ताकि सुस्ती न आवे और स्वाँस लेना बे-तकल्लुफ़ जारी रहे।।

१६३ - हरचंद सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास दया करके निहायत दरजे का आसान कर दिया है पर बिना सच्चे शौक़ और मेहर और दया संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के कोई दुरुस्ती के साथ रास्ता तै नहीं कर सकता। इस वास्ते कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन, प्रीत प्रतीत के साथ हर एक शख़्स को जो राधास्वामी मत में शामिल होवे दृढ़ करना चाहिये, तब अभ्यास दुरुस्त बनेगा और रास्ता जल्दी तै होगा।।

१६४ - दुनिया के पदार्थों और भोगों से पूरा बैराग करना और चरनों में गहरा अनुराग लाना, कुछ आसान काम नहीं है। लेकिन जो कोई सच्चे मन से राधास्वामी दयाल की सरन लेगा, उसका सब काम आसानी से बन जावेगा यानी मुवाफ़िक़ ज़रूरत के उसको दोनों बैराग और अनुराग बख़्शिश में मिलेंगे और संत सतगुरु उसकी सुरत को अख़ीर वक़्त पर आप अपनी गोद में बैठा कर ऊँचे देश में ले जावेंगे और दो तीन या चार जनम में धुर पद में पहुँचावेंगे।

१६५ - जो कोई अपना बल लेकर अभ्यास करेगा और संत सतगुरु की दया का आसरा न लेगा, उससे अभ्यास पूरा २ नहीं बनेगा क्योंकि काल और माया के विघ्नों को वह नहीं हटा सकेगा और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद अहंकार में भर कर अपनी तरक़्क़ी को आप बन्द कर देगा यानी मान बड़ाई और प्रतिष्ठा की चाह लेकर, जीवों की तरफ़ मुतवज्जह हो जावेगा और अपने नफ़े और नुक़सान का तमीज़ नहीं कर सकेगा।।

१६६ - सरन की बराबर कोई जतन रास्ता सुखाला और जल्द तै करने का नहीं है। इसमें हर वक़्त रक्षा संग रहती है और विघ्न दूर रहते हैं और प्रेम और दीनता बढ़ती जाती है कि जिससे अभ्यास में रस और आनंद नित्त मिलता है।।

१६७ - सरन की महिमा जिस कदर कही जावे, थोड़ी है। हर एक को इसकी क़दर नहीं मालूम है। हर एक अपना २ पुरुषार्थ ज़ोर के साथ करता है, और फिर अपने बल से मन इंद्रिय और इच्छा वग़ैरे पर ग़ालिब नहीं हो सकता और किसी वक़्त में माया के

चक्कर में आकर रास्ते में थक कर रह जाता है या संसार की तरफ़ झोका खाकर उलट आता है।।

(२१) हिदायत यानी उपदेश कुल्ल जीवों को

१६८ - इस बचन को ग़ौर के साथ पढ़ने से मालूम होगा कि हर एक जीव पर चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपनी सुरत के कल्यान के यानी निज घर में उलटा कर पहुँचाने के लिये, लाज़िम और फ़र्ज़ है कि पिंड में उसकी बैठक के मुक़ाम से, मन और सुरत को अंतर में ऊँचे की तरफ़ सरकाने का जतन, सुरत शब्द मार्ग के मुवाफ़िक़ संत सतगुरु से उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत रोज़मर्रा करे और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर, उनकी दया के आसरे कार्रवाई करे और प्रेमाभक्ति की रीत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत बर्ताव करे, तो रफ़्ते २ एक दिन निज धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और अमर आनंद को प्राप्त होगा।।

१६९ - शब्द सब जगह भरपूर है लेकिन बिना दर्शन और उपदेश संत सतगुरु के, कोई उसका भेद या अभ्यास की जुगत जान नहीं सकता। इस सबब से पहिले संत सतगुरु और उनकी संगत का खोज ज़रूर है और जब वे मिल जावें तब उनका सतसंग गहरा करके और उपदेश लेकर अभ्यास जारी करना चाहिये।।

१७० - मालूम होवे कि संत अथवा राधास्वामी मत में माँस और मदिरा और कुल्ल नशे की चीज़ों का खाना पीना मना है। यह दोनों अभ्यासी की अंतरमुख कार्रवाई में बहुत ख़लल डालते हैं।।

(३०) गोश्त खाने का नुक़सान

१७१ - गोश्त खाने से मन किसी क़दर मलीन और भारी और सख़्त और बे-रहम हो जाता है और तवज्जह उसकी बाहर और नीचे की तरफ़ झुकाव रखती है।।

१७२ - मुर्दा जिस्म किसी क़दर नापाक समझा जाता है। उसको छूकर लोग हाथ धोते हैं या स्नान करते हैं और हिन्दुओं में जो मुर्दे को आग देता है, वह तेरह दिन तक दुनिया के कारोबार से अलेहदा, परहेज़गारों के मुवाफ़िक़ गुज़रान करता है। तो अब ख़्याल करो कि मुर्दे के मांस को धोकर और डेगची में पका कर खाना, अपने हृदय को जानवरों का मसान और क़बरिस्तान बनाना हुआ कि नहीं। इससे ज़्यादा और क्या नापाकी होगी और फिर ऐसा मन अपने घट में ऊँचे देश यानी कुल्ल-मालिक के धाम की तरफ़ चलने के क़ाबिल कैसे हो सकता है।।

१७३ - सब कहते हैं कि मालिक का नूर और भेद हर एक मनुष्य के हृदय में धरा है। फिर जिस जगह कि जानवरों का मसान या कबरिस्तान बनाया गया, वहाँ वह नूर - पाक कैसे ठहर सकता है ?

१७४ - सच्चे परमार्थी अभ्यासी का मन नरम और मुलायम और निर्मल और दुनिया की ख़्वाहिशों से किसी क़दर ख़ाली होना चाहिये, तब मालिक के नूर यानी शब्द की धार उसमें उतरे और ठहरे और चरनों का प्रेम यानी इश्क़ पैदा होवे और जो मन की हालत बर - ख़िलाफ़ इसके है और उसमें इन्द्रिय भोगों की चाह की तरंगें उठती रहती हैं, तो वह क़ाबिल अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के यानी चढ़ाई ऊँचे की तरफ़ के कैसे

हो सकता है और उसमें मालिक के चरनों की भक्ति कैसे जागे और ठहरे ?

१७५ - कुल्ल जानवर ब-निसबत मनुष्य के ओछे और मलीन हैं, फिर उनके मांस का अहार करना और भी ज़्यादा मलीनता को पैदा करेगा और मन को ख़ियालात - फ़ासिद यानी मलीन तरंगों में भरमावेगा और उसकी परमार्थी कार्रवाई में भारी ख़लल पड़ेगा।।

१७६ - जबकि अनेक क़िस्म की ग़िज़ा जो कि ज़मीन से पैदा होती है जैसे अनाज और मेवा, तर और खुश्क, मौजूद है और ब-निस्बत गोश्त के सस्ता मिल सकता है और मुआफ़िक़ क़ौल डाक्टरों और हकीमों के, मनुष्य को ज़्यादा ताक़त दे सकता है, फिर क्या ज़रूर है कि दूसरे जानवरों को क़तल करके, उनके मांस का अहार किया जावे और इस क़िस्म की चीज़ों में से घी और दूध और मिठाई और गेहूँ चना उर्द और मसूर हैं जिनके इस्तेमाल से बहुत ताक़त पैदा हो सकती है।।

१७७ - संसारी जीवों को जो कि परमार्थ यानी अपने जीव के कल्यान की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं और रात दिन दुनिया के कारोबार और अपने भोगों की चाह के पूरा करने के जतन में ख़र्च कर रहे हैं, इख़्तियार है कि वे चाहे सो खावें। पर सच्चे परमार्थी को जो अपने घट में अभ्यास करके मालिक का दर्शन चाहता है, ऐसी ग़िज़ा के खाने से जो उसके अभ्यास में ख़लल डाले, ज़रूर परहेज़ करना चाहिये। नहीं तो अभ्यास में जैसा रस चाहिये, नहीं मिलेगा और न दुरुस्ती से मन और सुरत की चढ़ाई होगी।।

(३१) शराब और भंग और दूसरे नशों के खाने पीने का नुक़सान

१७८ - डाक्टर और हकीम और सब दुनिया के लोग कहते हैं कि नशे की चीज़ खाने या पीने से दिमाग़ में ख़लल पैदा होता है, और जिस्म के ऐज़ा-य-रईसा यानी बड़े और ख़ास अंगों को जैसे दिल और जिगर और मेदा वग़ैरे को ख़ास नुक़सान पहुँचता है और नशे की ज़्यादती से और सख़्त बीमारियाँ पैदा होकर, नशेबाज़ की ज़िंदगी को ख़राब कर देती हैं और अक़्ल में भी फ़ितूर[1] आता है, बाज़ी जगह जान का नुक़सान हो जाता है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को नशे की चीज़ों से आम तौर पर परहेज़ करना मुनासिब है।।

१७९ - ख़ास बीमारियों में जो डाक्टर या हकीम शराब या अफ़यून वग़ैरा का थोड़े मिकदार के साथ इस्तेमाल करावें, तो कुछ मुज़ायका[2] नहीं है, उसमें नशा नहीं पैदा होगा या बहुत थोड़ा होगा और चंद रोज़ के वास्ते यानी जब तक कि बीमारी दूर न होवे, वह कार्रवाई जारी रहेगी।।

१८० - जितने नशे हैं, वह या तो मन और इन्द्रियों की धारों को भोगों की तरफ़ रुजू करते हैं या मन और इन्द्रिय और बुद्धि को शिथिल और बेकार कर देते हैं कि फिर कार्रवाई दुनिया और परमार्थ की मुतलक़ दुरुस्त नहीं बन सकती है। यह दोनों हालतें परमार्थी अभ्यास के वास्ते नुक़सान करने वाली हैं।।

१८१ - तो कोई नशा पी कर अभ्यास करेगा,

१-न्यूनता, घाटा, खराबी। २-हर्ज, हानि।

उसको रस नहीं आवेगा बल्कि गुम यानी लै हो जावेगा और बाद जागने के यह समझेगा कि मुझ से अभ्यास ख़ूब बना और किसी क़िस्म की गुनावन या ख़्याल पेश न आये। और ऐसी उलटी समझ से अहंकार पैदा होगा और वह उसका भारी नुक़सान करेगा।।

१८२ - बाद नशा खाने या पीने के देर तक उसका असर रहता है और फिर ख़ुमार की हालत में सुस्ती और काहिली देर तक रहती है कि जिसके सबब से कोई कार्रवाई नशेबाज़ आदमी से दुरुस्त नहीं बन सकती।।

१८३ - अक्सर नशेबाज़ आदमी बे वास्ते अपनी बे अक़्ली से, ज़रा ज़रा सी बात पर गुस्से में भर कर तकरार और लड़ाई कर बैठते हैं और झगड़े बखेड़े को बढ़ाते हैं। यह आदत उनके मन को ऐसा ख़राब कर देती है कि वे क़ाबिल सुनने और समझने परमार्थी या नसीहत के बचनों के नहीं रहते और जो कोई उनको नशा पीने से रोके या समझौती देवे, उसके दुश्मन बन जाते हैं और उसको किसी न किसी तरह दुख पहुँचाना चाहते हैं। यह स्वभाव परमार्थ के बिल्कुल बर - ख़िलाफ़ है।।

१८४ - नशेबाज़ आदमी के क़ौल और फ़ेल यानी उसकी बात और चाल का पूरा ऐतबार नहीं हो सकता क्योंकि वह नशे या ख़ुमार की हालत में, जिस तरफ झुक जावे, अपनी हद्द और ताक़त से ज़्यादा बातें बनाता है और पीछे उनको भूल जाता है और उनका ख़्याल भी नहीं करता। यह आदत भी परमार्थी चाल के ख़िलाफ़ है।।

(३२) तितिम्मा यानी आख़िरी बचन

१८५ - मालूम होवे कि यह बचन मनुष्यों के उपदेश के वास्ते है और वे इस को सुन कर और समझ कर, ज़रूर थोड़ी बहुत इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने को तैयार होवेंगे और संतों के बचन की जाँच और परख अपने अंतर में अभ्यास के साथ करेंगे और फिर थोड़ा रस और आनन्द पाकर, अपनी प्रतीत और प्रीत संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में दिन दिन बढ़ाते जावेंगे कि जिसको उनकी रहनी से, हर एक शख़्स जो उनके संग रहता है, किसी क़दर परख सकेगा।।

१८६ - लेकिन वे लोग कि जो सूरत में मनुष्य हैं, पर सीरत यानी स्वभाव और रहनी उनकी मुवाफ़िक़ पशुओं के है, इस बचन को सुन कर अपने मन में सख़्त नाराज़ होंगे और संतों के उपदेश और बानी और बचन में, अपनी ओछी और नाक़िस समझ से कसरें निकालने को तैयार होंगे और संत सतगुरु और उनके सतसंगियों को, हर एक तरह के इलज़ाम और बुराई लगावेंगे और बे-ख़ौफ़ उनकी जा-ब-जा निंदा करेंगे और जो कोई संतों के बचन को मानेगा या मानने को तैयार होगा, उसको धमका कर रोकेंगे और उससे एक क़िस्म की अदावत पैदा करके उसकी हँसी उड़ावेंगे। ऐसे लोगों को यह बचन दिखाना या सुनाना मुनासिब नहीं है।।

१८७ - यह लोग निपट दुनियादार हैं और अपनी मौत और परलोक का कुछ फ़िक्र नहीं करते और उनको पशु या हैवान की सीरतवाला इस सबब से कहा

गया कि वे पशुओं के मुवाफ़िक़ मेहनत करके, अपने तईं और अपने कुटुम्ब को खिलाते पिलाते हैं और हमेशा धन और भोगों की प्राप्ति के वास्ते जतन सोचते और करते रहते हैं। लेकिन सच्चे मालिक और करतार का खोज कभी नहीं करते। देखो यही हाल पशुओं का है कि मेहनत करके आप खाते हैं और अपने पालने वालों को खिलाते हैं और इन्द्रियों के विषयों का भोग भी करते हैं, पर कुल्ल-मालिक को नहीं चीन्ह सकते और न अपने जीव के निरवार के वास्ते कुछ कार्रवाई कर सकते हैं। ऐसे लोगों की आदत है कि जो कोई परमार्थी बचन उनको सुनावे, उसकी हँसी उड़ाते हैं और बुरा भला कहते हैं और अपनी आख़िरत यानी परलोक के सुधार के वास्ते मुतलक़ तदबीर नहीं करना चाहते, बल्कि कुल्ल-मालिक की मौजूदगी में भी, बाज़ों के मन और अक़्ल शक और शुभा पैदा करते हैं और दूसरों को भी जो उनकी सलाह माने, गुमराह करते हैं यानी परमार्थ की कार्रवाई से बाज़ रखते हैं।।

१८८ - ऐसे लोगों की सोहबत से परमार्थी आदमी को हमेशा बचना चाहिये, नहीं तो उसकी समझ बूझ और कार्रवाई में यह लोग अपनी नाक़िस और पापों की भरी हुई बुद्धि से अनेक तरह के विघ्न और ख़लल डालेंगे और जो इत्तिफ़ाक़ से उनका संग कुछ अर्से तक रहा, तो ज़रूर उसको अपनी सोहबत में मिला कर हैवानी स्वभाव और कार्रवाई सिखा कर ख़राब कर देंगे।।

* * * * * *

राधास्वामी सहाय

शब्द

मन तू सुन ले चित दे आज।
राधास्वामी नाम की आवाज़।।
अनहद बाजे घट घट बाजें।
अनुरागी सुन सुन आराधें।।
प्रेम भक्ति का लेकर साज।। १ ।।
तीन लोक में अनहद राजे।
सत्तलोक सत शब्द बिराजे।।
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज।। २ ।।
शब्द की महिमा संतन गाई।
जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई।।
कर दिया उनका पूरा काज।। ३ ।।
राधास्वामी नाम हिये में धारा।
सोई जन हुआ सब से न्यारा।।
त्याग दई कुल जग की लाज।। ४ ।।
राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी।
राधास्वामी तिसको लिया सुधारी।।
दान दिया वाहि भक्ती दाज।। ५ ।।
राधास्वामी नाम है अपर अपारा।
राधास्वामी नाम है सार का सारा।।
जो सुने सोइ करे घट में राज।। ६ ।।

* * * * * *

बचन पैंतीसवाँ

मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है और जिसकी ऐसी हालत है, वही गुरुमुख है और वही निज धाम पावेगा

१ - रचना में कुल्ल जीव यानी सुरतें कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी बच्चे हैं और उन सब पर आम तौर की दया है और सब को दुनिया का सामान मुनासिब तौर पर दिया है।

२ - इन सुरतों के तीन दरजे हैं-उत्तम, मध्यम और निकृष्ट। (१) उत्तम वह हैं जिन के मन में दुनिया का हाल नाशमानता और उसके पदार्थों का ओछापन देख कर, खोज कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम का जो कि अमर और अजर और आनन्द और प्रेम का भंडार है और शौक़ उसके प्राप्ति का पैदा हुआ है। (२) मध्यम वह सुरतें हैं कि जिनको जो सामान दुनिया का मिला है, उसमें प्यार है और उसकी तरक़्क़ी हाल में और आइन्दा को बाद छोड़ने इस देह और देश के चाहते हैं और इस मतलब से परमेश्वर और अवतारों और देवताओं का आराधन करते हैं और कोई २ इनमें से मुक्ति की चाह उठा कर परमेश्वर के लक्ष स्वरूप से मिलना या उसके लोक में उसके सन्मुख रहना चाहते हैं। (३) तीसरे निकृष्ट सुरतें वह हैं कि जो दुनिया के भोग बिलास में मगन हैं और जो कुछ कि सामान उनको मिला है, उसी को ग़नीमत समझ रहे हैं और उसको बढ़ाना चाहते हैं और आइन्दा का यानी इस देह

के छोड़ने के बाद का कुछ ख़ास तौर पर फ़िक्र और जतन नहीं करते हैं।।

३ - उत्तम दरजे की सुरतें जो सच्चे मालिक के चाहने वाली हैं, वह राधास्वामी दयाल की ख़ास प्यारी हैं और उन पर ख़ास दया होती रहती है और बाक़ी सुरतों पर आम तौर की दया दरजे-ब-दरजे जारी रहती है।।

४ - उत्तम सुरतें कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का पता और भेद और जुगत चलने और मिलने की दरियाफ़्त करना चाहती हैं। लेकिन यह तहक़ीक़ात थोड़ी बहुत तसल्ली देने के मुवाफ़िक़, सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के और किसी मत वालों से नहीं हो सकती है यानी सिर्फ़ संत सतगुरु या उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से यह भेद मिल सकता है और बाक़ी के जीव इस हाल से बिल्कुल बे-ख़बर हैं या पूरी वाक़फ़ियत नहीं रखते और न उस पर अमल करते मालूम होते हैं।।

५ - उत्तम जीव का मेला संत सतगुरु के संग मौज से वक़्त मुक़र्रर पर होगा, उसको बहुत कोशिश तलाश करने की नहीं करनी पड़ेगी और जब वह उनके सन्मुख आवेगा, तब बचन सुनते ही उसको शन्ति आवेगी और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी।।

६ - भेद सुन कर उत्तम सुरत यानी प्रेमी जीव को मालूम होवेगा कि कुल्ल-मालिक का धाम सब के परे है और सब से ऊँचा है यानी माया के घेर के पार है और उस देश में माया नहीं है और जो चैतन्य धार आदि में उस धाम से निकली, वही शब्द की धार है और वही

कुल्ल रचना की करतार है और जो कोई उलट कर निज धाम में पहुँचना चाहे, वह उसी धार को पकड़ कर यानी शब्द की धुन को सुनता हुआ चले, तो वह एक दिन संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर से निज धाम में पहुँच सकता है।।

७ - प्रेमी जीव को संत सतगुरु के संग से यह भी ख़बर पड़ेगी कि रचना में तीन दरजे हैं। पहिला कुल्ल-मालिक का देश, जहाँ चैतन्य ही चैतन्य है और माया नहीं है और दूसरा ब्रह्म और माया देश, जहाँ निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया की मिलौनी से रचना हुई और जिसको ब्रह्मान्ड कहते हैं और तीसरा जीव और इच्छा देश, जहाँ निर्मल चैतन्य और मलीन माया की मिलौनी से रचना हुई और जिसको पिंड कहते हैं।।

८ - इसी देश से जीव संतों का सतसंग और उनके उपदेश की कमाई करके, पहिले ब्रह्मान्ड में और फिर सत्तपुरुष राधास्वामी देश में जा सकते हैं।।

९ - संत सतगुरु का उपदेश यही है कि सुरत को शब्द में लगा कर चढ़ाना चाहिये और इसको सुरत शब्द योग कहते हैं और जो कि मन और माया का ज़हूर दूसरे दरजे से हुआ है और पिंडी मन ब्रह्माण्डी मन की अंस है, सो यह मन और इन्द्रियाँ भी सुरत के संग उलट कर, अपने अपने निकास के स्थान पर पहुँचेंगी।।

१० - सुरत का मन और माया के देश से न्यारे हो कर अपने निज घर में पहुँच कर सच्चे माता पिता कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का बिलास और आनन्द को प्राप्त होना, सच्चा और पूरा उद्धार

कहलाता है यानी जनम मरन और दुख सुख और कष्ट और क्लेश से क़तई छुटकारा हो जाना और अमर और पूरन आनन्द को प्राप्त हो कर निज धाम में जो अमर अजर और प्रेम और आनन्द का अथाह और अपार भंडार है, विश्राम पाना।।

११ - तीसरे दरजे की रचना में दुख विशेष और सुख कम है और दूसरे दरजे की रचना में सुख विशेष और दुख बहुत कम है और पहिले दरजे में सुख ही सुख और आनन्द ही आनन्द है और दुख और क्लेश का नाम भी नहीं हैं।।

१२ - इस लोक में जीवों का बंधन देह और इन्द्रिय और मन के साथ अपने अंतर में और बाहर की तरफ़ कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और बहुत से जीव जिनके साथ जब तब काम पड़ता है और भोगों और पदार्थों वग़ैरे में हो गया है और इन्हीं बंधनों के सबब से दुख सुख भोगना पड़ता है। जो कि कुल्ल रचना यहाँ की ओछी और नाशमान है, इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि यहाँ कोई जीव या कोई चीज़ इस क़ाबिल नहीं है कि उसके साथ मन का बंधन किया जावे, सिर्फ़ कारज मात्र या ज़रूरत मात्र उनके साथ मेल और मिलाप करना चाहिये और उसी मुवाफ़िक़ हर एक के साथ अपना बर्तावा दुरुस्त करना चाहिये, जैसे कि कोई आदमी परदेश में रह कर हर एक से प्रीत भाव करता है, लेकिन अपने घर की याद ख़ूब रखता है और जब मौक़ा मिलता है, तब अपने वतन को बहुत ख़ुशी के साथ जाता है, इन परदेशियों की मुहब्बत उसको ज़रा नहीं अटका सकती।।

१३ - ज़्यादा मोह में ज़्यादा दुख सहना पड़ेगा, क्योंकि एक दिन वह बंधन काल ज़बरदस्ती तोड़ेगा।।

१४ - हर एक बड़े दरजे में कितने ही छोटे दरजे हैं। सो संत फ़रमाते हैं कि जैसे इस लोक की रचना के बंधनों का ज़िक्र ऊपर किया गया, ऐसे ही थोड़ा बहुत सब दरजों में पिंड देश और ब्रह्माण्ड के समझना चाहिये यानी इन दरजों की रचना में दिल लगाने और बंधन करने से, प्रेमी अभ्यासी आगे क़दम बढ़ाने से रह जावेगा यानी अपने निज घर में नहीं पहुँचेगा और जो कि यह देश माया के घेर में हैं, इस वास्ते चाहे देर से होवे या सबेर जनम मरन का चक्कर जारी रहेगा।।

१५ - जो कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम और आनन्द के भंडार हैं और जीव, उनकी अंस, भी प्रेम रूप है और जो चैतन्य धार कि आदि में कुल्ल-मालिक के चरनों से निकस कर, रचना करती हुई नीचे उतरी है, वह भी शब्द और प्रेम की धार है, इस वास्ते ज़ाहिर है कि जीव से कोई काम संसारी या परमार्थी, बग़ैर प्रेम या इश्क़ या शौक़ के, नहीं बन सकता। इसलिये संतों ने अपने मत और उपदेश में प्रेम की मुख्यता रक्खी है यानी बग़ैर प्रेम के निज घर का रास्ता तै नहीं हो सकता और जिस मत में कि प्रेम यानी भक्ति की मुख्यता नहीं है, वह मत और उसके अभ्यास का तरीक़ा ख़ाली समझना चाहिये।।

१६ - जोगी और जोगीश्वरों ने भी उपासना यानी भक्ति की ज़रूरत, वास्ते तै करने रास्ते के, बयान की, लेकिन वह उपाशना उन्होंने रास्ते के मुक़ामों के धनी और मालिकों की क़ायम रक्खी। पर जो कि उन सब का अभाव होता देखा, इस वास्ते अपने मत और

उपदेश में प्रेमाभक्ति की मुख्यता नहीं की और ज्ञान को मुख्य ठहराया यानी बग़ैर ज्ञान के मुक्ति का प्राप्त होना सही नहीं ठहराया और ज्ञान से मतलब यह है कि अभ्यासी जो भक्ति करके ईश्वर या ब्रह्म के मुक़ाम तक पहुँचा है, वहाँ न ठहरे और ब्रह्म या ईश्वर के लक्ष स्वरूप में जो अरूप और निराकार है, मिल कर अपने आपे को उसमें गुम कर दे, ताकि फिर जनम न होवे और परलय और महा परलय की चोट से बच जावे, क्योंकि ईश्वर और ब्रह्म के लोक का परलय और महा-परलय में अभाव हो जाता है।।

१७ - संतों ने जो प्रेमाभाक्ति की शुरू से आख़िर तक मुख्यता करी उसका सबब यह है कि उनका भगवंत सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल हमेशा क़ायम है और किसी क़िस्म की परलय का असर दयाल देश यानी पहिले दरजे में नहीं पहुँचता है।।

१८ - संत भी अपने प्रीतम कुल्ल-मालिक से जब चाहें तब मिल कर एक हो सकते हैं और फिर जब चाहें तब जुदा होकर दर्शनों का आनंद लेते हैं। इसको भेद भक्ति और अभेद भक्ति कहते हैं लेकिन जोगी और जोगीश्वर जिस पद में समाये उससे फिर न्यारे नहीं हो सकते, जब तक कि वक़्त उत्थान यानी फिर जनमने का न आवे।।

१९ - उत्तम जीव यानी प्रेमी सुरतों से संत सतगुरु फरमाते हैं कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करनी चाहिये यानी जिस क़दर कि उनकी प्रीत संसार और कुटुम्ब परिवार और धन माल वग़ैरे में है, उससे कुछ ज़्यादा मालिक के चरनों में होना चाहिये, तब रास्ता सुखाला और तेज़

चलेगा यानी जो मालिक की प्रीत का पल्ला ब-निस्बत दुनिया की प्रीत के पल्ले के कुछ भारी होगा, तब कोई विघ्न मन और माया और काल वग़ैरे का उनके अभ्यास में ख़लल नहीं डालेगा और अभ्यास भी सहज बनेगा। इसी को गुरूमुखता कहते हैं और गुरूमुख को कोई रोक और अटका नहीं सकता।।

२० - जो उत्तम जीवों की विशेष प्रीत चरनों में होगी, तब यह बात ज़ाहिर होगी कि उन्होंने सच्चे मालिक की कुछ पहिचान करी, और उसके चरनों का निश्चय धारा और फिर कुल्ल-मालिक उन पर दया भी सब से ज़्यादा और उनकी सम्हाल और रक्षा भी ज़्यादा करेंगे और उनकी सफ़ाई भी जल्द होगी और रास्ता भी जल्द तै होगा।।

२१ - मध्यम जीवो की तीन क़िस्में हैं। एक तो वे जो भोग बिलास और सामान दुनिया का ज़्यादा या बढ़ के दरजे का और अर्से तक क़ायम रहने वाला चाहते हैं और इस वास्ते स्वर्ग या बैकुंठ या औतारों और देवताओं के लोक का बासा चाहते हैं और जो कार्रवाई कि इस मतलब के हासिल होने के वास्ते मुक़र्रर है, उसको शौक़ के साथ करते हैं। दूसरे वे जीव जो ईश्वर या ब्रह्म के लोक में पहुँचने और अपने भगवंत के सन्मुख रहने की अभिलाषा करके भक्ति या इधर से बैराग अंग लेकर अभ्यास करते हैं, पर ऐसे जीव बहुत कम हैं और इस क़िस्म का अभ्यास भी नायाब और बहुत कठिन है और उसका साधन इस जुग में बनना मुशकिल बल्कि ना-मुमकिन है, सिर्फ़ संतों का तरीका अभ्यास का जीवों से बन सकता है। तीसरे वे जीव जो कि ईश्वर और ब्रह्म के स्वरूप और लोक का परलय महापरलय

में अभाव देख कर उसके अरूप में समाने का जतन करते हैं लेकिन वह जतन भी जैसा कि ऊपर कहा गया, निहायत कठिन है और इस ज़माने में दुरुस्ती से बन नहीं सकता। यह लोग पहिले ईश्वर या ब्रह्म की उपाशना या भक्ति करके स्वरूप के मुक़ाम तक पहुँचते हैं और फिर उसके लक्ष चैतन्य यानी अरूप में समाते हैं और इसी का नाम ज्ञान है।।

२२ - इन तीनों क़िस्म के जीवों का पूरा और सच्चा उद्धार नहीं होता यानी माया के घेर के पार नहीं जाते, क्योंकि इनको सच्चे मालिक और उसके धाम का भेद नहीं मिला और न इनके मन में उसकी प्रीत और प्रतीत आई। यह जीव पिछली टेक और पुराने वक़्त की जुक्तियों में बँधे रहते हैं और संत सतगुरु और उनके उपदेश में इन को भाव बिलकुल नहीं आता। इनमें से दूसरी और तीसरी क़िस्म के जीवों से, पुरानी करनी इस वक़्त में पूरे तौर पर नहीं बन पड़ेगी और इस वास्ते ईश्वर या ब्रह्म पद भी उनको हासिल नहीं होगा, जब तक कि संतों की सरन लेकर उनकी जुगत की कमाई नहीं करेंगे।।

२३ - तीसरे दरजे के यानी निकृष्ट जीवों से कोई परमार्थी कार्रवाई या जतन और जुगत वास्ते प्राप्ति सुख और ऊँचे मुक़ाम के, नहीं बन पड़ेगी। क्योंकि उनके मन में कुल्ल-मालिक या ईश्वर और ब्रह्म वग़ैरे की प्रतीत साधारन होगी और संसार की तरफ़ से चित्त हटाने की ताक़त उनको नहीं है क्योंकि उसके भोग बिलास में वे गहरा सुख मानते हैं और उन्हीं की चाह उठा कर दुनिया में मेहनत और मशक़्क़त करते हैं, आइन्दा का फ़िक्र करना ज़रूर नहीं समझते। यह जीव

निपट संसारी हैं और संतों के सतसंग के लायक़ मुतलक़ नहीं हैं और वे बारम्बार दुनिया में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ जनम धरते रहेंगे।।

२४ - जो जीव कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ति और सरन में आये, वे मालिक के अपनाये हुए और महा प्यारे हैं और दूसरे दरजे के जीवों पर भी ब्रह्म का ख़ास प्यार है और बाक़ी जीवों पर आम तौर की दया है। इसी के मुवाफ़िक़ रामायन में भी बचन है।।

भक्ति बिहीन बिरंच किन होई। सब जीवन सम प्रिय मम सोई।।
भक्तिवंत जो नीचहु प्रानी। प्राण से अधिक सो प्रिय मम बानी।।

२५ - ख़ुलासा इस बचन का यह है कि मालिक को भक्ति और दीनता प्यारी है। जो कोई उसके चरनों में सच्ची प्रीत और दीनता लावेगा, वही संत सतगुरु से मिल कर निज धाम में बासा पावेगा और संत सतगुरु उसको मौज से आप ही मिल जावेंगे और सबब ऐसी मौज का यह है कि कुल्ल-मालिक आप प्रेम का अथाह भंडार है और जीव जो उसकी अंस है, वह भी प्रेम स्वरूप है और जिस धार के वसीले से कि उनका सूत मालिक के चरनों में लगा हुआ है, वह भी चैतन्य और प्रेम की धार है। फिर जो कोई प्रेम अंग लेकर चलेगा, वही मालिक के सन्मुख पहुँचेगा। बिना प्रेम के उस रास्ते में गुज़र नहीं हो सकता है।

२६ - देखो कुल्ल रचना प्रेम से प्रकट हुई और प्रेम ही के आसरे ठहरी हुई है और इसी तरह दुनिया में भी कुल्ल जीवों को, बल्कि जानवरों को भी प्रीत और दीनता और सेवा प्यारी है। जो कोई जिसके साथ इस तौर से बर्ताव करता है, वह उसका प्यारा हो जाता है

और उस की हर तरह से सहायता और मदद करता है। फिर जो कोई जिस पद की सच्चे मन से भक्ति और सेवा करेगा, वह एक दिन उस पद में पहुँचेगा, जो भेदी से उस पद का पता और निशान और रास्ते का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, अपने घट में चलना शुरू करेगा। लेकिन सच्चे और कुल-मालिक का धाम उसी को मिलेगा, जो संत सतगुरु का सतसंग करके और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करेगा यानी शब्द के आसरे सुरत को अपने घट में निज धाम की तरफ़ चढ़ावेगा और मालूम होवे कि घट में रास्ता चाहे किसी स्थान तक का होवे, सिर्फ़ संतों की जुगत की कमाई से तै होवेगा। और कोई तरकीब से जो कोई इस समय में चलना चाहे तो रास्ता नहीं खुलेगा और चाल नहीं चलेगी।।

२७ - जो कि भक्ति के क़ायदे हर जगह इकसां हैं, चाहे जिसकी जो कोई करे, इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम है कि पहले तहक़ीक़ करे कि कौन सच्चा और कुल्ल-मालिक है, तब उसकी भक्ति में क़दम रक्खे, फिर उसको जितने पद रास्ते के हैं, सब मिल जावेंगे और अख़ीर में धुर धाम में बासा पावेगा। लेकिन कुल्ल-मालिक का भेद सिर्फ़ संत सतगुरु या उनके प्रेमी और अभ्यासी भक्त से मालूम हो सकता है, सो जिसके हृदय में सच्चा शौक़ कुल्ल-मालिक के दर्शन का है, उसको संत सतगुरु अपनी मेहर से आप मिल जावेंगे यानी उसका संजोग अपने चरनों में लगावेंगे और उसको उपदेश देकर अपनी दया से एक दिन कुल्ल-मालिक के देश में पहुँचावेंगे।।

* * * * * *

बचन छत्तीसवाँ

सुरत का आँखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना वास्ते सच्चे और पूरे उद्धार के निहायत ज़रूर है

१ - मालूम होवे कि जीव की बैठक जाग्रत के समय यानी दुनिया और देह का कारोबार करने के वक़्त मुख्य करके आँखों में है और इसी काले डइये और तिल को काजल की कोठरी कहा है, कि इस में बैठ कर कोई जीव साफ़ और पाक नहीं रह सकता, क्योंकि इस मुक़ाम पर मन और माया और इन्द्रियाँ और पाँच दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) का भारी ज़ोर और शोर है। चाहे कोई कैसा ही जतन करे, पर जब तक कि सुरत इस मुक़ाम से ऊपर की तरफ़ नहीं सरकेगी, तब तक बचाव और सफ़ाई मुमकिन नहीं है। बल्कि पूरी सफ़ाई और पूरा बचाव, काल और कर्म और मन और माया के हाथ से उस वक़्त होवेगा, जब कि सुरत सरक कर माया के घेर के पार पहुँच जावेगी और वह मुक़ाम सुन्न यानी संतों का दसवाँ द्वार है।।

२ - इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जो कोई इस काजल की कोठरी से निकलना चाहे और काल के कष्ट और क्लेश से निवृत्ति चाहे, उसको चाहिये कि संतों की जुगती यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से आहिस्ते आहिस्ते चलाना और चढ़ाना निज घर की तरफ़ शुरू

करे और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन का बल लेकर मन और माया को हटाता हुआ चले, तो उनकी मेहर और दया से एक दिन माया की हद्द के पार और वहाँ से सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुँच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा।।

३ - सुरत का आँखों के मुक़ाम से यकायक न्यारे होना आसान नहीं है, क्योंकि जब से जीव इस लोक में पैदा हुआ है, तब से अनेक बंधन जैसे मा, बाप, स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब, परिवार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और धन और माल वग़ैरे वग़ैरे के इसको बाहर लग गये हैं और अंतर में देह के अंग अंग में बँध गया है, सो जब तक यह सब बंधन संत सतगुरु का सतसंग और अंतर में शब्द का अभ्यास करके ढीले न होवेंगे, तब तक सुरत का ऊपर की तरफ़ को खिंचना आसानी के साथ मुमकिन नहीं है। जैसे गुब्बारे को जब आसमान में उड़ाना चाहते हैं, पहिले हवा से भरते हैं और जिस क़दर हवा भरती जाती है, वह ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर करता है, लेकिन जब तक कि उसकी डोरियाँ बँधी हुई हैं या उसको लोग पकड़े हुए हैं, तब तक ज़मीन को छोड़ करके चढ़ नहीं सकता। लेकिन जब वह डोरियाँ ढीली की जाती हैं और फिर छोड़ दी जाती हैं, तब वह बे-तकल्लुफ़ आसमान में अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ चढ़ता है, इसी तरह जब तक सुरत के बंधन जो देह और दुनिया के साथ बँधे हुए हैं, ढीले न होवेंगे, सुरत ऊँचे देश की तरफ़ बे-तकल्लुफ़ चढ़ नहीं सकती। अलबत्ता जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों

की प्रीत, और सब प्रीतों से ज़बर हो जावे तो आसानी से चढ़ाई मुमकिन है।।

४ - मोटे बंधन जगत के संत सतगुरु के सतसंग और भक्ति से कट जावेंगे और झीने यानी बारीक बंधन चित्त के, शब्द के अभ्यास से काटे जावेंगे, तब सुरत और मन निर्मल और निरबंध होकर अपने घर की तरफ़ चलेंगे। यह काम जल्दी का नहीं है। जैसे बंधन आहिस्ते आहिस्ते ढीले होते और कटते जावेंगे, ऐसे ही आहिस्ते आहिस्ते सुरत और मन ऊँचे देश की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे और एक दिन राधास्वामी दयाल की दया और संत सतगुरु की मेहर से काम पूरा बन जावेगा।।

५ - जिस क़दर बंधन जीव के दुनिया में हैं और जिस क़दर चाहें भोग बिलास की जिसके मन में धरी हैं, उसी क़दर उसके सुरत और मन इस तरफ़ को झोका खाते हैं और तपन सहते हैं। क्योंकि दुनिया के कुल्ल कामों में थोड़ी बहुत तपन पैदा होती है, पर दुनियादारों को वह तपन सुखदाई मालूम होती है, लेकिन अभ्यासियों की अंतरमुख कार्रवाई में विघ्न डालती है। इस वास्ते परमार्थी जीव को होशियार रहना चाहिये कि नये बंधन न बढ़ावे और संसार में फैलाने और भरमाने वाली तरंगें न उठावे।।

६ - कुल्ल काम देह और संसार के बग़ैर तपन यानी रगड़े और गरमी के जारी नहीं हो सकते और असली सीतलता रूहानी देश में है या रूह और शब्द की धार में। सो जो कोई अपने अंतर में उस धार से मिलने का थोड़ा बहुत जतन करेगा, वही थोड़ा बहुत सीतल होवेगा और तपन की भी ख़बर उसी को पड़ेगी।

७ - जैसे बिजली सब जगह और ख़ास करके बादल में मौजूद है लेकिन जब तक प्रकट न होवे, तब तक रोशनी या कोई और कार्रवाई उसकी धार की प्रकट और जारी नहीं हो सकती, इसी तरह निर्मल चैतन्य, शब्द स्वरूप से घट घट में मौजूद है, लेकिन जब तक अभ्यास करके प्रकट न होवे, तब तक उसके नूर और प्रकाश और आनन्द और सीतलता का असर, अपने अंतर में मालूम नहीं हो सकता और न उसकी क़दर और महिमा समझ में आ सकती है। इस वास्ते शब्द के प्रकट करने में जिस क़दर मेहनत और कोशिश की जावे, वह मुनासिब और ज़रूरी है।।

८ - जो कि यह कार्रवाई बग़ैर सतसंग और दया संत सतगुरु के जारी नहीं हो सकती, इस वास्ते मुनासिब है कि सब में पहिले खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का किया जावे।।

९ - जब जब सच्चे परमार्थी यानी प्रेमी जीव ज़्यादा इस लोक में जमा हो जाते हैं, तब संत सतगुरु भी वास्ते उनकी सम्हाल और बढ़ाने प्रेमाभक्ति और अंतर अभ्यास के, ज़रूर इस लोक में आते हैं और आम तौर पर सतसंग जारी फ़रमाते हैं और प्रेमियों का संयोग अपने साथ आप अपनी मौज से लगाते हैं यानी उनको कुछ दिक़्क़त ढूँढ़ने और तलाश करने की नहीं पड़ती है।।

१० - जब प्रेमी जीव संत सतगुरु के सन्मुख या उनकी संगत में जाता है, तब बचन सुनते ही फ़ौरन उसके हृदय में, प्रीत उनके चरनों की, और भी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और सुरत शब्द मार्ग

की, पैदा होती है और उपदेश लेकर वह अभ्यास में लग जाता है और थोड़ा बहुत रस अंतर में पाता है यानी जिस क़दर कमाई अगले जनम में कर आया है, उसी क़दर मन और सुरत उसके सिमट कर अंतर में चलते और चढ़ते हैं और आइंदा को तरक़्क़ी का रास्ता जारी हो जाता है और प्रीत और प्रतीत और उमंग और सेवा दिन दिन बढ़ती जाती है।।

११ - जो सतोगुनी जीव हैं और वे संसार और उसके हाल को देख कर और उससे किसी क़दर उदास होकर, कुल्ल-मालिक और उसके निज धाम का, वास्ते प्राप्ति अमर और पूरन आनंद के खोज करना चाहते हैं, उनका भी संत सतगुरु के सतसंग में मौज से संयोग लग जावेगा और बचन, महिमा और भेद के, सुन कर मगन हो जावेंगे और शौक़ के साथ उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में लग जावेंगे और प्रेमी जन के संग सहज में भक्ति के अंगों में बर्ताव करेंगे और जगत के जीवों का, और अपनी कुल मरजाद के तोड़ने का, ख़ौफ़ मन में न लाकर, संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ति में मरदाना क़दम रक्खेंगे और बाहर और अन्तर के सतसंग का थोड़ा बहुत रस पाकर उसको दया और मेहर के बल से बढ़ाते जावेंगे।।

१२ - लेकिन विषई और निपट संसारी जीव संतों के सतसंग में नहीं आवेंगे और जो किसी सबब से एक दो दिन के वास्ते आ भी गये तो ठहरेंगे नहीं, बल्कि बाहर निकल कर अपनी नादानी और कम - फ़हमी से निंदा करेंगे। ऐसे जीवों के संग से प्रेमी परमार्थियों को

हमेशा बचते रहना चाहिये और उनको अपने परमार्थ और भक्ति की कार्रवाई में विघ्न कारक समझ कर, उनसे नाता मुहब्बत का ढीला कर देना चाहिये।।

१३ - ख़ुलासा यह है कि जो अमर देश और परम आनंद की प्राप्ति चाहता है और दुख सुख और जन्म मरन और कष्ट और क्लेश के चक्कर से क़तई बचना चाहता है, उसको लाज़िम और ज़रूर है कि अपने सुरत और मन को निज घर की तरफ़ आहिस्ते आहिस्ते चढ़ाना शुरू करे और यह चढ़ाई सिर्फ़ संतों की जुगत की कमाई से मुमकिन है। और कोई जतन धुर धाम में पहुँचने का सिवाय सुरत शब्द मार्ग के रचा नहीं गया और संतों की मेहर और दया संग लेनी चाहिये क्योंकि बग़ैर इस के अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा।।

बचन सैतीसवाँ

दाता से दाता ही को माँगे और दात का आशिक़ न हो जावे, सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दात माँगे

१ - कुल्ल जीव दुनिया में दुनिया के सामान के प्राप्ति के लिये मेहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं और उसके मिलने पर मगन हो जाते हैं यानी जिस किसी के पास दुनिया के भोग बिलास और कुटुम्ब परिवार मौजूद हैं, वह अपने तईं बड़ भागी और सुखी समझता है।।

२ - कोई कोई जीव जो आइंदा की हालत का बाद मरने के थोड़ा बहुत यक़ीन करते हैं, वे स्वर्ग और बैकुण्ठ या बहिश्त के सुखों की चाह उठा कर वहाँ बासा पाने के वास्ते जतन करते हैं। लेकिन वहाँ हमेशा रहना नहीं हो सकता है, क्योंकि वहाँ के वासियों की भी उमर की तादाद मुक़र्रर है, बाद उसके गुज़रने के फिर जन्मेंगे और नई देह नीचे ऊँचे देश में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ धारन करेंगे।।

३ - कोई जीव बाद मरने के इसी लोक में वापस आकर सुख भोगने के इरादे से जतन करते हैं और ज़ाहिर है कि इस लोक में भी हमेशा कोई नहीं रह सकता। जिस क़दर यहाँ की उमर है, उसी अर्से तक सुख दुख का भोग कर सकता है। लेकिन उन लोगों को यह देह और देश ऐसा प्यारा लगता है कि वह बारम्बार इसी लोक में जनम लेना चाहते हैं।

४ - बाज़े जीव अवतारों या देवताओं की भक्ति इस नज़र से करते हैं कि उनके लोक में बासा पावें, लेकिन वह लोक भी हमेशा क़ायम नहीं रहते और न वहाँ के बासी हमेशा ठहर सकते हैं, अलबत्ता उमर बहुत बड़ी पा सकते हैं।।

५ - थोड़े जीव मुक्ति की प्राप्ति के वास्ते ईश्वर की भक्ति करते हैं और मुक्ति से मतलब यह है कि या तो ईश्वर के लोक में बासा पावें या उसके नज़दीक रहें या उसका सा रूप उनका भी हो जावे या उसकी ज़ात यानी लक्ष स्वरूप में जो अरूप और निराकार है, मिल जावें। इन जीवों का दरजा, और सभों से, जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया, बड़ा है लेकिन ईश्वर के लोक

का भी परलय या महा - परलय में अभाव हो जाता है और उस वक़्त उन जीवों का भी सिमटाव हो जावेगा और फिर रचना में आवेंगे।।

६ - मालूम होवे कि यह सब लोक, और भी अलोक पद, माया की हद्द में हैं। हरचंद ब्रह्माण्डी यानी ईश्वरी माया निहायत सूक्ष्म और शुद्ध है, लेकिन जो रचना उसके घेर में है, वह हमेशा एक रस क़ायम नहीं रहती। इस सबब से संतों ने फ़रमाया है कि जब तक जीव, दयाल देश में (जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है) न पहुँचेगा तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा और न वह अमर आनन्द को प्राप्त हो सकता है।।

७ - संतों के भगवंत कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल हैं। जो कोई उनकी भक्ति करेगा, वह संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर आहिस्ते आहिस्ते रास्ता तै करके, एक दिन सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में (जहाँ माया मुतलक़ नहीं है) पहुँचेगा और तब सच्चा निःचिन्त होकर परम धाम में विश्राम पावेगा और अमर आनन्द को प्राप्त होगा।।

८ - इस पद का भेद और उसके रास्ते और मंज़िलों का हाल तफ़सील के साथ, सिर्फ़ संत अथवा राधास्वामी मत में वर्णन किया है। और किसी मत में जो दुनिया में जारी हैं, इस पद का ज़िक्र भी नहीं है। इस सबब से जो जीव संत सरन में आवेंगे, वे ही अपने निज घर और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल का भेद पावेंगे और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके और एक

दिन रास्ता तै करके वहाँ पहुँचेंगे। बग़ैर संत सतगुरु की दया और मदद के, उस धाम में कोई नहीं जा सकता है और न कुल्ल-मालिक का भेद पा सकता है।।

९ - अब संत दया करके जीवों को समझाते हैं कि जिस क़दर रचना दयाल देश के नीचे और माया के घेर में है, वह सब दात में दाख़िल है। जो कोई वहाँ का सामान और बासा चाहेगा, वह दात में अटका रहेगा और सच्चे दाता से उसका मेल नहीं होगा। इस वास्ते जो जीव कि अपना सच्चा उद्धार चाहते हैं, उनको मुनासिब है कि सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने का इरादा दृढ़ करके, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करें, तब उनका कारज दुरुस्त बनेगा।।

१० - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल से उन्हीं को माँगना चाहिये या यह कि उनके चरनों का गहरा प्रेम माँगे। तब वह संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ सहज में रास्ता तै करके, एक दिन संत सतगुरु की दया से राधास्वामी धाम में पहुँच जावेगा।।

११ - मालूम होवे कि दात के चाहने वाले दात के आशिक़ हैं। दाता से प्रीत उनको, मतलब के वास्ते है। जब मतलब पूरा हो गया यानी दात मिल गई, तब वह प्रीत हलकी और ढीली पड़ जाती है यानी फिर दाता से इस क़दर सरोकार नहीं रहता। लेकिन कभी कभी कोई दात के चाहनेवालों में से दया और बख़्शिश पाकर और दाता के आशिक़ों का संग करके आप भी उनमें मिल जाता है और रफ़्ता रफ़्ता इश्क़ पैदा करके सच्चा प्रेमी और आशिक़ बन जाता है। बिना संत सतगुरु या प्रेमी जन के संग के यह बात हासिल नहीं हो सकती। इस

वास्ते वही जीव बड़ भागी है, जो संत सतगुरु के वसीले से दात चाहे और इस मतलब से उन की सेवा और सतसंग करना शुरू करे तो शायद उनकी मेहर की नज़र से बचन सुन कर उसकी चाह बदल जावे और बजाय दात के उनसे दाता ही को माँगे।।

बचन अड़तीसवाँ

वर्णन सबब डिगमिग हो जाने जीव का मालिक की भक्ति में और ढीले हो जाना सरन में और जतन वास्ते दूर करने उसके

१ - संत फ़रमाते हैं कि परमार्थी जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ाते रहें और सरन को मज़बूत करते रहें और अपना अभ्यास विरह या प्रेम अंग लेकर नित्त करते रहें।।

२ - इस कार्रवाई में अक्सर विघ्न पड़ जाते हैं यानी कभी कभी प्रीत और प्रतीत रूखी फीकी और भक्ति डिगमिग हो जाती है और कभी सरन ढीली हो जाती है।।

३ - सबब इन विघ्नों के यह हैं, (१) परमार्थी जीवों का मन कभी अपने हाल और चाल की तरफ़ नज़र करके यानी अपने विकार और कसरों को देख कर सुस्त और ढीला और निरास हो जाता है, (२) कभी दुनिया की चिंता और फ़िक्र या भोगों की तरंगों में वक़्त

अभ्यास के बह जाता है, (३) कभी मालिक की क़ुदरत की अचरजी कार्रवाई यानी वारदातें देख कर या उनका ख़्याल करके डर जाता है और उसका भेद और असली सबब न दरियाफ़्त होने से तरह तरह के वहम और संदेह उठा कर, अपनी प्रीत और प्रतीत में ख़लल डालता है, जैसे अकाल और मरी और वबा और तूफ़ान पानी और हवा का और भूँचाल और लड़ाई और तरह तरह के नुक़सान जान और माल वग़ैरे के।।

४ - पहिले सबब की निसबत यह कहा जाता है कि परमार्थी जीवों को ज़रूर चाहिये कि अपने मन और इंद्रियों की चाल को निरखते रहें और जहाँ तक मुमकिन होवे, उनको फ़िज़ूल और ना-मुनासिब और ना-जायज़ ख़्याल उठाने और उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने से रोकते रहें और जब कभी मन या इंद्रिय उनकी कहन न माने और क़ाबू में न आवें, तब चरनों में संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के फ़रियाद और प्रार्थना करें और उनकी दया का भरोसा रखकर ज़्यादा न घबरावें। बल्कि सरन का आसरा लेकर ऐसा यक़ीन करें कि संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल एक दिन ज़रूर अपनी दया का बल देकर मन और इन्द्रियों पर क़ाबू दिलवावेंगे और अपनी हालत पर थोड़ा शरमा कर ज़्यादा दीनता के साथ अभ्यास में मदद माँगें और सरन को ज़्यादा मज़बूत करें और किसी तरह की निरासता चित्त में न लावें यानी ऐसी समझ न धारें कि जब तक मन और इन्द्रिय क़ाबू में नहीं आवेंगे, उद्धार नहीं होगा। क्योंकि संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल समर्थ हैं और वे अपनी मेहर से सुरत को सब विघ्नों से बचा

कर, सुख स्थान में पहुँचा सकते हैं और मन और इन्द्रियों को भी एक छिन में मोड़ सकते हैं। इस वास्ते चाहिये कि अपनी कोशिश जिस क़दर मुमकिन होवे, वास्ते सम्हाल मन और इंद्रियों के, करते रहें, लेकिन भरोसा दया के बल का रखें।।

५ - दूसरे सबब की निसबत यह बयान किया जाता है कि परमार्थी जीवों को मुनासिब है कि दुनिया और उसके भोगों की इच्छा ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उठावें और फ़िज़ूल तरंगें रोकते रहें यानी जिस क़दर कि कार्रवाई निसबत अपने रोजगार या पेशे या घर बार के कारोबार और बिरादरी व्यवहार बग़ैरे के ज़रूरी है, उसकी बाबत ख़्याल सोच विचार या जतन करने में जिस क़दर ज़रूरी और मुनासिब मालूम होवे, कोई हर्ज नहीं है। लेकिन फ़िज़ूल ख़्वाहिश दुनिया के मान बड़ाई और भोगों की उठाना या किसी से झगड़ा बखेड़ा करना या ख़फ़ीफ़ कामों में बहुत तवज्जह और वक़्त ख़र्च करना या दूसरों के झगड़ों और मुआमलों में दस्त-अंदाजी करना, हमेशा बचाना चाहिये ताकि अपना मन वक़्त कार्रवाई परमार्थ के बेहूदा और फ़िज़ूल तरंगें न उठावे।।

६ - जो कोई अपने अभ्यास की हालत को जाँचता रहता है, उसको मालूम पड़ेगा कि दुनिया के ख़यालात और तरंगें किस क़दर विघ्न डालती हैं और असली परमार्थ की कार्रवाई से रोकती हैं तब वह आप होशियारी के साथ कार्रवाई करेगा और जहाँ तक मुमकिन होगा दुनिया के फ़िज़ूल और बे-फ़ायदे ख़यालों से बचता रहेगा।।

७ - जिस क़दर चित्त में संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम और अनुराग जागता जावेगा, उसी क़दर संसार और उसके कारोबार से चित्त उदास होता जावेगा और अंतरी बैराग मन में पैदा होता जावेगा और तब ही अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बनेगा।

८ - तीसरे सबब की निसबत सिर्फ़ इस क़दर बयान हो सकता है कि जीवों की समझ ओछी और महदूद है और इस सबब से क़ुदरत की कार्रवाई को जैसा चाहिये, नहीं समझ सकते। इसके वास्ते नज़र गहरी और समझ पूरी दरकार है और वह बग़ैर मन और सुरत की चढ़ाई के, ऊँचे देश में, हासिल नहीं हो सकती। इस वास्ते परमार्थी जीवों को अपने मालिक की क़ुदरत में दख़ल देना कि फ़लाना काम या मुसीबत आसमानी या ज़मीनी क्यों और किस वास्ते और किस सबब से वाक़ै हुई, नहीं चाहिये। अलबत्ते सख़्ती और तकलीफ़ और नुक़सान जीवों का देख कर मन डरता है और घबराता है और दुखी भी होता है, पर हुकुम और मौज मालिक की समझ कर, ऐसे वाक़आत पर अपने चित्त को चरनों की तरफ़ से हटाना या किसी तरह का अभाव लाना या मन में शक पैदा करना नहीं चाहिये बल्कि ख़ौफ़ खाकर अपने अभ्यास में, ज़्यादा होशियारी और सरन को ज़्यादा मज़बूत और दया का भरोसा पक्का करना चाहिये। क्योंकि जो कुछ हालत सख़्ती या नरमी की जीवों पर दुनिया में गुजर रही है, वह उनके पिछले अगले और हाल के कर्मों का फल है जिसका भेद कोई नहीं जानता है, सिर्फ़ उन कर्मों के फल को भोगते हुए जीवों को देखता है।।

९ - असल हाल यह है कि इस दुनिया में सच्चा आराम और चैन कहीं नहीं है और जो थोड़ा बहुत दिखलाई देता है, वह भी ठहराऊ नहीं है और जल्द दुख के साथ बदल जाता है। सच्चा सुख संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में है। जिस किसी को भाग से सतसंग और चरनों में थोड़ी बहुत लगन पैदा हो जावे, उसका अलबत्ते हर एक क़िस्म की चिन्ता और तकलीफ़ और दुख से किसी क़दर बचाव हो सकता है और चरनों का रस और आनंद लेकर सतसंग के बचनों को विचार करके थोड़ा बहुत अचिंत और बे-फ़िक्र और अपने अंतर में मगन रह सकता है और जो संसारियों और कर्मियों की हालत देख कर उसी के ख़यालों में अपने चित्त को फँसाता है, वह अक्सर दुखी सुखी रहेगा और कभी संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव और कभी अभाव लाकर, अपनी भक्ति और सरन को डावाँडोल रक्खेगा और अपने जीव के कारज के बनाव में विघ्न डालता रहेगा।।

१० - मुनासिब तो यह है कि हर हाल में चरनों की तरफ़ ध्यान लगाता रहे और जब २ किसी क़िस्म की चिन्ता और फ़िक्र या तकलीफ़ अपनी या पराई सतावे, तब थोड़ा ज़ोर देकर चित्त को चरनों में लगावे, तो वह किसी क़दर हलकी हो जावेगी और अंतर में थोड़ा बहुत आराम मिलेगा।।

११ - सच्चे परमार्थी को जो कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन में आया है, लाज़िम और मुनासिब है कि अपने मालिक यानी स्वामी और प्रीतम की मौज के साथ जहाँ तक मुमकिन

होवे मुवाफ़क़त करे। क्योंकि जब मालिक सर्व समर्थ है और सब से बड़ा और सब के ऊपर है, तो फिर उसकी मौज में कौन दख़ल दे सकता है। जो मुवाफकत करेगा, तो भक्ति और सरन क़ायम रहेगी और जो ना-मुवाफ़क़त करेगा, तो भक्ति और सरन डिगमिग हो जावेगी।।

१२ - सच्चे परमार्थी को विचार करना चाहिये कि दुनिया में सख़्ती और नरमी और मुसीबत और आराम की हालत सब जीवों पर गुज़र रही है। और सब, चाहे परमार्थी हैं या संसारी, उस हालत को जबरन या समझ बूझ के साथ बरदाश्त कर रहे हैं यानी दुनियादार रो पीट कर और समझवार तहम्मुल के साथ सबर और बरदाश्त करते हैं और भक्त जन अपने मालिक और प्यारे की मौज समझ कर, उसको भक्ति यानी प्रीत के साथ क़बूल और मंजूर करते हैं। फिर जब कि मौज में किसी को दख़ल नहीं है और वह जैसे बने तैसे माननी पड़ेगी, तब अपनी भक्ति को क़ायम रखने के वास्ते जब २ जैसी मौज होवे, उसको साथ शुकर या तसलीम[१] या रज़ा के मंज़ूर करना चाहिये।।

१३ - सिवाय इसके भक्ति मार्ग में हुकुम है कि प्रेमी अपने प्रीतम के चरनों में तन मन धन अरपन करे और उसकी रज़ामंदी और प्रसन्नता को हर काम में मुक़द्दम रक्खे। फिर जब यह क़ायदा भक्ति का मुक़र्रर हुआ है, तब विचारो कि इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है या उसके बर-ख़िलाफ़, और अपनी भक्ति को क़ायम रखना और बढ़ाना मुनासिब है कि घटाना और उसमें

१ क़बूल करना

ख़लल डालना। ख़ुलासा यह कि प्रेमी को हर हाल और हर सूरत में अपने प्रीतम की मौज और हुकुम के साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करना चाहिये।।

१४ - यह सही है कि जीव बहुत कमज़ोर और निबल हैं और ब-सबब अर्से से दुनिया में फँसे रहने और बर्ताव करने से, उसकी मुहब्बत बहुत मज़बूत हो गई है और उसके सामान का छोड़ना या उससे दिल का हटाना या उसकी हानि लाभ में दुखी सुखी न होना, बहुत मुशकिल हो गया है। लेकिन सतगुरु और सतसंग की मदद और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया से भक्ति के क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना आहिस्ते आहिस्ते आसान हो सकता है और उसमें किसी क़िस्म की दिक़्क़त या तकलीफ़ नहीं होगी यानी प्रेमी जन अंतर में भक्ति अंग में बर्ताव करने से शान्ति और ताक़त पावेंगे और बाहर से (जो वे गृहस्थ में रहते हैं) ग्रहस्थियों के साथ जैसा उनका व्यवहार है, बर्ताव करेंगे। यह ताक़त उनको संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया से (जिनकी सरन में वे आये हैं) आहिस्ते आहिस्ते मिलेगी, क्योंकि यह काम जल्दी का नहीं है यानी जैसे जीव संसार में कितने ही अर्से में संसारियों का संग कर के फँसा है, इसी तरह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग करके कुछ अर्से में छूटेगा।।

१५ - हर एक परमार्थी को जो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सरन में आया है, लाज़िम और मुनासिब है कि ऊपर की लिखी हुई हिदायत के मुवाफ़िक़ जहाँ तक बन सके, कार्रवाई शुरू करे और

दया का आसरा लेकर बढ़ाता जावे, ताकि भक्ति की तरक़्क़ी होती जावे। अभ्यास के वक़्त ख़ास कर और दूसरे वक़्तों में आम तौर पर, अपनी समझ बूझ और ख़्यालों को और भी अपने मन और इन्द्रियों की चाल को, ऊपर की हिदायत के मुवाफ़िक़ सम्हालता रहे, तो कोई दिन में उसका घाट बदल जावेगा यानी संसारी रीत के मुवाफ़िक़ बर्ताव दूर होकर भक्ति की रीत और क़ायदे के साथ, उसकी चाल ढाल और समझ बूझ बदलती जावेगी और गुरुमुखता का दरजा हासिल होगा और इस तरह एक दिन अपने प्रीतम का प्यारा हो जावेगा।।

बचन उन्तालीसवाँ

मालिक कहता है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आ सक्ती और नहीं ठहर सक्ती, उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ, तब मेरे से मेला होगा और जो चीज़ कि मेरे यहाँ नहीं है, वह लेकर आओ और जो चीज़ कि मुझ को अधिक प्यारी है, उसके आसरे आओ

१ - मालूम होवे कि जैसे सुरत का उतार नीचे के देश में होता आया, तैसे ही ब-सबब मिलौनी माया और पाँचों तत्त्व और तीनों गुन के अनेक धारें पैदा होती गईं

और विचित्र रचना भी चैतन्य और जड़ पदार्थों की बढ़ती गई और सुरत, मन और इंद्रियों के वसीले से उनके साथ लिपटती और बँधती और फिर उसी नीचे की रचना में फँसती गई।।

२ - अब इस क़दर बंधन और मज़बूती के साथ फँसाव, सुरत का देह और दुनिया यानी कुटुम्ब परिवार और भोगों और अनेक पदार्थों में, हो गया है कि उनके छोड़ने का इरादा करने में जान सी निकलती है और चाहे जिस क़दर उनके सबब से दुख और तकलीफ़ भी पावे, फिर भी उनका संग छोड़ना मंज़ूर नहीं करता।

३ - सिवाय ज़ाहिरी संग के इस क़दर प्रीत और बंधन साथ दुनिया और उसके पदार्थों के हो गया है कि अंतर में हर वक़्त ख़्याल और फ़िक्र उनका थोड़ा बहुत मुवाफ़िक़ हर एक की प्रीत के बना रहता है और उन्हीं की गुनावान और याद उठा करती है। यहाँ तक कि जाग्रत अवस्था में अंतर और बाहर वही करतूत मन किया करता है, बल्कि स्वप्न अवस्था में भी इसी क़िस्म के ख़्याल पैदा होते हैं और वैसी ही करतूत थोड़ी या बहुत जारी रहती है।।

४ - ज़ाहिर है कि जो रचना स्थूल या निहायत स्थूल है, वह उलट कर सूक्षम रचना के मुक़ाम तक नहीं पहुँच सकती यानी अपनी ही हद्द में रहेगी। इसी तरह जो धारें और क़ुव्वतें कि नीचे के देश में, मन और अंतःकरन और इन्द्रियों से पैदा हुईं, वह भी अपने हद्द और देश में कार्रवाई करती हैं और उलट कर ऊँचे देश में नहीं पहुँच सकतीं।।

५ - संत फ़रमाते हैं कि पिंड देश के स्वभाव और ख़्वाहिशें और क़ुव्वतें इसी देश में छोड़ना चाहिये, यह ऊँचे देश में नहीं जा सकती हैं और न वहाँ इनके ठहरने की गुंजायश है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को जो ऊँचे देश में चढ़ कर अपने सच्चे मालिक से मिलना चाहता है, मुनासिब और लाज़िम है कि इधर की रचना की मुहब्बत और चाह मन से जिस क़दर मुमकिन होवे, ढीली और दूर करे और उसके ख़्याल और याद को बिसरावे, तब मन और सुरत की चढ़ाई ऊँचे देश में मुमकिन होगी।।

६ - इसमें कुछ शक नहीं कि किसी को किसी चीज़ में ज़ाहिर में बाँधा नहीं है और जब वह चाहे उससे अलेहदा हो सकता है यानी उसके संग को थोड़े बहुत अर्से के वास्ते छोड़ सकता है, पर उसका ख़्याल और याद मन में बसी रहती है और जब तब फुरना यानी गुनावन पैदा करती है कि जिससे मन अंतर में चाहे जहाँ होवे, उसी का संग करता है और उसी ख़्याल के सबब से दुख सुख का भी थोड़ा बहुत भोग करना पड़ता है।।

७ - संत फ़रमाते हैं कि ऐसे दुनिया के ख़्यालों को मन से हटाना और दूर करना चाहिये और बजाय उसके मालिक के चरनों का ख़्याल या उसका महा पवित्र नाम या सुन्दर स्वरूप हृदय में बसाना चाहिये, तब इस नीचे दरजे की रचना से छुटकारा होवेगा।।

८ - बाहर से कुटुम्ब परिवार और भोगों और पदार्थों में मुवाफ़िक़ ज़रूरत के बर्ताव करने से इस क़दर हर्ज नहीं होवेगा जो उनमें गहरी प्रीत और बंधन

नहीं है। यह प्रीत और बंधन संग करके सब के मन में पैदा होता है, लेकिन सच्चे परमार्थी को सतसंग की समझ बूझ और सन्त सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर, उस प्रीत और बंधन को हल्का और ढीला करना चाहिये।।

९ - जो कोई चित्त से सतसंग करेगा और बचन और बानी सुन कर विचारेगा, उसको दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त और कैफ़ियत आप ही प्रकट मालूम होती जावेगी यानी यह सब कारख़ाना एक धोखे की जगह नज़र आवेगा और अख़ीर में दुखदाई मालूम पड़ेगा। फिर उसका मन आप उनकी तरफ़ से हटता और सरकता जावेगा और सच्चे मालिक के चरनों में जुड़ता जावेगा।।

१० - इस कार्रवाई के वास्ते सन्त सतगुरु या उनके प्रेमी जन का संग ज़रूर दरकार है और जिसको भाग से ऐसा सतसंग मिल गया, उसको सच्चे का भेद और महिमा मालूम होवेगी और जिस तरकीब से कि सच्चे के चरनों में मेल पैदा होवे और थोड़ा बहुत उसका रस और आनन्द मिले, वह भी वक़्त लेने उपदेश के समझ में आवेगी और फिर उसी के अभ्यास से दिन दिन हालत भी थोड़ी बहुत बदलती जावेगी।।

११ - सच्चे सतसंग और सच्चे मालिक के दरबार में, दुनिया और उसके सामान या उसके ख़्याल और याद की गुंजायश नहीं है। इस वास्ते जो कोई वहाँ दख़ल चाहता है, उसको इन चीज़ों और उनके ख़्याल को छोड़ कर चलना चाहिये, नहीं तो उसी देश में जहाँ की रचना में वह चीज़ें दाखिल हैं, अटका रहेगा और

फिर फिर उलट कर उसी तरफ़ को झोका खावेगा और ऊँचे देश की तरफ़ इस ना-मुनासिब भार और बोझे के सबब से न तो चल सकेगा और न वहाँ उसको ठहरना मिलेगा और जिस क़दर कार्रवाई परमार्थ की इन ख़्यालों को संग लेकर की जावेगी, वह मुफ़्त बरबाद जावेगी।।

१२ - मालूम होवे कि जगत और उसके बंधनों और सामान से न्यारे होना आसान और जल्दी का काम नहीं है, क्योंकि दुनिया की प्रीत और बंधन भी एक अर्से में दुनियादारों का संग करके मज़बूत हुए हैं और पके हैं। इसी तरह कुछ अर्से तक अंतर और बाहर सतसंग करके, यह बंधन आहिस्ते आहिस्ते ढीले होवेंगे और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम दिन दिन बढ़ता जावेगा।।

१३ - जो लोग कि बग़ैर लगाने खोज सच्चे मालिक के और जोड़ने प्रीत के उसके चरन कँवल में, घरबार और रोज़गार छोड़ कर भेषधारी बन गये, उनकी अक़ल और नज़र दोनों मारी गई यानी भेषधारी होने का इस क़दर अहंकार चित्त में समाया कि अपने तईं जगत का बड़ा और पूज्य जानने लगे और अपनी निहायत ओछी और मलीन हालत की ख़बर नहीं रही, फिर उसके सफ़ाई और दुरुस्ती का जतन कौन करे और किससे पूछे और बा - वजूदे कि जीवों को मरते हुए और दुख भोगते हुए हर रोज़ देखते हैं, पर अपनी मौत और दुख सुख के बचाव का फ़िक्र और सोच ज़रा भी मन में नहीं लाते। बल्कि जो कोई उनके चितावने का बचन कहे या उनको शब्द के अंतरमुख अभ्यास की

तरफ़ तवज्जह दिलावे, तो उसको मुतलक़ नहीं सुनते और न किसी क़िस्म का अभ्यास करना मंज़ूर करते हैं कि जिसका नतीजा यह होता है कि बारम्बार चौरासी में भरमते हैं।।

१४ - इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जो कोई जगत से न्यारा होना चाहे और अपने सच्चे मालिक से मिल कर उसके दर्शन का आनन्द लेना चाहे, उसको मुनासिब है कि पहले संतों के सतसंग में जावे और चित्त देकर के बचन सुने और विचारे और उपदेश लेकर नित्त सुरत शब्द योग का अभ्यास करे, तब संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से कुछ अर्से में इसको अपनी हालत के बदलते जाने की ख़बर पड़ेगी और फिर जिस क़दर प्रेम उसका संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर यह माया और माया की रचना के घेर से न्यारा होकर राधास्वामी धाम की तरफ़ चलता और चढ़ता जावेगा और रफ़्ता २ एक दिन अंतर में सब से जुदा होकर अपने सच्चे मालिक से उसके निज धाम में जा मिलेगा। बे-फ़ायदा जल्दी करना इस काम में मुनासिब नहीं है। यह काम जब बनेगा, तब संत सतगुरु की दया से आहिस्ते आहिस्ते बनेगा और तब मन और माया का संग और उनकी रचना के दुख सुख का चक्कर हमेशा को क़तई छूट जावेगा।।

१५ - जिस क़दर कार्रवाई परमार्थ की संतों ने जारी फ़रमाई है, उस सब का मतलब जीव को मन और माया के संग और उनकी रचना के घेर से बचा कर, सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुँचाने का है, ताकि

जनम मरन के कष्ट और क्लेश और देहियों के बंधनों से छूट कर परम आनन्द को प्राप्त होवे।।

१६ - इस न्यारे हो जाने की दया और आनन्द की हालत को वही शख़्स जान सकता है कि जिसकी सुरत जगत और माया के जाल से निकस कर और सब बंधनों को तोड़ कर, सुन्न और फिर सत्तलोक के मुक़ाम में पहुँच कर सैर करती है। वही जीव महा बड़भागी है और वही महा दयापात्र है और वही परम भक्त है और वही संतों के प्रताप से एक दिन संत गति को प्राप्त होता है।।

१७ - सन्तों ने फ़रमाया है कि मालिक को दीनता पसन्द है। दीनता, सच्ची ग़रज़मन्दी और अधीनता का नाम है। इस चीज़ की ज़रूरत कुल्ल परमार्थी जीवों को जो अपने सच्चे मालिक से, इस देश से चल कर और चढ़ कर, मिलना चाहते हैं, ज़्यादा से ज़्यादा है। जिसके हृदय में दीनता और अधीनता सन्त सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं है, उसको एक ज़र्रा परमार्थ नहीं मिल सकता।।

१८ - यह दीनता और अधीनता मालिक के दरबार में नहीं है, क्योंकि वह सब से बे-परवाह और अपने स्वरूप में आप मगन है और वही परम आनंद और परम प्रेम और महा चैतन्यता का भंडार है। इस वास्ते संत कहते हैं कि जो कोई कि दीनता और अधीनता (जो पदार्थ कि मालिक के दरबार में नहीं हैं) इधर से लेकर चलेगा, वही दरबार में दख़ल पावेगा और उसी को सच्चे मालिक के दर्शनों का आनंद प्राप्त होवेगा।।

१९ - दीनता और अधीनता का स्वरूप यह है कि मालिक के दर्शनों की सच्ची चाह रखता होवे और जो संत सतगुरु हुकुम करें, उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे और जो कुछ कि मालिक करे और जैसे वह रक्खे, उसमें राज़ी रहे यानी उसकी मौज के साथ मुवाफ़क़त करे। यह बात सच्चे और पूरे परमार्थी से ही बन आवेगी।।

२० - संत फ़रमाते हैं कि सच्चे मालिक को प्रेम प्यारा है। जो कोई प्रेम अंग लेकर सेवा, सतसंग और अभ्यास अंतर और बाहर करेगा, उस पर मालिक की मेहर और दया ज़रूर आवेगी और काम भी उसका सुखाला बनता जावेगा और मन और माया भी उस पर अपना ज़ोर कम चलावेंगे।।

२१ - प्रेम की महिमा बहुत भारी है। जितने विकार हैं वे सब प्रेम से बहुत जल्द दूर हो जाते हैं और सतसंग में प्रेमी शख़्स बहुत जल्द रल मिल जाता है और संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर जल्द हासिल करता है कि जिससे कुल्ल काम उसका आसानी के साथ बनता चला जाता है।।

२२ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम का भंडार हैं और कुल्ल जीव प्रेम स्वरूप हैं और प्रेम से ही कुल्ल रचना प्रकट हुई और प्रेम के ही आसरे ठहरी हुई है। जीवों को भी मुहब्बत करने वाला प्यारा लगता है और मुहब्बत ही के वसीले से सब काम कर रहे हैं। इस वास्ते कुल्ल-मालिक को भी प्रेम प्यारा है और जो कोई प्रेम अंग लेकर उसकी तरफ़ चलता है, वह दया और मेहर से जल्द और आसानी के साथ मंजिल पर पहुँच

जाता है और रास्ते के विघ्न आहिस्ते आहिस्ते सब दूर हो जाते हैं।।

२३ - इस वास्ते सच्चे परमार्थी को चाहिये कि मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे। जो प्रीत कि बिना प्रतीत के है, उसका ऐतबार नहीं हो सकता, लेकिन जो प्रतीत सहित है, वह दिन दिन सतसंग और अभ्यास करके बढ़ती जावेगी और एक दिन प्रीतम से मिला कर छोड़ेगी। सच्चे प्रेम के संग हमेशा कुल्ल-मालिक और संत सतगुरु की दया शामिल रहती है और प्रेमी को हर काम में गुप्त और प्रकट मदद देती है, चाहे उसको मालूम पड़े या नहीं और चाहे वक़्त पर उसकी समझ में आवे या नहीं, लेकिन रफ़्ते रफ़्ते सब कामों की मसलहत और फ़ायदा सच्चे प्रेमी पर खुलता जावेगा और अपने प्रीतम की मेहर और दया की प्रतीत बढ़ती जावेगी।।

बचन चालीसवाँ

सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है और प्रेम से ही चलना और दो का मिलना मुमकिन है। इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि जहाँ जगत में अनेक से प्रीत कर रहे हैं, कुछ थोड़ी या बहुत मालिक के चरनों में भी प्रीत करें तो जीव का गुज़ारा हो जावेगा।।

१ - कुल्ल रचना खैंच शक्ति यानी प्रेम से पैदा हुई और इसी शक्ति के आसरे ठहरी हुई है और कुल्ल कारोबार उसके जारी हैं।

२ - कुल्ल रचना में सब बड़े और छोटे आपस में प्रीत कर रहे हैं यानी एक दूसरे को खैंच रहा है और प्रीत या शौक़ या मुवाफ़क़त के सबब से कुल्ल कार्रवाई रचना और जीवों के कारोबार की जारी है।।

३ - हर एक जीव की प्रीत या मुहब्बत अनेक जगह तक़सीम हो रही है यानी मन उसका ज़र्रे २ होकर अनेक जीवों और चीजों में बँध रहा है और इन्हीं बंधनों के सबब से इस दुनिया में दुख सुख का भोग करता है।

४ - बग़ैर स्वार्थ या मतलब के कोई किसी से प्रीत नहीं करता, चाहे वह मतलब धन की प्राप्ति का होवे या मन और इन्द्रियों के रस और भोग या मान और बड़ाई या जिसको ख़ास अपना समझा है, उसके पालन और पोषन और रक्षा वग़ैरे का होवे या अपने या दूसरे के तन के आराम का या दुख और क्लेश के दूर करने का होवे।।

५ - दुनिया की प्रीत ठहराऊ नहीं है और हमेशा बदलती रहती है यानी उसमें कमी बेशी होती रहती है, क्योंकि दोनों प्रीत करने वाला और जिसके साथ प्रीत की जावे, क़ायम नहीं रह सकते और हर वक़्त और हर रोज़ उनकी हालत बदलती रहती है याने बढ़ाव और घटाव और एक दिन अभाव होने की तरफ़ उनका झुकाव रहता है। इस वास्ते इस प्रीत में सुखदाई और दुखदाई अंग दोनों हैं, बल्कि दुखदाई अंग ज़्यादा है।।

६ - जबकि कुल्ल जीव ज़मीनी रचना यानी बे-शुमार आदमियों और चीज़ों से जिन २ से उनका काम निकलता है, प्रीत कर रहे हैं, बल्कि आसमानी और आकाशी रचना से भी, जैसे सूरज और चाँद और बाज़े तारे और हवा और मेघ और सरदी और गरमी वग़ैरे से भी ख़ास प्रीत रखते हैं, क्योंकि बग़ैर इनके जीवों का गुज़ारा इस दुनिया में नहीं हो सकता, तो फिर कुल्ल-मालिक के चरनों में जिसके सबब से हर वक़्त रूह और जान की ताज़ा धार पिंड में उतर कर तमाम देह के अंग २ की कार्रवाई कर रही है और जिस मालिक की मौज़ूदगी की तमाम रचना गवाही दे रही है, सब से ज़्यादा प्रीत करना या इस क़दर न बन सके तो थोड़ी बहुत प्रीत करना हर एक जीव पर किस क़दर ज़रूर और लाज़िम और फ़र्ज़ है।

७ - सब जीवों को प्रीत करने की आदत है, सो हर एक शख़्स खूब जानता है कि कैसे प्रीत की जाती है और कैसे उसकी तरक़्क़ी हो सकती है। इस क़िस्म का बर्तावा हर एक जीव अपने निहायत प्यारे रिश्तेदार और दोस्तों और कम प्यारे और दूर के रिश्तेदार और मुलाक़ातियों से हर रोज़ बर्त रहा है यानी अनेक दरजे की प्रीत दुनिया में कर रहा है और उसी दरजे के मुवाफ़िक़ हर एक से बर्ताव करता है।।

८ - प्रीत के बर्तावे की सूरत यह है कि एक दूसरे से अक्सर या कभी २ मिलता रहता है और आपस में मिल कर खाते पीते हैं या एक दूसरे को तोहफे भेजते हैं और ठिक ब्यौहार और तीज त्यौहार पर ज़रूर याद करके अपने मुहब्बत वालों को बुलाते हैं और जो कोई

रिश्तेदार या दोस्त ग़ैर-हाज़िर होवे यानी परदेश में होवे तो उसके लड़के बालों को खाने पीने में शामिल करते हैं और उनके पास भाजी और तोहफ़े भेजते हैं। यह बर्ताव निशान और सबूत प्रीत का समझा जाता है।

९ - जो कोई सच्चे मालिक के चरनों में किसी दरजे की प्रीत सच्चे मन से करेगा, उसका दिल बग़ैर ऊपर की क़िस्म के थोड़ा बहुत बर्ताव करने के, कभी नहीं मानेगा। लेकिन जो कि सच्चा और कुल्ल-मालिक गुप्त है और परे से परे देश में उसका धाम है, इस वास्ते जो कोई उसके साथ अपनी प्रीत को ज़ाहिर करना चाहे, वह उसके बाल बच्चों के साथ बर्ताव करे।।

१० - मालिक के सच्चे प्रेमी और भक्त प्यारे बाल बच्चे हैं। इनकी मेहमानी और ख़ातिरदारी करना गोया मालिक की सेवा करना है और जो किसी को भाग से संत सतगुरु मिल जावें, जो कि उस मालिक के निज प्यारे और हर वक़्त उससे मिले रहते हैं, तो उनकी सेवा चाहे जिस किस्म की होवे ख़ुद मालिक की सेवा है और इस कार्रवाई से मालिक के चरनों का प्रेम दिन दिन बढ़ेगा और मालिक की मेहर और दया सेवा करनेवाले पर दिन दिन ज़्यादा आवेगी।।

११ - जब प्रीत ज़्यादा होती है तब प्रीत करनेवाले आपस में बार २ मिलते हैं, इसी तरह जब किसी को मालिक के चरनों में ज़्यादा प्यार और प्रेम आवेगा, तब उसके मन में ज़रूर मिलने के वास्ते यानी दर्शनों की प्राप्ति के लिये तड़प और बेकली पैदा होगी। ऐसा प्रेम

बग़ैर सोहबत यानी सतसंग संत सतगुरु और प्रेमी जन के, किसी के मन में पैदा नहीं हो सकता।।

१२ - संत सतगुरु और प्रेमी जन की महिमा बहुत भारी है। जिस किसी को उनका संग भाग से मिल जावे उसी के दिल में उनका और सच्चे मालिक का प्रेम बस जावेगा और दिन दिन तरक़्क़ी पाकर एक दिन प्रीतम से मिला देगा।।

१३ - यह देश बेगाना है यानी मन और माया का घर है और मृत्यु लोक कहलाता है, जहाँ कोई थिर यानी क़ायम नहीं रह सकता और हर एक की हालत छिन छिन बदलती रहती है। निज घर सुरत का ऊँचे से ऊँचे देश यानी राधास्वामी धाम में है सो जब तक सुरत पिंड देश को छोड़ कर उस धाम में न पहुँचेगी तब तक कहीं उस को चैन नहीं मिलेगा।।

१४ - जब तक सुरत मुवाफ़िक़ संतों के भेद के अभ्यास करके अपने निज धाम में न पहुँचेगी, तब तक उस को पूरा चैन नहीं मिलेगा और जनम मरन और देह के साथ दुख सुख भोगने का चक्कर नहीं छूटेगा। इस वास्ते सच्चे प्रेमी पर पिंड देश से चल कर ऊँचे देश की तरफ़ चलना और चढ़ कर निज घर में पहुँचना वास्ते प्राप्ति दर्शन अपने प्रीतम के, ज़रूर है। हाल और भेद रास्ते और उसकी मंज़िलों का और जुगत चलने और चढ़ने की ब-ख़ूबी संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन से मालूम हो सकती है। इस वास्ते प्रेमी को मुनासिब है कि पहले खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का लगावे और फिर सतसंग में पहुँच कर होशियारी से बचन सुने और समझे और उनके चरनों

में प्रीत लगावे और बढ़ावे और शब्द मार्ग का उपदेश और उनकी दया और मेहर का बल लेकर नित्त अपने घट में अभ्यास करे यानी शब्द और स्वरूप के आसरे अपने मन और सुरत को निज घर की तरफ़ चलाता और चढ़ाता रहे।।

१५ - जिस क़दर चाल चलेगी और रास्ता तै होता जावेगा, उसी क़दर अंतर में रस और आनन्द मिलता जावेगा और अपने प्रीतम का जलवा थोड़ा बहुत नज़र आता जावेगा और शौक़ और प्रेम दर्शन का बढ़ता जावेगा, जो एक दिन सन्त सतगुरु की मेहर से धुर धाम में पहुँचा देगा।।

१६ - यह उपदेश और भेद सिर्फ़ राधास्वामी मत की संगत में मिल सकता है। <u>और</u> किसी को इसकी ख़बर भी नहीं है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी जीवों को जो अपने मालिक से मिलना चाहते हैं, मुनासिब है कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर अभ्यास शुरू करें और प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल के बढ़ाते जावें तो एक दिन काम पूरा हो जावेगा।।

१७ - मालूम होवे कि दुनिया की मोहब्बत चाहे जिसमें गहरी से गहरी होवे, नाशमान और अंत में दुखदाई है और बारम्बार संसार की तरफ़ झोका दे कर जन्म मरन के चक्कर में डालनेवाली है और सच्चे मालिक के चरनों की प्रीत दिन दिन बढ़नेवाली और रस और आनन्द देने वाली और जनम मरन और कष्ट और क्लेश से छुड़ानेवाली और परम आनन्द की, अमर धाम में, प्राप्त करानेवाली यानी सच्चे और कुल्ल-मालिक से मिलानेवाली है। इस वास्ते सब जीवों को, चाहे

औरत होवे या मर्द, लाज़िम है कि इस दुनिया में जहाँ अनेक तरह की प्रीत कर रहे हैं, थोड़ी बहुत प्रीत साथ प्रतीत के, कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भी, लावें और उसको संत सतगुरु और प्रेमी जन के संग से बढ़ाते रहें।।

१८ - जो कोई मालिक के चरनों में प्रीत सिर्फ़ इस क़दर समझ लेकर कि कोई मालिक ज़रूर है, करेगा, वह प्रीत बढ़ेगी नहीं और न उसको कुछ रस और आनन्द उस प्रीत का मिलेगा, सिर्फ़ टेकियों के मुवाफ़िक़ वास्ते अदाय - रस्म - मुक़र्रर के, थोड़ा बहुत निश्चय हो जावेगा कि ठिक ब्यौहार और तीज त्यौहार को कुछ भेंट पूजा या ख़र्च मालिक के नाम पर करे, लेकिन उमंग और प्रेम नहीं आवेगा और न प्रेमी जन और संत सतगुरु की क़दर या तलाश मन में पैदा होगी, इस वास्ते वह प्रीत मामूली तौर पर जिस क़दर कि आम लोगों को होती है, बनी रहेगी और प्रीतम से मिलने या रास्ता तै करके उसके धाम में पहुँचने का कभी ख़्याल भी दिल में नहीं गुज़रेगा और न उसका भेद और लखाव मालूम होवेगा, फिर ऐसी प्रीत का क्या एतबार हो सकता है, क्योंकि ज़रा से झकोले में, काल और माया के, उसके डिगमिग हो जाने का ख़ौफ़ है।।

१९ - इस वास्ते सन्त फ़रमाते हैं कि जो कोई मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्यार लावे, उसको मुनासिब है कि पहले अपने प्रीतम को जाने और पहचाने और उसके धाम का भेद लेकर दर्शन के लिये चलना शुरू करे, तब एक रोज़ मेला होकर काम पूरा बनेगा।।

२० - मालिक की जान पहचान से मतलब यह है कि सन्त सतगुरु से मिल कर उसका भेद जाने कि वह मालिक कौन है, कैसा है, और कहाँ है और पहचान उस की मालूम करके अपने घट में चल कर और चढ़ कर उस का जलवा और निशान अपने अंतर में देखे क्योंकि जब कुल्ल-मालिक सब जगह मौज़ूद है तो हर एक के घट में भी ज़रूर मौज़ूद है, तो वहाँ उसकी पहचान करना चाहिये और घट में ही पहचान मुमकिन है। बाहर जहाँ कि वह अनेक ग़िलाफ़ों में पोशीदा और गुप्त है, कोई उसकी पहचान नहीं कर सकता। अलबत्ता जब कि अपने घट में दर्शन कर लेवे, तब बाहर भी सब जगह दर्शन कर सकता है, नहीं तो दोनों जगह माया का तमोगुन यानी अंधेरा छाया हुआ है। बिदून घट की जान पहचान के मालिक के चरनों की प्रीत का फल जैसा चाहिये, नहीं मिल सकता है। अब मुक़ाम ग़ौर का है कि वास्ते उद्धार और कल्यान जीव के, किस क़दर ज़रूरत सन्त सतगुरु और प्रेमी जन के संग और सोहबत की है, क्योंकि बग़ैर उनके सतसंग के न तो भेद मालूम हो सकता है और न जुगत चलने की दरियाफ़्त हो सकती है और न दया और मेहर जिसकी मदद से चलना होगा, प्राप्त हो सकती हैं।।

बचन इकतालीसवाँ

मालिक-कुल्ल की तरफ़ से बा-वजूदे कि वह घट में मौज़ूद है और कभी २ बोलता भी है, जीव बे-परवाह और भूले हुए हैं। जो

ख़बरदार होकर कुछ भी प्रीत या नाता उसके चरनों में जोड़ें, तो उनके जीव का कारज सहज बन जावे।।

१ - कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और उनकी क़ुदरत की सिफ़त, किसकी ताक़त है कि वर्णन कर सके? बहुत से मुआमलों में अक़्ल हैरान रहती है और कुछ समझ नहीं सकती।।

२ - इसी तरह उसकी मेहर और दया यानी फ़ज़ल और करम भी जीवों, बल्कि कुल्ल रचना, के ऊपर अपार और अनंत है कि जिसका शुकराना कोई शख़्स पूरा २ अदा नहीं कर सकता।।

३ - बहुत सी बख़्शिशें कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की ऐसी हैं कि जिनकी क़दर आदमी को बिल्कुल नहीं मालूम होती और हाल यह है कि वह बख़्शिशें ऐसी ज़बर और भारी हैं कि उन पर कुल्ल की ज़िंदगी और देह और दुनिया की कार्रवाई का मदार है यानी बग़ैर उनके कोई जीव एक दिन बल्कि एक दम भी ज़िंदा नहीं रह सकता और न कुछ काम कर सकता है। जैसे सूरज की रोशनी और गरमी और पानी और हवा वग़ैरा और देह में इन्द्रियाँ जो कि कुल्ल कार्रवाई के औज़ार हैं और जिनके बग़ैर आदमी कोई काम अपना या पराया नहीं कर सकता।।

४ - इन चीज़ों में से इन्द्रियों की यानी आँख कान नाक ज़बान हाथ और पांव पेशाब और पाख़ाने की इन्द्रिय की क़दर जब मालूम होती है, जब कोई शख़्स शफ़ाख़ाने और अपाहिजख़ाने और कंगाल - घर और

कोढ़ी-ख़ाने वग़ैरे में जाकर बीमारों का हाल देखे कि किस २ तरह से अंगहीन और अनेक सख़्त बीमारियों में मुब्तला और गिरफ़्तार हैं।

५ - दुनिया में जो कोई किसी के साथ अदना और बहुत थोड़ा सलूक करता है, वह उसको नहीं भूलता और उसके एवज़ में कुछ ख़ातिरदारी और ख़िदमत उसकी दिल से करना चाहता है और जब मौक़ा मिले, तब ही करता है। फिर कुल-मालिक राधास्वामी दयाल का किस क़दर शुकराना और उनके चरनों की ख़िदमत ब-एवज़ उन न्यामतों और बख़्शिशों के, जो वे कुल्ल जीवों पर हर रोज़ और हर दम कर रहे हैं, वाजिब और फ़र्ज़ है।।

६ - फिर ख़्याल करो कि दुनिया में बड़े आदमियों जैसे राजा महाराजा और अमीर और गुनवान शख़्सों की जैसे हुनरवाले विद्यावान बुद्धिवान रूपवान यानी ख़ूबसूरत और धनवान यानी दौलतमंद और गाने बजाने और तरह तरह का अजीब तमाशा करनेवालों की किस क़दर ख़ातिर और ख़िदमत और उनसे मिलने के वास्ते अपना रुपया और वक़्त ख़र्च करते हैं, लेकिन कुल्ल-मालिक जो कि सर्व समर्थ और सर्व शक्तिवान और सब बड़ों से बड़ा और महा बड़ा और महा सुन्दर है, उसके साथ मिलने और उसकी ख़िदमत और सेवा करने की चाह किस क़दर कम लोगों के मन में रहती है।।

७ - इसमें कुछ शक नहीं कि वह कुल्ल-मालिक हर एक को नज़र नहीं आता और न हर एक को आसानी से मिल सकता है, लेकिन जिस किसी के मन में सच्चा

शौक़ और दर्द उसके दर्शन और सेवा का पैदा होवे, उसको वह ज़रूर मिलता है और अपनी ख़िदमत और सेवा भी मुवाफ़िक़ ख़्वाहिश सच्चे शौक़ वालों के, जिनको प्रेमी और आशिक़ और भक्त कहते हैं, करा सकता है, इसकी शरह आगे की जावेगी।।

८ - फिर ग़ौर करने का मुक़ाम है कि दुनिया में कुल्ल काम प्रीत और शौक़ से चल रहे हैं और सब लोग जिन २ से उनको काम पड़ता है या कुछ उनका मतलब निकलता है, बराबर दीनता और मुहब्बत कर रहे हैं और इस मुहब्बत में बहुत से दरजे हैं, जैसे माता पिता स्त्री और पुत्र और धन और माल और नज़दीक और दूर के रिश्तेदार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और नौकर चाकर और ब्यौहारी वग़ैरे २ से दरजे-ब-दरजे प्रीत करते हैं। फिर कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल से जो कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं और जिनकी बराबर कोई हम-दम और हर वक़्त का अंग-संगी और हितकारी और सहाई नहीं है और जो सब तरह का सामान दुनिया में आराम और आसाइश और गुज़रान का दे रहा है, किस क़दर प्रीत और मुहब्बत और दीनता करना हर शख़्स पर वाजिब और लाज़िम और फ़र्ज़ है।।

९ - यह बात सही है कि कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल (जैसा कि ऊपर कहा गया) किसी को नज़र नहीं आते, लेकिन जो कोई इरादा करे, वह पता और भेद उनका भेदी और उनके प्यारों से दरियाफ़्त करके, आसानी के साथ उनके चरनों में प्रीत और मुहब्बत कर सकता है, क्योंकि वह जब कि सब जगह मौजूद हैं तो

हरएक के घट में भी ज़रूर मौजूद और हाजिर नाज़िर हैं, वहाँ यानी अपने अंतर में हर एक शख़्स पता और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके उनके चरनों में प्रीत कर सकता है और उलट कर उनकी मेहर और दया को भी अपने अंतर में परख सकता है।।

१० - फिर जो इस क़िस्म के शौक़ और मुहब्बत वाले लोग बहुत कम नज़र आते हैं और बहुत से इस तरफ़ से ग़ाफ़िल और बे-परवाह और दुनिया के ऐश और लज़्ज़त और भोगों में गिरिफ़्तार दिखलाई देते हैं। इसका सबब यह है कि या तो उनके दिलों में शौक़ और खोज नहीं है और दुनिया और उसके सामान ही को बड़ा समझ कर उसी की तलाश और मुहब्बत और मेहनत में फँसे रहते हैं या उनको कोई सच्चा भेदी और प्राप्ति वाला नहीं मिला और न उन्होंने उसकी तलाश की क्योंकि जो कोई जिसकी तलाश दिल और जान और मेहनत के साथ करता है, वह उसको ज़रूर मिलता है।।

११ - अब समझना चाहिये कि दुनिया और उसके सामान और दुनियादारों की प्रीत करने वाले, मुवाफ़िक़ अपनी ज़बर ख़्वाहिश दुनियावी के हमेशा दुनिया में फँसे रहेंगे और बारम्बार दुनिया में पैदा होकर उसके भोगों में गिरिफ़्तार रहेंगे और जो दुख सुख और जनम मरन देह के साथ लाज़मी है, वह सहते रहेंगे, क्योंकि दुनिया की प्रीत थोड़े सुख और विशेष दुख की दाता है और एक दिन ज़रूर टूट और छूट जावेगी और उस वक़्त दुख भारी होवेगा। सिवाय इसके दुनिया की प्रीत कच्ची और हमेशा बदलने वाली और कभी २ ज़रा २

सी बात पर इसी ज़िंदगी मे टूट जाने वाली है और सख़्ती और तकलीफ़ में और ख़ास कर मौत के वक़्त कुछ सहायता नहीं कर सकती।।

१२ - बर - ख़िलाफ़ इसके मालिक के चरनों की प्रीत और उसके प्यारों की मुहब्बत जो सच्ची होवे तो दिन २ बढ़ने वाली और खुशी और आनन्द देनेवाली और सख़्ती और तकलीफ़ और मौत के वक़्त सहायता करने वाली और एक दिन देहियों के बंधन से बचाने वाली और सुख दुख और जनम मरन के चक्कर की छुड़ाने वाली और अमर धाम में पहुँचाने वाली और पूरन आनन्द और अमर सुख की प्राप्ति कराने वाली है। जिस किसी के दिल में थोड़ी सी भी ऐसी प्रीत पैदा हो जावे, वह एक दिन उसको अख़ीर दरजे पर पहुँचा कर छोड़ेगी और फिर उसी जीव को बड़भागी और दया और मेहर का अधिकारी समझना चाहिये। लेकिन शर्त यह है कि वह प्रीत प्रीतम की जान पहचान और प्रतीत के साथ होवे कि जिससे अपने प्रीतम यानी कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में हाज़िर नाज़िर होने का यक़ीन होवे, क्योंकि ग़ायबाना और बे-ख़बरी की प्रीत कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती है।।

१३ - ग़ायबाना और बे-ख़बरी की प्रीत यह है कि आम दस्तूर और पूरानी रवायत यानी डुकरिया पुरान के मुवाफ़िक़ हर कोई समझता है कि कोई मालिक इस रचना का है और इतनी समझ लेकर मन से थोड़ा बहुत अदब और तीज त्यौहार और ठिक ब्यौहार पर जब कोई मुहताज और मंगता आ जावे, तब कुछ जिन्स और नक़द या खाना तक़सीम करता है। लेकिन

इस बात से बे-ख़बरी है कि वह मालिक कौन है, कैसा है और कहाँ है और कैसे मिले और न इस भेद और हाल के दरियाफ़्त और तहक़ीक़ करने का खोज है और न शौक़ है। फिर ऐसी साधारन प्रीत का पूरा ऐतबार नहीं हो सकता और न वह तरक़्क़ी कर सकती है, बल्कि ज़रा से झकोले में विद्या और माया के, ढीली और गुम हो जाती है। ऐसे प्रीतवान लोग दुनियादार कहलाते हैं। उनके मन में मुख्यता यानी क़दर दुनिया और उसके सामान मिसल स्त्री और पुत्र और मान बड़ाई और धन माल वग़ैरा की ज़्यादा रहती है और इनके मुक़ाबले में मालिक का यक़ीन और उसकी प्रीत बहुत हलकी और कमज़ोर रहती है।।

१४ - सच्ची और रोज़-अफ़ज़ूँ यानी दिन दिन बढ़ने वाली प्रीत वह है कि मालिक की जान पहिचान के साथ होवे और यह जान पहिचान मालिक के सच्चे और पूरे प्रेमी और भेदी के सतसंग से आवेगी।

१५ - पूरे प्रेमी और पूरे भेदी कुल्ल-मालिक के, संत सतगुरु हैं कि जिन को उसका निज पुत्र या निज मुसाहब या निज कारकुन कहना चाहिए। वे अपने मालिक से कभी जुदा नहीं होते यानी जब धुर पद में जो कि मालिक का धाम है, रहें, तब उसके हर वक़्त पास रहते हैं और जब उस की मौज से देह धर कर दुनिया में आवें, तब भी उससे जुदा नहीं होते यानी उनकी सैर हर दो मुक़ाम यानी दुनिया और निज धाम में बराबर जारी रहती है, जैसे समुद्र और उसकी लहर जो कि कोसों तक ख़ुश्की में चली जाती है और ज़ाहिरा लहर रूप दिखला कर उससे किसी क़दर

जुदा मालूम होती है, मगर असल में कभी जुदा नहीं होती और सिलसिला उसका बराबर समुद्र के साथ लगा रहता है और जब सिमटती है, तब वही असली रूप यानी फिर समुद्र रूप हो जाती है।।

१६ - जो किसी को संत सतगुरु न मिलें लेकिन उन के सच्चे अभ्यासी और प्यारे प्रेमी जन से मेला हो जावे, तो उनके सतसंग से भी जान पहचान और भेद और जुगत मिलने की, साथ कुल्ल-मालिक के, दरियाफ़्त हो सकती है और उसकी मदद से वह शख़्स अभ्यास कर के अंतर में फ़ायदा उठा सकता है और रफ़्ते २ उसका सूत भी कुल्ल-मालिक के चरनों में लग जावेगा और वह शख़्स दया और मेहर का अधिकारी हो जावेगा कि जिससे उसकी प्रीत और प्रतीत संत सतगुरु और कुल्ल-मालिक के चरनों में दिन दिन बढ़ती जावेगी और मौज से संत सतगुरु का भी दर्शन मिल जावेगा और फिर उनकी दया से एक दिन कुल्ल-मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा यानी उस के जीव का कारज बन जावेगा।।

१७ - बग़ैर संतों के सतसंग के सफ़ाई अंतर और बाहर की नहीं हो सकती। कुल्ल जीवों के मन इस दुनिया में मलीन हैं और सिवाय बासना भोग बिलास और मान बड़ाई और कुटुम्ब परिवार और धन माल के, उनके मन में कोई दूसरा ख़्याल ऐसा मज़बूत नहीं रहता है। उमर भर दुनिया के हासिल करने के लिये मेहनत और मशक़्क़त करते हैं और जानते हैं कि एक दिन सब को छोड़ना पड़ेगा, फिर भी कुटुम्ब परिवार और धन माल और मान बड़ाई का ऐसा बंधन ज़बर

और मज़बूत है कि जिसको ढीला करते या छोड़ते (ख़ास कर परमार्थ के लिए) जान सी जाती है। यह सब बंधन संतों और उनके प्रेमी जन के सतसंग से ही ढीले हो सकते हैं और बजाय उनके सच्चे और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत हृदय में पैदा हो सकती है और आइन्दे के वास्ते दुनिया की चाहें भी दूर हो सकती हैं।।

१८ - जब इस तरह मन की किसी क़दर सफ़ाई हासिल हो जावे और कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की महिमा चित्त में बस जावे और दुनिया और उसका सामान नाशमान और ओछा सही २ नज़र आवे, तब उपदेश लेकर यानी जुगत निज धाम की तरफ़ चलने की दरियाफ़्त करके जो अंतर में शौक़ के साथ अभ्यास किया जावेगा तो रस और आनन्द मिलेगा और दया के परचे नज़र आवेंगे। तब प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती और पकती जावेगी और दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी।।

१९ - बग़ैर सतसंग के किसी के संशय और भरम और संसार में फ़िज़ूल और ग़ैर-वाजिब और बे-फ़ायदा पकड़ें दूर और ढीली नहीं होवेंगी और न चाह भोग बिलास की काटी जावेगी और न परमार्थ और सच्चे मालिक और संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन और सतसंग की महिमा और क़दर चित्त में समावेगी। फिर मन ब-दस्तूर मलीन रहेगा और जब तक सफ़ाई न होगी यानी दुनिया और उसके सामान की मुहब्बत और चाह कम या दूर न होवेगी, तो मालिक और उसके प्रेमी

जन का प्रेम, कैसे ऐसे नापाक हृदय में पैदा हो सकता है और ठहर सकता है।

२० - इस वास्ते जिस किसी के मन में सच्चा दर्द और खोज सच्चे मालिक का पैदा हुआ है, उसको चाहिए कि पहिले राधास्वामी संगत में जावे और कोई दिन सतसंग करे, तब उसको आप ख़बर पड़ जावेगी कि जीव के कल्यान या अपने सच्चे मालिक से मिलने के वास्ते, क्या जतन और किस तरह की रहनी इख़्तियार करना चाहिये और कहाँ उसको ढूँढ़ना चाहिये। बाहर जो कोई तलाश करे तो कभी नहीं मिलेगा। जिसको मिला है या मिलेगा, वह घट में मिलेगा और बग़ैर सुरत शब्द मार्ग और संत सतगुरु की दया के घट में चलना और चढ़ना और धुरपद में पहुँचना हरगिज़ मुमकिन नहीं है और इस वक़्त में सिवाय राधास्वामी मत और संगत के, घट का पूरा २ भेद और आसान तरीक़ा चलने का, जिसकी कमाई हर कोई स्त्री या पुरुष जवान और बूढ़ा, सहज में कर सकते हैं, और कहीं या किसी दूसरे मत में मिल नहीं सकता।।

२१ - जब किसी को सच्ची प्रीत और प्रतीत थोड़ी या बहुत सच्चे मालिक के चरनों में आवेगी तो उसका निशान यह है कि उसके हृदय में थोड़ी या बहुत उमंग वास्ते दर्शन और सेवा करने मालिक के ज़रूर पैदा होगी। लेकिन जो कि कुल्ल-मालिक अरूप और विदेह है तो सेवा करना और मिलना किस तरह बन सकता है? इसकी निसबत संतों ने जो बचन फ़रमाया है, वह आगे लिखा जाता है।।

२२ - जैसे बाल बच्चों की ख़ातिरदारी और सेवा करने से उनके मां बाप ख़िदमत करने वाले से राज़ी होते हैं और वह सेवा और मुहब्बत अपनी ही सेवा और मुहब्बत समझते हैं और सेवा करने वाले को फल यानी एवज़ आप देते हैं, ऐसे ही कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल, जो कोई उनके प्यारे संत सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा करे और उनसे प्रीत का नाता जोड़े, उससे वे आप राज़ी और प्रसन्न होते हैं और वह सेवा और मुहब्बत ख़ास अपनी सेवा और मुहब्बत मान कर उसको प्रेम और भक्ति की दौलत आहिस्ते आहिस्ते बख़्शते हैं।।

२३ - सन्त सतगुरु को जो मालिक से हरदम मिले रहते हैं, मालिक का परम प्यारा पुत्र या ख़ुद उसका स्वरूप समझना चाहिये और जो सेवा उनकी की जावे, वह ख़ुद मालिक की सेवा माननी चाहिये और जो सन्त सतगुरु के प्रेमी और भक्त हैं, उनको भी मालिक के प्यारे पुत्र जानना चाहिये। जो कोई उनके साथ मुहब्बत करे या उनकी किसी क़िस्म की सेवा या ख़िदमत किसी से बन आवे, उसको भी मालिक और सन्त सतगुरु अपनी सेवा समझ कर क़बूल और मंज़ूर फ़रमाते हैं और उसका फल तरक़्क़ी प्रीत और प्रतीत की आप बख़्शते हैं।।

२४ - सन्त सतगुरु का दर्शन गोया मालिक का दर्शन है और उनका संग मालिक का संग है और उनकी दया और मेहर की नज़र जिस पर पड़ी, गोया मालिक की मेहर उस पर हुई। वास्ते तसदीक़ और प्रमाण इस बात के, चंद कड़ियाँ नीचे लिखी जाती हैं।।

क़ौल कबीर साहब

साध मिले साहब मिले अंतर रही न रेख।
मन्सा बाचा कर्मना साधू साहब एक।।

क़ौल मौलवी रूम

मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर।।
जो मालिक का चहे दीदार।
जा तू बैठ गुरु दरबार।।
परम पुर्ष सम गुरु को जान।
बिन जिभ्या कहैं बचन सुजान।।

हक़ ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल नहीं सकता ज़मीं असमान में।।
ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं।
अर्श कुर्सी पर भी मैं रहता नहीं।।
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा।।

क़ौल दूसरा

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया।
सिज्दगाहे जुमला हस्त आं जा ख़ुदा।।

अर्थ - औलियाओं का हिरदा मसजिद है और वहीं ख़ुदा को सिज्दा करना चाहिये।।

चूँकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।।

अर्थ - जब कि तूने गुरु के स्वरूप को माना तो उसमें ख़ुदा और पैगम्बर दोनों आ गये।।

मन ख़ुदारा आशकारा दीदा अम्।
सूरते इन्सां ख़ुदारा दीदा अम्।।

अर्थ - मैंने मालिक को प्रकट इन्सान के स्वरूप में देखा।।

आफ़्ताबे मतलये अनवार ज़ात।
रोशन अज़ माहे जबीने औलियास्त।

अर्थ - सूरज ब्रह्म साध के चंद्र स्वरूप से रोशन है।

रामायण

मेरे मन प्रभु अस बिस्वासा। राम से अधिक राम कर दासा।।

क़ौल गुरु नानक

गुरु परमेश्वर एको जान। भूला काहे फिरे अजान।।

क़ौल नाभा जी

भक्ति भक्त भगवन्त गुरु नाम चतुर बपु एक।
तिनके पग बंदन करत नाशें बिघन अनेक।।

श्लोक भागवत

नाहं बसामि बैकुंठे योगिनां हृदये न च।
मद् भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारद।।

अर्थ - हे नारद! न मै बैकुंठ में बसता हूँ और न योगियों के हृदय में निवास करता हूँ लेकिन जहाँ मेरे भक्त मेरा गुणानुवाद गाते हैं, वहाँ मेरा निवास है।।

श्लोक - गुरुर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थ - गुरु ही ब्रह्मा विष्णु महादेव और परब्रह्म हैं। इसलिये ऐसे गुरु को मेरा नमस्कार है।।

सार बचन

सेवा कर तन मन धन अरपे।
सत्तपुरुष सम सतगुरु थरपे।।

२५ - इस विधि के मुवाफ़िक़ जो ऊपर लिखी गई, मालिक के साथ मिलना और उसकी सेवा करना और उसके प्यारे जन से मिलना और उनकी मुहब्बत और सेवा करना इसी देह में और इसी दुनिया में मुमकिन है। पर शर्त यह है कि सच्चा शौक़ और दर्द मन में होना चाहिये, नहीं तो दुनिया के अभागी लोग संत सतगुरु और साध गुरु और उनके प्रेमी और भक्त जन की निंदा करते हैं और उनसे विरोध रख कर और अनेक तरह के विघ्न प्रेमी जन के सतसंग और भक्ति की कार्रवाई में डाल कर अपना भाग घटाते हैं। दुनिया में भी दस्तूर है कि जो बादशाह और महाराजे की तरफ़ से गवर्नर या नाज़िम या सूबा किसी देश में मुक़र्रर होता है तो जो कुछ उसकी नज़र या भेंट की जावे या किसी क़िस्म की ख़िदमत सरकारी किसी से बन आवे, वह भेंट और ख़िदमत बादशाह और महाराजे की समझी जाती है और उसका फल यानी एवज़ बादशाह और महाराजे की तरफ़ से मिलता है। फिर इसी तरह संत और साध मालिक के कुँवर और नायब इस दुनिया में हैं, जिस किसी को थोड़ी या बहुत उनकी पहिचान आ जावे, वही बड़भागी है और उसी को एक दिन मालिक के चरनों के प्रेम की दौलत मिलेगी।।

२६ - जो कि मालिक अपने विदेह स्वरूप से घट २ में मौजूद है, तो उस स्वरूप या उसके जलवे का दर्शन भी इसी देह में संत सतगुरु की दया से मुमकिन है यानी जब वे अपनी मेहर से सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देवेंगे और अंतर में अभ्यास करावेंगे, तब प्रेमी जन आहिस्ते २ अपने घट में सूक्ष्म से सूक्ष्म और अति सूक्ष्म स्वरूप होते हुए और मालिक का जलवा और प्रकाश रास्ते में देखते हुए, एक दिन निज धाम में पहुँच कर उसका पूरा दर्शन पा सकते हैं और जब तब कि दयाल देश में न पहुँचें, तब तक उनको मालिक शब्द स्वरूप और संत सतगुरु रूप से, जब तक अभ्यास की हालत में, बराबर अपनी मेहर और दया से दर्शन देता रहता है कि जिससे उनकी प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है और दुनिया और उसका सामान उनकी नज़र में तुच्छ और ओछा होता जाता है।।

२७ - जो कोई ऐसी समझ लेकर और सतसंग करके, मालिक की भक्ति और उसके चरनों में प्रीत करेगा, वही एक दिन महल में दख़ल पावेगा और जो बिना पहिचान थोड़ी बहुत प्रीत और भाव करते हैं, उस प्रीत का फ़ायदा थोड़ा सा सुख दुनिया में या ऊँचे लोकों में मिल जावेगा लेकिन सच्चे मालिक का दीदार हासिल नहीं होगा और जीव का सच्चा उद्धार नहीं होगा।।

२८ - इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने गृहस्थ में रह कर और दुनिया के सब कारोबार और रोज़गार होशियारी से करते हुये जहाँ सैंकड़ों जगह और बहुत से आदमियों से प्रीत

करते हैं कुछ थोड़ी या बहुत मोहब्बत मालिक के चरनों में भी लावें और यह मोहब्बत भेद और महिमा के साथ होना चाहिये, तो उनको दुनिया में भी आराम और आइंदा को सुख मिलेगा, नहीं तो अख़ीर वक़्त पर कष्ट और क्लेश सहेंगे और काल के हाथ से बहुत दुक्ख पावेंगे जैसा कि मुर्दों की हालत और सूरत से जाहिर होता है।।

२९ - यह न समझना चाहिये कि मालिक घट में मौजूद नहीं है, वह हमेशा हाज़िर और नाज़िर है बल्कि बोलता है यानी जब कोई शख़्स कोई बुरा काम या भारी पाप करना चाहता है उस वक़्त वह उसके अंतर में बोलता है और कहता है कि यह काम न कर, नहीं तो दुक्ख पावेगा। फिर चाहे यह शख़्स उस नसीहत को माने या नहीं। मालिक की दया इतने नीचे उतर कर जीव को समझाती और बुरे काम से बाज़ रखना चाहती है, पर जीव ऐसे बचन को कम सुनते हैं और उसका खोज भी नहीं लगाते कि किस मुक़ाम से उस बचन की धार आती है।।

* * * * * * *

* * * * *

* * *

राधास्वामी मत की

पुस्तकों का सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

१) सार बचन छंद बंद, पहला भाग

२) सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग

३) प्रेमबानी, पहला भाग

४) प्रेमबानी, दूसरा भाग

५) प्रेमबानी, तीसरा भाग

६) प्रेमबानी, चौथा भाग

७) संत संग्रह, पहला भाग

८) संत संग्रह, दूसरा भाग

९) प्रेम प्रकाश

१०) बिनती प्रार्थना

११) नियमावली

गद्य (हिन्दी)

१२) सार बचन बार्तिक

१३) आख़िरी बचन स्वामीजी महाराज

१४) प्रेमपत्र, पहला भाग

१५) प्रेमपत्र, दूसरा भाग

१६) प्रेमपत्र, तीसरा भाग

१७) प्रेमपत्र, चौथा भाग

१८) प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग

१९) प्रेमपत्र, छठा भाग

२०)　जुगत प्रकाश
२१)　सार उपदेश
२२)　प्रेम उपदेश
२३)　राधास्वामी मत संदेश
२४)　राधास्वामी मत उपदेश
२५)　निज उपदेश
२६)　प्रश्नोत्तर सन्त मत
२७)　छाँटे हुये बचन महात्माओं के
२८)　गुरु उपदेश
२९)　बचन महाराज साहब
३०)　बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग
३१)　बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग
३२)　बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग
३३)　बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग
३४)　जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज
३५)　जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज
३६)　जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज
३७)　शब्द कोश संत मत बानी
३८)　लोक-परलोक हितकारी
३९)　मौलाना रूम के दृष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ
४०)　समाध पुस्तिका

Books In English

४१) राधास्वामी मत प्रकाश

Radhasoami Mat Prakash

४२) डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ

Discourse On Radhasoami Faith

४३) फेलप्स साहब के नोट्स

Phelp’s Notes

४४) ए सोलेस टू सतसंगीज़

A Solace to Satsangis